आयुर्वेद, आध्यात्म और षड्यंत्र

Ayurved, Spirituality & Conspiracy | By Nishant Prajapati | 1st Edition

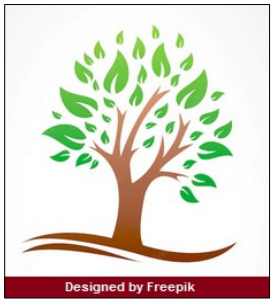

आयुर्वेद, आध्यात्म और षड्यंत्र

लेखन एवं संपादन: निशांत बी. प्रजापति | Nishant B. Prajapati
स्थल: अहमदाबाद, गुजरात | Ahmedabad, Gujarat
(M) +91 97259 30800 | Email: nishant.prajapati@hotmail.com
Chat/Call for Privacy- @nishantguru007 (Telegram | Signal)
Telegram Channel- https://t.me/nishantguru007

Book Edition: First | Release Date: 05-Oct-2022

आयुर्वेद की एक औषध है **"त्रिफला"**, जिसका का नाम आप लोगोने जरूर सुना होगा. लेकिन त्रिफला के बारेमे जो जानकारी आज प्राप्त करेंगे उसे शायद ही कोई जानकार या अनुभवी चिकित्सक आपको बताएगा. सही ढंगसे अगर त्रिफला का नियमित सेवन किया जाए तो ये पूरी दुनिया में गंभीर से गंभीर रोगो की सबसे सस्ती और रामबाण दवा है. त्रिफला ना केवल शरीर के गंभीर रोगो के इलाज में उपयोगी है, बल्की शरीर के विकास के लिए जरुरी विटामिन और मिनरल्स की पूर्ति कुछ मात्रा में त्रिफला से हो सकती है. त्रिदोष को संतुलित कर शरीर की रोगप्रतिकारक क्षमता को बढ़ाने के लिए भी त्रिफला आयुर्वेद में उच्चतम और श्रेष्ठ औषधि मानी जाती है.

त्रिफला को अगर नियमित रूपसे जीवन में शामिल कर लिया जाए, तो यह आपके परिवार को गंभीर रोगो का शिकार होनेसे आसानीसे बचा सकती है एवं भविष्य मे उससे होनेवाले लाखो के खर्च से भी. यदी आप पहलेसे ही कोई सामान्य या घातक रोगो के शिकार हो चुके है, तो त्रिफला आपके लिए संजीवनी का काम करेगी. हज़ारो सालो से त्रिफला एक औषध के रूपमें भारतीय सनातन संस्कृति का हिस्सा रहा है, लेकीन कुछ आंतराष्ट्रीय षडयंत्रो के तहत वर्तमान में इसके के पुरे फायदे लोगो तक नहीं पहुंचने दिए गए. निश्चित ही इसे पढ़ने के बाद आप भारत के ऋषि-मुनियो के ज्ञान, आयुर्वेद और अपने भारतीय होने पर गर्व महसूस करेंगे.

जो भी जानकारी आपको इस पुस्तक के माध्यम से मिलनेवाली है, वह पुरे इंटरनेट पर खोजने से भी एकसाथ कहीं नहीं मिलेगी. **इसमे आपको त्रिफला के दिव्य लाभ के साथ आयुर्वेद, वैदिक सनातन संस्कृति एवं हिंदू सहित अन्य धर्मो के खिलाफ किये जानेवाले आरोपित आंतराष्ट्रीय षडयंत्रो की भी पूरी जानकारी प्राप्त होगी. दुनिया मे सबसे ज्यादा रहस्यमयी मानेजानेवाले इलुमिनाटी संगठन, जॉर्जिया गाइडस्टोन्स स्मारक तथा गुप्त शैतानी धर्म की जानकरी भी इस पुस्तक मे शामिल है.** पुस्तक को दिया गया योग्य समय और अनुक्रम से इसका पूर्ण पाठन आपका जीवन परिवर्तित करने के लिए काफी होगा.

सामान्य रूपसे लोग त्रिफला को मात्र कब्ज़ या एसिडिटी मिटानेवाली दवाई के रूपमें ही जानते है, लेकिन **त्रिफला को आयुर्वेद में शरीर का कायाकल्प करने वाली श्रेष्ठ रसायन औषधि का दर्जा प्राप्त है.** त्रिफला के अनगिनत लाभ और उसकी उपयोगिता का वर्णन आयुर्वेद में तो मिलता ही है, लेकिन **आज हम इसे मॉडर्न साइंस द्वारा लैब टेस्टिंग, चूहे, जानवर और व्यक्तियों पे किये गए कुछ ट्रायल, अध्यहन, शोध और रिसर्च के आधार पर मूल्यांकन करेंगे**, जिसके तमाम साइंटिफिक रिपोर्ट्स की कॉपी आपको पुस्तक मे लिंक (Link) द्वारा पीडीऍफ़ (PDF) स्वरुप में मिल जायेगी.

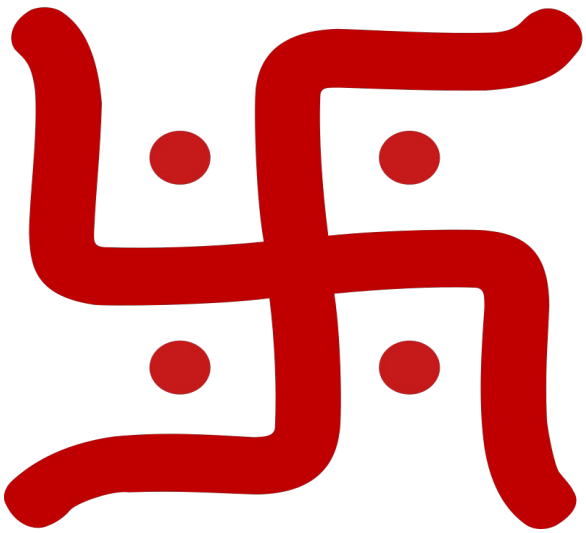

त्रिफला रसायन: रोगो के लिए दिव्य एवं चमत्कारिक महाऔषध

एलोपैथ रिसर्च अनुसार त्रिफला के फायदे: विषय सूचि

- डायबिटीज और शुगर लेवल को नियंत्रित करना - पेज नं: 7
- कोलेस्ट्रॉल, हाई ब्लड प्रेशर, हृदयघात और स्ट्रोक से बचाव - पेज नं: 9
- रक्त को शुद्ध करना और रक्त का संचार बढ़ाना - पेज नं: 11
- वजन घटाने और मोटापा कम करने के लिए - पेज नं: 12
- शरीर से विषैले तत्वो को दूर करने के लिए (डिटॉक्सिफिकेशन) - पेज नं: 14
- वायरल, बैक्टीरियल और फंगल इन्फेक्शन से लड़ने के लिए - पेज नं: 15
- गैस, एसिडिटी, कब्ज, आंत, बवासीर, पाचनसंबंधी रोगो के लिए - पेज नं: 16
- पेट का अल्सर और घाव भरने के लिए - पेज नं: 18
- आँखों के स्वास्थ्य के लिए - पेज नं: 19
- अनिंद्रा, तनाव और चिंता को दूर करने के लिए - पेज नं: 20
- मस्तिष्क (न्यूरो) संबंधी रोगो के लिए - पेज नं: 21
- दांत-मसूड़ों में दर्द, मुंह की दुर्गंध और इन्फेक्शन मिटाने के लिए - पेज नं: 22
- सेक्स संबंधी समस्या और पुरुषों की प्रजनन क्षमता के लिए - पेज नं: 23
- किडनी की रक्षा और मूत्र संबंधित समस्याओ में लाभकारी - पेज नं: 24
- जोड़ों के दर्द, आर्थराइटिस (गठिया) और गाउट में असरदार - पेज नं: 25
- केन्सर से बचाव और केन्सर के इलाज में प्रभावी - पेज नं: 26
- महिलाओमें रजोनिवृत्ति (मेनोपॉज), हार्मोन असंतुलन और पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम (PCOS) के इलाज में उपयोगी - पेज नं: 28
- त्वचा को सेहतमंद, चमकदार और जवां रखने के लिए - पेज नं: 29
- बालों को लंबा, घना और चमकदार बनाने के लिए - पेज नं: 31
- चक्कर या मोशन सिकनेस के लिए - पेज नं: 32
- लिवर को स्वस्थ रखना और क्षति से बचाना - पेज नं: 33
- रेडिएशन से बचाव और क्षतिग्रस्त डीएनए (DNA) को ठीक करना - पेज नं: 35
- एचआईवी (HIV) तथा एड्स (AIDS) के इलाज में लाभदायी - पेज नं: 41
- पोषकतत्वों की पूर्ति और रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए - पेज नं: 42
- त्रिफला का खास परिस्थितियो में उपयोग और सावधानी - पेज नं: 47

आयुर्वेद अनुसार त्रिफला के फायदे: विषय सूचि

- त्रिफला क्या है? - पेज नं: 06
- आयुर्वेद क्या है और किसने लिखा? - पेज नं: 49
- त्रिदोष: आयुर्वेद का मूल सिद्धांत - पेज नं: 52
- सात धातुएं और भोजन में संबंध - पेज नं: 53
- मंदाग्नि (पाचनतंत्र) है सब रोगो का मूल - पेज नं: 53
- आयुर्वेद अनुसार रोगो को संख्या - पेज नं: 57
- आयुर्वेद में नाड़ी परीक्षण - पेज नं: 57
- त्रिफला- एक उत्तम और दिव्य महाऔषध - पेज नं: 58
- रोग-औषध के प्रकार और त्रिफला लेने का श्रेष्ठ समय - पेज नं: 61
- त्रिफला सेवन की मात्रा और अनुपात - पेज नं: 63
- शुद्ध त्रिफला का मापदंड - पेज नं: 68
- त्रिफला कैसे बनाये या कहाँ से प्राप्त करे? - पेज नं: 71
- वैध-रोगी के गुण और उनकी सही पहचान - पेज नं: 72
- त्रिफला का अन्य आयुर्वेदिक औषधो के साथ मुल्यांकन - पेज नं: 73
- त्रिफला का भिन्न रोगो पे असरदार होने का समय और सीमा - पेज नं: 76
- घी, तेल, शहद (मधु), नमक, गुड़ और शक्कर का महत्त्व - पेज नं: 81
- पंचकर्म चिकित्सा - पेज नं: 88
- पंचगव्य चिकित्सा - पेज नं: 90
- एलोपैथी, होमियोपैथी, आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति का मूल्यांकन - पेज नं: 110
- आयुर्वेद-होमियोपैथी के इलाज के बारे में भ्रमणा एवं दुष्प्रचार - पेज नं: 119
- मर्म शास्त्र एवं मर्म चिकित्सा - पेज नं: 127
- नाड़ी, योग-प्राणायाम, चक्र और कुंडलिनी - पेज नं: 128
- एकाग्रता, मूर्तिपूजा, ध्यान, समाधी और मोक्ष - पेज नं: 132

आंतराष्ट्रीय शैतानी षड़यंत्र, ईश्वरी अवतरण और आध्यात्मिक क्रांति

- "इलुमिनाटी संगठन" और शैतान (लूसिफर) का गुप्त धर्म - पेज नं: 138
- जॉर्जिया गाइडस्टोन्स: रहस्यमयी स्मारक या मौतका फरमान? - पेज नं: 152
- इलुमिनाटी संगठन के सदस्यों के कार्य और आरोपित कृत्य - पेज नं: 219
- कलयुग का अंत और "कल्की भगवान" का अवतरण - पेज नं: 250
- स्व. राजीवभाई दीक्षित जी को मेरी भावपूर्ण श्रद्धांजलि - पेज नं: 253
- मेरा संदेश - पेज नं: 263

त्रिफला क्या है?

त्रिफला का शाब्दिक अर्थ है “तीन फल”. आयुर्वेद में त्रिफला तीन आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों का मिश्रण होता है– **आंवला, बहेड़ा और हरड़** जो भारत में एकदम आसानीसे मिल जाते है. संस्कृतमें में इन्हें अमलकी, विभीतक और हरितकी कहा गया है. **तीनो का अंग्रेजी वैज्ञानिक नाम Emblica Officinalis (आंवला), Terminalia Bellirica (बहेड़ा) और Terminalia Chebula (हरड़) है.** हरड़ शब्द कुछ लोगो के लिए नया हो सकता है. हरड़ और हल्दी दोनों अलग है तो उसे एक ना समजे. त्रिफला में इन तीनों फलो के बीज निकाल कर मिश्रण से चूर्ण बनाकर तैयार किया जाता है. तीनों ही फल अमृतीय गुणों से भरपूर है और योग्य मात्रा में जिनका मिश्रण त्रिफला कहलाता है.

त्रिफला अपने आपमें एक शक्तिशाली और गुणकारी औषध है, लेकिन इसे कभी अकेले नहीं खाया जाता. अधिकतर लोग अकेली त्रिफला का सेवन करते है, लेकिन इसे दिव्य रोगनाशक औषधीय रसायन बनाने के लिए ऋतुचर्या के अनुसार हर एक ऋतु में अलग अलग वस्तुओ के साथ लेने का विधान है, अथवा आयुर्वेद ग्रंथो में वर्णित कुछ खास गुणकारी औषधो में से किसी एक औषध को साल भर त्रिफला के साथ मिलाकर खाने का विधान भी है. इसीलिए त्रिफला को कभी अकेला सेवन ना करते हुए **शहद, घी, शक्कर, पीपर, मुलेठी या अन्य कुछ औषधोमें से किसी एक** के साथ लेने का विधान आयुर्वेद के ग्रंथो में बताया गया है, तभी वह शरीर के रोगो को नष्ट करनेवाला तथा और बुद्धि-यादशक्ति को बढ़ानेवाला दिव्य रसायन बनता है.

तो जब त्रिफला को बताई गयी किसी भी एक वस्तु के साथ निश्चित मात्रा में मिलाया जाता है तो वह एक सामान्य चूर्ण ना रहके त्रिदोषशामक, रोगनाशक एवं दिव्य महाऔषध बन जाता है जो **“त्रिफला रसायन”** कहलाता है.

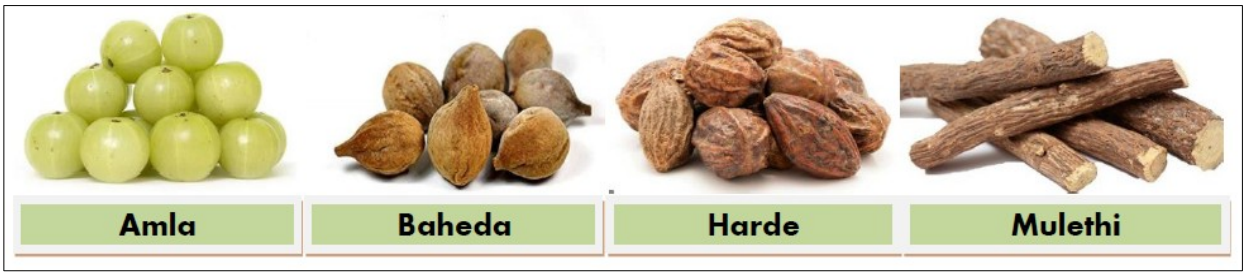

वर्तमान समय में बिना मिलावट का घी, मध् और शक्कर मिलना मुश्किल है, तो त्रिफला को दिव्य रसायन में तब्दील करने के लिए और औषध के गुण एवं शुद्धता

को बनाए रखने के लिए **"मुलेठी" (Licorice)** ही सबसे कारगर औषध है. मुलेठी को **Glycyrrhiza Glabra** के अंग्रेजी वैज्ञानिक नाम से पहचाना जाता है. मुलेठी के चमत्कारी गुण जान लेने के बाद इसे भी श्रेष्ठतम औषधि के रूपमे स्वीकारने में आपको कोई कठिनाई नहीं होगी.

1) डायबिटीज और शुगर लेवल को नियंत्रित करना

त्रिफला **एंटी-डायबिटिक (Anti-Diabetic)** और **हाइपोग्लाइसीमिक (Hypoglycemic)** प्रभावी है जो रक्त में ग्लूकोज़ के लेवल को कम करने और उसे संतुलित रखने में असरदार पाया गया है. इसके हाइपोग्लाइसीमिक प्रभाव नैसर्गिक रूपसे रक्त में ग्लूकोज़ (शुगर) के लेवल को निचे लाने में सहायक है, जिसमे मौजूद **मेंथोल (Menthol) और सोर्बिटोल (Sorbitol)** नामक तत्व हाइपोग्लाइसीमिक प्रभाव पैदा करने के लिए जिम्मेदार माने जाते है. Link 1, Link 2

रिसर्च के अनुसार, मुलेठी की जड़ में **अमोरफ्रूटीन्स (Amorfrutins)** पाए जाते है, जो रक्त में हाई शुगर लेवल को नियंत्रित रखने मे सहायक है तथा मधुमेह विरोधी गुणों के लिए जाने जाते हैं. अमोरफ्रूटीन्स में कई **एंटी इंफ्लेमेट्री गुण (Anti-Inflammatory Properties)** होते हैं जो मधुमेह से संबंधित स्थितियों को दूर रखने में मददगार माने गए है Link.

अद्भुत बात यह है की मुलेठी स्वादमें मीठी होने के बावजूद इसे दवाई के रूपमे डायबिटीज रोगी खा सकते है जो उनके मीठा खाने की तलब को कुछ हद तक शांत कर सकता है. अधिकतर डायबिटिस के मरीज मीठा खाने से डरते है की शुगर का लेवल ना बढ़ जाय लेकिन मुलेठी में जो नैसर्गिक शुगर पायी जाती है वह कृत्रिम

तरीके से मानव द्वारा फैक्ट्री में बनाई जानेवाली केमिकल युक्त चीनी से बिलकुल अलग है. **मुलेठी की नैसर्गिक शुगर को चमत्कारी रूप से शरीर ना सिर्फ आसानी से पचा लेता है बल्कि इसमें मौजूद अमोर्फ्रुटिन नामक तत्व रक्त में शुगर के लेवल को भी नियंत्रित करते है. ये इस औषधि का एक ऐसा विरला गुण है जो अन्य किसी मीठी चीज या आयुर्वेद की औषधि में एकसाथ नहीं पाया जाता.** Link 3, Link 4.

रक्त में शुगर की अधिक मात्राको डायबिटीज (मधुमेह) कहा जाता है. यह समस्या तब उत्पन्न होती है, जब इंसुलिन का काम बाधित हो जाता है. इंसुलिन एक हार्मोन है, जो **पैंक्रियाज (Pancreas)** द्वारा बनाया जाता है. इंसुलिन, ग्लूकोज को एनर्जी में बदलने में मदद करता है. इंसुलिन न सिर्फ आपके रक्त में ग्लूकोज के स्तर को नियंत्रित करता है, बल्कि यह वसा (फैट) को संरक्षति करने मे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. इसके साथ ही मेटाबॉलिज्म प्रक्रिया के लिए भी यह आवश्यक होता है. शरीर को शक्ति प्रदान करने के लिए रक्त के माध्यम से कोशिकाओं में ग्लूकोज पहुंचाने का काम इंसुलिन की मदद से ही पूरा होता है. शरीर की ऊर्जा को बनाए रखने मे इंसुलिन का अपना महत्व होता है. वहीं, जब इसकी कार्यप्रणाली बाधित हो जाती है, तब ग्लूकोज, उर्जा में परिवर्तित होने के बजाय रक्त में ठहर जाता है और जब ग्लूकोज का स्तर रक्त में बढ़ने लगता है, तब मधुमेह की समस्या उत्पन्न होती है. **अधिक प्यास लगना, बार-बार पेशाब लगना, भूख बढ़ना, थकान, धुंधला दिखाई देना, पैरों या हाथों में सुन्नता या झुनझुनी, घाव जल्दी न भरना या वजन घटना डायबिटीज के सामान्य लक्षण माने जाते है.**

डायबिटीज (मधुमेह) के कई प्रकार है, लेकिन मुख्य प्रकार समझना जरुरी है.

टाइप 2 डायबिटीज इंसुलिन की मात्रा कम हो जाती है या फिर शरीर सही तरीके से इंसुलिन का इस्तेमाल नहीं कर पाता है. यह मधुमेह का सबसे आम प्रकार

है, जो किसी भी उम्र के व्यक्ति को अपनी चपेट में ले सकता है. अधिक जंक फ़ूड का सेवन, मोटापे की वजह से, केवल बैठ के मानसिक रूप से काम करनेवाले तथा शारीरिक क्रियाओं में कमी आनेसे धीरे धीरे लोग इस रोग की तरफ बढ़ते जाते है, जिसका अंदाजा किसी को जल्दी नहीं हो पाता.

टाइप 1 डायबिटीज में इम्यून सिस्टम इंसुलिन बनाने वाली कोशिकाओं को नष्ट कर देता है. इस वजह से इंसुलिन का निर्माण नहीं हो पाता है. इस स्थिति में मरीज को इंसुलिन के इंजेक्शन दिये जाते हैं. डायबिटीज का ये प्रकार अनुवांशिक रूप से भी आ सकता है जिस स्थिति में मरीज को इंसुलिन के इंजेक्शन दिये जाते हैं. अनुवांशिक और अन्य कारणों से ग्रसित रोगीयो के लिए भी दिनचर्या के अनुसार त्रिफला के साथ पंचकर्म एवं पंचगव्य चिकित्सा अत्यंत लाभदेही साबित हो सकती है, जिसका विस्तृत वर्णन आयुर्वेद के विभाग में दिया गया है.

मधुमेह ऐसी बीमारी है जिसका असर आगे जाकर दूसरे अंगों पर भी पड़ता है. रक्त में शुगर की मात्रा अधिक बढ़ जाये तो इसके कारण 5-10 साल में दूसरे अंग भी प्रभावित होने की संभावना रहती है. इसके कारण गुर्दे में, आंखों में, पैर की नसों में कुछ खराबी आ सकती है. दिल की बीमारी के बढ़ने की संभावना सबसे अधिक रहती है जिसके कारण लकवा होने और पैर में रक्त संचार बाधित होने का खतरा अधिक रहता है. इससे अगर कोई धमनि (आर्टरी) ब्लॉक होती है तो हार्ट अटैक हो सकता है तथा ब्रेन में भी रक्त की सप्लाई बाधित होने से ब्रेन स्ट्रोक की संभावना बढ़ जाती है. यह स्थिति अचानक से नहीं आती है, बल्कि यह 10 साल पुराने इतिहास के कारण होता है ऐसा देखा गया है.

2) कोलेस्ट्रॉल, हाई ब्लड प्रेशर, हृदयघात और स्ट्रोक से बचाव

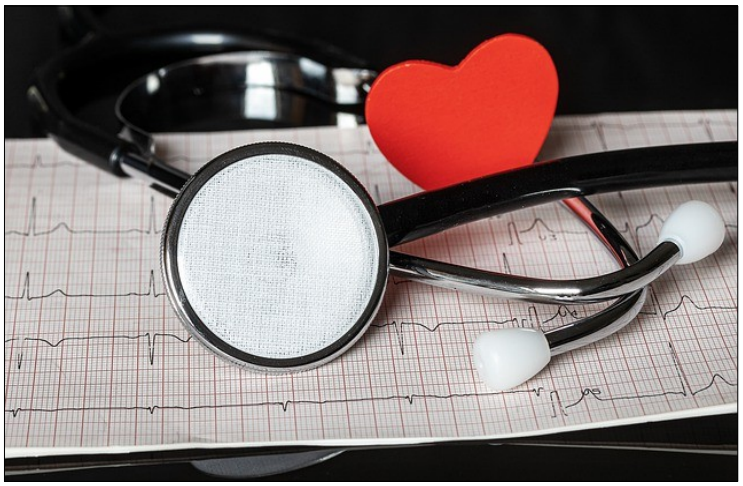

हाइ ब्लड प्रेशर (उक्त रक्तचाप) या फिर शरीर में अधिक कोलेस्ट्रॉल है तो आपके लिए त्रिफला का सेवन बहुत ही गुणकारी साबित होगा जो नैसर्गिक रूप से कोलेस्ट्रॉल के लेवल को नियंत्रित करने में मददगार पाया गया है.

त्रिफला में मौजूद "हरड़" **हाइपोलिपिडेमिक (Hypolipidemic)** प्रभाव के लिए असरदार मानी गयी है जो शरीर में अच्छे कोलेस्ट्रॉल **High-density Lipoprotein (HDL) को बढ़ाने तथा बुरे कोलेस्ट्रॉल Low-density Lipoprotein (LDL) तथा Very-low-density Lipoproteins (VLDL)** को कम करने के लिए मददगार है. Link 5, Link 6, Link 7. वही मुलेठी में पाए जानेवाले **फ्लेवनॉइड्स (Flavonoids)** तत्व कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करनेवाले है जो कोलेस्ट्रॉल को पित्त में तब्दील करने में सहायक माने जाते है. Link 8, Link 9. मुलेठी में मौजूद **पोलीफिनॉल्स (Polyphenols)** जो पौधों में नैसर्गिक रूपसे पाये जानेवाले **सूक्ष्म पोषकतत्व (Micronutrients)** होते है वह रक्त की धमनियों में जमा होनेवाले कचरे (Plaque) को दूर करनेमें भी मददगार बताये जाते है. Link 10, Link 11, Link 12.

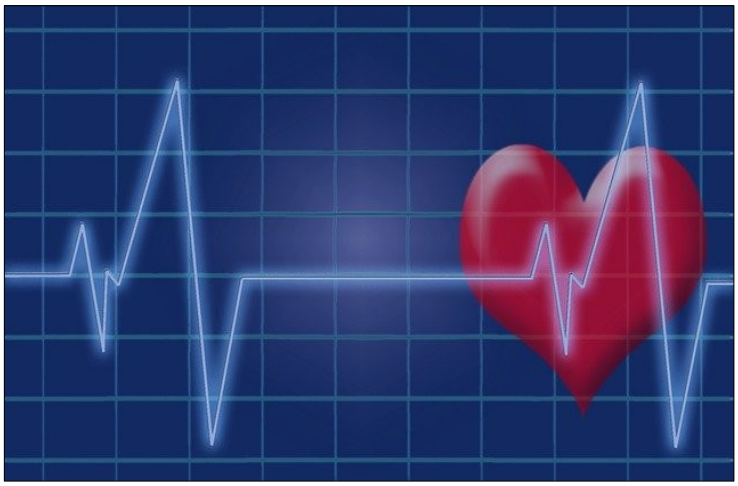

हाइपरकोलेस्ट्रोलिमिया (Hypercholesterolemia) यानी रक्त में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा का बढ़ना है जो अगर नियंत्रित ना किया जाए तो आगे जाके हृदयघात का कारण बनता है. ज्यादातर लोग सोचते हैं कि कोलेस्ट्रॉल का होना शरीर के लिए नुकसानदायक हो सकता है. हालांकि, ये पूरी तरह से सच नहीं है. **कोलेस्ट्रॉल एक केमिकल कंपाउंड है जो सेल्स के निर्माण और हार्मोन्स के लिए जरूरी होता है.** शरीर में दो तरह के कोलेस्ट्रॉल पाए जाते हैं- बुरा कोलेस्ट्रॉल (LDL & VLDL) और अच्छा कोलेस्ट्रॉल (HDL). अच्छा कोलेस्ट्रॉल शरीर में से टॉक्सिक (विषैले) पदार्थों को बाहर निकालने में भी मददगार होता है. **लेकिन शरीर में "लो डेंसिटी लिपोप्रोटींस" यानि कि**

बुरे कोलेस्ट्रॉल की अधिकता होने से धमनियाँ (आर्टरीज) ब्लॉक हो जाती हैं, जिससे गंभीर समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं. वही दिमाग तक रक्त पहुंचानेवाली वाहिनी में रक्त के थक्के (क्लॉटिंग) जम जानेसे मष्तिस्क में स्ट्रोक आने की समस्या पैदा हो सकती है.

कार्डियो-वैस्कुलर (Cardiovascular) रोग हृदय और रक्त वाहिकाओं से संबंधित बीमारियों का समूह है जिसमे मुख्य रूपसे निम्नलिखित बीमारिया शामिल है :-

- हृदय-धमनी रोग **(Coronary Heart Disease)**: हृदय की मांसपेशियों को रक्त की आपूर्ति करने वाली रक्त वाहिकाओं की बीमारी
- रक्त धमनी का रोग **(Cerebrovascular Disease):** मस्तिष्क को रक्त की आपूर्ति करने वाली रक्त वाहिकाओं की बीमारी
- बाह्य धमनी रोग **(Peripheral Arterial Disease)**: हाथ और पैरों को रक्त की आपूर्ति करने वाली रक्त वाहिकाओं की बीमारी
- तीव्र शिरा थ्रोम्बोसिस और फेफड़ों से संबंधित वाहिकारोध **(Deep Vein Thrombosis and Pulmonary Embolism)**: पैर की नसों में रक्त के थक्के जो हृदय और फेफड़ों की कार्यप्रणाली को अव्यवस्थित कर सकते हैं.

हाई कोलेस्ट्रॉल के कारण धमनियों में रक्त का प्रवाह ठीक से नहीं हो पाता जिससे उच्च रक्तचाप होने का खतरा बढ़ता है. इसके अलावा, डायबिटीज, अल्जाइमर, हार्ट अटैक, स्ट्रोक व किडनी संबंधी बीमारियों का खतरा भी उन लोगों को अधिक होता है जिनके शरीर में **LDL** और **VLDL** कोलेस्ट्रॉल का स्तर अधिक हो. त्रिफला कोलेस्ट्रॉल से बचाव करके हृदय-मष्तिक दोनों को सुरक्षित करने मे सामर्थ्यवान मानी जाती है.

3) रक्त को शुद्ध करना और रक्त का संचार बढ़ाना

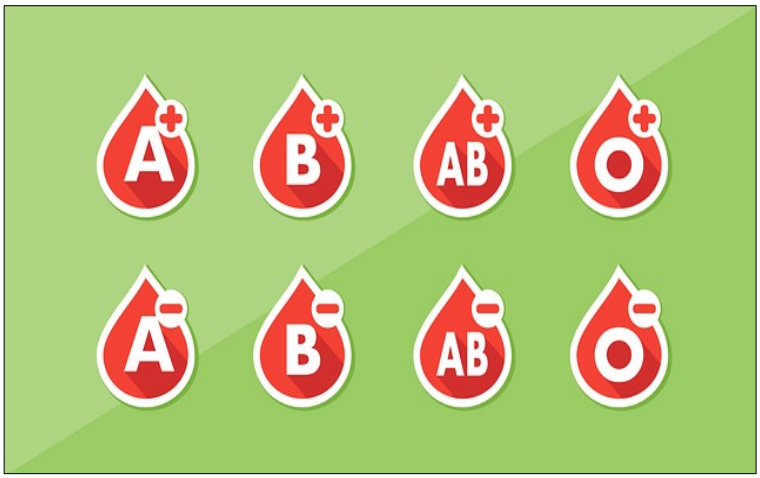

त्रिफला का सेवन ना केवल रक्त में शुगर और कोलेस्ट्रॉल को कम करता है, बल्कि इसमें ''ब्लड सर्कुलेशन'' यानी रक्त के प्रवाह को बेहतर करने के भी गुण उसमे पाए जाते हैं. रक्तप्रवाह बेहतर होने से शरीर के हर हिस्से तक खून और ऑक्सीजन पहुंचता है. **त्रिफला सभी अंगों तक ऑक्सीजन पहुंचाने के साथ शरीर में मौजूद कार्बन डाइऑक्साइड भी बाहर निकालने मे मददगार है.** Link 13, Link 14.

रिसर्च के अनुसार त्रिफला का सेवन **RBC (Red Blood Cells)** यानी **लाल रक्त कोशिकाओ तथा हीमोग्लोबिन (Hemoglobin) के स्तर को बढ़ाने के लिए लाभदायी है.** किसी भी इंसान को स्वस्थ बने रहने के लिए उसके शरीर में रेड ब्लड सेल्स की पर्याप्त मात्रा का होना बहुत जरूरी है. रेड ब्लड सेल्स मुख्य रूप से शरीर में सभी अंगों तक ताजा ऑक्सीजन को पहुंचाने का काम करते हैं. हीमोग्लोबिन भी रेड ब्लड सेल्स में मौजूद एक तरह का प्रोटीन है जो शरीर के सभी अंगों और कोशिकाओं तक ऑक्सीजन पहुंचाने और कार्बनडाइऑक्साइड को शरीर के बाकी अंगों से फेफड़ों तक पहुंचाता है.

रक्त में "रेड ब्लड सेल्स" की मात्रा घटने के साथ शरीर में ऑक्सीजन भी घटने लगती है और नया रक्त बनना बाधित हो जाता है. इसी समस्या को खून की कमी **(Lack of Blood)**, **एनीमिया (Anemia)** या हिंदी में **रक्ताल्पता** भी कहा जाता है. एनीमिया के अनेको प्रकार है, जिसमे आयरन, फोलेट, बोन मैरो द्वारा नये रेड ब्लड सेल्स का निर्माण ना कर पाना, विटामिन B-12 या हीमोग्लोबिन की कमी से संबंधित लक्षण भी हो सकते है. परंतु, की गयी रिसर्च अनुसार खास कर रक्त में हीमोग्लोबिन से संबंधित विकारो से मुक्ति दिलाने में त्रिफला सीधे रूपसे प्रभावी पायी गयी है.

4) वजन घटाने और मोटापा कम करने के लिए

त्रिफला में मौजूद तत्व पैंक्रियास ग्रंथि के **ग्लायकोलिटिक एन्जाइम्स (Glycolytic Enzymes)** को नियंत्रित कर ग्लूकोज़ के लेवल को रक्तवाहिनी में प्रवेश करने मे मददगार माना जाता है. त्रिफला के दो घटक **एलेजीटेनिन्स और गेलोटेनिन्स (Ellagitannins and Gallotannins)** भी अप्रत्यक्ष रूपसे मोटापा कम करने के लिए असरदार माने जाते है. Link 15. इसके अलावा मुलेठी की जड़ के अर्क में **एंटीओबेसिटी (Antiobesity)** यानी मोटापे को कम करने वाला प्रभाव पाया गया है. Link 16.

त्रिफला ना सिर्फ वजन को कम करने में मदद करती है, बल्कि शरीर में जमा अधिक ट्राइग्लिसराइड्स (Triglycerides) यानी वसा (चरबी) की मात्रा को भी कम कर देती है जिसके कारण मोटापा प्रभावी रूपसे कम होने लगता है. "ट्राइग्लिसराइड्स" रक्त में पाए जाने वाला एक प्रकार का वसा (लिपिड) ही है, लेकिन यह कोलेस्ट्रॉल से थोड़ा अलग बताया जाता है. हमारा शरीर इस फैट को इस्तेमाल करके ऊर्जा पैदा करता है. बेहतर सेहत के लिए कुछ ट्राइग्लिसराइड्स का शरीर में हेल्दी लेवल जरूरी माना गया है. लेकिन, इसकी ज्यादा मात्रा शरीर को नुकसान पहुंचा सकती है. इससे दिल की बीमारी का खतरा पैदा हो सकता है. साथ ही इसके कारण हाई ब्लड प्रेशर, हाई ब्लड शुगर भी एक साथ होने का खतरा पैदा हो सकता है.

हाई ट्राइग्लिसराइड्स (High Triglycerides) से शरीर में मोटापा भी बढ़ता है. **जैसे ही शरीर में अच्छा माने जानेवाला कोलेस्ट्रॉल यानी HDL (हाई डेन्सीटी लिपोप्रोटीन) की मात्रा कम हो जाती है तो रक्त में ट्राइग्लिसराइड्स का लेवल बढ़ जाता है.** यह मेटाबॉलिक सिंड्रोम का हिस्सा भी हो सकता है, जिसमें कमर के

आसपास बहुत अधिक चर्बी का जमा होना, थायराइड हार्मोन का स्तर कम होना, लिवर या किडनी की बीमारी से भी संबंधित हो सकता है. आनुवांशिक विरासत, चयापचय रोग (जैसे मधुमेह) और कुछ दवाओं के कारण ट्राइग्लिसराइड्स का स्तर बढ़ सकता है. आहार मे बहुत अधिक वसा, परिष्कृत कार्बोहाइड्रेट्स (अतिरिक्त चीनी सहित) और शराब का सेवन किया जाये तो भी हमारे रक्तमें ट्राइग्लिसराइड्स की मात्रा बढ़ सकती है.

टेबल पर बैठकर करेवाले काम, नौकरी, धंधा या व्यवसाय होने के कारण, आधुनिक जीवन मे घूमने फिरने या श्रम का अधिक कार्य ना होने के कारण हमेशा मोटापे का खतरा बना रहता है और यह एक दम से ना होकर धीरे धीरे होता है. इसकी गंभीरता जब समज आती है तब तक मोटापा शरीर को घेर लेता है. बाद मे दैनिक जीवन का कार्य छोड़कर शरीर पे ध्यान केन्द्रीत करना अत्यंत कठिन हो जाता है. मोटापे का ताना लोगो से सुनकर दुःख का भाव मन ही मन मे उठने लगता है.

मोटापा किसी भी उम्र में, यहाँ तक कि छोटे बच्चों में भी हो सकता है. लेकिन बढ़ते उम्र में हार्मोन में परिवर्तन और कम सक्रिय जीवनशैली मोटापे के खतरे को बढ़ाती है. पर्याप्त नींद न लेना या अधिक नींद लेने से भूख बढ़ाने वाले हार्मोन में बदलाव हो सकता है और दवाओं में कुछ अवसादरोधी, दौरे-विरोधी, मधुमेह, एंटीसाइकोटिक और स्टीयरॉइड वजन बढ़ाने के लिए जिम्मेदार मानी जाती है. तो समय से जागकर मोटापा बालक, स्त्री-पुरुष सभी के लिए कभी गंभीर प्रश्न ना बने और अगर आप मोटापे का शिकार हो भी चुके हो तो त्रिफला आपके लिए रामबाण औषधि के रूपमे कार्य कर सकती है.

5) शरीर से विषैले तत्वो को दूर करने के लिए (डिटॉक्सिफिकेशन)

शरीर में जमा टॉक्सिक यानी विषैले तत्व को बाहर निकालने की प्रक्रिया को डिटॉक्सिफिकेशन (Detoxification) कहते हैं. प्राचीन काल से ही त्रिफला चूर्ण का इस्तेमाल डिटॉक्सीफिकेशन के लिए किया जाता रहा है Link 17.

एंटीऑक्सीडेंट (Anti-Oxidant) मतलब ऐसे पदार्थ जो हमारे शरीर में बननेवाले ऑक्सीडेंट **(Oxidant)** या फ्री रेडीकल **(Free Radical)** को संतुलित करते है. ऑक्सीडेशन **(Oxidation)** शरीर की एक जरुरी नैसर्गिक प्रक्रीया है जिसमे शरीर में वातावरण, खानपान या अन्य कारणोंसे कोई तकलीफ या रिएक्शंस आती है तो शरीर अपनी रक्षा के लिए जरुरी ऑक्सीडेंट्स निर्माण करता है. ये ऑक्सीडेंट्स या फ्री रेडिकल्स शरीर में इन्फेक्शन को नियंत्रित करने के काम में आते है और इनकी जरुरत हमारे शरीर को होती ही है. लेकिन **अगर "ऑक्सीडेंट्स की मात्रा" शरीर में अधिक हो जाती है तो ये हमारे शरीर की कोशिकाओं को या उसके डीएनए (DNA) को बड़ा नुकसान पहुंचा सकते है, जिससे शरीर में केन्सर जैसे गंभीर रोग होने की संभावना बढ़ जाती है. इसके अलावा डायबिटीस, हाइपरटेंशन, हार्ट प्रॉब्लम, आर्थराइटिस यानी हड्डियों के जोड़ में दर्द या सूजन की बीमारी, उम्र बड़ी दिखना (एजिंग) या शरीर के अन्य भागो में सूजन का होना, चमड़ी का ख़राब होना, चमड़ी की विविध बीमारिया या बालो की समस्या भी पैदा हो सकती है.**

पर्यावरण, दूषित भोजन और कॉस्मेटिक्स की वजह से शरीर के अंदर पहुंच चुके विषैले तत्व विभिन्न अंग जैसे की किडनी, लंग्स और लिवर के कार्य को प्रभावित कर दूषित करते रहते है. तो जैसे हम अपने शरीर को बहार से स्वच्छ रखते है और बरोबर सफाई करते है, उसी तरह से समय-समय पर शरीर के अंगो को डिटॉक्सीफाई करना जरूरी होता है, जिसमें त्रिफला चूर्ण मदद कर सकता है, क्योंकी उसमे एंटी-ऑक्सीडेंट प्रभाव पाया जाता है. Link 18.

6) वायरल, बैक्टीरियल और फंगल इन्फेक्शन से लड़ने के लिए

त्रिफला चूर्ण में एंटी-वायरल, एंटी-बैक्टीरियल, एंटी-फंगल और एंटीपायरेटिक गुण पाए जाते है जो इन्फेक्शन से लड़ने मे मददगार साबित हो सकता है. **एंटी-वायरल (Antiviral), एंटी-बैक्टीरियल (Antibacterial)** गुण एक ओर सूक्ष्म जीवाणुओं से शरीर को बचाने में मदद करता है, तो दूसरी ओर **एंटीपाएरेटिक (Antipyretic)** गुण बुखार से शरीर को बचाने में मदद कर सकता है. Link 19, Link 20, Link 21.

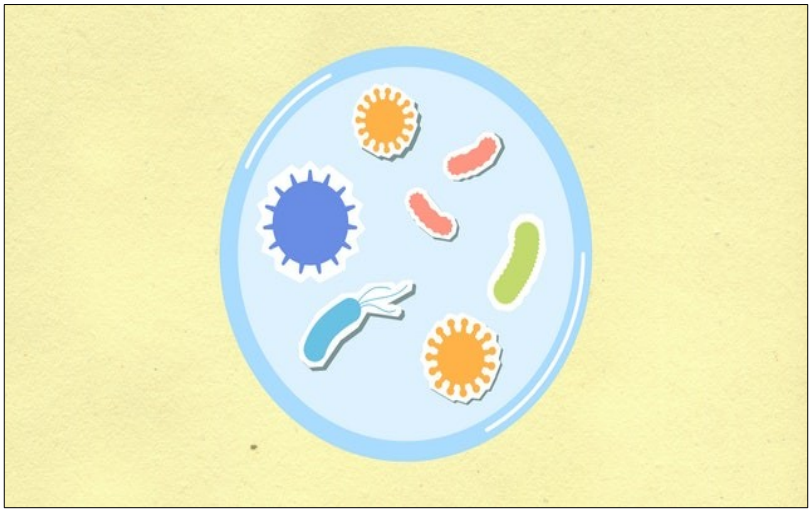

रिसर्च के अनुसार हमारे शरीर में अलग अलग मार्गो से दाखिल होनेवाले विभिन्न ग्राम पॉजिटिव (Gram Positive) और ग्राम नेगिटिव (Gram Negative) बैक्टीरिया के विरुद्ध लड़ने के लिए त्रिफला प्रभावी औषध मानी गयी है Link 22. विज्ञान की भाषा मे ग्राम पॉजिटिव वे बैक्टीरिया होते हैं जो ग्राम स्टेन टेस्ट को सकारात्मक परिणाम देते हैं और क्रिस्टल वायलेट का दाग उठाते हैं. जबकि वे बैक्टीरिया जो क्रिस्टल वायलेट रंग को बनाए रखने में सक्षम नहीं होते हैं और ग्राम स्टेन टेस्ट को नकारात्मक परिणाम दिखाते हैं उसे ग्राम-नेगेटिव बैक्टीरिया कहा जाता है. जीतने भी प्रकार के इन्फेक्शन फैलानेवाले वाइरस, बेक्टेरिया या फंगल इन्फेक्शन हमारे शरीर में आते है, उनका नाश करने के लिए हमारे शरीर के पास ऑक्सीडेशन ही एक मात्र विकल्प है. तो ऑक्सीडेशन प्रक्रीया को शरीर को अपनी रक्षा के लिए रोकना संभव नहीं है, लेकीन अगर हम अधिक फ्री रैडिकल्स को नियंत्रित नहीं करते तो भी हमारे जीवन के लिए बड़ा घातक भी साबित हो सकता है और शरीर के महत्वपूर्ण अंगो को नुकसान भी पहोचा सकता है.

7) गैस, एसिडिटी, कब्ज, आंत, बवासीर, पाचन संबंधी रोगो के लिए

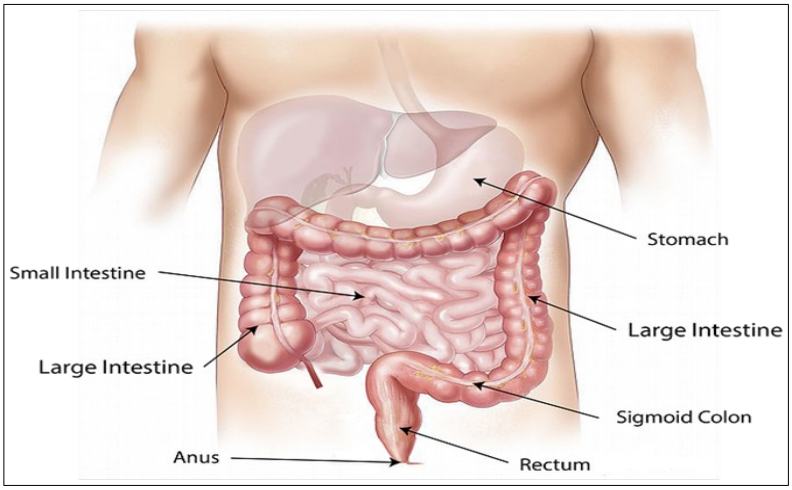

त्रिफला के औषधीय गुण पाचन शक्ति में सुधार कर पेट से संबंधित परेशानियों से राहत दिलाने में मदद कर सकते हैं. खाने को अच्छे से पचाने के साथ ही त्रिफला शरीर में खाने को अवशोषित करने में भी मददगार बताई गयी है Link 23.

त्रिफला पेट से संबंधित अन्य समस्याओं जैसे **कब्ज और इर्रिटेबल बाउल सिंड्रोम (Irritable Bowel Syndrome)** को भी ठीक कर सकती है **Link 24. इर्रिटेबल बाउल सिंड्रोम एक आम विकार है, जो बड़ी आंत (कोलन) को प्रभावित करता है. यह आमतौर पर ऐंठन, पेट दर्द, सूजन, गैस, दस्त और कब्ज का कारण बनता है.**

"इरिटेबल बॉवेल सिंड्रोम" के कई कारण हैं जिनमे से एक है आंत की मांसपेशियों में संकुचन **(Contractions)**. हमारे आंत की दीवार मांसपेशियों की परत से मिलकर बनी होती है. जब हम भोजन करते हैं तो भोजन को पाचन तंत्र में भेजने की क्रिया के दौरान ये मांसपेशियां सिकुड़ती हैं, लेकिन जब मांसपेशियां सामान्य से अधिक सिकुड़ जाती हैं तो पेट में गैस बनने लगती है और सूजन आ जाती है जिसके कारण आंत कमजोर हो जाती है और भोजन को पाचन तंत्र में भेज नहीं पाती है. इसके कारण व्यक्ति को डायरिया होने लगता है और इर्रिटेबल बाउल सिंड्रोम की समस्या हो जाती है.

अधिकतर रोगियों में तनाव के समय यह समस्या अधिक रहती है. तनाव होने पर आम तौर पर एड्रिनल ग्रंथियों से **एड्रेनैलिन** और **कॉर्टिसॉल** नाम के हार्मोनों का स्राव होता है. तनाव की वजह से पूरे पाचनतंत्र में जलन होने लगती है जिससे पाचन नली में सूजन आ जाती है और इसका नतीजा यह होता है कि पोषक तत्वों का शरीर के काम आना कम हो जाता है. महिलाओं में हार्मोनल बदलाव भी इरिटेबल बॉवेल सिंड्रोम की वजह से हो सकता है. कई महिलाओं में यह समस्या माहवारी के दिनों के

आस-पास बढ़ जाती है. कई बार पेट में बैक्टीरियल इंफेक्शन के कारण भी इरिटेबल बॉवेल सिंड्रोम हो सकता है. माइल्ड सेलिएक डिजीज से आंतों को नुकसान पहुँचने के कारण इरिटेबल बॉवेल सिंड्रोम के लक्षण दीखते है.

त्रिफला में मौजूद **टेनीक एसिड (Tannic Acid)** और **गेलीक एसिड (Gallic Acid)** नामक तत्व पाचन संबंधी समस्याओ से निजाद पाने के लिए अत्यंत प्रभावी और लाभकारी माने गए हैं Link 25. इसके अलावा मुलेठी में भी शोध के अनुसार **डिमल्सन्ट (Demulcent) और इमोलिएंट (Emollient)** गुण पाये जाते है, जो पेट में ऐंठन, सूजन और जलन को कम करने में मदद कर सकता है. इसका सेवन जठरांत्रिय यानी **गैस्ट्रोइन्टेस्टनल (Gastrointestinal)** स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है Link 26.

8) पेट का अल्सर और घाव भरने के लिए

त्रिफला में एंटी-इंफ्लेमेटरी **(Anti-Inflammatory)** गुण पाये जाते हैं, जो इंफ्लेमेशन यानी सूजन की समस्या को कम कर सकता है. एक अध्ययन में कहा गया है कि इसमें मौजूद मेथनॉल एक्सट्रैक्ट **(Methanol Extract)** सूजन को दूर करने में मददगार पाया गया है Link 27, Link 28. **शरीर में लंबे वक्त तक सूजन से गठिया, डायबिटिज, कैंसर और हृदय से जुड़ी बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है जिसके बारे में पूरी जानकारी इस रिसर्च से ली जा सकती है.**

कई लोगो को अक्सर पेट में सामान्य जलन या दर्द रहता है जिसके पीछे के कई कारण हो सकते है पर अधिक या लम्बे समय तक ये रहने का एक कारण है पेट में अल्सर. **पेट का अल्सर, एक तरह का घाव है, जो पेट की सतह या छोटी**

आंत के पहले हिस्से डिओडेनम (Duodenum) में होता है. अल्सर तब बनता है, जब भोजन को पचाने में मदद करने वाला एसिड पेट की दीवारों और छोटी आंत को नुकसान पहुंचाने लगता है. पेट में जलन होना इसका सबसे आम लक्षण है. पेट के अल्सर को पेप्टिक अल्सर, डुओडेनल अल्सर, गैस्ट्रिक अल्सर या मात्र अल्सर भी कहा जाता है. एंटी बैक्टीरियल, एंटी मिक्रोबायल और एंटी ऑक्सीडेंट जैसे गुणों से भरपूर होने के कारण त्रिफला को अल्सर मिटाने तथा शरीर के संक्रमित घावों को भरने में प्रभावी मानी गई है. **Link 29**, **Link 30**

मुलेठी भी शरीर में किसी प्रकार की सूजन को ठीक करने के लिए उपयोगी मानी जाती है, क्योकि रिपोर्ट के अनुसार मुलेठी में एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण पाया जाता है जो सूजन से लड़ने में कारगर माना जाता है **Link 31**.

9) आंखों के स्वास्थ्य के लिए

आंखें शरीर का नाजुक अंग होती हैं जिसके बिना इंसान के सुखी जीवन की कल्पना भी मुश्किल है. इसलिए हर छोटी से छोटी बीमारी से आंखों को बचाना अति आवश्यक है. त्रिफला आंखों के स्वास्थ्य के लिए टॉनिक का काम कर सकता है **क्योकि त्रिफला विटामिन C और फ्लेवनॉइड्स (Flavonoids) से भरपूर है. यह आंख की पुतली (लेंस) में ग्लूटाथिओन (Glutathione) जो की एक तरह का एंटीऑक्सीडेंट है उसके स्तर को बढ़ा सकता है. शोध के अनुसार त्रिफला मोतियाबिंद (Cataract) के जोखिम को कम करने में भी सहायक मानी जाती है** **Link 32**. हम अकसर अपने शरीर, त्वचा, बालों और अंदरूनी अंगों का पूरा ख्याल रखते हैं, लेकिन आंखों की देखभाल करना जरूरी नहीं समझते हैं. जबकि स्वस्थ रहने के लिए आंखों का ख्याल सबसे पहले रखना जरूरी है. त्रिफला आँखों को अच्छा सुरक्षा कवच प्रदान करती है.

10) अनिंद्रा, तनाव और चिंता को दूर करने के लिए

त्रिफला में एंटीस्ट्रेस (Anti-stress) प्रभाव पाए जाते हैं, जो तनाव को कम करने का काम कर सकता है. तनाव को कम करके यह इसकी वजह से होने वाली चिंता से भी राहत दिलाने में भी मदद कर सकता है Link 33.

अच्छी नींद के लिए मुलेठी का सेवन भी उतना ही फायदेमंद है. रिपोर्ट के अनुसार, मुलेठी में **ग्लाइसीर्रिजिन (Glycyrrhizin)** नामक यौगिक पाया जाता है, जिसका सेवन करने से अनिद्रा जैसी समस्या को दूर करने में मदद मिलती है **Link 34**. वहीं अन्य एक शोध में मुलेठी की जड़ का **इथेनॉल अर्क (Ethanol Extract)** नींद का समय बढ़ाने में मददगार साबित हुआ है **Link 35**.

अच्छी नींद ना सिर्फ अच्छी सेहत का बल्की असली सुख का भी संकेत देती है. अपर्याप्त नींद **न्यूरोएंडोक्राइन (Neuroendocrine)** यानी हार्मोन बनाने वाली कोशिकाओं और चयापचय पर बुरा प्रभाव डाल सकती हैं. इससे भूख में गड़बड़ी और मधुमेह की समस्याएं भी हो सकती हैं. इसके अलावा नींद की कमी से मस्तिष्क की खराब कार्यप्रणाली, शरीर में कम ऊर्जा का संचार और अनिद्रा की समस्या का कारण भी बन सकती है. नींद न आने या कम आने की समस्या को मेडिकल भाषा में **इंसोमनिया (Insomnia)** कहा जाता है. नींद की कमी की समस्या एक ऐसी स्तिथि है जो देखने में आम है, लेकिन अधिक समय से रहने पर गंभीर समस्या पैदा कर सकती है. नींद नहीं पुरे होने से व्यक्ति के मष्तिस्क की एकाग्रता न होना और रोजाना के कामो पर भी प्रभाव पड़ने लगता है. इससे शरीर की रक्षा प्रणाली कमजोर होने लगती है और व्यक्ति के बीमार पड़ने की संभावना बढ़ जाती है. इसिलए अनिंद्रा, तनाव और चिंता को दूर करने के लिए त्रिफला को अक्सीर औषधि माना गया है.

11) मस्तिष्क (न्यूरो) संबंधी रोगो के लिए

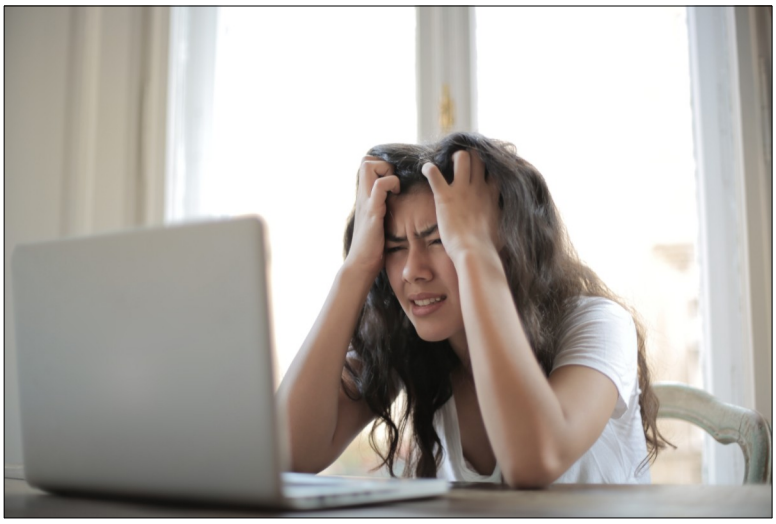

त्रिफला में **न्यूरोप्रोटेक्टिव (Neuroprotective)** यानी मस्तिष्क या चेतातंत्र से जुडी बीमारियों से लड़ने का गुण पाया जाता है और इसके लिए त्रिफला में मौजूद **गेलिक एसिड (Gallic Acid)** प्रभावी तत्व माना गया है **Link 40**. त्रिफला में मौजूद **ओमेगा (Omega)-3 और ओमेगा (Omega)-6 फैटी एसिड शरीर में अच्छे कोलेस्ट्रॉल (HDL) को बढ़ाने और बुरे कोलेस्ट्रॉल (LDL) को कम करने में तो सहायक है ही** लेकिन एक रिसर्च के अनुसार ओमेगा 3 फैटी एसिड **डिप्रेशन** और **सिजोफ्रेनिया (Schizophrenia)** यानी भ्रमरोग की समस्या को कम करने में भी सहायक है. डिप्रेशन में व्यक्ति का दुख, क्रोध, निराश या फ्रस्टेशन दीखता है और सिजोफ्रेनिया एक सायकोटिक विकार है जिसमे रोगी ऐसी चीजों को देखने, सुनने और विश्वास करने लगते हैं, जो वास्तविक में हैं ही नहीं **Link 41**.

मस्तिष्क के सक्रिय रूप से कार्य करने में भी मुलेठी अत्यंत लाभकारी मानी जाती है. मुलेठी में **ग्लाइसीराइजिक एसिड (Glycyrrhizic acid)** नामक कार्बनिक यौगिक पाया जाता है, जिसमें मुख्य रूप से न्यूरोप्रोटेक्टिव गुण होता है. यह गुण मस्तिष्क के लिए फायदेमंद माना जाता है. यह ऑक्सीडेटिव और सूजन के कारण मस्तिष्क होने वाली क्षति से बचाने में मदद कर सकता है **Link 42**.

किसी भी व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य का संबंध उसकी भावनात्मक (इमोशनल), मनोवैज्ञानिक (साइकोलॉजिकल) और सामाजिक (सोशल) स्थिति से जुड़ा होता है. मानसिक स्वास्थ्य से व्यक्ति के सोचने, समझने, महसूस करने और कार्य करने की

क्षमता प्रभावित होती है. वैसे तो मानसिक स्वास्थ्य विकार कई प्रकार के होते हैं जो आगे जाके गंभीर रूप ले सकते है.

हर व्यक्ति के परिवार का मानसिक स्वस्थ अच्छा रहे तो ही जीवन में प्रगति या इच्छित वस्तुओ पे जित पायी जा सकती है. तो मानसिक स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए दैनिक जीवन में त्रिफला का सेवन गुणकारी साबित हो सकता है.

12) दांत-मसूड़ों में दर्द, मुंह की दुर्गंध-इन्फेक्शन मिटाने के लिए

त्रिफला के सेवन से दांतों से जुड़ी परेशानी, मसूड़ों में दर्द और मुंह से बदबू आने जैसी समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है. **त्रिफला में एंटी-माइक्रोबियल (Anti-microbial) गुण होते हैं, जो मुंह में बैक्टीरिया को पनपने से रोकने में मदद कर सकते हैं. त्रिफला में एंटीकेरीस (Anti-caries) गुण पाए जाते है जो दॉतो में सड़न से बचाने और दांतो के क्षय को रोकने के लिए उपयोगी माने गए है.** इसके अलावा, मसूड़ों से निकलने वाले खून की समस्या को भी कम करने में त्रिफला को फायदेमंद माना जाता है. ओरल हेल्थ यानी मुंह के स्वास्थ्य के लिए त्रिफला चूर्ण को पानी में डालकर इससे कुल्ला किया जा सकता है Link 43, Link 44. माउथ वॉश की तरह इसका उपयोग करने से मसूड़ों में संक्रमण व दर्द की समस्या कम हो सकती है Link 45, Link 46.

मुलेठी का सेवन भी मुंह के स्वास्थ्य में मददगार है. मुलेठी में **ग्लाइसीर्रिजिन (Glycyrrhizin), ग्लेब्रिडिन (Glabridin), लाइसोक्लेकोन ए (Licochalcone A), लाइसोरिसिडिन (Licoricidin) और लाइकोरिसोफ्लेवन ए (Licorisoflavan A)** जैसे

बायोएक्टिव यौगिक पाए जाते हैं. मुलेठी का सेवन करने से इन यौगिकों का प्रभाव ओरल स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है जो यौगिक मुंह से जुड़े विभिन्न रोगों के उपचार में भी मददगार साबित हो सकते हैं **Link 47**.

दांत का दर्द अत्यंत कष्टदायी हो सकता है जिसमे कुछ भी चबाते समय दांतों में दर्द होना या झनझनाहट महसूस होना, ठंडा या गर्म खाने पर संवेदनशीलता महसूस होना, दांतों से खून आना और मसूड़ों की पकड़ कमजोर पड़ना, जबड़े में और चेहरे पर सूजन आना ये सब शामिल है. जिस समय दांत का दर्द अति हो और डॉक्टर की मौजूदगी ना हो उस वक़्त पीड़ा सहन करना भी कठिन हो जाता है. त्रिफला से अपने दांतो और मसूड़ों को पहले से ही मजबूत और स्वस्थ रखा जाए तो ऐसी समस्या पैदा होने का खतरा ताला जा सकता है और उससे होनेवाले खर्च को भी बचा जा सकता है.

13) सेक्स संबंधी समस्या और पुरुषों की प्रजनन क्षमता के लिए

सेक्स लाइफ में आनेवाली बड़ी समस्याओ का एक बड़ा कारण **पाचनतंत्र (Digestive System)** की खामी भी है, जिसके कारण शरीर में ऊर्जा का निर्माण ठीक से नहीं हो पाता. पाचन संबंधी समस्याओ को ठीक करने में त्रिफला को असरदार माना जाता है **Link 48**. **त्रिफला शरीरी में चयापचय की क्रिया को बेहतरीन बनाने में मददगार है जिससे भोजन ठीक से पचता है और भोजन के द्वारा शरीर के विकास के लिए जरुरी पोषकतत्वों की पूर्ति हो पाती है.** ऊर्जावान शरीर ही खुद को और अपने साथी को सेक्स लाइफ में पूर्ण संतुष्टि दे सकता है. जब कोई पुरुष संभोग के समय अपने लिंग को खड़ा नहीं रख पाता या स्तंभन लाने में नाकामयाब हो जाता है, उस स्थिति को **इरेक्टाइल डिसफंक्शन (Erectile dysfunction)** या स्तंभन दोष कहते है.

मुलेठी में पुरुषों की प्रजनन क्षमता को बेहतर बनाने के गुण पाए जाते है. एक वैज्ञानिक रिसर्च के अनुसार, मुलेठी की जड़/तने का सेवन व्यक्ति के पूरे शरीर को प्रभावित करता है. साथ ही यह पुरुषों में **टेस्टोस्टेरोन (Testosterone)** जैसे हार्मोन के स्तर को बढ़ाने में भी मदद कर सकता है, जो प्रजनन क्षमता के लिए लाभदायक हो सकता है **Link 49**.

टेस्टोस्टेरोन (Testosterone) पुरुषों में पाया जाने वाला हार्मोन है जो मांसपेशियों को विकसित करने और प्रजनन ऊतकों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. इसकी कमी का सीधा असर पुरुषों की घटती प्रजनन क्षमता और हड्डियों की कमजोरी के रूप में सामने आता है. प्रोजेस्टेरोन (Progesterone) नामक हार्मोन महिलाओं में पाया जाता है जो गर्भधारण में मदद करता है और मासिक चक्र को भी नियमित रखता है. जब कोई महिला गर्भवती नहीं होती है, तो प्रोजेस्टेरोन का स्तर नीचे चला जाता है और मासिक चक्र शुरू हो जाता है. **प्रोलेक्टिन (Prolactin)** भी पिट्यूटरी ग्रंथि द्वारा स्रावित होने वाला हार्मोन है जो बच्चे के जन्म के बाद माँ को उसे स्तनपान कराने में सक्षम बनाने में मदद करता है, साथ ही स्त्री की प्रजनन क्षमता को भी यह बढ़ाता है. लिंग का बड़ा या खड़ा होना रक्त के प्रवाह की वजह से होता है. स्त्री पुरुष दोनों में स्तंभन दोष या सैक्स में मन न लगने का कारण तनाव, डिप्रेशन या एंग्जायटी से भी जुड़ा हो सकता है. स्त्री-पुरुष सभी में पाचन संबंधी विकार दूर होने पर ही शरीर में शुद्ध धातु निर्माण की प्रक्रिया गतिवान हो सकती है और इसे बनाये रखने में त्रिफला बड़ा लाभ पहुंचा सकती है. इसका विस्तृत वर्णन आयुर्वेद अनुसार लेख में आगे दिया गया है. त्रिफला को नियमित जीवनमे शामिल कर सेक्स लाइफ को तंदुरस्त बनाने की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है.

14) किडनी की रक्षा और मूत्र संबंधित समस्याओ में लाभकारी

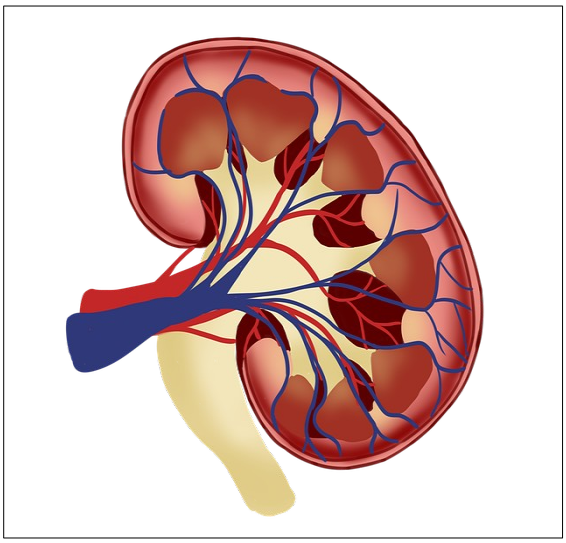

त्रिफला में नेफ्रोप्रोटेक्टीव (Nephroprotective) प्रभाव यानी किडनी से संबंधित समस्याओंसे लड़ने का गुण पाया गया है जो किडनी (गुर्दो) को होनेवाले नुक्सान से बचाता है और मूत्र से जुडी समस्याओं को दूर करने के लिए भी प्रभावी पाया गया है Link 50.

मुलेठी में भी **एंटीऑक्सीडेंट (Anti-oxidant)** गुण होने के कारण उसे **रीनल (Renal)** यानी किडनी संबंधित गतिविधियों के लिए गुणकारी माना गया है **Link 51**.

हमारे शरीर में किडनी **(Kidneys)** की एक अहम भूमिका होती है. वे शरीर से अपशिष्ट और अतिरिक्त तरल पदार्थ **(Extra Fluid)** को बाहर निकालने में मदद करती हैं. इसके साथ ही ये पानी, लवण और खनिजों के हेल्दी बैलेंस को बनाए रखने के लिए एसिड को हटाने में भी मदद करती हैं. इस स्वस्थ संतुलन के बिना शरीर की नसें, मांसपेशियां और अन्य कोशिकाएं ठीक से काम नहीं कर सकते. ऐसे में किडनी की खास देखभाल करना जरूरी हो जाता है जिसमे त्रिफला रक्षक का काम कर सकती है.

15) जोड़ों के दर्द, आर्थराइटिस (गठिया) और गाउट में असरदार

अभी तक अनेको प्रकार के आर्थराइटिस की पहचान हो चुकी है, लेकिन इनमें से सबसे अहम ऑस्टियो आर्थराइटिस (Osteo Arthritis) और रुमेटॉइड आर्थराइटिस (Rheumatoid Arthritis) है. ज्यादातर लोग इन्हीं दो का शिकार होते हैं, लेकिन कुछ जगहों पे दिखनेवाला एक प्रकार और भी है जिसे गाउट (Gout) भी कहते है.

अर्थराइटिस एक ऐसी बीमारी है, जिसमें जोड़ों के अंदर मौजूद कोशिकाए नष्ट होने लगते हैं. यह एक **ऑटोइम्यून इंफ्लेमेटरी (Autoimmune Inflammatory)** स्थिति है. यह किसी भी व्यक्ति को तब होता है जब उसके शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली अपने ही **श्लेष ऊतकों (Synovial Tissues)** या जोड़ों की लाइनिंग में मौजूद स्वस्थ कोशिकाओं पर हमला करने लगती है जो ज्वाइंट्स में सूजन, दर्द और अकड़न का कारण बनती है. यह आमतौर पर शरीर के दोनों ओर हाथों, कलाई, टखनों और घुटनों में होता है. समय के साथ बार-बार सूजन बढ़ने पर जोड़ों को गंभीर नुकसान पहुंचा सकती है.

गाउट भी एक ज्वाइंट्स में सूजन से जुड़ी बीमारी है, लेकिन यह ऑटोइम्यून स्थिति नहीं है. बल्कि गाउट का कारण ब्लड में यूरिक एसिड का स्तर बढ़ना होता है. यूरिक एसिड कई खाद्य पदार्थों और पेय पदार्थो, खासतौर पर अधिक प्रोटीन युक्त आहार के जरिए आपके शरीर में प्रवेश कर सकता है. वहीं, कुछ दवाइयों के कारण भी शरीर में यूरिक एसिड की मात्रा बढ़ सकती है. दरअसल, ब्लड में मौजूद यूरिक एसिड क्रिस्टल के रूप में **सिनोवियल ऊतकों (Tissues)** में जमा होने लगते हैं, जिसकी वजह से पैरों के अंगूठों पर अचानक से सूजन, लालिमा और दर्द की शिकायत बढ़ जाती है. इस स्थिति में मरीज को काफी असहनीय दर्द हो सकता है. धीरे-धीरे पैरों के अंगूठों का दर्द और सूजन शरीर के अन्य हिस्सों जैसे- हाथों के ज्वॉइंट्स और कोहनी में भी हो सकता है.

इस तरह त्रिफला का नियमित सेवन जोड़ों के दर्द, आर्थराइटिस (गठिया) और गाउट में अत्यंत लाभदायी साबित हो सकता है.

16) केन्सर से बचाव और केन्सर के इलाज में प्रभावी

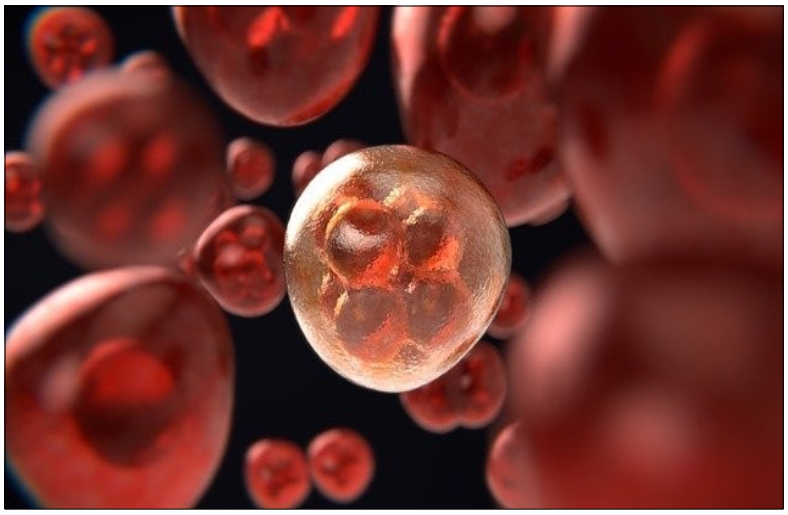

त्रिफला में एंटी केन्सर (Anti Cancer) यानी केन्सर विरोधी गुण पाए जाते है, जो केन्सर से लड़ने के लिए और केन्सर के जोखिम को कम करने में प्रभावी माने जाते है Link 52.

माउथवॉश की तरह इस्तेमाल करने से त्रिफला युवा वयस्कों में तंबाकू की वजह से होने वाले मुँह के केन्सर सेल्स को पनपने से रोकने में असरदार पाया गया है. अध्यहन में कहा गया है कि त्रिफला में **एंटीनियोप्लास्टीक (Antineoplastic)** एजेंट होते हैं जो ट्यूमर (Tumor) को बढ़ने से रोक सकता है. यह गुण स्त्रियों में ब्रेस्ट (Breast) यानी स्तन केन्सर तथा पुरुषो में **प्रोस्टेट (Prostate)** ग्रंथि का केन्सर जो ग्रंथि मूत्राशय के ठीक नीचे स्थित है, यह दोनो तरह के कॅन्सर सेल्स पर त्रिफला प्रभावी पायी गयी है. त्रिफला के एंटीनियोप्लास्टीक गुण कोलन यानी आंत का जो सबसे बड़ा भाग है उसके कॅन्सर और **अग्न्याशय (Pancreas)** के केन्सर सेल्स पर भी उतना ही प्रभावी माना गया है.

हमारे शरीर में अरबों कोशिकाएँ हैं, जिनमे निरंतर पुरानी कोशिकाएँ मृत हो जाती हैं और नई कोशिकाएँ बनती रहती हैं. यहीं प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है, पर जब किसी कारण इस प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न हो जाए और कोशिकाओं की वृद्धि असामान्य हो जाए, तब ये शरीर में गांठ का रूप ले लेती हैं, जिसे ट्यूमर कहते हैं. डॉक्टरी भाषा में इसे **नियोप्लाज्म (Neoplasm)** कहा जाता है. ट्यूमर शरीर के ऊतकों (Tissues) की असामान्य वृद्धि (Abnormal Growth) है. मतलब की शरीर मे जब असामान्य कोशिकाएं (Cells) किसी जगह संग्रहित हो जाती है, तो ऊतकों (Tissues) का एक समूह बन जाता है जो ट्यूमर का रूप ले लेता है. ये कोशिकाएं असामान्य रूप से बढ़ते रहती है और अधिक से अधिक कोशिकाओं को अपने समूह में जोड़ती जाती है. ये ट्यूमर कोशिकाएं ठोस (Solid) और द्रव्य (Liquid) से भरी होती है.

ट्यूमर से डरने की आवश्यकता नहीं है, परंतु सावधानी जरुरी मानी जाती है. **बिनाइन ट्यूमर (Benign Tumor)** केन्सर रहित ट्यूमर है, जो अपनी उत्पत्ति की जगह से आगे नहीं फैलता है. लेकिन **मलिगनेंट ट्यूमर (Malignant Tumor)** केन्सरयुक्त ट्यूमर है, जो शरीर के दूसरे हिस्सों में भी फैलने का खतरा बहुत अधिक होता है. त्रिफला को अपने जीवन में शामिल कर कॅन्सर जैसे गंभीर रोग शरीर मे आने से पहले ही उसकी रक्षा हो सकती है तथा गंभीर रोग के इलाज के रूप में भविष्य में होनेवाले लाखो रुपए के नुक्सान से भी बचा जा सकता है.

17) महिलाओमें रजोनिवृत्ति (मेनोपॉज), हार्मोन असंतुलन और पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम (PCOS) के इलाज में उपयोगी

Polycystic Ovarian Syndrome (पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम) या PCOS महिलाओं के अंडाशय (Ovary) से जुड़ी एक गंभीर बीमारी है, जिसकी वजह से महिलाओं के शरीर में हार्मोन का संतुलन बिगड़ जाता है और गर्भधारण करना मुश्किल हो जाता है. **इस अवस्था में महिलाओं के शरीर में फीमेल (स्त्री) हार्मोन की बजाय मेल (पुरुष) हार्मोन (एंड्रोजन) का स्तर ज्यादा बढ़ने लगता है.**

पीसीओएस अंतःस्रावी तंत्र **(Eendocrine System)** का एक चयापचय विकार **(Metabolic Disorder)** है. मानव शरीर को दिन के कार्यों मे, भोजन पचाने, रक्त परिसंचरण, श्वास और हार्मोनल संतुलन आदि कार्यों के लिए उचित मात्रा में ऊर्जा चाहिए होती है जो कि उसे भोजन से मिलती है. मनुष्य को अपने शरीर की बनावट के हिसाब से ऊर्जा की ज़रूरत होती है और यह ऊर्जा चयापचय क्रिया से प्राप्त होती है.

पीसीओएस होने पर अंडाशय में कई गांठे (सिस्ट) बनने लगती हैं. ये गांठे छोटी छोटी थैली के आकार की होती हैं जिनमे तरल पदार्थ भरा होता है. धीरे धीरे ये गांठे बड़ी होने लगती हैं और फिर ये ओव्यूलेशन की प्रक्रिया में रुकावट डालती हैं. ओव्यूलेशन की प्रक्रिया ना होने की वजह से ही **पीसीओएस से पीड़ित महिलाओं में गर्भधारण की संभावना कम रहती है. इसके अलावा महिलाओं के पीरियड्स में अनियमितता (Irregular Periods), वजन का बढ़ना और पेट में दर्द जैसी स्थितियों का सामना भी करना पड़ता सकता है**. पीसीओएस होने पर महिलाओं में टाइप-2

डायबिटीज होने की संभावना भी बढ़ जाती है. मुलेठी के अर्क को हार्मोन संतुलन और विशेष रूप से पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम (PCOS) के रोग संबंधी लक्षणों को दूर करने में प्रभावी पाया गया है **Link 53**.

मेनोपॉज (Menopause) या रजोनिवृत्ति ऐसी स्थिति है, जो महिलाओं को 45 से 55 वर्ष की उम्र में हो सकती है. ऐसी स्थिति में महिलाओं को पीरियड्स आना बंद हो जाते हैं. रजोनिवृत्ति होने के कई साल पहले से शरीर एस्ट्रोजेन और प्रोजेस्ट्रोन हार्मोन का निष्कासन करना धीरे-धीरे कम करने लगता है. ये हार्मोन मासिक धर्म होने और गर्भधारण करने में मदद करते हैं. इसके कमी से पीरियड्स होना बंद हो जाता है और मां बनने की क्षमता भी खत्म होने लगती है. मेनोपॉज के साथ ही हॉट फ्लैश **(Hot Flash)** का अनुभव होने लगता है, जिसमे महिला के चेहरे, गर्दन या सीने पर गर्माहट का अहसास होता है. मुलेठी में **फाइटोएस्ट्रोजन (Phytoestrogen)** नामक प्रभाव पाया जाता है, जिसका अर्क के रूप में सेवन रजोनिवृत्ति के बाद होने वाली हॉट फ्लैश जैसी समस्या में काफी हद तक आराम पहुंचा सकता है **Link 54**. इस तरह महिलाओ की उपर्युक्त सभी समस्यामो में त्रिफला का सेवन वरदान साबित हो सकता है.

18) त्वचा को सेहतमंद, चमकदार और जवां रखने के लिए

त्रिफला में मौजूद एंटी-ऑक्सीडेंट गुण न सिर्फ त्वचा की कोशिकाओं के लिए रक्षक का काम करते हैं, बल्कि त्वचा की देखभाल कर उसे स्वस्थ बनाए रखने में मदद कर सकते हैं. यह एंटी-ऑक्सीडेंट गुण स्किन एजिंग को रोकने में मदद करने के साथ ही त्वचा को बीमारियों से बचाए रखने में भी सहायक माना गया है **Link 55**.

इसके अलावा, त्वचामें खुजली व जलन जैसी परेशानी से छुटकारा दिलाने में भी त्रिफला चूर्ण सहायक हो सकता है Link 56.

मुलेठी में भी पाया जानेवाला यौगिक **लिक्विरेटिन (Liquiritin)** त्वचा पर मौजूद भूरे रंग के पिगमेंट को फैलाकर त्वचा को चमकदार बनाने में मददगार माना गया है. इसके अलावा, मुलेठी मे **ग्लैब्रेन (Glabrene)**, **आइसोलिकिरिटजेनिन (Isoliquiritigenin)**, **लाइसुरसाइड (Licuraside)**, **आइसोलिकिरिटिन (Isoliquiritin)** और **लाइसोक्लेकोन ए (Licochalcone A)** जैसे बायोएक्टिव यौगिक पाए जाते हैं. ये सभी यौगिक **टायरोसिन गतिविधि (Tyrosinase Activity)** को रोकने में मदद कर सकते हैं Link 57. टायरोसिन गतिविधि, त्वचा के रंग में होने वाला एक प्रकार का दोष है, जिसमे मुलेठी **एंटी-एजिंग (Anti-Aging)** क्रीम के रूप में भी काम कर सकती है Link 58.

उम्र बढ़ना **(Aging)** एक नैसर्गिक प्रक्रिया है, जिसके चलते शरीर के अंगों और उनकी रूख-रेखा में बदलाव आने लगता है. चेहरे पर उम्र की महीन रेखाएं **(Fine Lines)** घिर आती जिसमें ऊतकों **(Tissues)** और कोशिकाओं **(Cells)** में सिकुड़न आने लगती हैं. त्वचा की इन रेखाओं को झुर्रियां **(Wrinkles)** कहा जाता है. इसी तरह त्वचा पर जवानी वाली रौनक नहीं रहती और चेहरे का रंग भी डल होने लगता है. पर परेशानी तब आती है, जब लोगों में **उम्र से पहले एजिंग (Early Aging) शुरू हो जाती है.**

त्वचा से संबंधित समस्या विशेष रूप से महिलाओ को ज्यादा परेशानी देती है, क्योकि इससे शरीर की सुंदरता में कमी आने लगती है. उसके विपरीत साफ और चमकदार त्वचा व्यक्तित्व एवं सुंदरता मे वृद्धि कर हर किसी को आकर्षित करती है. धूल-मिट्टी और प्रदूषण भी त्वचा की समस्याओ को बढ़ाने के लिए जिम्मेदार हो सकते है.

उम्र बढ़ने पर त्वचा की सबसे ऊपरी परत **एपिडर्मिस (Epidermis)** पतले होने लगते हैं. यह त्वचा को पारदर्शी और पीला बनाता है, जिसके कारण त्वचा के नीचे की रक्त वाहिकाएं नजर आने लगती हैं. ये रक्त वाहिकाएं भी नाजुक हो जाती हैं, जो आसान घाव या रक्तस्राव का कारण बन सकती हैं. इसलिए झुर्रियों के साथ चेहरे पर नीली नसें भी नजर आने लगती हैं.

इसके अलावा **फोटो एजिंग (Photo Aging)** नामक एक प्रक्रिया में, सूरज की यूवी किरणें त्वचा में **इलास्टिन (Elastin)** नामक फाइबर को प्रभावित करती हैं और यह टूट जाती हैं, जिससे त्वचा शिथिल हो जाती है और झुर्रियां बढ़ने लगती हैं. साथ ही उम्र बढ़ने के साथ भौंहों और आंखों के आसपास की त्वचा भी सूख जाती है, जिससे आपकी महीन रेखाएं और चेहरे की सामान्य मांसपेशियों की हलचल चेहरे पर नजर आती हैं.

इस तरह त्रिफला का नियमित सेवन त्वचा की समस्याओ को दूर करने में और उसे जवा रखने में प्रभावी पाया गया है.

19) बालों को लंबा, घना और चमकदार बनाने के लिए

त्रिफला में उपयोग में आनेवाला आंवला ऐसा औषध है, जिसमें मौजूद गुण बालो के विकास के लिए प्रभावी माने जाते है Link 59. त्रिफला चूर्ण को गुनगुने पानी में मिलाकर उससे बाल धोने से डेन्ड्रफ की समस्या भी कम हो सकती है Link 60.

मुलेठी की जड़ से प्राप्त **हाइड्रो अल्कोहोलिक (Hydro Alcoholic)** अर्क भी बालो के विकास और स्वास्थ्य के लिए प्रभावी पाया गया है Link 61. बालों की समस्या को कम करने और बालों को स्वस्थ रखने के लिए हर्बल शैम्पू की तरह मुलेठी की जड़ का उपयोग स्केल्प **(Scalp)** यानी माथे के बाल और उसकी चमड़ी से

जुडी समस्याओं को कम करने में भी उपयोगी पाया गया है Link 62. मुलेठी का उपयोग बालों के लिए बनाए जाने वाले टॉनिक में किया जाता है. मुलेठी बालों को झड़ने से रोकने में भी मददगार पाई गयी है Link 63.

लंबे, घने व चमकदार बाल पाना लगभग हर महिला की इच्छा होती है. बाल झड़ना एक आम समस्या है, जो पुरुष हो या महिला, किसी को भी प्रभावित कर सकती है. इसके पीछे कई बाल झड़ने के कारण जिम्मेदार हो सकते हैं. बालों के झड़ने का एक प्रमुख कारण आनुवंशिक भी है. अगर परिवार में पहले किसी को बाल झड़ने की समस्या रही है, तो परिवार में किसी अन्य सदस्य को भी इसका सामना करना पड़ सकता है. शारीरिक या भावनात्मक तनाव के कारण भी बाल झड़ सकते हैं. इस तरह के बालों के झड़ने को **टेलोजेन एफ्लुवियम (Telogen Effluvium)** कहा जाता है. जब आप शैम्पू करते हैं, कंघी करते हैं या अपने हाथों को बालों में फेरते हैं तो मुट्ठी में बहुत सारे बाल एक साथ आ जाते हैं

इस तरह बालो की विविध समस्या से निजाद पाने के लिए और बालो के विकास के लिए त्रिफला का सेवन आपके लिए फायदेमंद साबित होगा.

20) चक्कर या मोशन सिकनेस के लिए

कभी-कभी लोगों को चक्कर आने की समस्या या फिर बस-गाड़ी में उल्टी आने की परेशानी होती है. उल्टी आने के साथ ही सिरदर्द की समस्या भी हो जाती है. इस स्थिति बचने के लिए त्रिफला का सेवन फायदेमंद हो सकता है. इस मोशन सिकनेस को कम करने में विटामिन-सी एक अहम भूमिका निभाता है, जो आवला में भरपूर मात्रा में पाया जाता है Link 64.

मोशन सिकनेस कोई बीमारी नहीं है, बल्कि वह स्थिति है जब हमारे दिमाग को भीतरी कान, आंख और त्वचा से अलग-अलग सिग्नल मिलते हैं जिससे सेंट्रल नर्वस सिस्टम दुविधा में पड़ जाता है. कई लोगों को कार, ट्रेन या एयरप्लेन में बैठते समय तेज सिरदर्द, चक्कर आने या उल्टी आने की समस्या होती है. इसे मोशन सिकनेस **(Motion Sickness)** कहते हैं. गर्भवती महिलाओं और बच्चों में ये सबसे ज्यादा देखने को मिलता है. मोशन की स्थिति तब पैदा होती है, जब आपकी आंखें और आपके कान का **अंदरूनी हिस्सा (Semicircular Canals)** दिमाग को मिक्स्ड सिग्नल्स देते हैं. ऐसे में कान के अंदरूनी हिस्से से जो गति आप महसूस करते हैं, वो जो आप देख रहे हैं, उससे अलग होता है. त्रिफला से शरीर को जरुरी विटामिन C की मात्रा की पूर्ति होने से मोशन सिकनेस जैसी परिस्थितियो से बचा जा सकता है.

मोशन सिकनेस को आप सी सिकनेस **(See Sickness)** या कार सिकनेस **(Car Sickness)** भी कह सकते हैं. मोशन सिकनेस **(Motion Sickness Symptoms)** की वजह से सिरदर्द, उबकाई, पसीना और चक्कर आने की समस्या हो सकती है. त्रिफला इन सारी समस्याओं से निजाद पाने में सहायक हो सकती है.

21) लिवर को स्वस्थ रखना और क्षति से बचाना

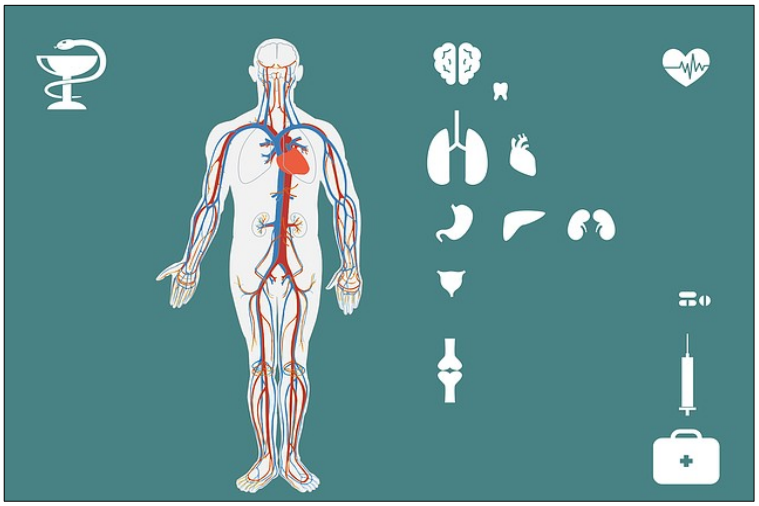

त्रिफला में **हेपिटोप्रोटेक्टीव (Hepatoprotective)** यानी लिवर को विषैले तत्वों के नुक्सान से बचानेवाले मूलयवान प्रभाव पाए गए है, जो त्रिफला में नैसर्गिक रूप से मौजूद **फीनॉलिक (Phenolic)** और **पॉलीफीनॉलिक (Polyphenolic)** तत्वों की बजह से माने जाते है. हेपिटोप्रोटेक्टीव और एंटी-ऑक्सीडेंट प्रभाव के लिए कोनसे तत्व असरदार है ये आगे खोज का विषय है **Link 65. अन्य शोध में भी लिवर को क्षति**

से बचाने के लिए त्रिफला में असरदार गुण पाया गया है जिसके लिए त्रिफला में मौजूद टेनिन तत्व को प्रभावी माना गया है Link 66.

मुलेठी में भी लिवर को डैमेज होने से बचाने वाला **हेपिटोप्रोटेक्टीव (Hepatoprotective)** प्रभाव पाया जाता है, जो एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटीऑक्सीडेंट प्रभाव को बढ़ाकर लिवर को क्षति यानी नुक्सान से बचाए रखने में असरदार पाया गया है Link 67. अर्क के रूप में मुलेठी का सेवन करने से **फैटी लिवर (Liver Steatosis)** से बचने में मदद मिल सकती है Link 68.

लिवर यानी यकृत हमारे शरीर का दूसरा सबसे बड़ा अंग है, जिसका प्रमुख काम खाने और पीने को एनर्जी और पोषकतत्वों (न्यूट्रिएंट्स) में तब्दील करना है. इसके अलावा ये खून से हानिकारक और विषैले पदार्थों को भी फिल्टर कर अलग करता है. किसी भी व्यक्ति के लिवर में वसा की मात्रा सामान्य से अधिक होने की स्थिति को फैटी लिवर कहा जाता है. फैटी लिवर उन स्वास्थ्य समस्याओं में से एक है, जिसमें रोगी के लिवर का आकार निरंतर बढ़ता जाता है. लिवर भोजन को पचाने में मदद करता है और शरीर को ऊर्जा देता है.

"नॉन आल्कोहॉलिक फैटी लिवर डिजीज" (NAFLD) असंतुलित आहार के कारण हो सकता है जो आल्कोहोल यानी शराब के सेवन से जुड़ा नहीं होता है. पहला जिसमें लिवर में सिर्फ फैट जमा होता है पर लिवर में सूजन और लिवर कोशिकाओं की क्षति ना के बराबर होती है. वहीं, दूसरे प्रकार में लिवर में फैट जमने के साथ लिवर में सूजन और लिवर कोशिकाओं में क्षति की स्थिति बन सकती है. इसे नॉनआल्कोहॉलिक स्टीटोहेपेटाइटिस के नाम से जाना जाता है. नॉन आल्कोहॉलिक स्टीटोहेपेटाइटिस गंभीर लिवर की क्षति और लिवर कैंसर का कारण बन सकता है.

"आल्कोहॉलिक फैटी लिवर डिजीज" (NAFLD) जो अधिक शराब के सेवन से होने का खतरा होता है. इससे लिवर में सूजन और लिवर कोशिकाओं की क्षति ज्यादा बढ़ जाती है. जितना अधिक शराब का सेवन किया जाए, लिवर की क्षति उतनी बढ़ सकती है. अगर इस स्थिति को नियंत्रित न किया गया है, तो गंभीर लिवर से जुड़ी बीमारी जन्म ले सकती है, जैसे आल्कोहॉलिक हेपेटाइटिस (लिवर में गंभीर सूजन) और सिरोसिस (लिवर में घाव). आमतौर पर लिवर को खराब तभी माना जाता है, जब इसका एक बड़ा हिस्सा खराब हो जाता है और उसका इलाज करना बहुत मुश्किल या फिर असंभव हो जाता है. विकट परिस्थिति में लिवर को बदलना ही आखिरी रास्ता होता है जिसका खर्च लाखो में आता है.

लिवर का खराब होना पूरे शरीर की क्रियाशीलता और गतिविधियों को नुकसान पहुंचा सकता है. इसलिए, इस बीमारी से जुड़ी जानकारी होना बहुत जरूरी है, ताकि समय रहते इसके जोखिम को कम किया जा सके. त्रिफला का सेवन नियमित करके लिवर संबंधित समस्या आने से पहले ही इससे बचने का कार्य करना सुरक्षा की दृष्टि से लाभदायी है.

22) रेडिएशन से बचाव और क्षतिग्रस्त डीएनए (DNA) को ठीक करना

त्रिफला में रेडियोप्रोटेक्टीव (Radioprotective) और कीमोप्रोटेक्टीव (Chemo protective) प्रभाव पाए गए है, जो रेडिएशन से शरीर की रक्षा करने में सक्षम है तथा उसके कारण शरीर में हुए डीएनए (DNA) के नुक्सान को ठीक करने में भी

उपयोगी है. केमिकल और रेडिएशन के द्वारा शरीर के जीनोम (Genome) मतलब गणसुत्रो या वंशसूत्रों में हुए बदलाव (Mutation) को रोकने में और उसे ठीक करने में त्रिफला प्रभावी पायी गई है. शरीर के लिए सबसे ज्यादा खतरनाक और घातक माने जानेवाले गामा रेडिएशन (Gamma Radiation) जो की आयोनाइज़िंग रेडिएशन का एक प्रकार है, उससे होनेवाले नुक्सान से बचाव के लिए त्रिफला को रक्षक माना गया है Link 69, Link 70, Link 71, Link 72.

डीएनए (DNA) यानी **डी-ऑक्सीराइबोन्यूक्लि अम्ल (Deoxyribonucleic Acid)** जो जीवित कोशिकाओं के गुणसूत्रों में पाए जाने वाले तंतुनुमा अणु को कहते हैं. इसकी संरचना घुमावदार सीढ़ी की तरह होती है. डीएनए चार अलग अणुओं से मिलकर बनती है, जिसे न्यूक्लियोटाइड कहते हैं. यह चार अणु अडेनिन, ग्वानिन, थाइमिन और साइटोसिन हैं. **जब डीएनए शरीर में टूटते हैं तो विकृति का रूप ले लेती है.**

DNA मेमोरी चीप **(Memory Chip)** की तरह शरीर से संबंधित सारी सूचनाएं एकत्रित कर के रखते हैं और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आनुवंशिक गुणों को ले जाने का कार्य करते हैं. गुणसूत्र डीएनए के हज़ारों छोटे छोटे खंडो से बने होते हैं, जिन्हें **जीन (Gene)** कहा जाता है. डीएनए जहाँ आनुवंशिक गुणों का वाहक होता है और कोशिकीय कार्यों के संपादन के लिए कोड प्रदान करता है, वहीं **आरएनए (RNA) की भूमिका उस कोड को प्रोटीन में परिवर्तित करना होता है**.

रेडिएशन यानी विकिरण एक ऐसी ऊर्जा के स्त्रोत से आती है जो अदृश्य रूपसे प्रकाश की गति से अंतरिक्ष की यात्रा कर सकती है. विकिरण में तरंग जैसे गुण होते हैं. यह एक ऐसी ऊर्जा होती है जो तरंगों के सहारे चलती है, जिसका एक विधुत क्षेत्र

(Electric Field) और उससे जुड़ा एक चुंबकीय क्षेत्र (Magnetic Field) होता है. आम तौर पे लोग इसे रेडियो तरंगो के नाम से संबोधित करते है. रेडिएशन जितना मानव के लिए खतरनाक है उतना ही पशु-पक्षी और अन्य जीवसृष्टि के लिए भी है.

विधुत परिपथ में इलेक्ट्रान को प्रवाहित करने के लिए एक फ़ोर्स की आवश्यकता होती है, जिसे **इलेक्ट्रो मोटिव फ़ोर्स (EMF)** कहा जाता है. EMF विद्युत सर्किट में लगने वाला एक प्रकार का बल होता है जो सर्किट में इलेक्ट्रान को गति प्रदान करने में मदद करता है जिस की इकाई VOLT होती है तथा इसे Voltmeter से मापा जाता है. EMF को E से और Volt को V से प्रदर्शित किया जाता है. **वैज्ञानिक तरीके से रेडिएशन को मुख्य 2 भागो में बाँट सकते है.**

एक रेडिएशन होता है **नॉन आयोनाइज़िंग रेडिएशन (Non Ionizing Radiation),** मतलब इसमें से जितनी ऊर्जा निकलती है वह बहुत कम शक्तिशाली होती है जो मानव शरीर में आयरन (Iron) तत्व के स्तर को नहीं बढाती, जिस कारण यह शरीर में मौजूद डीएनए (DNA) को नुकसान नहीं पहुंचा पाती और इससे कॅन्सर जैसे गंभीर रोगो के होने का ज्यादा खतरा नहीं होता है. जिसके कुछ प्रमुख उदाहरण है **माइक्रोवेव, लाइट, रेडियो और रडार तरंगे**.

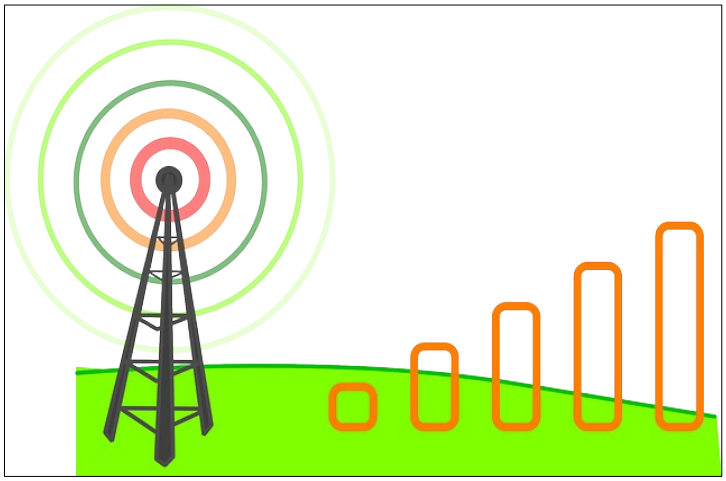

नॉन आयोनाइज़िंग रेडिएशन में कुछ उपकरण अपवाद माने जाते है, जिसका उपयोग सावधानी से करना होता है वरना ये कुछ हद तक नुक्सान भी पहुंचा सकते है. उदहारण के रूप में **लेज़र लाइट (Laser light)** जिसका इस्तेमाल कॉस्मेटिक सर्जरी में किया जाता है यह हमारी त्वचा को जला सकती है. **अल्ट्रावायलेट किरणे (Ultraviolet Rays)** जो हमारी आँखों के लिए हानिकारक और शरीर को कई प्रकार के दूसरे नुकसान भी पहुंचा सकती है. मोबाइल फोन और वाई-फाई यानी वायरलेस

इंटरनेट का उपयोग भी सावधानी से करना होता है और नुक्सान की तीव्रता आप किनते घंटे और किस वातावरण में कितने अंतर से करते है उस पर निर्भर है. **मोबाइल या सेल फ़ोन के टावर से निकलने वाले रेडिएशन को आम तौर पर निश्चित मानक में ज्यादा खतरनाक नहीं बताया गया, लेकिन आंतराष्ट्रीय स्तर पर नयी टेक्नोलॉजी 5G को खतरनाक बताया गया है और 5G पर पर कई अलग से रिसर्च और दावे भी है जो चौंकानेवाले है.**

स्वीडन के वैज्ञानिको की रिसर्च के अनुसार अगर 5G टेक्नॉलोजी से पैदा होनेवाले रेडिएशन को नियंत्रित ना रखा जाए तो इसकी अधिकता से थकान, चक्कर, सरदर्द, अनिद्रा, एकाग्रता का आभाव, स्मृति से संबंधित मानसिक समस्याए पैदा हो सकती है जिसे स्वीडिश वैज्ञानिको ने **"माइक्रोवेव सिंड्रोम"** कहा है. जब टेक्नोलॉजी पुरानी थी तब भी न्यूज़ आर्टिकल के अनुसार रेडिएशन के संभावित खतरों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है तो नयी टेक्नॉलजी के संभावित नुक्सान को जानना सुरक्षा की दृष्टि से अति आवश्यक माना गया है.

दूसरा रेडिएशन का प्रकार होता है आयोनाइज़िंग रेडिएशन (Ionizing Radiation) जो किये गए दावों के अनुसार मानव शरीर में आयरन (Iron) तत्व की मात्रा को बढ़ा देता है. इसके कारण कोशिकाओ (Cells) में मौजूद डीएनए (DNA) को नुकसान पहोच सकता है, क्योंकि इलेक्ट्रॉन के स्तर में बढ़ोतरी होने के कारण आयोनाइज़िंग रेडिएशन हमारे शरीर या आसपास की चीजों पर अपना अलग प्रभाव छोड़ती है. तो यह रेडिएशन शरीर की कोशिकाओं को क्षतिग्रस्त करने में अधिक सक्षम है और इसकी उच्च मात्रा शरीर में गंभीर क्षति का कारण बन सकती है. आयोनाइज़िंग रेडिएशन के भी 3 प्रकार होते हैं. आल्फा (Alpha), बीटा (Beta) और फोटोंन (Photon).

• **आल्फा रेडिएशन (Alpha Radiation)**

आल्फा रेडिएशन की गति प्रकाश की गति का केवल 10% होते हैं जो बहुत कमजोर रेडिएशन है. यह बहुत पतली चीज को भी पार नहीं कर सकती अगर किसी रेडियो एक्टिव साधन की हेल्प से किरणे निकल रही है और उसके सामने एक कागज का टुकड़ा रख दिया जाए तो रेडिएशन उस कागज के टुकड़े को भी पार नहीं कर पाएगी. हालांकि अगर यह किरणे किसी तरीके से शरीर में पहुंच जाए तो बहुत ही घातक साबित हो सकती है क्योंकि इसमें पॉजिटिव चार्ज होता है.

• **बीटा रेडिएशन (Beta Radiation)**

बेटा रेडिएशन 0.2 से 1.3 सेंटीमीटर तक शरीर के अंदर प्रवेश कर सकती है. अगर यह हमारी त्वचा पर ज्यादा देर के लिए लगातार केंद्रित रह गया तो यह शरीर के कुछ हिस्से को जला सकता है कोई भी ऐसी वस्तु जो 1.3 सेंटीमीटर से ज्यादा होती है उसे यह पार नहीं कर पाएगा जैसे की दीवार. इसकी गति प्रकाश की गति का 90% होता है तथा इसमें नेगेटिव चार्ज होता है.

• **फोटोंन रेडिएशन (Photon Radiation)**

फोटोंन रेडिएशन के दो प्रकार होते हैं **गामा रेडिएशन (Gamma Radiation)** और **एक्स रेडिएशन (X Radiation)**. गामा किरणों की गति प्रकाश की गति के बराबर होती है जो शरीर के आर पार भी जा सकती है और शरीर को खतरनाक तरीके से नुक्सान पहुंचा सकती है. गामा किरणों से शरीर को कोई भी चार्ज नहीं होता. एक्स रेडिएशन या जिसे एक्स-रे भी कहा जाता है वह गामा रेडिएशन के मुकाबले थोड़ा कम ताकतवर होते है.

चिकित्सीय परीक्षण और उपचार हेतु **X-Ray** और **CT स्कैन** में आयनीकृत रेडिएशन की कम मात्रा का उपयोग किया जाता है. रेडियोथैरेपी कैंसर का सामान्य उपचार है, जिसमें आयनीकृत रेडिएशन से कैंसर कोशिकाओं को नष्ट किया जाता है. चिकित्सा मे प्रयोग किए गए रेडिएशन को बारीकी से नियंत्रित किया जाता है. रेडिएशन से शरीर में कोई गंभीर परिस्थिति पैदा होने से पहले ही त्रिफला का सेवन बचाव हेतु फायदेमंद साबित हो सकता है.

महाराष्ट्र के सन्माननीय डॉक्टर "विलास जगदाले" ने 5G संबंधित जनहित याचिका वैज्ञानिक सबूतों के आधार पर कोर्ट में दाखिल करने की जानकारी दी है. डॉक्टर होके उन्होंने विभिन्न बीमारियों से बचने के लिए दिए जानेवाले टीको के बाद प्रतिकूल घंटनाओ का रिकॉर्ड रखा जाये और अमेरिका की तरह **वैक्सीन कोर्ट निर्माण करने के लिए** औरंगाबाद, महाराष्ट्र के कलेक्टर को आवेदन पत्र दिया है. इसके साथ उन्होंने विभिन्न **टीके बनाने में गाय, सुवर और अबोर्टेड बेबी के पार्ट्स का प्रयोग** किये जाने पर हिन्दू सहित अन्य धर्मो की धार्मिक मान्यता अनुसार लोगो को टीको से बचाने के लिए "रिलीजियस एक्सेम्पशन" **(Religious Exemption)** मिले ऐसी मांग भी की है. स्वतंत्र पत्रकार **कपिल बजाज** भी है जिन्होंने भी विदेशी ताकते अपने प्रभाव से कैसे देश में अपना अधिपत्य स्थापित करने का प्रयत्न कर रही है उस विषय पर विस्तृत जानकारी दी है. **कपिल बजाज जी के ब्लॉग** पे जाकर आप बहुत गहराई में जानकारी प्राप्त कर सकते है.

दिल्ली के **डॉ. तरुण कोठारी**, गुजरात से डॉ. माया वलेछा, महाराष्ट्र से **योहान टेंगरा**, **वीरेन्द्र सिंह** तथा **डॉ. बिस्वरूप चौधरी**, देवेन्द्र बल्हारा, विकास दीवान सहित अन्य बहुत से क्रांतिकारी विदेशियों की अनीति के सामने लड़ाई लड़ रहे है. इस लड़ाई को कानूनी रूप से मुंबई के आदरणीय एडवोकेट **श्री नीलेश ओझा जी, दीपाली ओझा जी, अवेकन इंडिया मूवमेंट (AIM) संगठन** से **अंबर कोइरी, निशा कोइरी** तथा **एडवोकेट साहिल गोहिल जी** “जनता सरकार मोरचा” द्वारा लड़ रहे है. ईमानदार पत्रकारिता में आशुतोष पाठक जी का यूट्यूब चैनल **Qvive** और विश्वशनीय मीडिया के माध्यमों मे प्रकाश पहोरे जी का अख़बार **देशोन्नती** प्रसिद्द है. यूट्यूब के माध्यम से स्वतंत्र

पत्रकारिता के लिए गिरिजेश वशिष्ठ का चैनल **"नॉकिंग न्यूज़"**, मोहित जून का **"मॉडर्न इंडिया टॉक्स"**, विक्रम सिंधु का **"जागो भारत"** विश्वासनीय श्रोत माने जाते है.

24) एचआईवी (HIV) तथा एड्स (AIDS) के इलाज में उपयोगी

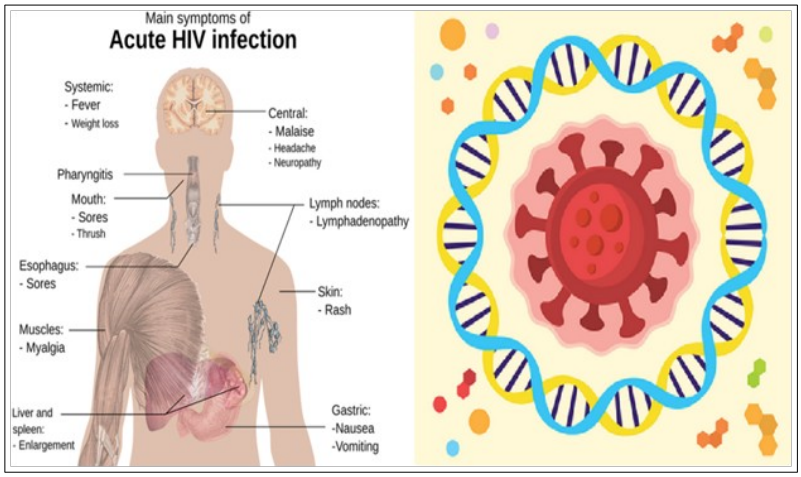

त्रिफला की तीनो औषध (हरड़, बहेड़ा और आवला) का **इथेनॉलीक और एकेओस (Ethanolic and Aqueous)** अर्क एचआईवी (HIV) से संक्रमित व्यक्ति के खून, वीर्य, योनि, चमड़ी या अन्य भागो से लिए गए बेक्टेरिया से लड़ने में मददगार साबित हो सकता है. तीनो औषध में नैसर्गिक रूपसे मौजूद **फाइटोकेमिकल्स (Phytochemicals)** के एन्टीबॅक्टेरिअल प्रभाव एचआईवी रोगी के शरीर में मौजूद भिन्न प्रकारके बैक्टीरिया से लड़ने में सहायक हो सकते है **Link 73**.

अन्य रिसर्च के अनुसार त्रिफला शरीर के रक्षक मानेजानेवाले **टी लिम्फोसाइट (T Lymphocytes)** और **नेचरल किलर सेल्स (Natural Killer Cells)** का स्तर बढ़ाने में सहायक माने जाते है जो शरीर को रोगो से लड़ने की ताकत देता है **Link 74**. त्रिफला के साथ अन्य कुछ आयुर्वेद की चमत्कारी औषध और क्रियाएँ कैसे एचआईवी रोगियोके लिए वरदान साबित हो सकती है **इस लेख में विस्तार से जान सकते है.**

एचआईवी (HIV- Human Immunodeficiency Virus) एक वायरस है जो शरीर को वाइरस के संक्रमण से बचानेवाले श्वेतकणों (White Blood Cells) पे हमला कर शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को कम करते है. HIV इसी प्रतिरक्षा प्रणाली कि कोशिकाओं पर हमला कर इसे कमजोर करता है, जिन्हे सी डी 4 (CD4) सेल्स भी कहा जाता है. अगर वायरस को नियंत्रित न किया गया तो HIV के जीवाणु CD4 कोशिकाओं पर कब्ज़ा कर उन्हें लाखो वायरस कि प्रतियां बनाने वाली फैक्ट्री

में रूपांतरित कर देते है. इस प्रक्रिया में CD4 कोशिकाएं नष्ट हो जाती है, जिससे प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होती जाती है.

एचआईवी **(HIV)** का मतलब यह बिल्कुल भी नहीं है कि आपको एड्स **(AIDS)** है. लेकिन यदि एचआईवी का समय से इलाज ना किया जाए तो यह रोग एड्स यानी एक्वायर्ड इम्युनोडेफीसिअन्सी सिंड्रोम **(AIDS- Acquired Immunodeficiency Syndrome)** का रूप ले लेती है. एड्स एचआईवी पॉजिटिव गर्भवती महिला से उसके बच्चों में फेल सकता है. यह बीमारी मुख्य रूप से संभोग के दौरान, किसी स्वस्थ व्यक्ति को एड्स से ग्रस्त व्यक्ति का खून ब्लड चढ़ाने या संक्रमित सुई के इस्तेमाल के कारण भी फैलती है.

25) पोषकतत्वों की पूर्ति और रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए

त्रिफला में कुछ मात्रा में शरीर के लिए आवश्यक नुट्रिएंट्स (Nutrients) यानी पोषकतत्व पाए जाते है जो शरीर के पोषण एवं विकास के लिए अहम् भूमिका निभाते है. त्रिफला में कार्बोहाइड्रेट्स (Carbohydrates), ऊर्जा (Callory), प्रोटीन (Protein), विटामिन्स (Vitamin) और खनिज तत्व (Minerals) पाए जाते है जैसे की फाइबर (Fibre), सोडियम (Sodium), पोटेशियम (Potessium), कैल्शियम (Calcium), मेंगेनीज (Manganese), मैगनेशियम (Magnesium), आयरन (Iron) और विटामिन C Link 75. त्रिफला की तीनो औषध रोग प्रतिरोधक क्षमता यानी इम्युनिटी (Immunity) को बढ़ाने तथा शरीर की कायाकल्प करने में कैसे उपयोगी है इसका विष्तृत रूपसे वर्णन रिसर्च में किया गया है Link 76.

मुलेठी में भी त्रिफला के तीन औषधो में मौजूद कुछ पोषक तत्वों के साथ **जिंक (Zinc) और फॉस्फोरस (Phosphorus)** भी पाया जाता है जो रोग-प्रतिरोधक क्षमता यानी इम्युनिटी को मजबूत करने के लिए उतना ही फायदेमंद है. **अमेरिकन संस्था FDA के अनुसार** मुलेठी में मौजूद सभी पोषकतत्वों के बारे विस्तार से जान सकते है. एक अध्ययन के अनुसार, मुलेठी में एंटीऑक्सीडेंट व इम्यूनिटी इफेक्ट गुण पाया जाता है. इसका सेवन सकारात्मक रूप से इम्युनिटी को बढ़ाने में मददगार है **Link 77.**

संतुलित आहार से शरीर को सभी प्रकार के पोषक तत्व मिलते हैं. शरीर के सभी कार्यों के लिए पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है. आहार के द्वारा प्राप्त पोषक तत्वों से शरीर को ऊर्जा मिलती है और आप अपने रोजमर्रा के काम कर पाते हैं. सभी तरह के पोषक तत्व शरीर के सभी कार्य जैसे पसीना आना, तापमान, चयापचय (मेटाबॉलिज्म), ब्लड प्रेशर, थायराइड आदि को नियमित करने में सहायक होते हैं, **जब आपके शरीर के सभी कार्य नियंत्रण में होते हैं तो उस स्थिति को होमियोस्टेसिस (Homeostasis) यानी सरल भाषा में समस्थैतिकता कहा जाता है.**

पोषक तत्वों को सूक्ष्म पोषक तत्व (माइक्रोन्यूट्रिएंट) और बड़े पोषक तत्व (मैक्रोन्यूट्रिएंट्) ऐसे 2 प्रकारो में विभाजित किया जाता है. कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, फैट, विटामिन, खनिज और जल कुछ ऐसे पोषक तत्व है जिनकी आवश्यकता शरीर को सबसे ज्यादा होती है. कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन और वसा को मैक्रोन्यूट्रिएंट कहा जाता है क्योंकि वे बड़े होते हैं और इनको ऊर्जा का स्त्रोत माना जाता है. विटामिन और खनिजों को सूक्ष्म पोषक तत्व कहा जाता है, क्योंकि अन्य पोषक तत्वों की तुलना में यह बहुत छोटे होते हैं. इसका मतलब यह बिलकुल भी नहीं है कि विटामिन और खनिज शरीर के लिए कम महत्वपूर्ण होते हैं. शरीर को बेहद कम मात्रा में इनकी भी

आवश्यक होती है. सूक्ष्म पोषक तत्वों को पानी और वसा में घुलने के आधार पर बाटा जाता है. विटामिन ए, डी, ई, और विटामिन के वसा में घुलनशील होते हैं, जबकि विटामिन बी कॉम्प्लेक्स और विटामिन सी पानी में घुलनशील होते हैं. इसके अलावा खनिज व्यक्ति के शरीर की आवश्यकता के आधार पर वर्गीकृत किये जाते हैं.

कार्बोहाइड्रेट, वसा और प्रोटीन मिलकर शरीर को ऊर्जा प्रदान करते हैं, जिससे शरीर की सभी जैव रासायनिक प्रतिक्रियाओं को पूरा करने में मदद मिलती है. शारीरिक ऊर्जा को कैलोरी कहा जाता है. वसा में कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीन की तुलना में अधिक कैलोरी होती है, एक ग्राम वसा से शरीर को लगभग 9 कैलोरी मिलती है, जबकि कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीन के 2 ग्राम से 4 कैलोरी प्राप्त होती है. वसा, प्रोटीन और मिनिरल्स साथ में मिलकर आपके शरीर के ऊतकों, अंगों, हड्डियों और दांतों के लिए आवश्यक होती है. कार्बोहाइड्रेट को इसमें शामिल नहीं किया जाता है, लेकिन आपके शरीर की अतिरिक्त कार्बोहाइड्रेट वसा में बदलकर एडिपोज ऊतक में एकत्रित हो जाता है. पोषक तत्वों में विटामिन C (एस्कोर्बिक एसिड) के लिए आवला विशाल श्रोत है जो त्रिफला में भरपूर मात्रा में पाया जाता है.

विटामिन D के लिए सूर्यप्रकाश सबसे अच्छा श्रोत है. विटामिन K की शरीर में सबसे ज्यादा जरूरत रक्त का थक्का बनाने के लिए होती है. अगर विटामिन K शरीर में न हो तो चोट लगने पर रक्त का थक्का न बनने की वजह से सारा खून शरीर से बाहर निकल जाएगा. कद्दू और केला विटामिन K के लिए सबसे अच्छे श्रोत माने गए है.

हल्दी (Turmeric) भी त्रिफला की तरह ऐसी औधष है जिसमे कुछ मात्रा में शरीर के लिए आवश्यक विटामिन B1 (थायमिन), विटामिन B2 (राइबोफ्लेविन), विटामिन B3 (नियासिन), विटामिन B6 (पाइरोडौक्ज़ामिन), विटामिन B9 (फोलिक एसिड) और

विटामिन C & E (टोकोफेरोल) पाए जाते है. रात को सोने से पहले पानी या दूध के साथ अच्छेसे आधा-पोना चमच हल्दी को उबालके ठंडा होने के बाद उसे पीनेसे कॅन्सर जैसे अनेको रोगो से रक्षा हो सकती है. काले तिल (Black Sesame) को भी आयुर्वेद में उच्च स्थान प्राप्त है जिसका सेवन आप रोज कुछ मात्रा में करे तो सेहद की दृष्टि से अत्यंत लाभदायी है.

राजमा, शकरकंद, अलसी, मशरूम, चीज और आलू जैसे अन्य खुराक विटामिन **B5 (पैंटोथीनिक एसिड)** के लिए अच्छे श्रोत माने जाते है. बादाम, पालक, दही, एवोकाडो, फूलगोभी वगैरह विटामिन **B7 (बायोटिन)** की पूर्ति करनेवाले है. दिमाग को स्वस्थ और मजबूत बनाने के लिए विटामिन B12 बहुत जरूरी है. सर्कुलेटरी सिस्टम और नर्वस सिस्टम को अच्छा रखने में विटामिन B12 मदद करता है. कोशिकाओं को एक्टिव करने में भी विटामिन यह मदद करता है. **B12 पनीर, दूध, दही जैसे डेरी उत्पादनो में और संभवित ओट्स, सोयाबीन में भी पाए जाने की बात कही जाती है. सोयाबीन में भले ही प्रोटीन सबसे ज्यादा हो, लेकिन रिसर्च के अनुसार इसके अधिक सेवन से बचना चाहिए वरना ये गंभीर समस्या पैदा कर सकता है.**

स्व. राजीव दीक्षित जी की रिसर्च अनुसार सोयाबीन का बीज परदेशी है और इसके फायदे और नुक्सान दिखने अभी बाकी है.

B केटेगरी के कुछ विटामिन्स नॉन वेज प्रोडक्ट जैसे अंडे, मांस और दरियाई जीवो में पाया जाता है, लेकिन मै खुद शाकाहारी हूँ इसीलिए इसपे मेरा ज्यादा अध्यहन नहीं है. प्रचारित जी.एम.ओ (GMO- Genetically Modified Organism) और फोर्टिफाइड (Fortified) चीजों के बारे में कई प्रकार के नुक्सान की बात भी सामने आयी है. तो केवल मीडिया की जानकारी से उसके सेवन के लाभ ना

समझकर स्वज्ञानी और अध्याहन किये व्यक्ति से परामर्श करने के बाद ही उसका सेवन करना चाहिए. विटामिन और उसके बाजार में मिलनेवाले सप्लीमेंट के ऊपर निर्भर ना रहकर सीधे सब्जी, फल या अन्य चीजों के द्वारा ग्रहण करना शुध्दता और तंदुरस्ती के लिए मूलयवान है. आज कल बाज़ार में मिलनेवाले फल और सब्जियों को केमिकल से पकाया जाता है या ताज़ा बनाया जाता है जो स्वास्थ के लिए बड़ा खतरा है, तो इसकी ठीक से जांच करना भी आवश्यक है.

सोडियम और पोटेशियम शरीर के सबसे महत्वपूर्ण खनिज तत्व माने गए है, इन्हीं से शरीर की कई महत्वपूर्ण मेटाबॉलिज्म क्रियाएं संपन्न होती हैं, इसलिए दोनों के बीच में संतुलन जरूरी होता है. शरीर की हर कोशिका के अंदर और बाहर इन दोनों की सही मात्रा हर एक क्रिया के लिए जरूरी है. सोडियम-पोटेशियम दोनों रक्त में होते हैं, जिन्हे इलेक्ट्रोलाइट्स कहते हैं. ये हृदय, मांसपेशियों व दिमाग की कार्यप्रणाली में मदद करते हैं. इनके लेवल को किडनी कंट्रोल करती है. सोडियम हमें नमक से मिलता है, पोटेशियम फलों व सब्जियों से मिलता है. **इंटरनल मेडिसिन नामक जर्नल के पुराने संदर्भों से पता चला है कि हमारे पूर्वज अपने आहार में सोडियम की तुलना में 16 गुना ज्यादा पोटेशियम लेते थे. लेकिन नए दौर के लोग इसका उल्टा करते हैं. हमारे आहार में सोडियम भरपूर है और पोटेशियम कम. यही कारण है कि कार्डियोवस्क्यूलर यानी दिल की बीमारियां बढ़ रही है.**

हृदय के मामले में सोडियम और पोटेशियम एक-दूसरे के विरोधी माने जाते है. जब हम ज्यादा नमक वाली चीजें खाते हैं, तो शरीर में सोडियम की मात्रा बढ़ने से ब्लड प्रेशर और रक्त वाहिकाओं पर दबाव बढ़ता है. जबकि यदि पोटेशियम की मात्रा ज्यादा ली जाए तो ब्लड प्रेशर कम हो जाता है और रक्त वाहिकाओं को आराम मिलता है. पोटेशियम शरीर में नाइट्रिक ऑक्साइड रसायन को सक्रिय करता है, जिससे धमनियों में दबाव और रक्तचाप घटता है. हरी पत्तेदार सब्जियां, केला, मौसमी, आलू, आलूबुखारा, तरबूज, खरबूजा आदि फलों में भरपूर पोटेशियम होता है.

त्रिफला के साथ मिश्रित की जानेवाली मुलेठी में मौजूद सोडियम की मात्रा से लगभग 7 से 8 गुनी मात्रा में ज्यादा पोटेशियम पाया जाता है जो वैज्ञानिक तरीसे भी इसकी औषधीय उपयोगिता को सिद्ध करता है.

त्रिफला का खास परिस्थितियो में उपयोग और सावधानी

पांच साल से कम आयु के बच्चे, गर्भवती और स्तनपान करा रही महिलाओ को ना सिर्फ “त्रिफला” बल्की किसी प्रकार की आयुर्वेदिक दवाई का सेवन बिना वैध के परामर्श नहीं करना चाहिए, क्योकि कुछ ख़ास परिस्थिति में दवाई देने से पहले चिकित्सक को व्यक्ति की प्रकृति और शरीर की स्थिति जानना आवश्यक होता है. इसके अलावा अयोग्य समय से किया गया खानपान, बाहरी मौसमी परिवर्तन, दूषित जल या खानपान के सेवन से या परस्पर विरोधी आहार से शरीर में बुखार, शर्दी और खांसी होना सामान्य बात है. ऐसे समय पर शरीर प्राकृतिक रूपसे विषैले तत्वों से लड़ने के लिए गर्मी उत्पन करता है जो बुखार का कारण भी बन सकता है, लेकिन अत्याधिक तापमान से शरीर को हानी ना हो उसके लिए त्रिफला के साथ भिन्न समय पे तुलसी, अदरक, हल्दी और देशी शक्कर का सेवन करना गुणकारी बताया जाता है. इससे उल्टा, अगर कुछ सामान्य स्थिति में शर्दी, बुखार के साथ अगर दस्त भी हो तो वह ठीक ना हो तब तक त्रिफला का सेवन बंद कर देना चाहिए, क्योकि रेचक गुण होने के कारण यह दस्त की समस्या को और बढ़ा सकता है. दस्त को रोकने के लिए अनार के रस या कोफ़ी जैसे पदार्थो का सेवन करना चाहिए.

पुस्तक में लिखित सभी बिमोरियो पे त्रिफला असरदार पाई गयी है जो साइड इफेक्ट्स से मुक्त है और इसका वैज्ञानिक प्रमाण भी रिसर्च पेपर, लैब, एनिमल और ह्यूमन स्टडीज के साथ लिंक के माध्यम से दिया गया है. लेकिन ऐसा बिलकुल नहीं है की हमें त्रिफला के फायदों को आधुनिक विज्ञान ने 45-60 दिनों के प्रयोगो से साबीति दी है वहीँ तक सिमित समझना है. क्योकि विज्ञान कोई पहली या आखरी किताब नहीं है, परंतु ये निरंतर चलती रहनेवाली खोजो की प्रक्रिया है. वैज्ञानिक खोजे भी समय समय पे एक दूसरे का खंडन करती रहती है. वैज्ञानिक खोजे वर्तमान में

प्रत्यक्ष साबीति देती है जो वस्तुओ के गुण-दोष को समझने में उपयोगी भी है, परंतु उसे आखरी सत्य समझने की भूल कभी नहीं करनी चाहीये.

ऋषि मुनियो ने अपनी दिव्य शक्तिओ के द्वारा जो आपको बताया है वह अमूल्य और निःस्वार्थ है, जिसकी कल्पना आज के व्यापारी जगत से नहीं की जा सकती. फिर भी अगर आप सनातन भारत के ऋषि-मुनियो द्वारा लिखित आयुर्वेद के अलावा दूसरी किसी पैथी पे विश्वास रखते है तो आप अपनी पैथी के अनुभवी चिकित्सक की सलाह लिए बिना अन्य दवाइओ के साथ त्रिफला का सेवन ना करे. खास कर एलोपैथ की दवाइओ के साथ, क्योकि लेब से बने केमिकल, वनस्पति तथा जानवर के शरीर के तत्वों से बननेवाली दवाओं के कुछ कृत्रिम केमिकल्स त्रिफला के नैसर्गिक योगिक के साथ मिलकर कुछ प्रतिकूल प्रभाव दे सकते है. रक्त को पतला रखने की दवा, लिवर और किडनी से संबंधित एलोपैथ की दवाइओ के साथ इसका सेवन प्रकृति अनुसार कम या ज्यादा नुक्सानदेही हो सकता है.

होमियोपैथी या अन्य नैसर्गिक चिकित्सा के साथ आयुर्वेद की ज्यादातर कोई समस्या नहीं है फिर भी दोनों एक साथ उपयोग करने से पहले दोनों के चिकित्सक की सलाह आवश्यक है. आयुर्वेद का ज्ञान किसी विशेष व्यक्ति या वैध के लिए सिमित ना होकर समग्र मानवजाति के लिए बिना किसी भेदभाव के प्राचीन ऋषि-मुनियो द्वारा प्रस्तृत किया गया है. लेकिन हमें भी कुछ ख़ास परिस्थितियों में इसका सेवन करने के लिए ज्ञानी और अनुभवी वैध से परामर्श करना सुरक्षा की दृष्टि से आवश्यक समजे. **अब हम हमारे ऋषि मुनियो द्वारा लिखित प्राचीन आयुर्वेद से त्रिफला के दिव्य गुणों के महत्व को समझने का प्रयास करते है. त्रिफला के दिव्य रासायनिक औषधीय गुणों को समझने से पहले हमे "आयुर्वेद" और उसका मूलभूत "त्रिदोष सिद्धांत" समझना पड़ेगा जिसके उपर पूरा आयुर्वेद टिका हुआ है.**

आयुर्वेद क्या है और किसने लिखा?

आयुर्वेद प्राकृतिक एवं समग्र स्वास्थ्य की पुरातन भारतीय पद्धति है. संस्कृत मूल का यह शब्द दो शब्दों के संयोग से बना है- आयुः + वेद. "आयु" अर्थात लम्बी उम्र (जीवन) और शाब्दिक भाषा में "वेद" अर्थात विज्ञान. अतः आयुर्वेद का शाब्दिक अर्थ "जीवन का विज्ञान' है जिसे अंग्रेजी में सायन्स ऑफ़ लाइफ (Science of Life) कहा जाता है. प्राचीन आचार्यों की व्याख्या अनुसार आयुर्वेद का अर्थ मात्र चिकित्सा ना होकर बहुत व्यापक है जिसमे **"शरीर, इंद्रिय, मन तथा आत्मा के संयोग"** को आयु कहा है. मात्र चिकित्सापद्धति के अनुसार इसे आयुर्विज्ञान का नाम दिया जाता है.

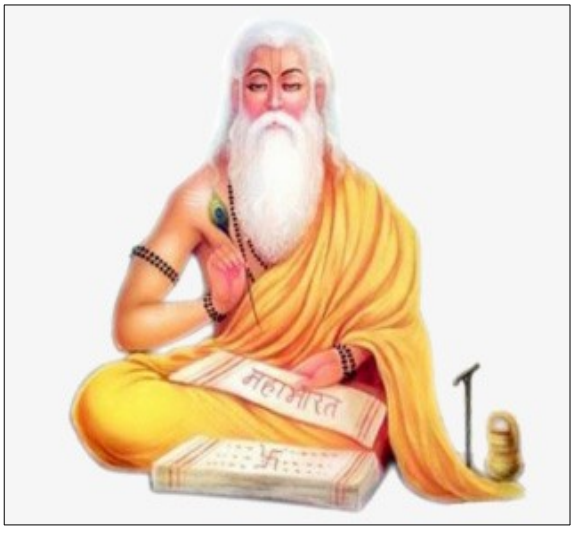

प्रारंभ से भारत में आयुर्वेद की शिक्षा मौखिक रूप से गुरु-शिष्य परंपरा के अंतर्गत ऋषियों द्वारा दी जाती रही है. उस समय विधा को मात्र मौखिक रूप से ही गुरु द्वारा शिष्य को दिया जाता था. पर लगभग 3000 साल पहले इस ज्ञान को ग्रंथों के रूप में लिखा गया. भारत में आयुर्वेद का मूल हिंदू संस्कृति जितना ही

पुराना है और उसके साथ ही विकसित हुआ है. **परंपरा के अनुसार आयुर्वेद एक उपवेद है तथा धर्म और दर्शन से इसका अभिन्न संबंध है.**

"चरक संहिता" आयुर्वेद का एक मूल प्राचीन ग्रन्थ है जो संस्कृत भाषा में है, जिसके रचयिता चरक ऋषि थे. यह आयुर्वेद के सिद्धांत का पूर्ण ग्रंथ है जिसकी रचना का काल ई. पू. 800 का माना जाता है.

"सुश्रुत संहिता" के अनुसार आयुर्वेद की उत्पत्ति स्वयं ब्रह्मा के मुख से हुई है. ब्रह्मा ने पहले एक लाख श्लोकों का "आयुर्वेद शास्त्र" बनाया और सबसे पहले दक्ष प्रजापति को पढ़ाया. दक्ष प्रजापति ने अश्विनीकुमारो को सिखाया और उन्होंने इन्द्रदेव को सिखाया.

सुश्रुत ऋषि प्राचीन भारत के प्रसिद्ध चिकित्साशास्त्री तथा शल्य चिकित्सक थे. सुश्रुत को विश्व में मूल **"शल्य चिकित्सा जनक" (Father of Surgery)** का दर्जा हासिल है. सुश्रुत ने प्रसिद्ध चिकित्सकीय ग्रंथ **"सुश्रुत संहिता"** की रचना की थी. सुश्रुत संहिता में शल्य क्रियाओं के लिए आवश्यक यंत्रों (साधनों) तथा शस्त्रों (उपकरणों) आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है. सुश्रुत ने शल्य चिकित्सा में अद्भुत कौशल अर्जित किया तथा इसका ज्ञान अन्य लोगों को कराया. शल्य क्रिया के लिए सुश्रुत **125 तरह के उपकरणों** का प्रयोग करते थे. ये उपकरण शल्य क्रिया की जटिलता को देखते हुए खोजे गए थे. इन उपकरणों में विशेष प्रकार के चाकू, सुइयाँ, चिमटियाँ आदि हैं. सुश्रुत ने **300 प्रकार की ऑपरेशन** प्रक्रियाओं की खोज की. महर्षि सुश्रुत ने अपने दिव्य ज्ञान और कौशलता से डिलिवरी, मोतियाबिंद, कृत्रिम अंग लगाना, पथरी का इलाज और प्लास्टिक सर्जरी जैसी कई तरह की मुश्किल सर्जरी को पूरा किया था.

सुश्रुत संहिता में **1,100 से अधिक रोगों** के बारे में जानकारी दी गई है. सुश्रुत ने अपने ग्रंथ में आयुर्वेद के अन्य पक्षों, जैसे- शरीर संरचना, काया-चिकित्सा, बाल रोग, स्त्री रोग, मनोरोग आदि को भी समाविष्ट किया है. तो जिस सर्जरी को आज दुनिया आधुनिक विज्ञान की उपलब्धि मानती है या उसके नामसे जानती है उसके असली जन्मदाता ऋषि सुश्रुत है.

"अष्टांगहृदयम्" के अनुसार आयुर्वेद का यह ज्ञान इन्द्रदेव से आत्रेय, धन्वन्तरि, निमि, कश्यप मुनियो को सिखाया. बाद में आत्रेय मुनि ने अग्निवेश, भेड, जातुकर्ण,

पराशर, हारित और क्षारपाणि ऋषिओने अपने नामसे 6 अलग अलग तंत्रग्रंथो की रचना की.

"अष्टांगहृदयम्" भी आचार्य वाग्भट द्वारा लिखित आयुर्वेद का एक प्रसिद्ध महान ग्रन्थ है. इसके अलावा **"अष्टांगसंग्रह"** नामक अन्य प्रसिद्ध ग्रंथ भी उनके द्वारा ही लिखा गया है. अष्टांगहृदयम् ग्रन्थ का रचना काल 250 ई. पू. से लेकर 500 ई. पू. तक अनुमानित है. आयुर्वेद के इस ग्रन्थ में औषधि और शल्य चिकित्सा दोनों का समावेश है. **चरक, सुश्रुत और वाग्भट को सम्मिलित रूप से 'वृहत्त्रयी' कहा जाता है.**

भगवान धन्वंतरि आयुर्वेद जगत के प्रणेता तथा वैद्यक शास्त्र के देवता माने जाते हैं. आदिकाल में आयुर्वेद की उत्पत्ति ब्रह्मा से ही मानते हैं और ग्रंथों में रामायण-महाभारत तथा विविध पुराणों की रचना हुई है, जिसमें सभी ग्रंथों ने आयुर्वेदावतरण के प्रसंग में भगवान धन्वंतरि का उल्लेख किया है. इसलिए भगवान धन्वंतरि आरोग्य, सेहत, आयु और तेज के आराध्य देवता माने जाते है. धनतेरस के दिवस पर भगवान धन्वंतरि से प्रार्थना की जाती है कि वे समस्त जगत को निरोग कर मानव समाज को दीर्घायुष्य प्रदान करें.

"माधव निदानम्", "शार्ङ्गधरसंहिता" और "भावप्रकाश" भी आयुर्वेद के श्रेष्ठतम ग्रन्थ है. हर एक ग्रंथ में कुछ वस्तु और क्रियाए गहन में विस्तार से बताई गयी है. आयुर्वेद के पुष्तकों की सूचि बहोत लम्बी है, इसीलिए केवल महत्वपूर्ण पुस्तको के नाम दिए गए है. सभी आयुर्वेदिक ग्रंथो की रचना किस काल मे हुयी उसके समय को लेकर विद्वानों के बिच थोड़ा मतभेद है, पर इसमे लिखित ज्ञान, कौशल्य और उपयोगिता के संदर्भ मे बिलकुल नहीं.

त्रिदोष: आयुर्वेद का मूल सिद्धांत

आयुर्वेद के पुरातन ग्रंथो के अनुसार सृष्टि में व्याप्त पंच महाभूतों- पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि एवं आकाश तत्वों के कारण मनुष्यों के ऊपर होने वाले प्रभावों तथा स्वस्थ एवं सुखी जीवन के लिए के लिए उनको संतुलित रखने की महत्ता को वर्णित किया गया है.

आयुर्वेद इन संयोगों को तीन दोषों के रूप में वर्गीकृत करता है -

- वात दोष - जिसमें वायु और आकाश तत्त्वों की प्रधानता हो.
- पित्त दोष - जिसमें अग्नि तत्त्व की प्रधानता हो.
- कफ दोष - जिसमें पृथ्वी और जल तत्त्वों की प्रधानता हो.

बच्चे की गर्भधारणा के समय माता तथा पिता में जिन प्रकृतियो का दोष प्रबल होता है उसी प्रकार से संतान में प्रकृति का निर्माण होता है. माता-पिता द्वारा गर्भधान के समय वीर्य और अटकाव में अगर वात प्रकृति का दोष अधिक होता है तो हिन् प्रकृति, पित्त है तो मध्य और कफ प्रकृति का दोष हो तो उत्तम दोष प्रकृति मानी जाती है. इन दोषों का प्रभाव न केवल व्यक्ति की शारीरिक संरचना पर होता है, बल्कि उसकी प्रवृतिया जैसे भोजन का चुनाव, पाचन, मन और भावनाओं पर भी होता है.

इसलिए जन्म लेनेवाले अधिकांश व्यक्तियों की प्रकृति में एक मात्र एक दोष ना होकर दो दोषों का संयोग होता है जिससे मिश्र प्रकृतिया बनती है. आयुर्वेद अनुसार मानव शरीर में जब तीन दोषों का संतुलन बिगड़ जाता है तब मानव रोग से ग्रसित

यानि बीमार पड़ता है. मानव के शरीर में तीनो दोष संतुलित होकर समप्रमाण रहे, मतलब की वह ना कम और ना ही ज्यादा हो, तभी निरोगी स्वास्थ्य की कल्पना साकार हो सकती है.

सात धातुएं और भोजन में संबंध

आयुर्वेद अनुसार भोजन के बाद शरीर में सात प्रकार की "धातुएं" निर्माण होती है जैसे रस (प्लाज्मा), रक्त (खून), मांस (मांसपेशियां), मेद (वसा), अस्थि (हड्डियाँ), मज्जा (बोनमैरो), वीर्य (शुक्र). पुरुष की सातवीं धातु वीर्य (शुक्र) है वैसे स्त्री में सातवीं धातु को "रज" कहा जाता है. तीनों दोषों की ही तरह इन सातों धातुओं का निर्माण भी पांच तत्वों (पंच महाभूत) से मिलकर होता है जो भोजन के बाद निश्चित क्रम से शरीर में निर्माण होता जाता है. यही धातुएं शरीर का पोषण करती है और शरीर की संरचना में भी सहायक होती है.

मंदाग्नि (पाचनतंत्र) है सब रोगो का मूल

जब भी हम भोजन करते है तो उसे पचाने के लिए पेट में अग्नि तत्व प्रज्वलित होता है, जो भोजन को रस में बदलने का काम करता है. अग्नि अगर ठीक से प्रज्वलित रहे तो अंत में "मधुर रस" निर्माण होता है और वह शरीर की सभी धातुओं को पोषण देता है. अगर भोजन करने से पहले पानी पिया जाए तो अग्नि मंद हो जाती है या बुझ जाती है. इस क्रिया से भोजन रस की जगह "आम" में बदलता है. भोजन ठीक से रस में नहीं बदल पाने से शरीर में विषैले तत्वों का निर्माण होने लगता है. तो शरीर के पोषण के लिए जो धातुएं निर्माण होनी चाहिए वह नहीं हो पाती और शरीर में विषैले तत्वों के कारण तरह तरह के रोग उत्पन्न होने लगते है. अगर भोजन के तुरंत बाद पानी पिया जाए तो पानी के क्षारीय प्रभाव के कारण कफ की वृद्धि होती है और अग्नि प्रक्रिया मंद होने से रसनिर्माण की प्रक्रियामें अवरोध आता है. इसीलिए भोजन के तुरंत पहले या बादमे नहीं लेकिन जब भोजन आधा हो जाए तो बिच में थोड़ा सा (एक-दो घूंट) पानी पिने का विधान बताया गया है जो भोजन के पाचन तथा शुद्ध धातुओं के निर्माण के लिए श्रेष्ठ माना गया है.

व्यवहारिक दृष्टि से देखे तो स्वदेशी के प्रणेता और सनातन संस्कृति के हिमायती **स्व. श्री राजीवभाई दीक्षित** के अनुसार दैनिक जीवनमे अगर आपका कार्य अधिक शारीरिक श्रम का नहीं है तो भोजन को रस में तब्दील होने में लगभग डेढ़ घंटे (1.5 Hours) का समय लगता है. यदि आप की दिनचर्या में शारीरिक श्रम ज्यादा है तो भोजन से रस निर्माण होने की प्रक्रिया एक घंटे (1 Hour) की है. **तो समय का ध्यान रखते हुए आपको भोजन के पश्चात एक से डेढ़ घंटे तक पानी नहीं पीना चाहिए. समय बीतने के बाद अच्छे से जितना मर्जी चाहे उतना पानी पी सकते है. भोजन करने से पहले अगर पानी का सेवन करना हो तो 20 मिनट पहले ही ग्रहण कर लेना चाहिए.** भोजन को शांतिपूर्वक चबाकर करना चाहिए, जिससे मुँह की लार भोजन में ठीक से समाहित हो.

कुछ लोगो को भोजन के साथ या भोजन के बाद कुछ प्रवाही या तरल पदार्थ पिने की इच्छा होती है तो आप भोजन के साथ या भोजन कर लेने के बाद छाछ, मठ्ठा या लस्सी ले सकते है. कुछ लोगो को सवाल होगा की छाछ, मठ्ठा या लस्सी में भी तो पानी है फिर उसे क्यों ग्रहण किया जाना चाहिए. तो उसके लिए आपको पानी के गुण को समझना पड़ेगा की पानी जिस वस्तु और पात्र के साथ मिल जाता है वह उसके गुण ग्रहण कर लेता है तो पानी को जब खाने चीजो के साथ मिलाया जाता है तो वह पानी ना रहकर उस खाने की वस्तु का गुण ग्रहण कर लेता है.

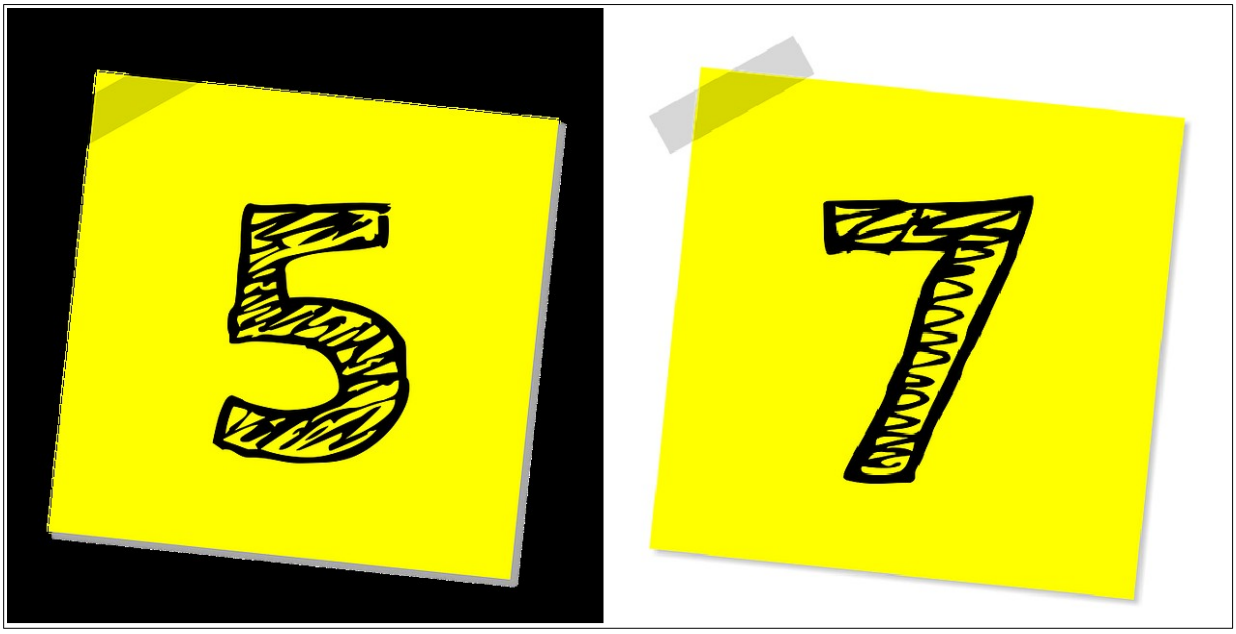

रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और वीर्य ये सात धातुए शरीर में क्रमशः पुष्ट होती हैं और हमारा आहार अंत में सातवीं धातु वीर्य (शुक्र) के रूप में परिवर्तित होता है. अर्थात् जो भोजन पचता है, उसका पहले रस बनता है. 5 दिन तक उसका पाचन होकर रक्त (खून) बनता है. पांच दिन बाद रक्त से मांस, उसमें से 5-5 दिन के अंतर से मेद, अस्थि, मज्जा और अंत में वीर्य (शुक्र) बनता है. इस प्रकार आहार से वीर्य बनने में करीब 1 महीना लग जाता है.

7 धातुओं के पुष्ट और सबल होने पर ही हमारा शरीर स्वस्थ रहता है. इन 7 धातुओं में सातवीं धातु वीर्य परम श्रेष्ठ होती है. शुद्ध और दोषरहित वीर्य गाढ़ा, चिकना, सफेद, मलाई जैसा घट्ट, जलनरहित और कांच जैसा चिकना होता है. जबकि पतला, मैला, पीला, पतले दूध जैसा, बदबूदार, झागदार और पानी की तरह टपकने वाला वीर्य दूषित, कमज़ोर और विकारयुक्त होता है. आहार मल में मुख्य रूप से मल (पुरीष), मूत्र (पेशाब) और स्वेद (पसीना) शामिल है.

याद रखना है की आप कितना भी पौष्टिक यानी पोषकतत्व से भरपूर खाना भोजन करते हो, लेकिन अगर उसमे से रस निर्माण ठीक से न हो पाए तो वह शरीर में पाचन ना होकर मल स्वरुप शरीर से बहार निकल जाता है. तो असली निरोगी जीवन का आधार आपका पाचनतंत्र है इसे ठीक से समज लेना चाहिए. अगर आप भोजन के मूलभूत सामान्य नियमो का पालन ना करे तो शरीर धीरे धीरे रोगो का घर बनता है और बीमारी से स्वस्थ होने के लिए जो औषध आप लेते है उसकी पूरी शक्ति आपकी पाचन क्षमता को ठीक करने में और शरीर में इसके कारण निर्माण हुए विषैले तत्वों से लड़नेमे ही चली जाती है. इस कारण से औषध का पोषण संबधी

लाभ जो आपको मिलना चाहिए उससे आप वंचित रह जाते हो. **यही कारण है एक ही आयुर्वेद की औषध किसी के लिए मात्र रोगनाशक बनी रहती है तो नियमो का अनुसरण करनेवाले दुसरे व्यक्ति के लिए रोगनाशक और पोषकदायी दोनो तरह से कार्य करती है.**

आपने अपने से एक दो पीढ़ी पूर्व लोगो से सुना होगा की "पेट ही शरीर की सब समस्याओ का मूल है" वह असल में सामान्य बात ना होकर प्राचीन आयुर्वेद विज्ञान से संबंधित है जिसका संबंध पेट की अग्नि से है. बस सालो अंग्रेजो के प्रभाव में रहकर कुछ भारतीय अपनी मूल संस्कृति भूल चुके है. पश्चिमी संस्कृति के लोग भी अब इस बात को अच्छे से समझने लगे है की उनकी शारीरिक और मानसिक समस्याओ का इलाज आयुर्वेद के पास ही है और वह अनुभव के बाद बिना किसी अहंकार आयुर्वेद और सनातन संस्कृति को अपना भी रहे है.

इसके अलावा विरुद्ध आहार ना करना जैसे खट्टी चीजो के साथ दूध का सेवन और सूर्यास्त के बाद पाचनमे भारी पदार्थो का सेवन ना करना भी मुलभुत नियमो में शामिल है, जिसका कितना पालन आप करने में सक्षम है उस पर भी आप की सेहत निर्भर है. सामान्य श्रम, विहार, और ऋतुचर्या अनुसार कुछ प्राकृतिक नियमो का पालन हमें रोगो से मुक्त रख सकता है जिसका विस्तृत वर्णन आयुर्वेद में मिलता है. कुछ जन्मजात या आनुवंशिक रोगो को अपवाद मानले तो अन्य सारे संभवित रोगो से बचने के लिए हर एक वयक्ति के लिए कुछ प्रकृतिक नियम का पालन आवश्यक है. भले ही हम धन या मन के प्रभाव में अपनी मर्जी के अनुसार अपनी दिनचर्या चुनते है पर शरीर प्राकृतिक नियमो से ही चलता है और इसके फल स्वरुप हमें अच्छी या बुरी सेहद प्राप्त होती है.

आयुर्वेद अनुसार रोगो को संख्या

आयुर्वेद के त्रिदोष सिद्धांत अनुसार शरीर में वायु (वात) के अंसतुलन से 80, पित्त के असंतुलन से 40 और कफ के असंतुलन से 20 रोग आते है. कई आचार्यो के ग्रंथो मे पेटा प्रकार की गिनती करे तो कफ के विकारो की संख्या 28 भी बताई गयी है. वर्तमान समय में भले ही हम रोगो को नया नाम देते जाते है या उसकी संख्या बढ़ाते रहते है; पर आयुर्वेद मे वात, पित्त और कफ के **त्रिदोष सिद्धांत** अनुसार आंतरिक दृष्टिसे मूल रोगोकी संख्या यही है और इन्ही 3 तत्वों को संतुलित कर शरीर के तमाम शारीरिक एवं मानसिक रोगो से मुक्ति पायी जा सकती है.

शरीर में सात धातुएं जैसे रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, वीर्य तथा मल दूषित होने के कारण ही शरीर में भिन्न भिन्न रोग उत्पन्न होते है जिसका विस्तृत वर्णन ग्रंथो में किया गया है. आयुर्वेद ग्रंथो में स्वस्थ व्यक्ति के लक्षण यही बताये गए है की जिससे सभी दोष सम मात्रा में हों, अग्नि सम हो, धातु, मल और उनकी क्रियाएं भी सम तथा जिसकी आत्मा, इंद्रिय और मन प्रसन्न (शुद्ध) हों. इसके विपरीत लक्षण हों तो व्यक्ति को अस्वस्थ समझना चाहिए.

आयुर्वेद में नाड़ी परिक्षण

आयुर्वेद में रोगो की पहचान और उसके इलाज के लिए मूल रूप से वात, पित्त और कफ विकारो के शारीरिक लक्षणों को ही महत्त्व दिया जाता है. परंतु यहाँ सूक्ष्म नाड़ियो की बजह रोगी हाथ की नाड़ी यानी धमनी पे स्पंदनो को महसूस कर विकारो का परिक्षण किया जाता है.

हृदय को चेतना का महत्वपूर्ण स्थान माना गया है. सूक्ष्म रूप से शरीर की सेहत अच्छी होने या बिगड़ने का प्रभाव हृदय की गति (दिल की धड़कन) पर पड़ता है. इस स्पंदन या धड़कन का प्रभाव धमनियों की धड़कन पर पड़ता है. इसी धड़कनो की गति और स्पंदनो को महसूस कर आयुर्वेदिक चिकित्सक आपकी सेहत का अंदाज़ा लगाते हैं. आमतौर पर पुरुषों के दायें हाथ और स्त्रियों के बाएं हाथ की नाड़ी की गति देखी जाती है. हालांकि कभी कभी दोनों हाथों की नाड़ी देखने पर ही स्पष्ट जानकारी हासिल हो पाती है. हथेली से लगभग आधा इंच नीचे का स्थान छोड़कर नाड़ी का परीक्षण किया जाता है.

आयुर्वेद में त्रिदोष, सन्निपात, असाध्य रोग एवं मृत्युसूचक लक्षणों का भी परिक्षण नाड़ी की गति और स्पंदनो द्वारा किया जाता है और रोग की गंभीरता का अंदाजा लगाया जा सकता है.

त्रिफला- एक उत्तम और दिव्य महाऔषध: आयुर्वेद अनुसार

सदियों से रोगों को ठीक करने के लिए एक से बढ़कर एक चमत्कारी आयुर्वेदिक औषधियों का इस्तेमाल किया जाता है; जिनमे से कोई बात का नाश करती है, कोई पित्त का और कोई कफ का. आयुर्वेद में कुछ ऐसी गुणकारी औषधियां भी है जो मात्र 1 दोष की जगह 2 दोषो का एक साथ का शमन करने के लिए भी शक्तिशाली है. लेकिन आयुर्वेद के **"त्रिदोष सिद्धांत"** अनुसार शरीर को निरोगी और रोगमुक्त बनाने के लिए ऐसी औषधो की जरुरत है जो वात, पित्त और कफ यह तीनो दोषो को एकसाथ संतुलित करे. इसलिए व्यक्ति की प्रकृति और दोष की अधिकता अनुसार चिकित्सक को उपयोगी औषधो का चुनाव करना आवश्यक है.

त्रिफला को महाऔषध इसलिए कहा गया है क्योकि यह प्रकृति अनुसार व्यक्ति या रोगी के किसी 1 या 2 दोषो को नहीं, बल्कि वात-पित्त-कफ ये तीनो दोषो को एकसाथ संतुलित करने में समर्थवान औषध है. त्रिफला को आयुर्वेद में शरीर का कायाकल्प करनेवाली सर्वोच्च रसायन औषधि बताई गई है जो ना सिर्फ शरीर की बीमारियों को जड़ से दूर करने के लिए उपयोगी है, परंतु त्रिदोष को संतुलित कर शरीर को हमेशा निरोगी रखने में भी सहायक है. **आयुर्वेद के विभिन्न अध्यायो में लगभग कुल 120 से भी ज्यादा सूत्र अकेले त्रिफला के ऊपर लिखे गए है** जो स्वास्थ प्रदान करनेवाले विभिन्न रसायनो को बनाने तथा गंभीर मानी जानेवाली बीमारीयो के इलाज हेतु अत्यंत उपयोगी है. आयुर्वेद अनुसार त्रिफला में मौजूद आवला, बहेड़ा और हरड़ ये तीनो के औषधीय गुण विस्तार से बताये गए है.

हरड़ "कफ और वायु" दोष का नाश करती है. आवला "कफ और पित्त" का नाश करता है. हरड़ की तासीर गर्म है, इसीलिए उसे उष्णवीर्य कहा जाता है और आवला की तासीर ठंडी है, इसीलिए उसे शीतवीर्य कहा जाता है. बहेड़ा "कफ और वायु" दोष का नाश करता है. इसतरह तीनो औषधि के मिश्रण से त्रिफला अद्भुत रसायन बनता

है जो वात, पित्त और कफ तीनो को एकसाथ संतुलित करने के लिए दिव्य एवं महाऔषध मानी जाती है.

त्रिफला आयुर्वेद की द्रष्टि से उत्तम रसायन क्यों है यह समझने के लिए "रस" का महत्त्व समझना पडेगा. भोजन करने के बाद उसमे से उत्पन होनेवाली 7 धातुएं है जैसे **रस (प्लाज्मा), रक्त (खून), मांस (मांसपेशियां), मेद (वसा), अस्थि (हड्डियाँ), मज्जा (बोनमैरो), वीर्य (शुक्र).** कोई भी चीज जब जीभ के संपर्क में आती है तो उससे हमें जो अनुभव होता है उसे आयुर्वेद में रस कहा गया है. आम भाषा में कुछ भी चीज खाने पर हमें जो स्वाद महसूस होता है वही **रस** है.

आयुर्वेद में 6 प्रकार के रसों के बारे में बताया गया है जैसे मधुर (मीठा), अम्ल (खट्टा), लवण (नमकीन), तिक्त (कड़वा), कटु (तीखा या चरपरा) और कषाय (तूरा). त्रिफला की तीनो औषध में नमकीन रस को छोड़कर कुल पांच रस पाए जाते है जो औषध को श्रेष्ठतम बनाते है.

हरड़ पाचन एवं बुद्धि के लिए हितकर, पचने में हलकी, दीपन करनेवाली, जवानी को टिकाके रखनेवाली, इन्द्रियों को बल देनेवाली और आयुको बढ़ानेवाली श्रेष्ठ औषध है. इसके अलावा कुष्ठ (चमड़ी के अन्य रोग), दम, खांसी, बेहोशी, उलटी, आवाज़ की खराबी, सूजन, पेट के कृमि, दस्त, प्रमेह, पीलिया, ह्रदय रोग, क्षयरोग, पांडुरोग, अत्यधिक पसीना या लार का झरना, बवासीर, कृत्रिम ज़हर, पेट का दर्द, उदासी, अरुचि, सर, आँखों और मूत्र संबंधी रोगो को मिटाने वाली है.

आवला के गुण हरड़ के जैसे ही है. बस तासीर ठंडी होने से ये रक्तपित्त को मिटानेवाला और वीर्य को बढ़ानेवाला उत्तम औषध है.

बहेड़ा में हरड़-आवला ये दोनों औषधियों के मिश्र गुण है, परंतु दोनों के मुकाबले थोड़ी कम मात्रा मे है. इसके अलावा ये खासकर बालो के लिए श्रेष्ठ है.

त्रिफला के साथ सेवनमे ली जानेवाली **मुलेठी** आँखों के लिए हितकर, बल और वीर्य को बढ़ानेवाली मूल्यवान औषध है. इसके उपरांत बाल, वर्ण, स्वर के लिए हितकारी एवं खून की खराबी, सूजन, ज़हर, उलटी, प्यास, ग्लानि और क्षय रोगो को मिटानेवाली है. मुलेठी की तासीर ठंडी है और स्वाद में मीठी है. आयुर्वेद अनुसार मुलेठी **"वायु और पित्त"** का नाश करती है और फक का भी शमन करती है.

रोग-औषध के प्रकार और त्रिफला लेने का श्रेष्ठ समय

आयुर्वेद में औषध मूल 2 स्वरुप के बताये गए है- शोधन औषध और शमन औषध. जो औषध शरीर में बढे वात, पित्त और कफ दोषो को शरीर से बहार निकालकर रोगो को नष्ट करता है उसे शोधन औषध कहते है. इससे विपरीत यह तीनो दोष की मात्रा शरीर में कम है और दोषो को सम बनाने के लिए जो औषध तीनो दोषो की मात्रा शरीर में बढ़ाता है उसे शमन औषध कहते है. विभिन्न प्रकार के औषधो की उपयोगिता और कार्य प्रणाली को वर्णित करने के लिए इसके कुछ ग्रंथो में इसके पेटा प्रकार के भी विस्तृत वर्णन मिलते है.

औषधो के प्रकार में से त्रिफला "रसायन औषध" की श्रेणी में आता है. रसायन औषध शरीर के रोगो को नष्ट करनेवाला एवं शरीर को जवां रख बुढ़ापे को नष्ट करनेवाला श्रेष्ठ औषध माना गया है.

रोगो को भी आयुर्वेद अनुसार 4 प्रकारो में बांटा गया है –

सुखसाध्य रोग
कष्ट साध्य रोग
प्राप्य रोग
असाध्य रोग

जब रोगी का शरीर-मन औषध को सहन करनेमे सक्षम हो, जो रोग मर्म स्थानों को लगा ना हो, रोग के लक्षण अति तीव्र-उपद्रवी ना हो और कुछ ही दिनों के भीतर शरीर में रोग उत्पन्न हुआ हो वह **"सुखसाध्य रोग"** है जो आसानी से

मिटनेवाला जानना चाहिए. शरीर में **मर्म स्थान** क्या है इसका वर्णन आगे लेख में दिया गया है. सुखसाध्य रोगो से विपरीत रोग जो आहार, विहार से काबू में आये ऐसा हो और जिसमे रोगी का आयुष्य बाकी रहा हो ऐसे रोग को **"याप्य रोग"** कहते है. जो रोग शस्त्रक्रिया से मिट सके ऐसा हो या जिनमे रोगी के शरीर की इन्द्रिया काबू में रहे लेकिन रोग मर्मस्थानो में स्थित हो तो वह **"कष्टसाध्य रोग"** रोग कहलाता है, जो कठिन प्रयत्नों के बाद देरी से मिटनेवाला समझना चाहिए. जिस रोग में रोगी के शरीर में रिष्ट यानी मृत्यु के चिह्न दिखने लगे हो और जिसमे आवरदा के साथ इन्द्रियों की शक्ति नष्ट हो गयी हो वह रोग **"असाध्य रोग"** कहलाता है, मतलब उसे कभी ना मिटनेवाला जानना चाहिए.

आयुर्वेद में ज्यादातर औषधो को लेने का सर्वश्रेष्ठ समय सुबह का बताया हुआ है. सूर्योदय के समय लिया हुआ औषध शरीर में अग्नि तत्व को तेज करता है जिससे मंदाग्नि से होनेवाले कफ के प्रकोप से शरीर बचा रहता है. शरीर में पित्त के प्रकोप में विरेचन, कफ के प्रक्रोप में वमन और लेखन क्रिया मतलब दोष को हल्का करना या शरीर के बहार फेकने के लिए औषध को सुबह में लेना ही लाभदायी है. इसके अलावा आयुर्वेद की भिन्न औषधो के लिए दोपकर का भोजन काल, शाम का भोजन काल, बार बार औषध देने का काल और रात का अंतिम काल, जिसमे शरीर की बीमारी और दोषो की प्रधानता अनुसार औषध के काल का चुनाव किया जाता है.

इसलिए त्रिफला की औषधीय उपयोगिता अनुसार औषध लेने के लिए सुबह का समय सर्वश्रेष्ठ बताया गया है. परंतु वायु, कब्ज, बबासीर जैसे रोगो में जल्द लाभ हेतु इसे कुछ समय दिन के साथ रात्रि को न्यूनतम मात्रा में सेवन करने के पश्चात् इसके सेवन का समय केवल सुबह का कर लेना चाहिए. दिनचर्या में अगर खान पान अनियमित हौ या फिर अत्यधिक, तंबाकू, शराब या धूम्रपान से शरीर में विषैले तत्व

निर्माण होते हो तो वैध के परामर्श से दिन के साथ रात में भी निश्चित मात्रा में रोज त्रिफला का सेवन किया जा सकता है.

त्रिफला की मात्रा कितनी होनी चाहिए इसके बारे आगे विस्तार से बताया गया है. त्रिफला का सेवन सादे मटके के पानी के साथ कर सकते है और गुनगुने पानी के साथ भी सेवन करना आयुर्वेद की दृष्टि से लाभ देही है.

अगर आपके आहार मे दूध शामिल है, तो दूध का सेवन करने से 1-1.25 घंटे पहले या बाद में त्रिफला का सेवन करना है. आयुर्वेद में खट्टे पदार्थो का सेवन दूध के साथ वर्जित माना गया है. त्रिफला में आंवले का खट्टा रस ना होकर 5 मिश्र रस है और रसायन बनने के बाद वह किसी एक औषध का नहीं, परंतु मिश्र औषध का गुण धारण करता है. लेकिन, कुछ मात्रा में अम्ल गुण होने के कारण दूध के साथ त्रिफला का सेवन ना करे वह कुछ अनुभवी वैध और मेरे भी आंकलन अनुसार अच्छा रहेगा.

त्रिफला सेवन की मात्रा और अनुपात

आयर्वेद ग्रंथ अनुसार औषध की मात्रा हर एक व्यक्ति के लिए एक जैसी निर्धारित नहीं की जा सकती. वैध को औषध देने के समय, रोगी की जठराग्नि, उम्र, बल, प्रकृति, देश और शरीर में विषम हुए दोषो का परिक्षण करने के बाद औषध की मात्रा निर्धारित करनी होती है.

औषध की मात्रा नवजात बालक, जवान और वृद्ध के लिए अलग अलग बताई गयी है. प्रवाही रूप से दिए जानेवाले औषध, चूर्ण और गुटिका (गोली) के रूप में

औषध की मात्रा अलग दी जाती है. नवजात बच्चे को प्रथम मास मे औषध एक रती यानी 0.18 ग्राम के आसपास दूध, मध्, शक्कर या घी के साथ दिया जाना चाहिए. प्रति मास बालक 12 मास का नहीं हो जाता तब तक हर मास को 1 रती यानी 0.18 ग्राम प्रवाही औषध की मात्रा बढ़ाते जाना चाहिए. बालक जैसे जैसे बड़ा होता जाता है वैसे औषधि का प्रमाण हर एक वर्ष एक माषा यानी 0.97 ग्राम बढ़ाते जाना है. **चूर्ण के रूप में 16 वर्ष की आयु में "16 माषा" औषध की मात्रा दी जानी चाहिए जो ग्राम के नाप से लगभग 15.55 ग्राम के आसपास बनती है. औषधि का यही प्रमाण 16 से 70 वर्ष की आयु तक लागू होता है. 70 साल की आयु के बाद बालक के जैसे ही समयांतर से औषध की मात्रा वृद्ध लोगो के लिए कम करने का विधान है.**

त्रिफला जो की एक रसायन औषध है और उसकी मात्रा के सेवन के बारे में बात की जाए तो व्यक्ति की प्रकृति, शरीर में रोग की स्थिति, त्रिदोष का प्रक्रोप, खान पान और दिनचर्या अनुसार सुबह-श्याम दोनों समय लिया जा सकता है. रसायन औषध की उपयोगिता अनुसार अधिक मात्रा में उसे सुबह में लेना ही उपयोगी और आरोग्य की दृष्टि से लाभप्रद माना गया है. तो उसकी संदर्भ में जो व्यक्ति स्वस्थ है या कुछ सामान्य बीमारी से ग्रस्त है और उसकी दिनचर्या और खानपान प्रकृति के नियम अनुसार है तो उसे त्रिफला का सेवन केवल सुबह में एक बार ही करना जरुरी है. उससे विपरीत अगर किसी व्यक्ति के शरीर में रोग की तीव्रता अधिक हो, बवासीर या पित्त-वायु संबंधित रोग अधिक हो या तंबाकू, शराब या धूम्रपान का सेवन अधिक हो, दिनचर्या प्राकृतिक ना होकर खान पान अनियमित हो या फिर कार्यशैली में आसपास दूषित हवामान शामिल हो तो एक स्वस्थ व्यक्ति के मुकाबले शरीर में विषैले तत्वों का स्तर बढ़ने की संभावना रहती है तो वह व्यक्ति सुबह-श्याम को दोनों समय त्रिफला का सेवन कर सकता है. मात्रा का सही चुनाव वैध से परामर्श कर या आयुर्वेद ग्रंथो के कथन अनुसार कैसे कर सकते है यह आगे विस्तार से बताया है.

आयुर्वेद के ग्रंथो में जैसे चूर्ण के रूप में औषध लेने की अधिक से अधिक मात्रा 15.55 ग्राम की बताई गई है. उस संदर्भ में स्वस्थ या सामान्य बीमारियों से ग्रसित व्यक्ति को ना कम और नाही ज्यादा ऐसे संतुलन कर त्रिफला का सेवन करना अधिकतर वैधो के कथन अनुसार आवश्यक है. लेकिन जैसे ग्रंथो में बताया गया है वैसे रोगी की जठराग्नि, उम्र, बल, प्रकृति, देश और शरीर में विषम हुए दोषो का परिक्षण करने के बाद अनुभवी वैध रोगी की जरुरत के हिसाब से उसमे फेर बदल कर सकता है.

आयुर्वेदिक शास्त्रों के कथन से ये स्पष्ट है की वात, पित्त और कफ के त्रिदोष को मिटाने के लिए त्रिफला रामबाण औषधि है. त्रिदोष में संतुलन बनाके रोगमुक्त होने के लिए उम्र अनुसार निम्नलिखित मात्रा में सुबह त्रिफला का सेवन किया जा सकता है. लेकिन आपकी प्रकुर्ति के अनुकूल सिर्फ एक बार सुबह में त्रिफला का सेवन करना या रोग एवं दिनचर्या अनुसार सुबह-श्याम दोनों समय सेवन करने के लिए कितनी मात्रा अनुकूल हो सकती है यह निचे विस्तार से बताया गया है.

फिरभी मात्रा के बारे में कोई संदेह मन में हो तो किसी ज्ञानी और नीतिवान वैध से परामर्श कर सकते है. भौगोलिक स्थान और दिनचर्या के अवलोकन अनुसार वैध के द्वारा निर्धारित मात्रा हर व्यक्ति के लिए अलग अलग हो सकती है.

सुबह सेवन के लिए उम्र अनुसार त्रिफला की मात्रा														
उम्र	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16+	17-70	70+
सुबह की मात्रा (ग्राम)	3.20	3.84	4.48	5.12	5.76	6.40	7.04	7.68	8.32	8.96	9.60	10.24	10.24	वैध अनुसार
सुबह + रात्रि को सेवन के लिए उम्र अनुसार त्रिफला की मात्रा														
उम्र	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16+	17-70	70+
सुबह की मात्रा (ग्राम)	3.20	3.84	4.48	5.12	5.76	6.40	7.04	7.68	8.32	8.96	9.60	10.24	10.24	वैध अनुसार
शाम की मात्रा (ग्राम)	1.60	1.92	2.24	2.56	2.88	3.20	3.52	3.84	4.16	4.48	4.80	5.12	5.12	वैध अनुसार

ग्राम की मात्रा औषध के वजन पर निर्धारित होती है, लेकिन आयुर्वेद में चूर्ण के रूप में ली जानेवाली अधिकतर औषध का प्रमाण ग्राम में चित्र अनुसार अंदाजे से दिया गया है. सबसे पहली और छोटी चम्मच 3-4 ग्राम की है, उससे थोड़ी दूसरी बड़ी चम्मच 5-6 ग्राम की है. दूसरी चम्मच से थोड़ी बड़ी चम्मच 7-8 ग्राम की है और चौथी सबसे चौड़ी चम्मच 9-10 ग्राम की है. मापदंड के अनुसार वजन तोलने के लिए एक बार किराने की दूकान से या बाजार में मिलनेवाले कांटे को खरीदकर तोलमाप आसानी से किया जा सकता है.

अधिकतर आयुर्वेद के आचार्यो का यही मत है की 5 साल से कम आयु के बच्चो को आयुर्वेद अनुसार औषध केवल प्रवाही के रूप में उम्र अनुसार ही दिया जाना चाहिए, और त्रिफला का सेवन 5 साल से ही शुरू करना चाहिए. त्रिफला की मात्रा जो ऊपर बताई गयी है वह मेरा आयुर्वेद ग्रंथो के पठन, स्व-अनुभव और परिचित लोगो ने जो उनका अनुभव मेरे सामने प्रस्तुत किया उस अनुसार का विधान है. लेकिन यह किसी वैध के विशेष ज्ञान एवं अनुभव से भिन्न हो सकता है. तो आप अपनी प्रकृति अनुसार मात्रा के बारे में किसी अनुभवी और नीतिवान वैध से परामर्श कर थोड़ा फेर बदल कर सकते है. औषध को अगर कम मात्रा में लिया जाए तो लाभ थोड़ी देरी से मिलता है, लेकिन अधिक शीघ्र लाभ पाने हेतु ज्यादा मात्रा में लिया जाए तो लम्बे समय पे थोड़ा नुकसान भी अवश्य दे सकता है.

आयुर्वेद अनुसार जिस रसायन औषध को लेने से शाम को ठीक से भूख न लगे, शाम का भोजन करने की इच्छा ना हो तो वह मात्रा आपकी प्रकृति अनुसार सही नहीं है ऐसा समझकर उसकी मात्रा कम कर देनी चाहिए. मतलब त्रिफला की वही मात्रा पर्याप्त होगी जिसे सुबह लेने पर शाम को नैसर्गिक भूख लगे. तो आप बिना वैध के भी अपने लिए किसी भी औषध की सही मात्रा पहचान सके ऐसा विधान ऋषि मुनियो ने आयुर्वेद के ग्रंथो मे दिया है.

जैसे त्रिफला की मात्रा को लेकर कुछ मतभेद आयुर्वेद के आचार्यो में मिलते है, वैसे ही उसके बनाने की विधि को लेकर भी थोड़ा मतभेद है. आयुर्वेद के ग्रंथो में त्रिफला को बनाने के लिए तीन फलो के उपयोग के बारे में बताया गया है और उसमे औषध के कितने फल लेने है उसके बारे में भी. **परंतु तीनो फल के कद और वजन अनुसार आयुर्वेद आचार्यो के भी भिन्न मतभेद है की कोनसी औषध की कितनी मात्रा उसे बनाने के लिए उपयोग में ली जाए.** तो प्रत्येक औषध के खास अनुपात को लेकर भिन्न भिन्न मान्यता और मतभेद आयुर्वेदाचार्यो में भी मिलते है. लेकिन निश्चित ही

उसकी उपयोगिता और गुणों के बारे में किसी भी आचार्यो में मतभेद नहीं है. तो आप खुद इस विषय पे अधिक जानकारी प्राप्त कर इसे गहराई से समज सकते है और मुल्यांकन कर सकते है.

मेरे अनुभव से त्रिफला को किसी भी अनुपात में बनाया जाए वह शरीर पे अपना अच्छा प्रभाव दीखता ही है. त्रिफला को एक खास अनुपात में बनया जाए तो वह शरीर के कुछ खास अंगो पे पहले अपना प्रभाव दीखता है और कुछ अंगो पे बाद में. यही परिणाम दूसरे प्रकार के अनुपात से बनायीं गयी त्रिफला का भी है, लेकिन औषध का प्रभाव का समय व्यक्ति की प्रकृति अनुसार कुछ खास अंगो पे भिन्न हो सकता है. फिर भी आज के समय की स्थिति अनुसार त्रिफला का कोनसा अनुपात अच्छा रहेगा उसपे मै मेरे खुद के अनुभव से मत दे सकता हूँ, लेकिन एक वैध ना होते हुए उस टिपण्णी को में उचित नहीं समझता. अगर उसे बताया जाए तो टिका-टिपण्णीओ का अम्बार भी लग सकता है और इसका ठीक से मूल्यांकन करने के लिए वाचको के पास आयुर्वेद ग्रंथो के विविध संदर्भो की जानकारी होनी आवश्यक है, जो हर एक वाचक के पास पूर्ण रूप से हो यह संभव नहीं है. परंतु निश्चित ही किसी भी अनुपात से त्रिफला को बनाया जाए वह पूर्ण उपयोगी है.

त्रिफला के साथ उसके तत्वों को अधिक उपयोगी बनाने के लिए साथमें ली जानेवाली मुलेठी या ऋतुचर्या अनुसार त्रिफला को अन्य औषधि के साथ कितनी मात्रा में सेवन किया जाए यह भी आयुर्वेदाचार्यो के लिए मत का विषय है. त्रिफला के अनुपात की तरह उसे भी मेरे द्वारा बताया जाना उचित नहीं है. तो कुल मिलाकर त्रिफला के अनुपात और मुलेठी को त्रिफला के साथ में मिलाने की मात्रा आयुर्वेद के ग्रंथो के गहन अध्यहन या फिर उसकी जानकारी किसी ज्ञानी, अनुभवी एवं नीतिवान वैध से प्राप्त की जा सकती है जो इस परिस्थिति में योग्य न्याय कहलायेगा.

शुद्ध त्रिफला का मापदंड

त्रिफला का खुद के द्वारा किया गया निर्माण सर्वश्रेष्ठ है, क्योकि उसपे आपका अपना पूर्ण भरोसा रहेगा और त्रिफला की शुद्धता साध्य रोगो को पूर्ण रूपसे दूर करने तथा उससे बचाव् हेतु शरीर का रक्षण करने में सक्षम होती है. तो हम शुद्ध त्रिफला निर्माण करने की विधि समझेंगे या अगर आप इसे खुदसे निर्माण करने में सक्षम नहीं है तो आप उसे कैसे और कहा से प्राप्त करे तथा इसकी शुद्धता को परखनेका मापदंड क्या है उसके बारे में समज लेते है.

आयुर्वेदिक औषधो को खेतो या जंगलो से बाजार में लाया जाता है, जिसमे जमींन की धूल-मिटटी से लेके उसे संग्रहित करने के स्थानों की अशुद्धता औषधि के ऊपर आना स्वाभाविक है. व्यापरीकरण और चीजों को बाजार से सस्ता बनाने के लिए औषधि की शुद्धता का मानक अधिक जगहों पर खरा नहीं उतरता. संग्रहित स्थानों पर गीलापन या उसे बड़े व्यापारीयो के गोदाम से छोटे व्यापारियों के गोदाम तक वाहनों से पहोचाने तथा संग्रहित करने की प्रक्रिया तक छोटे किटको और सूक्ष्म जीवो का सूर्यप्रकाश की कमी से औषधि पर हमला होते रहता है. ऐसे में बाजार में सीधे चूर्ण के रूपमे मिलनेवाली औषधियों का सेवन आरोग्य की दृष्टि से काफी हद तक नुक्सानदेहि हो सकता है अगर निर्माता द्वारा औषध को शुद्ध रखने के पूर्ण उपाय चूर्ण बनाने से पहले ना किया जाए. यह भी सत्य है की बड़ी मशीनों द्वारा अधिक गर्मी पैदा होने की बजह से उसका औषधीय गुण चूर्ण में बदलने से पहले कम हो जाता है और अगर उसे पीसने से पहले ठीक से साफ़ ना किया गया हो तो औषध में मौजूद सूक्ष्म जिव-जंतु भी उसमे पीसाके धूल मिटटी के साथ शामिल हो सकते है और इससे शरीर में औषधिय लाभ के साथ पथरी और अन्य रोग भी पैदा हो सकते

है. दूसरा औषधि हेरफेर और संग्रहित करने की प्रक्रिया से जुड़े व्यक्तियों के हाथ-पैर और स्थानों का स्वच्छ होना भी अति आवशयक है.

हर एक औषध की उम्र होती है. जैसे अधिकतर औषधो को बाजारों में लाये जाने के एक साल बाद औषधि का प्रभाव आयुर्वेद अनुसार क्रमशः कम होते जाता है. दूसरा जब एक औषध को दूसरे औषध के साथ मिलाया जाता है तब वह रसायन बन जाता है और आयुर्वेद अनुसार उसकी अवधि भी कुछ समय के बाद कम होने लगती है एवं निश्चित काल पूरा होने के बाद नष्ट भी हो जाती है. मात्र व्यापार की निति से बाजार में बिक रही औषध कब लायी गई है और उसको चूर्ण के रूप में कब तब्दील किया गया यह जानना एक व्यक्ती के लिए काफी मुश्किल काम है और व्यापारियों द्वारा लिखी तारीख पर भरोसा कर यह समझना पड़ता है जो आज के समय में मुश्किल काम है.

तीसरी बात है की बाजार भाव, मूल्य और स्थानांतर करने के लिए आयुर्वेदिक औषधियों को प्लास्टिक के डिब्बे में पैक किया जाता है जो वैज्ञानिक भाषा में फ़ूड ग्रेड प्लास्टिक होता है. लेकिन आयुर्वेद में कभी किसी औषध को प्लास्टिक के डिब्बे में बंद करने का विधान नहीं है, क्योकि वह धातु के रूपमे खोजी या इस्तेमाल नहीं की जाती थी. त्रिफला जैसे रसायन या विशेषकर सभी औषधो को कांच की बोतल और कुछ औषधो को लोहे के डिब्बे में ही रखने का चलन था जिससे औषध के अंदर कोई रासायनिक किया ना हो कर वह पूर्ण रूप से शुद्ध रहे.

चौथा और सबसे महत्वपूर्ण की औषध लम्बे समय तक ख़राब ना हो उसके लिए बाजार में मिलनेवाले कुछ उत्पादकों में सूक्ष्मजीवीरोधी परिरक्षक यानी प्रिज़र्वेटिव के रूप में **मिथाइल पैराबेन (Methyl Paraben)** और **प्रोपिल पैराबेन (Propyl**

Paraben) नामक केमिकल उसके साथ मिलाये जाते है. तो यह समझने के लिए काफी है की त्रिफला सहित ऐसा कोई भी उत्पादक आयुर्वेद अनुसार पूर्ण नैसर्गिक नहीं कहा जा सकता. तो नैसर्गिक विधानों से विपरीत अगर आप बाजार के चूर्ण पर पूर्ण भरोसा करते है तो ये मात्र आपका विश्वास हो सकता है, लेकिन ऐसे औषधो से ज्यादा फायदे की उम्मीद करना मेरे अवलोकन एवं मत अनुसार बेकार है.

मेरे आंकलन अनुसार आज के समय में बाजार में मिलनेवाले चूर्ण या कोई भी आयुर्वेदिक उत्पादक सभी मानकों पर पूर्ण खरे उतरते हो उसकी संभावना केवल 5% है.

शुद्ध त्रिफला निर्माण हेतु जो भी औषध बाजार से लायी जाए वह बीज के साथ पूरी हो और उसे ठीक से पानी के हलके प्रवाह से धोना चाहिए और फिर हलके से सूर्यप्रकाश में उसे सुखाया जाना चाहिए तभी वह दूषित धूल-मिटटी और सुक्ष्म जीवो से मुक्त हो सकती है. ऐसी औधष का बीज निकालकर जब चूर्ण बनाया जाए तभी वह पूर्ण शुद्ध हो सकता है और रोगो पे प्रभावी भी. आयुर्वेद ग्रंथो के अनुसार औषध को चूर्ण बनाने के लिए सिलबट्टा और हाथ से चलनेवाली पत्थर की चक्की से पिसा जाना चाहिए तभी वह पूर्ण गुणकारी होता है. लेकिन मर्यादावश अगर हम जितनी बड़ी या गर्म मशीनों का उपयोग औषध को पीसने के लिए करते है तो वह निश्चित ही अधिक गर्मी के कारण औषध का गुण कुछ हद तक कम अवश्य करता है. **परंतु आज की परिस्थिति अनुसार समय और मूल्य की दृष्टि से ये संभव नहीं की हम बिना मशीनों के यह निर्माण कर पाए.** तो जितना हम औषध को छोटी मशीनों से बनाते है उतना ही उसका गुण ज्यादा रहता है और पानी से धोकर हल्का सूर्यप्रकाश दी गयी औषध आज के समय में सर्वश्रेष्ठ दवा का काम कर सकती है.

यह भी सत्य है की प्राचीन भारत की जमीन की फलद्रुपता के मुकाबले आज की जमीन इतनी श्रेष्ठ नहीं है और केमिकल्स के छिड़काव के कारण यह औषध के गुण भी कम करती है या उसे कुछ हद तक दूषित भी करती है. आज के जमाने में जैविक खाद और पूर्ण और नैसर्गिक खेती के दावे भी बहुत किये जाते है और आर्गेनिक के नाम पे लोगो से बहुत मोटा पैसा वसूला जाता है, पर सही मायने में आर्गेनिक पाना दुर्लभ है. नसीब से आर्गेनिक अगर मिल भी जाए तो वह सामान्य से 4 से 5 गुना महेंगा होता है जो हर एक व्यक्ति के लिए खर्च पाना संभव भी नहीं. फिरभी आयुर्वेद के कथन अनुसार हम जितनी भी औषध की शुद्धता रख पाए उतना ही वह शरीर के लिए असरदार रहता है. तो बिना नकारात्मक सोच के आप जितनी शुद्धता रख पाए उतने ही औषध के सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे और वह मेरे अनुभव अनुसार प्राकृतिक होने के कारण दूसरी चिकित्सा पद्दतियो की दवाई से कई गुना लाभकारी और श्रेष्ठ भी होगा.

त्रिफला कैसे बनाये या कहाँ से प्राप्त करे?

(1) बाजार से आंवला, बहेड़ा, हरड़ और मुलेठी को पूरा लेकर आना है. पुरे से मतलब बीज सहित पूरा औषध. पानी से धोकर इसे हलकी धुप में सुखाकर इनके बीजो को निकालना पड़ेगा. इन औषधियों को पीसकर इनका पावडर यानी चूर्ण बनाने के लिए घर की मिक्सी काम नहीं आ सकती तो आपको इसे औषधि पीसनेवाले के पास ले कर जाना पड़ेगा. लेकिन अधिकतर लोगो के लिए ये अत्यंत जटिल काम है और समय के अभाव और जटिलता के कारण असंभव प्रतीत होगा.

(2) दूसरा तरीका है की किसी अच्छे और विश्वासनीय वैध के पास से त्रिफला लिया जा सकता है. परंतु इसकी शुद्धता के जो मानक बताये गए है उसका पालन होना अति आवश्यक है. तो ऐसा कोई वैध नहीं होना चाहिए जो केवल व्यापार की दृष्टि से भिन्न-भिन्न कंपनियों का त्रिफला बेचता हो, बल्कि शुध्दतम तरीके से त्रिफला खुद उसके द्वारा निर्माण की होनी चाहिए तभी वह गुणकारी साबित हो सकती है. दिन में एक बार औषध लेना है या दो बार उसके बारे में भी आपकी जरूरियात और बीमारी की गंभीरता अनुसार मात्रा के बारे में वैध से परामर्श कर सकते है.

(3) अगर आप खुद से त्रिफला का निर्माण करने में सक्षम नहीं है या आपको अपनी जरुरीयत के हिसाब से उपयुक्त वैध आसपास ना मिल सके, तो त्रिफला पाने के लिए मुज़से संपर्क कर सकते है. इसका वर्तमान उदेश्य आपको बिना किसी व्यापार की अपेक्षा शुद्धतम त्रिफला तक पहोचाने मात्र का रहेगा, जिससे प्राचीन आयुर्वेद की महत्ता लोगो के समजमे आये और शरीर को निरोगी बनाने के लिए स्व-चिकित्सा के रूप मे सबसे सस्ती और प्रभावी औषध लोगो को उपलब्ध हो पाए. इसीलिए, खुद त्रिफला के महत्त्व का पूर्ण पठन कर उसकी उपयोगिता को पूर्णतः समजले.

वैध-रोगी के गुण और उनकी सही पहचान

आयुर्वेद के ग्रंथो में न केवल औषध और रोगो के बारे में बताया गया है, परंतु ऋषि-मुनियो ने वैध-रोगी के गुणों के बारे में भी विस्तार से बताया है, जिससे उन दोनों की सही पहचान की जा सके.

वैध खुद के काम में चतुर, गुरु से आयुर्वेद शाश्त्र का अर्थ सीखा हो, शास्त्र के मुताबिक चिकित्सा करने के लिए कुशलता प्राप्त किया हुआ, पवित्र यानी मन, वाणी, शरीर से मलिन कार्य नहीं करनेवाला और केवल धन के लिए नहीं, परंतु धर्म के लिए भी वैधता करनेवाला होना चाहिए. रोगी भी औषध के लिए जरुरी पैसा खर्चने की तैयारीवाला, वैध की बातो का पालन करनेवाला, खुद के शरीर में होनेवाले बदलाव, औषध लेने के बाद शरीर में क्या फायदा पहुंचा वह पूर्ण सत्य वैध को बतानेवाला, धीरजवान और सत्वगुणी होना आवश्यक है.

उपरोक्त बातो का मुल्यांकन करे तो वैध और रोगी दोनों का निष्ठावान होना आवशयक है. मात्र धन की खातिर व्यापार करनेवाला वैध नहीं होता और जिस रोगी के अंदर रोग को मिटाने के लिए धीरज का अभाव है वह आयुर्वेद चिकित्सा के लिए उपयुक्त व्यक्ति नहीं है ऐसा बिना किसी शंशय के समजलेना चाहिए. **वैध को भी उस रोगी का इलाज कभी नहीं करना चाहिए जो स्वाभाव से द्वेषी, डरपोक, औषध-इलाज के प्रति संशय करता हो या उसपे पूर्ण विश्वास ना करता हो ऐसा आयुर्वेद के शास्त्रो का स्पष्ट कथन है.**

त्रिफला का अन्य आयुर्वेदिक औषधो के साथ मुल्यांकन

सामान्य व्यक्ति के मन में ये सवाल आना नैसर्गिक है की जब आयुर्वेद में एक से बढ़ कर एक चमत्कारिक औषधीया है तो त्रिफला का इतना महत्त्व क्यों है? तो इसे आपको आयुर्वेद अनुसार आसान भाषा में उदाहरण से समझना पड़ेगा.

आयुर्वेद की एक औषध है अश्वगंधा, जिसे भारत में "जिनसेंग" के नाम से भी जाना जाता है. अश्वगंधा को आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों का राजा भी कहा जाता है. यह रक्त शर्करा के स्तर को कम करने, कैंसर से लड़ने, तनाव और चिंता को कम करने और पुरुषों में प्रजनन क्षमता बढ़ाने की अपनी क्षमता रखता है. इसके अलावा यह गठिया, अस्थमा, और उच्च रक्तचाप को रोकने में भी मदद करता है. साथ ही, अश्वगंधा एंटीऑक्सिडेंट की आपूर्ति को बढ़ाता है और इम्यून सिस्टम को नियंत्रित करता है. यह बहुत ही अकल्पनीय है की इन सब के अलावा अश्वगंधा में जीवाणुरोधी और रोगाणुरोधी गुण भी उपस्थित होते हैं. यदि अश्वगंधा के शाब्दिक अर्थ की बात करें तो यह संस्कृत से लिया गया है. संस्कृत में, अश्वगंधा शब्द का अर्थ होता है "घोड़े की गंध", जो संभवतः शक्ति बढ़ाने के रूप में इसके तेज और संभवित गुणों के संदर्भ में दर्शाया गया है.

वात, पित्त और कफ- त्रिदोष के सिद्धांत अनुसार अश्वगंधा वात और कफ को संतुलित करती है. मतलब अगर रोगी की प्रकृति में मात्र वात-कफ का दोष है तो वह अश्वगंधा के सेवन से संतुलित जाता है, परंतु अगर किसी रोगी को "वात-कफ" के साथ "पित्त" प्रकृति का भी दोष है तो अश्वगंधा की मात्रा थोड़ी कम देनी पड़ती है. अगर मात्रा में परिवर्तन मुमकिन ना हो तो वैध पित्त रोगी को अश्वगंधा के साथ में पित्त को संतुलित करने की अन्य कोई औषध भी देता है.

जैसे त्रिदोष सिद्धांत में विस्तार से बताया है की **वात-पित्त, वात-कफ और पित्त-कफ** ये मिश्र प्रकृति गर्भाधान के समय उत्पन्न होती है जो शरीर में रोगो का कारण बनती है. यही कारण है की हर एक औषध और उसकी समान मात्रा दूसरे रोगी के लिए सही नहीं होती. इस नियम को ध्यान में रखते हुए अश्वगंधा गुणकारी होने के बावजूद पित्त की मिश्र प्रकृतियो के रोगीयो के लिए उसकी मात्रा वात-कफ के रोगियों के

मुकाबले अलग दी जाती है. **अश्वगंधा का औषधीय गुण तथा कुछ रोगो में उसके फायदे ज्यादा होने के कारण यह संभव है की, किसी खास रोग को मिटाने के लिए अश्वगंधा त्रिफला से भी ज्यादा गुणकारी हो और त्रिफला के मुकाबले अश्वगंधा उस खास रोग को कम समय में भी ठीक कर दे.** लेकिन रोग ठीक होने के निश्चित समय के बाद अश्वगंधा का सेवन बंद करना होता है, वरना "औषध की मात्रा" की अधिकता से शरीर पर उसका बुरा प्रभाव दिखाना शुरू हो सकता है.

तो यहाँ समझने की बात यह है की रोगी या स्वस्थ व्यक्ति को अश्वगंधा का सेवन करने से पहले उसकी वात, पित्त और कफ की प्रकृति अनुसार "मात्रा का चयन" करने के लिए किसी अनुभवी वैध की जरुरत हमेशा रहेगी. लेकिन अगर त्रिफला की बात करे तो उसमे मौजूद आवला, बहेड़ा, हरड़ और मुलेठी औषधीय गुणों से भरपूर है जो शरीर के अनेको महत्वपूर्ण अंगो को सुरक्षित करते है एवं शरीर में दाखिल हुए विषैले तत्वों को दूर करने तथा रोगप्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में भी सहायक है. सबसे महत्वपूर्ण बात है की त्रिफला बिना किसी वैद्य वात-पित्त, वात-कफ और पित्त-कफ की मिश्र प्रकृतियो के रोगियों के तीनो दोषो को एकसाथ संतुलित कर सकती है.

त्रिफला एक **"रसायन औषध"** होने के कारण स्वस्थ व्यक्ति भी इसे त्रिदोष को संतुलित करने के लिए जीवनभर उपयोग में ले सकता है, जिससे अपनी आयु को बढ़ाने और भविष्य के संभवित रोगो से रक्षण मिल सकता है. बड़ी चीज यह है की रोगी या स्वस्थ व्यक्ति को त्रिफला की आयुर्वेद ग्रंथो के वर्णन अनुसार निश्चित मात्रा में सेवन करने के लिए वैध के परामर्श की आवश्यकता नहीं, क्योकी त्रिफला त्रिदोषशामक उत्तम रसायन है. त्रिफला समय के साथ रोगो को भी नष्ट करती है और रसायन होने के कारण पोषण भी देती है जिसके गुण किसी दिव्य वस्तु से कम नहीं.

त्रिफला का भिन्न रोगो पे असरदार होने का समय और सीमा

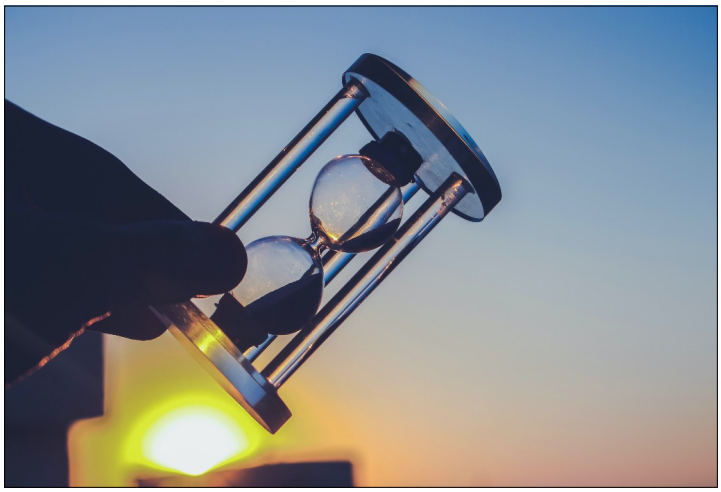

रोगी अक्सर अपनी धीरज खो बैठता है और अपने रोग को तुरंत मिटाने के लिए जो भी मार्ग उसे बताया जाये उसपे चलने को राजी भी हो जाता है. इसी बात का फायदा उठाते हुए रोगी का लम्बे समय तक आर्थिक, शारीरिक और मानसिक शोषण भी किया जाता है जो मानवता से विपरीत कार्य है. ऐसा आपके खुदके परिवार से साथ कभी ना हो उसके लिए रोग और चिकित्सा के प्राकृतिक गणित को ठीक से समझ ने के लिए आयुर्वेद अनुसार मेरा आंकलन और अनुभव यहाँ पर प्रस्तुत कर रहा हूँ.

कोई भी सामान्य दिखनेवाला रोग शरीर में ना तो तुरंत उत्पन्न होता है और नाही तुरंत नष्ट हो सकता है. मतलब की उसे मिटने में कुछ दिन या महीने लग सकते है. इसके सुक्ष्म कारण क्या है उसे ठीक से समज लेना आवश्यक है. एक ही गुणकारी औषध को लेने के बाद भिन्न भिन्न प्रकृति के रोगियों के लिए बीमारियो के ठीक होने का समय अलग अलग हो सकता है.

आगे अपने विस्तार से जाना है की भोजन के बाद अनुक्रम में रस (प्लाज्मा), रक्त (खून), मांस (मांसपेशियां), मेद (वसा), अस्थि (हड्डियाँ), मज्जा (बोनमैरो) और अंत में वीर्य (शुक्र) निर्माण होता है. पुरुष की सातवीं धातु वीर्य (शुक्र) है वैसे स्त्री की सातवीं धातु को "रज" कहा जाता है. शरीर की इस धातु निर्माण की प्रक्रिया में जब भी अवरोध होता है तब उस प्रक्रिया से जुड़े अंग को या उसकी कार्यक्षमता को क्षति पहुंचती है या फिर वह अंग विषैले तत्वों से दूषित हो जाता है. ये एकदम से ना हो कर धीरे धीरे होता है. व्यक्ति को जब इस क्षति का वास्तव में अनुभव होता है तब रोग कुछ हद तक आगे बढ़ चूका होता है. ऐसे शरीर में मंद जठराग्नि या पाचनतंत्र के कारण रोग उत्पन्न होने की क्रिया महीनो की होती है. लेकिन इससे अनजान

रोगी उसे 2-4 दिनों में मिटाने का ख्वाब देखता है जो नैसर्गिक तरीके से कभी संभव नहीं है. इसके लिए आप लैब केमिकलो से बनी दवाओं से रोग में तुरंत फायदा देने की कोशिश करते हो तो वह शरीर में कुछ दिनों बाद साइड इफेक्ट्स देना शुरू कर देता है. मतलब की एक रोग को दबाने के चक्कर में दूसरा रोग उत्पन्न हो जाता है.

त्रिफला का सेवन नैसर्गिक तरीके से मंदाग्नि और पाचनतंत्र में सुधर कर शुद्ध धातुओं के निर्माण और शरीर से विषैले तत्वों को दूर करने में अहम् भमिका निभाता है. भोजन से रस और रक्त के बाद अन्य 6 धातुओं के शुद्धिकरण की प्रक्रिया क्रमशः 5-5 दिन की है. तो एक जिनका रोग गंभीर अवस्था में नहीं पहोचा है और शुरुआत के स्तर पर है उसके असर होने मे 30 दिन यानी 1 महीने का समय समज लेना चाहिए. इतने समय में शरीर में पुरानी अशुद्ध धातु से दूषित तत्व निकलना शुरू होते है और बाद में नयी धातुएं आगे शरीर में स्थापित होती जाती है. इस तरह आपको मांसपेशी से जुडी तकलीफ या रोग है तो वह थोड़ा कम समय लेती है, लेकिन अगर समस्या अस्थि और मज्जा से जुडी है तो थोड़ा ज्यादा समय लेगी क्योकि मांसपेशी का निर्माण अस्थि और मज्जा से पहले होता है. सेक्स से जुडी समस्या भी सबसे अंत में मतलब 1 महीने में असर होना शुरू होता है क्योकि शरीर में सबसे अंत में बननेवाली धातु पुरुष का वीर्य या स्त्री की रज है. तो जबतक पीछे की धातु शरीर में शुद्ध होती जायेगी और उसकी मात्रा शरीर में बढ़ती जायेगी वैसे ही उसके क्रम में आगे बनने वाली धातुएं शुद्ध होती जायेगी और उसमे वृद्धि होने के साथ ही उस धातु से जुड़े रोग और बीमारी में अच्छा सुधार होता जाएगा.

इसे ऐसे समझना चाहिए की सालो से एक बंद कमरे में वस्तुओ और उसमे पड़े सामान के ऊपर से धूल निकालने के लिए पानी द्वारा कमरे की सफाई की जाए तो पानी की एक बाल्टी फाफी नहीं होती, क्योकि जब तक वस्तुओ के ऊपर से जमी

धूल-मिटटी और कचरा निकल नहीं जाता तब तक कमरा पूर्ण साफ़ नहीं हो सकता. त्रिफला के दिए गए विविध वैज्ञानिक प्रयोगो और साथ में दिए गए वैज्ञानिक प्रमाणों से भी यह बात सिद्ध होती है जिसमे त्रिफला को **45** से **60** दिनों तक लोगो पर प्रयोग किया गया और उनके शरीर के विविध रोगो में और उसकी परिस्थिति में अद्भुत सुधार हुआ.

दूसरी महत्वपूर्ण बात भी आपकी समझनी है की केवल पोषणयुक्त भोजन ही स्वस्थ जीवन का आधार नहीं है. उसके साथ असमय से किया गया खानपान, दिनचर्या में आपका शारीरिक-मानसिक कार्य, तनाव की मात्रा, पर्याप्त नींद का अभाव, शारीरिक श्रम और पर्यावरण की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है. इसके अलावा तम्बाकू, दारू, धूम्रपान या अन्य विषैले पदार्थो का सेवन भी औषध के असर करने की शक्ति को मंद करता है, क्योकि उसकी अधिक शक्ति या ऊर्जा विषैले तत्वों को शरीर से बहार निकालने मे खर्च हो जाती है. ऐसे व्यक्तियों को सामान्य व्यक्तियो के मुकाबले थोड़ी अधिक मात्रा में औषध का सेवन वैध के परामर्श से करना उचित रास्ता है. **इससे विपरीत औषध के साथ योग, प्राणायाम और ध्यान करनेवाले व्यक्ति को औषध जल्दी से ठीक करता है, क्योकि वह क्रियाएं शरीर से विषैले तत्वों को जल्दी बहार कर औषध का पूर्ण पोषण शरीर को उपलब्ध कराने मे मददगार होती है.**

तो यहाँ पर सार स्वरुप समज लेना है की औषध के गुण तो दिव्य ही है पर आपकी दिनचर्या एवं जीवनचर्या अनुसार इसका असर हर व्यक्ति पर अलग अलग समय पर होता है. इसीलिए रोगो को ठीक होने के समय के संदर्भ में किसी अन्य रोगी या स्वस्थ व्यक्ति के साथ अपने स्वास्थ्य का मूल्यांकन कभी नहीं करना चाहिए. **जैसे मैल से लिप्त कपडे पर चढ़ाया हुआ रंग बेकार जाता है उसी प्रकार देह शुद्धि यानी विषैले तत्व शरीर से बहार निकलने के बाद ही रसायन अपना पूर्ण कार्य**

कर सकता है और प्रभावी बन सकता है, ऐसा विधान आयुर्वेद में स्पष्ट रूप से लिखा हुआ है. इसतरह त्रिफला के फायदे ग्रहण करने के लिए थोड़े दिन या महीनो की धीरज होना आयुर्वेद की पहली शर्त है.

तीसरी बात है की आयुर्वेद अनुसार आपको रोगो के प्रकार के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी गयी है. अगर इसका ठीक से पठन किया है तो समजमे आएगा की आपका रोग किस अवस्था मे है उसके ऊपर भी त्रिफला के असर की सीमा रहेगी.

अगर रोग सुखसाध्य है यानी शुरुआत के स्तर पर है उसपे सकारात्मक परिणाम प्राप्त होने का समय होने का समय **30 दिनके अंदर का** ही समजे. दूसरे स्तर का रोग याप्य रोग है जिसमे औषधि के मुकाबले आहार विहार की अधिक जरूरत हो तो उसे भी दिनचर्या अनुसार **30-45 दिन** के आसपास का समज सकते है. तीसरा प्रकार का रोग है कष्टसाध्य जो शरीर के मर्मस्थानो में गहरा गया हो या शरीर के किसी अंग में विकृति आने से शस्त्रक्रिया के बाद भी ऐसे रोगो में औषध का शरीर पर अच्छा असर दिखने में समय जाता है जो अंदाजे से **3-4 महीने या उससे अधिक** हो सकता है. **इन सबसे विपरीत अगर रोग "मंदाग्नि" से संबंधित है यानी भोजन के बाद उसे रस में बदलने में या पाचन में समस्या है तो उपयुक्त रस निर्माण शरीर में ना होने के कारण क्रमशः सभी धातुएं शुद्ध होने में अधिक महीनो का समय लग सकता है जो प्रकृति अनुसार हरएक व्यक्ति के लिए अलग हो सकता है.**

चौथा है असाध्य रोग जिसमे शरीर में इन्द्रियों की शक्ति नष्ट हो गई हो और आवरदा कुछ खास बाकी ना हो तो वह रोग ठीक नहीं हो सकता ऐसा समजना चाहिए. परंतू असाध्य रोगो की पीड़ा में औषध आराम जरूर दे सकता है और कुछ हद तक उसे आगे बढ़ने से रोक कर आयु को थोड़ी लम्बी अवश्य कर सकती है.

जीवन में यह भी सत्य स्वीकार करले की अगर असाध्य रोग पूर्ण नैसर्गिक चिकित्सा से भी ठीक नहीं हो सकता तो दूसरी मानवसर्जित पेथियो से इलाज की अपेक्षा रखना या उसपर हज़ारो-लाखो रुपए खर्चना मेरे विचार अनुसार केवल एक दिलासा और मन की तसल्ली के लिए है. **लेकिन असाध्य रोगियो के लिए त्रिफला के साथ पंचकर्म और पंचगव्य चिकित्सा (गौ चिकित्सा) जीवनी का काम कर सकती है. पूरी दुनिया में केवल भारतीय मूल की देशी नसल की गौमाता के पंचतत्व में कुछ चमत्कारिक गुण है जो कुछ ख़ास रोगनाशक औषध के गुणों को दुगना करने का सामर्थ्य रखती है.** आगे लेख में पंचगव्य चिकित्सा के बारे में विस्तार से बताया गया है. असाध्य रोग सनातन धर्म के संचिंत कर्म के सिद्धांत पर भी निर्भर है जो एक गूढ विषय है. इससे जुड़े कई अन्य विषय पर पुस्तक मे आगे संक्षिप्त में बताया गया है.

आयुर्वेद ग्रंथो के वर्णन अनुसार त्रिफला की असाध्य रोगो को छोड़कर कष्टसाध्य सहित सभी रोगो को नष्ट करने की पूर्ण अवधि 1 साल की बताई गई है. रोगीयो की भिन्न भिन्न वात-पित्त-कफ की मिश्र प्रकृति, मंदाग्नि, आबोहवा, खानपान, विहार सामान्य या गंभीर रोगो को संदर्भ बनाये तो रोगो के नष्ट होने की अवधि आयुर्वेद

अनुसार 30 दिन से शुरू होकर 1 साल के बिच की है ऐसा समज सकते है. आज के परिपेक्ष में त्रिफला की शुद्धता का मानक और मनुष्य की दिनचर्या को पुस्तक में विस्तार से बताया गया है उसके मूल्यांकन अनुसार ये अवधि 6 महीने और बढ़ सकती है ऐसा मानकर चल सकते है.

घी, तेल, शहद (मधु), नमक, गुड़ और शक्कर का महत्त्व

आयुर्वेद अनुसार **शुद्ध "घी" से पित्त शांत होता है. "तेल" से वात शांत होता है और मध् से "कफ" शांत होता है.** लेकिन ये तीनो चीजे शुद्ध मिलना आजके समय में दुर्लभ कर दिया गया है. जहाँ घी का वर्णन किया जा रहा है उसका मतलब "देशी गाय का घी" समझना है. अंग्रेजी में जिसे हम "बटर" कहते है उसका मतलब घी नहीं होता. बटर को दूध की क्रीम से नमक मिलकर बनाया जाता है. बटर में ट्रांस फैट होते हैं और घी में ट्रांस फैट नहीं होते हैं. घर पर मलाई से जो घी बनाने की क्रिया है उससे बननेवाले घटक को पूर्ण रूपसे घी कहना ठीक नहीं होगा. **दूध-दही से फेटकर देशी तरीके से बनाया गया घी ही वैदिक शुद्ध घी कहलाता है.** गाय के अलावा भैंस, बकरी के घी भी कुछ महत्ताये है, पर आयुर्वेद अनुसार देशी गाय का घी ही सबसे गुणकारी और श्रेष्ठ तत्व कहलाता है.

ऐसे ही तेल का भी समज लीजिये की कच्ची घानी से बना तेल ही शुद्ध तेल कहलाता है. कच्ची घानी के रूपमे आजकल बैल की जगह पीसने के लिए मशीन का उपयोग किया जाता है. तो जिस तेल को पीसने के बाद उसे कोई केमिकल के जरिये रिफाइंड ना किया गया हो तो ही वह शुद्ध फिल्टर्ड तेल कहा जाएगा. **केमिकलो से युक्त बनावटी घी और रिफाइंड तेल असंख्य घातक रोगो की जननी है. इससे मुक्त हुए बिना निरोगी शरीर की कल्पना मुश्किल है.**

वसा और चर्बी विषय में अतिशयोक्ति कर षडयंत्रो के तहत हर किसी व्यक्ति को इससे बचने की सलाह दी जाती है, क्योकि स्वास्थ्य को कुछ माफियाओ ने अनीति का व्यापार बनाया है, परंतु **आयुर्वेद अनुसार व्यक्ति के दैनिक जीवन में होनेवाले वात पित्त और कफ के सभी विकार शुद्ध घी, शहद और तेल दूर करता है.** चिकित्सा या पैथी कोइ भी हो, लेकिन इतना याद रहे की शुद्ध धातुओं के निर्माण और पोषण हेतु वसा-चर्बी भी अनिवार्य घटक है. अति भूख से शरीर के प्रोटीन्स और विटामिन्स गिराके शरीर को कम करना सेहद के लिए घातक सिद्ध हो सकता है. ऐसी परिस्थिति में अधिक ऊर्जा की जरुरत ना होने पर घी, शहद और तेल का सेवन कम अवश्य करना है, लेकिन इसकी पूर्ण मात्रा बंद कर देना फायदे में नुक्सान की बात है.

योग, प्राणायाम और त्रिफला के द्वारा शरीर में अतिरिक्त चर्बी को आसानीसे अपनी आवश्यकता अनुसार नियंत्रित किया जा सकता है. वसा-चर्बी अधिकतावाले रोगी के लिए अधिक ऊर्जा की आवश्यकता ना होकर इनकी न्यूनतम मात्रा निर्धारित की जा सकती है और ख़राब चर्बी बढ़ाने वाले खान-पान कम कर देने चाहिए, परंतु इसका सेवन पूर्ण रूप से बंद करना है ऐसे दुष्प्रचारों से बचना चाहिए. **मध्, घी, गुड़ और कुछ गिनी चुनी आयुर्वेद औषधीया जितनी पुरानी होती जाती है उतना ही उतने ही उनके गुण अधिक बढ़ते जाते है जो आयुर्वेद ग्रंथो मे विस्तार से बताया गया है.**

घी बुद्धि, स्मृति, जठराग्नि, बल आयुष्य और वीर्य को बढ़ानेवाला है. यह आँखों के लिए हितकर और अच्छी आवाज़ की कामना करनेवाले व्यक्ति के लिए फायदेमंद है. संतान प्राप्ति की इच्छा रखेवाला, बालक-वृद्ध और जवान के लिए गुणकारी है. क्षय, बुखार, कमजोरी, सर्प ज़हर से पीड़ित और धातुओं के क्षय से दुर्बल हुए व्यक्ति के लिए घी बहोत फायदा पहुंचानेवाला तत्व है. घी शीतवीर्य है और जवानी को टिकाके रखनेवाली उत्तम वस्तु है. योग, संस्कार, पान, अभ्यंग, अनुवासन के भिन्न भिन्न रीत से उपयोग में आनेवाली चीज है.

गाय, भैंस, बकरी जैसे जानवरो के वर्ग में "देशी गाय" के घी को सर्वश्रेष्ठ जीवनीय रसायन की उपाधि दी गयी है जो बुद्धि, बल बढ़ानेवाला, आलस्य को दूर करनेवाला, दम, उधरस, प्यास, भूख, जीर्णज्वर, मूत्रकृच्छ और रक्तपित्त जैसे 11 रोगो को मिटानेवाला है. आयुर्वेद अनुसार घी अगर 10 साल पुराना हो तो उसके गुण अत्यधिक बढ़ जाते है. भादवे (भाद्रपद माह) का गोघृत (घी) की महत्ता आर्टिकल पढ़कर ले सकते है.

शहद आँखों के लिए हितकर, प्यास, कफ, ज़हर, हिचकी, कुष्ठरोग, कृमि, उलटी, दम, उधरस और अतिसार को मिटानेवाला है. मवाद निकालनेमे मदद करने, टूटी हुयी हड्डिया को जोड़ने और घाव को भरने के लिए आयुर्वेद अनुसार शहद को अत्यंत उपयोगी द्रव्य माना जाता है. इसके अलावा अनिंद्रा के रोगीयो के लिए नींद बढ़ानेवाला और अधिक नींद लेनेवाले व्यक्तियो के लिए नींद को सम बनानेवाला और आवाज़, आरोग्य, पाचनमे हल्का एवं प्रतिभा-कांति दिलानेवाला श्रेष्ठ द्रव्य है. मध का युक्तिपूर्वक और निश्चित मात्रा में सेवन शरीर के दोषो की सम बनाने के लिए उपयोगी है. **शहद के बारे में महत्वपूर्ण बात याद रखनी है की आयुर्वेद ग्रंथो में ताजे शहद को "त्रिदोष" उत्पन्न करनेवाला बताया गया है मतलब ताजा शहद वात, पित्त और कफ यह तीनो के दोष को बढ़ाता है. 1 साल की अवधि से पुराने शहद को ही गुणों में श्रेष्ठ बताया गया है जो बात अधिकतर लोग नहीं जानते.**

शहद के खतरनाक सच से भी कई लोग अंजान है जिसमे धुप या अग्नि से गर्म हुआ शहद खाने से मृत्यु भी संभव है. गर्मी से लिप्त होकर आये हुए व्यक्ति, अग्नि की गर्मी या सूर्य की गर्मी से लिप्त इंसान को मध देने से उसकी मृत्यु हो जाती है ऐसा आयुर्वेद में स्पष्ट वर्णन है. गर्मी की ऋतू या गर्म प्रदेश में भी शहद का सेवन और गर्म तासीर वाले खान-पान के साथ में मध लेने से मृत्यु संभव है. इससे विपरीत उल्टी कराने के लिए और निरुबस्ति के लिए गर्म किया हुआ शहद उपयोग में लेने से नुक्सान नहीं होता.

सरसो का तेल कफ-वायु नाशक, उष्णवीर्य, पित्त को बढ़ानेवाला, पचने में हल्का, कृमियो को नष्ट करनेवाला, मलो को उखाड़नेवाला, सिर और कान के रोग, खुजली, कुष्ठ के साथ चमड़ी के रोगो को मिटानेवाला, मेद को दूर करनेवाला और जठराग्नि को प्रदीप्त करनेवाला श्रेष्ठ आहार है.

हर एक प्रकार का तेल वायुनाशक है, परंतु **तिल का तेल उसके विशेष गुणों के कारण वायु नाश करने में अन्य तेलों के मुकाबले ज्यादा प्रभावी है और श्रेष्ठ माना जाता है. आयुर्वेद अनुसार तिल का तेल विशिष्ट गुणों से भरपूर है, परंतु लम्बे समय तक खाने से यह चमड़ी, बाल और आँखों को नुक्सानदेही है.** यही चीज उलटी की जाए, मतलब की तिल के तेल को खाने की बजाये मालिश करने के लिए उपयोग में लिया जाए तो ये चमड़ी, बाल और आँखों के लिए परम हितकारी बताया गया है. घाव, अग्नि से जला हुआ भाग, अपने स्थान से खिसका हुआ अंग, टूटे हुए शरीर के भाग पे तिल के तिल की मालिश करने से अत्यंत प्रभावी और शीघ्रता से नैसर्गिक उपचार होता है. इसके अलावा कुछ खास काम में आनेवाले औषध बनाने में, बस्तिकर्म, नाक-कान में बुँदे डालने से लेकर काफी अन्य बीमारियों के इलाज हेतु तिल के तेल की मूलयवान उपयोगिता है.

आहार हेतु आयुर्वेद के लगभग सभी ग्रंथो मे विशेषकर सरसो, तिल, अलसी, तथा लाल-राति राइ के तेल के गुणों की बात की गई है. **आयुर्वेद अनुसार बिना किसी नुकसान स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए तथा गुण-दोष, स्थान तथा आहार हेतु तेल की उपयोगिता की बात करे तो लम्बे समय तक सेवन करने के लिए "सरसो का तेल" ही सर्वश्रेष्ठ बताया गया है.** तिल के तेल की भी उतनी ही महत्ता है, परंतु आहार हेतु उसे लम्बे समय तक सेवन करने से चमड़ी, बाल और आँखों को कुछ नुक्सान भी है. इसीलिए आहार हेतु तिल का तेल पूर्ण वर्जित ना होकर संतुलन की स्थिति बनाते हुए उसे केवल ठंडी ऋतू में व्यंजन बनाने के लिए या शीत ऋतू में न्यूनतम समय के लिए आहार बनाने हेतु उसकी विशेष उपयोगिता मानी जा सकती है. आज के समय में बाजार में मिलनेवाले अन्य तेल जैसे की सींग, कपास, सूरजमुखी, सोयाबीन या अन्य किसी तेल का आयर्वेद में आहार के रूप में कोई वर्णन मेरे द्वारा देखा नहीं गया है.

आयुर्वेद अनुसार, मूंगफली से दस्त, सर्दी, खांसी और चमड़ी को फायदा पहुंचाने की बात की गई है जो भारत में आसानी से उपलब्ध है और सदियों से उसका सेवन तेल के रूप में भारत में किया जाता है. तो इसकी महत्ता को ध्यान में रखते हुए **मेरे आंकलन अनुसार मूंगफली का तेल भी काफी हद तक सरसो के तेल का दूसरा विकल्प बन सकता है. परंतु आयुर्वेद की साक्षी से अगर गुण-दोष का मूल्यांकन करे तो सरसो के तेल की महत्ता सबसे अधिक है यह बात आयुर्वेद ग्रंथो के कथन से स्पष्ट है.** भौगोलिक परिस्थिति अनुसार तेल के प्रकार और समय की अवधि में थोड़ा हेर फेर किया जा सकता है जो एक गूढ चर्चा का विषय है.

आयुर्वेद अनुसार सेंधा नमक (Rock Salt) सभी प्रकार के लवणवर्ग यानी नमको में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है. **सेंधा नमक जठराग्नि को प्रदीप्त करनेवाला,**

रुचिकारक, वीर्य वर्धक, आँखों को हितकारी, ज्यादा गर्मी उत्पन्न नहीं करनेवाला और त्रिदोष को सम बनानेवाला मधुर रस से युक्त श्रेष्ठ पदार्थ है.

सेंधा नमक को "सिंधालुण", "पहाड़ी नमक" या "लाहोरी नमक" के नाम से भी जाना जाता है. यह नैसर्गिक रूप से निर्मित हुए नमक के पहाड़ होते है जिसे तोड़कर नमक को प्राप्त किया जाता है. सेंधा नमक के अलावा समुद्री नमक (खड़ा नमक) भी दूसरे क्रम से गुणकारी है और वायुनाशक है, लेकिन आँखों के लिए फायदेमंद और त्रिदोष के संतुलन के अद्भुद एवं विशेष गुण सेंधा नमक में ही पाए जाते है. आजकल बाजार में मिलनेवाले आयोडाइज़ नमक अधिकतर समुद्री नमक को केमिकल प्रोसेस करके बनाया जाता है जिसमे ऊपर से आयोडीन डाला जाता है, लेकिन यह सेहद के लिए उतना अच्छा नहीं है और इसका अधिकतर सेवन पथरी और ह्रदय से लेके कई अन्य रोगो को जन्म दे सकता है.

Image Credit: Freepik.com

गुड़ और शक्कर भी घी, तेल और शहद की तरह ही सेहद के लिए अच्छा बताया है, लेकिन इसका मतलब केमिकल से बने आज के गुड़ और चीनी से नहीं है. गुड़ और शक्कर दोनों गन्ने के रस में से बनते है और आजकल बाजार में मिलनेवाले अधिकतर गुड़ गन्ने के रस को केमिकल से साफ़ कर बनाया जाता है जिसका रंग सफ़ेद जैसा या कम पीला दीखता है. ऐसे ही गन्ने के रस को केमिकल प्रोसेस से साफ़ कर उससे चीनी बनती है. तो केमिकल से बना गुड़-शक्कर दोनों ही लाभकारी नहीं और उल्टा सेहद को नुक्सान कर अनेको बीमारियों को जन्म देनेवाले है.

आयुर्वेद अनुसार गुड़ ह्रदय को हितकारी और शरीर के सभी स्त्रोत्रों को साफ़ करनेवाला है. लेकिन इससे विपरीत ताज़ा गुड़ अधिक कफ करनेवाला और जठराग्नि को मंद

करनेवाला है. **इसीलिए गुड़ जितना पुराना होता है उतना ही सेहद के लिए हितकारी बनता है**. देशी खांड भी गन्ने के रस से बनायीं जाती है. गुड़, देशी खांड और शक्कर तीनो रक्तपित्त और वायु का नाश करनेवाले बताये गए है. यह तीनो के गुण एक दूसरे से क्रमशः बढते जाते है, मतलब गुड़ से देशी खांड विशेष गुणोंवाली बनती है और देशी खांड से शक्कर विशेष गुणोंवाली बनती है. अर्थात तीनो में शक्कर श्रेष्ठ गुणोंवाली मानी जाती है.

घातक केमिकल का असर शरीर पर क्या होता है यह आप रिफाइंड तेल की इस खबर से पढ़ सकते है. कई बार सभी चीजों को हलके में लेकर हम अनजाने ही खुद के परिवार के स्वास्थ के साथ खिलवाड़ करते है. कहीँ बहार खाना खाने जाते है या पानी भी पीते है तो उसमे लोग अशुद्धि है की नहीं उसकी जांच कर लेते है, लेकिन हररोज भोजन बनाने मे खुद के घर में जो इस्तेमाल हो रहा है उसकी जांच हम नहीं करते और व्यपारियो के हाथ में अपने स्वास्थ की चाबी दे देते है जो अंत में घातक सिद्ध होता है. तो जितना आप दैनिक जीवन में उपयोग होनाली चीजों में नैसर्गिक चीजों को शामिल करोगे उतना ही आपका जीवन स्वस्थ रहेगा, विषैले तत्व शरीर में कम दाखिल होंगे और रोगो से शरीर की रक्षा भी होगी.

नवभारत

रोगों की जड़ बना रिफाइंड तेल

■ राजीत यादव @ नवभारत

नवी मुंबई. रिफाइंड तेल हार्ट अटैक, हार्ट ब्लॉकिज ब्रेन डैमेज, लकवा, शुगर (डायबिटीज), नपुंसकता, कैंसर, हड्डियों का कमजोर हो जाना, जोड़ों में दर्द, कमर दर्द, किडनी डैमेज, लिवर खराब कोलेस्ट्रॉल, आंखों रोशनी कम होना, प्रदर रोग, बांझपन, पाइल्स, त्वचा रोग आदि सहित एक हजार रोगों का प्रमुख कारण बन गया है. इसकी वजह से रिफाइंड तेल से देश में हर वर्ष 20 लाख लोगों की मौत होती है. जिससे यह साबित होता है कि देश में रिफाइंड तेल खाने से सबसे ज्यादा मौतें होती हैं. यह जानकारी प्राकृतिक चिकित्सक एवं योग गुरु डॉ. अनिल जैन ने दी.

डॉ. जैन ने नवभारत को बताया कि रिफाइंड तेल बनाने के लिए तैलीय बीज को छिलके सहित पेरकर तेल निकाला जाता है. इस विधि में जो भी अशुद्धियां तेल में आती हैं, उन्हें साफ करने के लिए तेल को स्वाद गंध व कलर रहित करने के लिए उसे रिफाइंड किया जाता है. इस विधि के लिए वाशिंग करने के लिए पानी, नमक, कास्टिक सोडा, गंधक, पोटेशियम, तेजाब व अन्य खतरनाक एसिड इस्तेमाल किए जाते हैं. ताकि अशुद्धियां बाहर हो जाएं. इस प्रक्रिया में तारकोल की तरह गाढ़ा वेस्टेज निकलता है. एसिड के कारण यह तेल स्वास्थ्य का दुश्मन बन जाता है.

20 लाख लोगों की हर वर्ष जाती है जान

07 से 8 बार तेल किया जाता है गर्म व ठंडा

तेल में बन जाता है पालीमर्स

डॉ. जैन ने बताया कि तेल के साथ कास्टिक या साबुन को मिक्स करके 180F पर गर्म किया जाता है. जिससे इस तेल के सभी पौष्टिक तत्व नष्ट हो जाते है. इस विधि में प्लास्टर ऑफ पेरिस जो मकान बनाने में काम लिया जाता है, इसका उपयोग करके तेल का कलर और मिलाए गए केमिकल को 130F पर गर्म करके साफ किया जाता है. एक टैंक में तेल के साथ निकोल और हाइड्रोजन को मिक्स करके हिलाया जाता है. इन सारी प्रक्रियाओं में तेल को 7-8 बार गर्म व ठंडा किया जाता है, जिससे तेल में पालीमर्स बन जाते हैं, उससे पाचन प्रणाली को खतरा होता है और भोजन न पचने से सारी बीमारियां होती है. निकेल एक प्रकार का लोहा होता है, जो हमारे शरीर के विभिन्न अंगों, त्वचा, डीएनए और आरएनए को भारी नुकसान पहुंचाता है.

भीतरी अंगों को पहुंचाता है नुकसान

इस तेल के सभी तत्व नष्ट हो जाते हैं और एसिड मिल जाने से यह भीतरी अंगों को नुकसान पहुंचाता है. दूषित पानी पीने से लोगों का जितना नुकसान नहीं होता है उससे अधिक हानि इस तेल से होती है. दूषित पानी मौजूद बैक्टीरिया को लड़कर नष्ट कर देता है, लेकिन रिफाइंड तेल बैक्टीरिया को नष्ट नहीं कर पाता है.मनुष्य का शरीर करोड़ों सेल्स (कोशिकाओं) से मिलकर बना है. शरीर को जीवित रखने के लिए पुराने सेल्स रिप्लेस होते रहते हैं और नए सेल्स (कोशिकाओं) बनाने के लिए शरीर खून का उपयोग करता है.

खून में बढ़ती है टॉक्सिन्स की मात्रा

■ जैन का कहना है कि यदि हम रिफाइंड तेल का उपयोग करते हैं, तो खून में टॉक्सिन्स की मात्रा बढ़ जाती है,जो शरीर को नए सेल बनाने में अवरोध आता है, तो कई बीमारियां जैसे कैंसर मधुमेह, हार्ट अटैक, किडनी खराब आदि हजारो बीमारियां होगी.

■ जैन का कहना है कि रिफाइंड तेल बनाने की प्रक्रिया से तेल बहुत ही महंगा हो जाता है, तो इसमें पाम आयल मिक्स किया जाता है.

■ पाम आयल एक धीमी मौत है. इसलिए अपनी आंखों के सामने निकाला गया सरसों, सूरजमुखी, नारियल, बादाम आदि के तेल का उपयोग करना चाहिए.

Thane-navi-mumbai Edition
27-december-2021 Page No. 2
epaper.enavabharat.com

पंचकर्म चिकित्सा

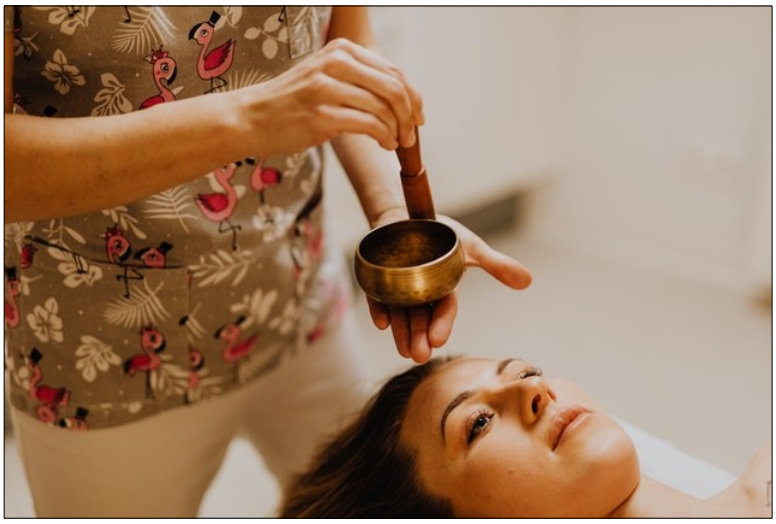

पंचकर्म रोगी के शरीर से विषैले पदार्थों को निकालने और त्रिदोष को संतुलित की नैसर्गिक आयुर्वेद चिकित्सा है. पंचकर्म आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति की विशिष्टता है जो अन्य किसी चिकिंत्सा पद्धति में नहीं है. अनेक जटिल एंव कष्टदायी व्याधियां है जो औषधोपचार के साथ पंचकर्म से सहजता से ठीक की जा सकती है. पंचकर्म आयुर्वेदिक इलाज पूरे दुनिया में बहुत अधिक लोकप्रिय हो रहा है. यह लोगो के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है और स्वास्थ्य के लिए इसके कई फायदे हैं.

इस चिकित्सा में प्रमुख रूप से स्नेहन, स्वेदन, वमन, विरेचन, वस्ति, नस्य व रक्त मोक्षण आदि क्रिया-कलापों के माध्यम से शरीर व मन में स्थित विकृत दोषों को बाहर निकाला जाता है जिससे दुबारा रोगों की उत्पति न हो.

स्नेहन-स्वेदनः- ये दोनों प्रक्रियाएं पूर्व कर्म कहलाती हैं, जो कि पंचकर्म की प्रत्येक क्रिया से पहले आवश्यक रूप से की जानी चाहिए, इसके माध्यम से रोग उत्पादक दोषों को शरीर के अंगों से शिथिल कर कोष्ठ में लाया जाता हैं, कई बार अल्प दोष की स्थिति होने पर रोगी को केवल इन पूर्वकर्म से लाभ हो जाता है.

वमन-कर्मः- यह क्रिया प्रमुख रूप से कफज रोगों व वात कफज रोगों के लिये की जाती है. जिसमें उरः प्रदेश, सिर, अस्थि संधिगत व श्लेष्म स्थानों में उत्पन्न विभिन्न कफज रोगों के संशोधन हेतु आवश्यक होता हैं. इस इस प्रक्रिया में मुंह के माध्यम से उल्टी कराया जाता है. इसका मतलब उल्टी निकाल कर दोषों को बाहर निकाला जाता है. यह प्रक्रिया तब तक करना चाहिए जब तक की शरीर की विषाक्त पदार्थ तरल रूप धारण ना कर लें.

विरेचन कर्मः यह क्रिया विकृत पित्तज दोषों के लिये की जाती हैं, जिसमें मुख्य रूप से गुदा मार्ग से दोषों को निर्धारित मापदंडो के तहत क्रमशः प्रवर, मध्यम, अवर के 30, 20 व 10 वेग लाकर रोगी को दोष मुक्त करवाया जाता है. यह मलत्याग की प्रक्रिया है. इस पद्धति में आंत से विषाक्त पदार्थ को निकाला जाता है. इसके बाद आपके शरीर पर तेल लगाया जाता है. इस पद्धति में बूटी खिला कर आपके शरीर से आंत के माध्यम से विषाक्त पदार्थ बाहर निकाला जाता है. जो लोग पित्त की समस्या से पीड़ित है, उनके लिए यह पद्धति बहुत कारगर है.

वस्तिः इस कर्म को आयुर्वेदीय वैज्ञानिकों ने आधी चिकित्सा कहा है. यह प्रमुख रूप से 80 प्रकार के वातज रोगों को ठीक करने के लिये प्रयोग में लायी जाती है. साथ ही इसके प्रमुख प्रकार आस्थापन, अनुवासन, कालवस्ति, क्रमवस्ति, योगवस्ति तथा मात्रावस्ति आदि का रोग व रोगीनुसार प्रयोग कर लाभ पहुंचाया जाता है. यह एक बहुत ही अद्भुत आयुर्वेदिक उपाय है. इस पद्धति में विषाक्त पदार्थो को बाहर निकालने के लिए कुछ तरल पदार्थो का उपयोग किया जाता है. जिसमें तेल,घी और दूध जैसे तरल आपके मल द्वार में पहुँचाया जाता है. यह पुरानी बिमारियों को ठीक करने के लिए बहुत उपयोगी माना जाता है. यह अत्यधिक वात से परेशान मरीजों के लिए उपयोगी माना जाता है. हालाँकि, यह तीनों वात पित्त और कफ के लिए अच्छा माना जाता है.

नस्य: पंचकर्म की इस क्रिया के माध्यम से सिर में स्थित दोषों को नासा मार्ग से बाहर निकाल कर रोगी को लाभ पहुंचाया जाता है. इसके प्रमुख प्रकारों में नस्य, प्रतिमर्शनस्य, नावन, अवपीडन नस्य प्रमुख हैं. जिनका रोग व रोगी अनुसार चयन कर उपयोग में लाया जाता है. इस प्रक्रिया में आपके नाक के माध्यम से औषधि दी जाती है, जो आपके नाक, गले और सिर से विषाक्त पदार्थ को बाहर निकालता है. इस प्रक्रिया में सिर और कंधो पर मालिश है, जिसके बाद आप नस्य पंचकर्म के लिए तैयार हो जाता है. इसके बाद आपके नाक के माध्यम से औषधि की कुछ बूँद डाली जाती है. यह माइग्रेन, सिरदर्द और बालों की समस्या से निजात दिलाती है.

रक्त मोक्षणः पंचकर्म की रक्त मोक्षण विधा द्वारा शरीर के दूषित रक्त को बाहर निकाला जाता हैं जिसमें दोष व रोगी की प्रकृति के अनुसार जलौकावचरण, श्रृंग, अलावू आदि के माध्यम से दोष अनुसार चयन कर रोग को ठीक किया जाता है. इस प्रक्रिया में मुहांसे और चेहरे की समस्या से राहत मालती है. यह आपके शरीर के किसी विशेष हिस्से या पूरे शरीर से रक्त को साफ किया जाता है.

स्वास्थ्य के नियमों का पालन न करने तथा बाहरी कारणों से रोगों की उत्पत्ति होती है जिसका निवारण औषधियों तथा शोधन क्रियाओं अर्थात् पंचकर्म से किया जाता है. इसके बाद स्वस्थ रहने के लिए रसायन औषधियों का भी प्रयोग किया जाता है जिससे हमारी रोग प्रतिरोधक शक्ति बनी रहे.

त्रिदोष को संतुलित करने का जो कार्य पंचकर्म करता है वही कार्य औषध के स्वरुप में त्रिफला करती है देह शुद्धिकरण के लिए. इसके अलावा त्रिफला शरीर के लिए पोषक भी है जो उसे होनेवाले रोगो से रक्षा कर स्वस्थता प्रदान करती है. परंतु पंचकर्म की विविध क्रियाओसे से रोगी को तत्काल लाभ पहुंचता है. इसीलिए नैसर्गिक चिकित्सा के अलावा दूसरी चिकित्सा पर विश्वास करनेवाले व्यक्ति का रोग जब तीव्र हो जाए तब पंचकर्म तुरंत ही लाभ पहुंचा सकता है और अगर त्रिफला का नियमित सेवन किया जाए तो वात, पित्त और कफ नैसर्गिक रूपसे ही संतुलित रहते है.

पंचगव्य चिकित्सा

पंचगव्य भारतीय मूल की देशी गाय (गौमाता) से प्राप्त पांच चीजों का समूह है. इसमें गोदुग्ध (दूध), गोदधी (दही-छाछ), गोमेह (गोबर), गोघृत (घी) और गोमूत्र (मूत्र) शामिल हैं. आयुर्वेद में रोगों से मुक्ति के लिए पंचगव्य को औषधि के रूप में प्रयोग करते हैं.

पंचगव्य की उपयोगिता आयुर्वेद अनुसार समज लेते है जिसमे गाय, भैंस, बकरी जैसे सभी जानवरो के वर्ग में "देशी गाय" के पांचो तत्वों को सर्वश्रेष्ठ गुणकारी बताया गया है. गाय के पंचगव्य के सेवन से शरीर, मनबुद्धि और अंत:करण के विकारों का शमन होता है जिससे शरीर की शक्ति बढ़ती है तेज बल और आयुष्य की प्राप्ति होती है.

देशी गाय का "दूध" रस में मधुर, शीतल, वायु-पित्त और रक्त संबंधी रोगो को मिटानेवाला, वातप्रधान रक्तपित्त से बचानेवाला, धातु, मल, नाड़ियो को कुछ गिला करनेवाला, स्त्री के दूध को बढ़ानेवाला, हमेशा सेवन करनेवालों के लिए बुढ़ापे और सर्व रोगो को नष्ट करनेवाला है. गायो में बड़े बछड़ेवाली गाय का दूध सर्वश्रेष्ठ माना जाता है.

काली गाय का दूध वायु को मिटानेवाला और अधिक गुणोंवाला है. पीली गाय का दूध पित्त और वायु को मिटानेवाला है. सफ़ेद गाय का दूध वायु को मिटनेवाला है और कफ को बढ़ानेवाला है. लाल-बादामी या चितकाबरी (सफ़ेद- बादामी मिश्र रंगवाली) गाय का दूध वायु को हरनेवाला है.

देशी गाय का "घी" विशेषकर नेत्र को हितकारी, मैथुनशक्ति को बढ़ानेवाला, अग्नि को प्रदीप्त करनेवाला, मधुर, शीतल, वात-पित्त-कफ तीनो को मिटानेवाला, कांति, सामर्थ्य की वृद्धि करनेवाला, अलक्ष्मी-पाप और राक्षशो को हरनेवाला (मन के सत्वगुण, संस्कार एवं वीरता बढ़ानेवाला), जवानी को टिकाके रखनेवाला, बल देनेवाला, पवित्र, आयु को बढ़ानेवाला, सुंदर, सुंगधयुक्त, रूचि पैदा करनेवाला और समस्त प्रकार के घी के वर्ग में सर्वश्रेष्ठ है. इसके अलावा ये **बुद्धि, बल बढ़ानेवाला, आलस्य को दूर करनेवाला, दम, उधरस, प्यास, भूख, जीर्णज्वर, मूत्रकृच्छ और रक्तपित्त जैसे 11 रोगो को मिटानेवाला है.**

देशी गाय का "दही" विशेष रूपसे मधुर, खट्टा, रुचिकर, अग्नि को प्रदीप्त करनेवाला, पुष्टि करनेवाला और वायुनाशक है.

देशी गाय का मक्खन वर्ण को अच्छा करनेवाला, मैथुनशक्ति को बढ़ानेवाला, बल देनेवाला, अग्नि को प्रदीप्त करनेवाला, मल को रोकनेवाला, वायु-पित्त को हरनेवाला, उधरस, रक्त की अशुद्धि को मिटानेवाला, बूढ़ो के लिए और खास कर बच्चो के लिए अमृत है.

देशी गाय का मूत्र (गोमूत्र) पचने में हल्का, कफ-वायु को दूर करनेवाला, अग्नि की प्रदीप्त और पित्त बढ़ानेवाला, शूल, उधरस-श्वास-सूजन को मिटानेवाला, पेट का दर्द और नेत्र रोग को दूर करनेवाला, मुँह के रोग, खुजली, हरप्रकार के कुष्ठ रोग, वायु संबंधी आम, दस्त, कब्जियत, कान के दर्द, मूत्र के अटकाव्, कृमि, पीलिया और पांडुरोग को नष्ट करनेवाला है.

देशी गाय का गोबर त्वचा रोग खाज, खुजली, श्वासरोग, शोधक, क्षारक, वीर्यवर्धक, पोषक, रसयुक्त, कान्तिप्रद और लेपन के लिए स्निग्ध तथा मल आदि को दूर करने वाला होता है. गाय का गोबर मल नहीं है यह मलशोधक है दुर्गन्धनाशक है एंव उत्तम वृद्धिकारक तथा मृदा उर्वरता पोषक है.

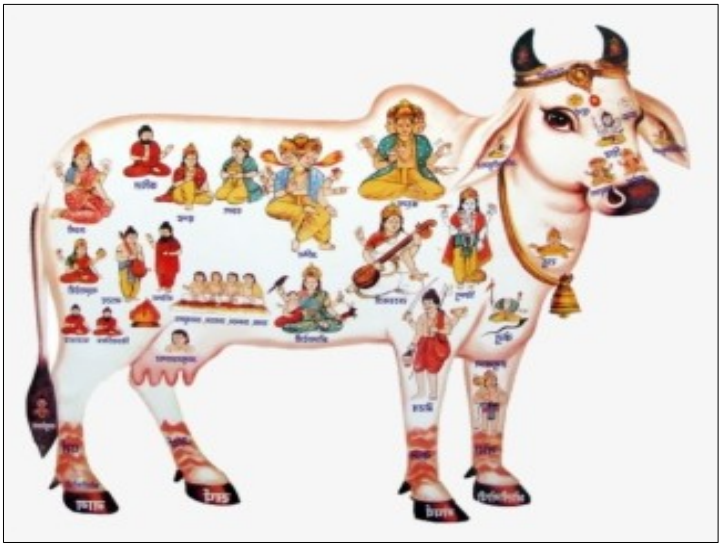

Source: https://www.pngitem.com/middle/iooJwoh_-cow-with/

हिन्दू धर्म अनुसार गाय में 33 कोटि के देवी-देवता निवास करते हैं. कोटि का अर्थ करोड़ नहीं, प्रकार होता है. इसका मतलब गाय में 33 प्रकार के देवता निवास करते हैं. ये देवता हैं- 12 आदित्य, 8 वसु, 11 रुद्र और 2 अश्विनी कुमार. ये मिलकर कुल 33 होते हैं. यही कारण है कि दिवाली के दूसरे दिन गोवर्धन पूजा के अवसर पर गायों की विशेष पूजा की जाती है और उनका मोर पंखों आदि से श्रृंगार किया जाता है. हिन्दुओं के हर धार्मिक कार्यों में सर्वप्रथम पूज्य गणेश व उनकी माता पार्वती को गाय के गोबर से बने पूजा स्थल में रखा जाता है.

देशी गाय की पीठ पर जो ककुद् (कूबड़) होता है, वह 'बृहस्पति' है. अतः जन्म पत्रिका में यदि बृहस्पति अपनी नीच राशि मकर में हों या अशुभ स्थिति में हों तो देशी गाय के बृहस्पति भाग एवं शिवलिंगरूपी उठाव के दर्शन करने का विधान है.

ऐसा माना जाता है की **गाय की रीढ़ की हड्डी में "सूर्यकेतु नाड़ी" स्थित है जिस पर सूर्य की किरणें पड़ने पर ये नाड़ी स्वर्ण बनाती है जिसके कारण गाय का दूध पीला और उसके पांचो गव्य दिव्य अमृतीय गुणों से भर जाते है.** सूर्यकेतु नाड़ी में विद्युत चुंबकीय ऊर्जा समाहित है जिसके छूने मात्र से व्यक्ति का आभामंडल बढ़ जाता है. सूर्यकेतु नाड़ी हानिकारक विकिरण को रोककर आसपास के वातावरण को स्वच्छ बनाती हैं और इसी कारण गाय की प्रदक्षिणा और पूजा सनातन धर्म में वैदिक काल से की जाती है. सूर्य के संपर्क में आने पर सूर्यकेतु नाड़ी जो स्वर्ण उत्पादन करती है वह गाय का दूध पीने से मनुष्य के शरीर में चला जाता है और गोबर के माध्यम से खेतो में चला जाता है. इस तरह अनेको प्रकार के रोगों को दूर करने में पंचगव्यो का औषधीय महत्त्व है. अधिक जानकारी के लिए **यह वीडियो** देख सकते है.

Source: https://www.pngitem.com/middle/iooJwoh_-cow-with/

गाय हिन्दुओं के लिए सबसे पवित्र धन है और भारत में गाय को देवी का दर्जा प्राप्त है. इतिहास के कुछ स्वतंत्र दावो के अनुसार लगभग 9,500 वर्ष पूर्व गुरु वशिष्ठ ने गायों के कुल का विस्तार किया था जिनका नाम कामधेनु, कपिला, देवनी, नंदनी, भौमा आदि था. नंदिनी गाय के प्रसंग मे राजा कौशिक (विश्वामित्र) ने धन के बदले में नंदिनी गाय मांगी थी जिसे प्राणों से प्रिय बताकर गुरु वशिष्ठ ने देने से इंकार कर दिया था. इसे अपना अपमान समझकर राजा कौशिक सेना को आदेश दिया की वो गुरु से नंदनी गाय छीन ले. मगर जैसे ही सैनिक नंदनी को ले जाने का प्रयास करते

वैसे गुरु वशिष्ठ की आज्ञा से अपनी योग माया दिखाती है और राजा की विशाल सेना का अकेले विध्वंस कर डालती है. वह राजा को भी बंदी बनाकर गुरु वशिष्ठ के सामने खड़ा कर देती है **Link**.

ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार गौ माता के पैरों में समस्त तीर्थ स्थल का वास माना गया है, जो व्यक्ति गाय के पैरों में लगी मिट्टी का नित्य तिलक लगाता है उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं और विशेष फल की प्राप्ति होती है. वहीं **महाभारत काल के अनुसार** जो व्यक्ति सुबह जागने के बाद सबसे पहले गौ माता के दर्शन करता है उसकी कभी अकाल मत्यु नहीं हो सकती. **देशी गाय एवं गौमाता का आयुर्वेद, वैदिक और आध्यात्मिक महत्त्व समझने के बाद कुछ पूर्ण या चल रही वैज्ञानिक खोजो के आधार पर पंचगव्यो का महत्व समज लेते है. साथ इसके दैनिक जीवन में उपयोग में आनेवाले तत्वों का मूल्यांकन कर लेते है.**

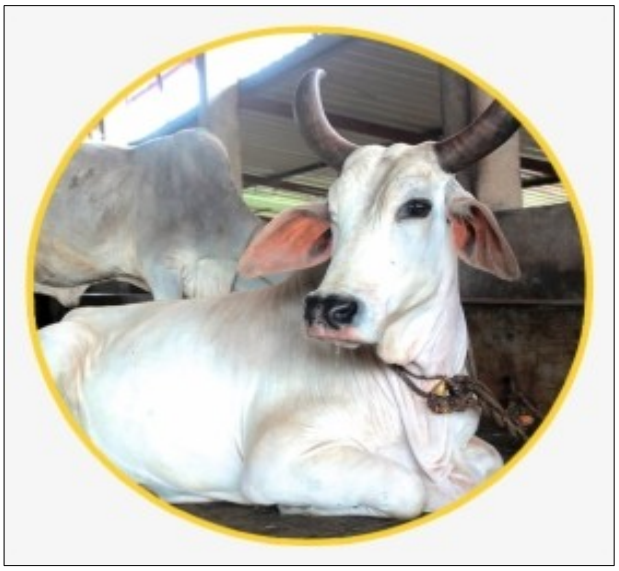

- देशी गाय का दूध A2 प्रकार का होता है जिसमे स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने वाला तत्व बीसीएस 7 (बीटा केसोमोर्फीन 7) नहीं होता. वैज्ञानिक शोध अनुसार, A2 दूध में बीटा केसीन प्रोटीन होता है. A2 दूध से शरीर में प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता है और नाड़ी तंत्र में किसी भी तरह की कमी को खत्म करता है. देशी गाय का दूध दिमाग, दिल, आँखों और शरीर के सभी अंगों के लिए बहुत ही लाभदायक है. हृदयघात की बीमारी में भी A2 दूध बहुत लाभकारी है **Link**. **होल्स्टीन, फ्रीजियन, जर्सी, ब्राउनस्विश, गर्नसी, जर्मन फ्लेवीह जैसी अन्य विदेशी नस्लों की गायो का दूध A1 प्रकार का माना जाता है जो स्वास्थ के लिए हानिकारक माना जाता है. देशी गाय के पंचतत्वों की तरह विदेशी नस्ल की गायो का कोई विशेष गुण नहीं है Link.**

- गाय के दूध में **कैरोटीन** पाया जाता है जो एक पीला पदार्थ होता है. इसी के कारण गाय का दूध हल्का पीला दिखाई देता है और ये कैरोटीन आंखों के लिए बहुत फायदेमंद होता है, क्योंकि इससे आंखों की रोशनी भी बढ़ती है और आंखों की खूबसूरती में भी इजाफा होता है. साथ ही बच्चों का बौद्धिक विकास करने में भी गाय का दूध प्रभावी रहता है और पाचन सम्बन्धी समस्याओं का निपटारा करने में भी गाय का दूध सर्वश्रेष्ठ साबित होता है.

- गोबर का सबसे बड़ा गुण कीटाणु नाशक है. इसमें हर प्रकार के कीटाणुओं को नष्ट करने की क्षमता है. इसलिए गावों में आज भी शुभ कार्य करने से पूर्व गोबर से लेपा जाता है. इससे पवित्रता व स्वच्छता दोनों बनी रहती है.

- गाय के गोबर मे नाईट्रोजन, फास्फोरस, पोटेशियम, आयरन, जिंक, मैग्निज, ताम्बा, बोरोन, मोलीब्डनम्, बोरेक्स, कोबाल्ट-सलफेट, चूना, गंधक,सोडियम आदि मिलते है. **गाय के गोबर में लगभग 16 प्रकार के उपयोगी खनिज तत्व पाये जाते है** इन तत्वों से जमीन उपजाऊ होती है और खेती समृद्ध होती है. गोबर के कीटनाशक गुण होने के कारण इससे फसलों की भी रक्षा होती है. एन्टिरेडियोएक्टिव एवं एन्टिथर्मल गुण होता है. कृषि में रासायनिक खाद्य और कीटनाशक पदार्थ की जगह गाय का गोबर इस्तेमाल करने से जहां भूमि की उर्वरता बनी रहती है, वहीं उत्पादन भी अधिक होता है. दूसरी ओर पैदा की जा रही सब्जी, फल या अनाज की फसल की गुणवत्ता भी बनी रहती है. जुताई करते समय गिरने वाले गोबर-गौमूत्र से भूमि में स्वतः खाद डलती जाती है.

- घांस खानेवाली और मैदानों में चरनेवाली गाय की बड़ी आँतो में **विटामिन B-12** की उत्पत्ति प्रचूर मात्रा में होती है पर वहाँ इसका पूर्ण आवशोषण नहीं हो पाता. अत: यह विटामिन गोबर के साथ बहार निकल आता है. इस गोबर का उपयोग पौधों और कृषि को खाद डालने से वह विटामिन B-12 ग्रहण करने में सक्षम बनता है. ऐसे शाकाहारी भी बिना माँसाहार, दूध या डेरी उत्पादक के अलावा पौधो और सब्जीयो से B-12 की कमी को दूर कर सकते है **Link**.

- गाय के दूध में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स, मिनरल्स और **विटामिन D** होता है जो रोग प्रतिरोधक क्षमता और मानसिक विकास में भी उपयोगी है. देशी गाय के गौमूत्र में कितने प्रकार के तत्व या नैसर्गिक केमिकल जो भिन्न भिन्न

बीमारियों के इलाज में उपयोगी है उसकी संकलित सूचि आर्टऑफलिविंग के **इस आर्टिकल में** दी गयी है.

- यज्ञ-हवन के दौरान गाय के दूध से बने घी की आहुति देने से आसपास के वातावरण में ऑक्सीजन का लेवल बढ़ता है और वातावरण की शुद्धि होती है. गोबर के कंडों से किये गये अग्निहोत्र से सूक्ष्मऊर्जा, तरगें, एवं पौष्टिक वायु वातावरण में नि:सृत होते है; जिसमें वनस्पतियों को पोषण प्राप्त होकर फसल में वृद्धि होती है. पशुधन के स्वास्थ्य में सुधार तथा दूग्ध की गुणवत्ता में और प्रमाण में वृद्धि होती है. इससे केचुएँ व मधुमक्खियों में भी वृद्धि पायी जाती है. अग्निहोत्र का भस्म एक उत्तम खाद एवं कीटनियंत्रक औषध बनाने में भी उपयोगी है.

- सर्पदंश, विषधर साँप, बिच्छु या अन्य जीव के काटने पर रोगी को गोबर पिलाने तथा शरीर पर गोबर का लेप करने से विष नष्ट होता है अति विषाक्त्ता की अवस्था में मस्तिष्क तथा हृदय को सुरक्षित रखता है. बिच्छु के काटने पर उस स्थान पर गोबर लगाने से भी उसके जहर की तीव्रता कम हो जाती है.

- आग से जल जाने पर गोबर का लेपन रामबाण औषधि है. ताज़ा गोबर का बार-बार लेप करते हुए उसे ठंडे पानी से धोते रहना चाहिए यह व्रणरोपण एंव कीटाणु नाशक है.

- गौमूत्र टीबी और कई प्रकार के कॅन्सर के उपचार के लिए भी एक बहुत अच्छी औषधि साबित हुयी है. यह शरीर में सेल डिवीज़न इन्हिबिटरी एक्टिविटी को बढ़ाता है और कैंसर के मरीज़ों के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हुयी है. भारत देश में कई स्वदेशी संस्थाओ द्वारा पंचगव्यो से टीबी, कॅन्सर जैसे गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए प्रयोग किया जाता है. गौमूत्र त्वचारोग, हृदय रोग तथा मधुमेह में भी रामबाण है. पेट के अल्सर, अस्थमा और लीवर की बीमारियों में भी इसका उपयोग किया जाता है.

- गौमूत्र में प्रति-ऑक्सीकरण की क्षमता के कारण डीएनए को नष्ट होने से बचाया जा सकता है. गौमूत्र से बनी औषधियों से भिन्न प्रकार के कैंसर,

ब्लडप्रेशर, आर्थराइटिस, सवाईकल हड्डी संबंधित रोगों का उपचार भी संभव माना जाता है.

- ब्राज़ील का डेरी उधोग भारतीय **नंदी (सांढ़)** की देंन है. ब्राजील देश ने हमारी देशी गायों का आयात और जतन कर अब तक अपने यहां गायों की संख्या लगभग 65 लाख कर ली है और इससे भी दोगुनी भारतीय देसी नस्ल की गायें उन लोंगो ने दूसरे देशों में निर्यात की है.

"Milk is White Poison" यानी दूध सफ़ेद ज़हर है यह वाक्य विदेशी गायो के दूध के संदर्भ में कहा जाता है, भारत की देशी गाय की नस्ल के लिए नहीं, क्योकि देशी गाय का दूध अमृत है. यह देश भारतीय देशी गायो को आयत कर तंदुरस्ती के लिए उनका दूध और अन्य तत्व ग्रहण करते है और भारत में विदेशी गायो के दूध का पावडर बनकर आता है जो पूतना के ज़हर समान अनेक रोग उत्पन्न करनेवला है. इस विषय पर छोटा लेख आपकी आँख खोलने के लिए काफी होगा. **Link.**

गौमूत्र के बारे में वैज्ञानिक रिसर्च और हिन्दू धर्म के अलावा म्यानमार देश जिसमे बौद्ध धर्म प्रचलित है वह पर भी देशी गाय के पंचतत्वों का महत्त्व और रोगो के इलाज में उसका इस्तेमाल होता है. **गौमूत्र के कॅन्सर से लेके अन्य प्रकार रोगो में उपयोगी होने की वैज्ञानिक रिसर्च पढ़ने के लिए यहाँ पर क्लिक करे. 2021 में** देशी गौमाता के **पंचगव्य से कोरोना मरीजो के ठीक होने का दावा** क्लीनिकल ट्रायल द्वारा राष्ट्रीय कामधेनु आयोग ने किया है जो भारतीय आयुष मंत्रालय के मापदंडो के अनुसार किए गए थे. इससे पंचगव्यो की उपयोगिता वैज्ञानिक आधार पर भी सिद्ध होती है.

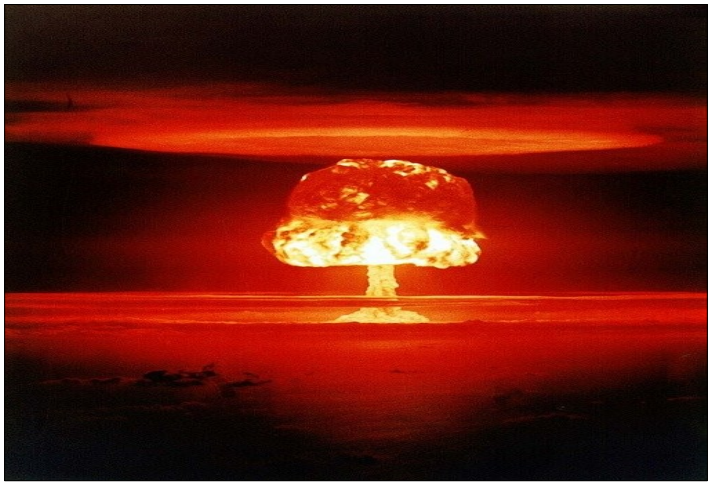

ऐसा कहा जाता है की जिस समय जापान में हिरोशिमा और नागासाकी पर बम वर्षा की गयी थी तो उस समय जापान ने गाय के गोबर के लेपन का महत्व समझा था. उसके पश्चात वहां पर लोग अपने ओढ़ने की चादर को गोबर के घोल को छानकर उसके पानी में भिगोने के पश्चात सुखाकर ओढ़ते हैं. जिससे उनके स्वास्थ्य की रक्षा होती है तथा उसकी रोग निरोधक क्षमता भी बढ़ती है. रेडियोएक्टिव विकिरण का प्रतिकार करने में गोबर से पुती दीवारें पूर्ण सक्षम मानी जाती है. भारत के गांवों में आज भी एक परंपरा देखने को मिलती है. 1904 ई. में भारत की उन्नत कृषि पद्धति का अध्ययन करने के लिए **ब्रिटेन से आये कृषि वैज्ञानिक सर एलबर्ट** ने बड़ी सूक्ष्मता से अपने विषय का अनुसंधानात्मक अध्ययन किया और अपने निष्कर्षों को **"एन एग्रीकल्चरल टेस्टामेंट"** में लिखा. उनके लेख के अनुसार पूसा (बिहार) के आसपास के गांवों में उपजने वाली फसलें सभी प्रकार के कीटों से गजब की मुक्त थीं. किसानों की अपनी परंपरागत कृषि पद्धति में कीटनाशक जैसी चीजों के लिए कोई स्थान ही नही था.

स्व. राजीवभाई दीक्षित जी के गुरु धर्मपालजी द्वारा लिखित साहित्य में दिए गए प्रमाणों के अनुसार मुस्लिम शासन के समय गौवध अपवादस्वरूप ही होता था. अधिकांश शासकों ने अपने शासन को मजबूत बनाने और हिन्दुओं में लोकप्रिय होने के लिए गौवध पर प्रतिबंध लगाए. अंग्रेज और ईसाई ही वह आक्रमणकारी थे जिन्होंने भारत में गौवध को बढ़ावा दिया. अपने इस कुकर्म पर पर्दा डालने के लिए उन्होंने मुस्लिम कसाइयों की नियुक्ति बूचड़खानों में की. धर्मपालजी द्वारा दिए प्रमाणों से पता चलता है कि ब्रिटेन की रानी के निर्देशन पर मुस्लिम कसाइयों को नियुक्त करने की नीति अपनाई गई थी, जिसके कारण हिन्दू मुस्लिम में नफरत को बढ़ावा दिया गया जो आज भी उच्चतम स्तर पर है और उसका राजनीती में वोटबैंक के लिए इस्तेमाल होने के प्रबल दावे है.

ऋगवेद ने गाय माता को **अघन्या** कहा है, यजुर्वेद कहता है कि **गौ अनुपमेय** है. अथर्वेद में गाय को संपत्तियों का घर बताया गया है. स्कन्द पुराण के अनुसार गौ सर्वदेवमयी और वेद सर्वगौमय है. **तो हिन्दू वेद-पुराणों में जो गाय की महत्ता बताई गयी है वह उसके पंचगव्यो के दिव्य गुणों के कारण है** और वह किसी एक विशेष धर्म के लोगो को लाभ ना पहुंचाकर सभी धर्मो एवं समग्र मनुष्यजाति के लिए जीवनदायी है.

अपाने सर्वतीर्थानी गोमुत्रे जाह्नवी स्वंय।
अष्टऐश्वर्यमयी लक्ष्मी गोमय वसते सदा।।

गाय के मुख से निकली श्वास सभी तीर्थों के समान पवित्र होती है। तथा गौमूत्र में सदा गंगा जी का वास रहता है। और आठ ऐश्वर्यों से सम्पन्न लक्ष्मी गाय के गोबर में वास करती है।

https://www.bbc.com/hindi/science-39515061
गायों की डकार धरती के लिए खतरा - BBC News हिंदी
07-Apr-2017 ... इंसानों की तरह **गायों** को भी पेट के गैस की समस्या होती है. और उनकी **डकार** से जितनी ...

https://hindi.oneindia.com/news/international/burp-catching-mask-for-c...
गाय की डकार कर रही है दुनिया को गर्म, अब स्पेशल मास्क पहनाने की हो रही ...
01-May-2022 ... **गाय की डकार** से मीथेन गैस निकलती है, जो एक ग्रीन हाउस गैस है और इससे ग्लोबल ...

https://jantaserishta.com/science/cow-mask-the-world-is-heating-up-d...
Cow Mask: गाय की डकार से गर्म हो रही दुनिया, अब मास्क लगाने की तैयारी
01-May-2022 ... ऐसा इसलिए क्योंकि **गायों की डकार** से भारी मात्रा में मीथेन गैस निकलती है जो एक ...

https://navbharattimes.indiatimes.com/world/science-news/royal-collag...
Cow Mask: गाय की डकार से गर्म हो रही दुनिया, अब मास्क लगाने की तैयारी
01-May-2022 ... इस मास्क के जरिए **गायों** के मुंह से **डकार** के जरिए निकलने वाली मीथेन गैस को कार्बन ...

https://hindi.news18.com/news/knowledge/cow-burp-is-harmful-for-en...
बढ़ते प्रदूषण के लिए गायों की डकार है कितनी ज़िम्मेदार? - News18 हिंदी
05-Nov-2019 ... ग्रीनहाउस गैस के लिए गाय भी जिम्मेदार है. **गायों की डकार** से मीथेन गैस निकलती है ...

https://loksaakshya.com/2022/04/30/the-burping-of-cows-is-a-threat-t...
गायों की डकार वायुमंडल के लिए खतरा, सबसे ज्यादा मीथेन का करती है ...
30-Apr-2022 ... **गाय की डकार** के रूप में वायुमंडल में ये तत्व फैलते हैं। अब इसे रोकने के लिए ...

https://hindi.asianetnews.com/trending-news/cows-and-buffaloes-are-...
धरती के लिए कार से ज्यादा बड़ा खतरा हैं गाय और भैंस, इनकी डकार वायुमंडल ...
29-Mar-2022 ... धरती के वायुमंडल (Atmosphere) में मीथेन गैस (Methane Gas) की मात्रा बढ़ रही है और ...

गौमाता के श्वास के बारे में वैदिक संस्कृति में इतना महत्वपूर्ण कथन दिया गया है, वहाँ विज्ञान के नाम पे विदेशीयो द्वारा "गाय की डकार" के बारे में क्या कुतर्क चलाया जा रहा है वह भी पढ़िए. उनके अनुसार गाय की डकार से मीथेन गैस निकलती है जिससे पृथ्वी गर्म हो रही है. ऐसा कुतर्क देने के पीछे विदेशियों की क्या नीति हो सकती है उन कारणों का मूल्यांकन भी आगे करते है और पर्यावरण गर्म होने का असली कारण क्या हो सकता है वह भी जानने का प्रयास करते है.

भारतीय देशी गाय के पंचगव्यो की उपयोगिता जब वैज्ञानिक आधार पर सिद्ध की गयी है जो तरह- तरह के वाइरस, बैक्टेरिया की महामारी के सामने लड़ने में भी कारगर साबित हुआ है और बीमारियों को दूर करने में भी. भारतीय देशी गाय के दूध, दही, छाछ, मक्खन, गौमूत्र और गोबर के खेती, मानव शरीर को अनेको रोगो से मुक्त किया जा सकता है और उससे बचा भी जा सकता है. लेकिन यह सारी गुणों की बाते ऐसे कुतर्क के सामने नहीं लायी जायेगी और मुद्दा बस दोष को आगे रखने का चलेगा.

देश के सभी गाँव गाय के गोबर से बायोगैस प्लान्ट लगाकर घर में रसोई के लिए मुफ्त ईंधन, बिजली और खेत के लिए जैविक खाध का निर्माण कर देश की खेती को समृद्ध बना सकते है, बिना सरकार या सरकारी सब्सिडी पे निर्भर रखे गाँव के लोगो को आत्मनिर्भर बना सकते है तथा देश के बजट में जो खर्च दवाइयों और इलाज के पीछे किया जा रहा है उसे ना के बरोबर लाया जा सकता है. गैस और बिजली संकट के दौर में गांवों में आजकल गोबर गैस प्लांट लगाए जाने का प्रचलन चल पड़ा है. पेट्रोल, डीजल, कोयला व गैस तो सब प्राकृतिक स्रोत हैं, किंतु यह बायोगैस तो कभी न समाप्त होने वाला स्रोत है. जब तक गौवंश है, अब तक हमें यह ऊर्जा मिलती रहेगी.

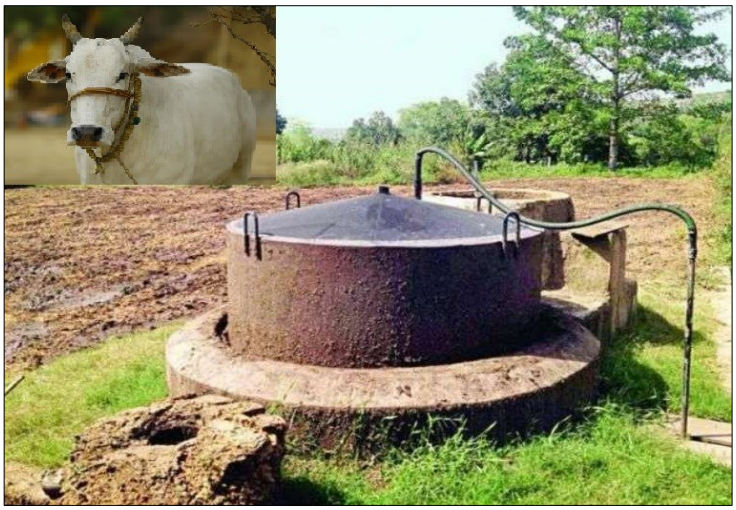

दावों के गणित अनुसार एक गोबर गैस प्लांट से करीब 7 करोड़ टन लकड़ी बचाई जा सकती है, जिससे करीब साढ़े 3 करोड़ पेड़ों को जीवनदान दिया जा सकता है. साथ ही करीब 3 करोड़ टन उत्सर्जित कार्बन डाई ऑक्साइड को भी रोका जा सकता है, लेकिन जनकल्याण की ये सारी असली बाते या इस विषय पर अधिक चर्चा कोई भी मीडीया या अखबार में आपको देखने को नहीं मिलेगी. बस सभी देशो की जनता अपनी सरकार पर निर्भर रहे और आंतराष्ट्रीय स्तर पर यह विदेशी अपनी नीतिया बनाकर उनका व्यापारी समूह सरकारों को उनकी विदेशनीति अनुसार व्यापार करने के लिए अवसर देनेको बाध्य रहे इन कारणों से ऐसे कुतर्को को पैदा किये जाने के दावे किये जाते है.

गाय की डकार से धरती गर्म होने के ऐसे कुतर्को से हर एक देश में खेती के रासायनिक कृत्रिम खाध, बिजली और अन्य सुविधाओंके लिए लोग आत्मनिर्भर ना बने और गुलाम होकर विदेशी कंपनियों एवं देशो की सरकारों पर निर्भर रहे ऐसा वातावरण निर्माण करना उनका मकसद फलित होता है.

दावों के अनुसार, अपना वैश्विक एजेंडा चलने के लिए विदेशी ताकते किसी भी चीजों के गुण के बारे में बात ना कर केवल दोष की बात करने लगते है तथा उसे उतना प्रचारित करवाते है की अंधे की तरह उनकी नीतियों मे विश्वास करनेवाले व्यक्ति को यह सत्य मालूम होने लगता है. जिसे दोष बताया जा रहा होता है वह असल मे एक वैज्ञानिक कुतर्क भी हो सकता है इस बात से अनजान पढ़ा लिखा व्यक्ति भी इंटरनेट-मीडिया के माध्यम से जाने अनजाने कुतर्क को समर्थन देने लगता है. इंटरनेट या मीडिया द्वारा वैज्ञानिक कुतर्क के समर्थन में ऐसा माहौल विश्व में तैयार करवाया जा सकता है की झूठ भी सत्य प्रतीत होने लगता है.

गायो की डकार मे मीथेन गैस के कारण धरती गर्म होने का जो सर्टिफिकेट बांटा जा रहा है, वह मीथेन गैस ऊर्जा का बहोत स्वच्छ श्रोत माना जाता है, क्योकि मीथेन जलने के बाद कोई भी अवशेष बचता नहीं है और पर्यावरण में कोई ऐसा प्रदुषण नहीं होता जो कोयला और अन्य ईंधन जलाने पर धुएं से होता है. मतलब असली हमला प्राकृतिक ईंधन पर है और दूसरा निशाना विश्व की खेती, पशुपालन एवं डेरी उधोग से जुड़े व्यापार को नियंत्रित करने पर है, ऐसा प्रत्यक्ष रूप से फलित होता है. कुतर्क भी समझदारी से दिया जाता है, ताकी दुनिया के ईमानदार वैज्ञानिक सत्य प्रकाशित कर योजना की पोल ना खोल सके ऐसे दावे किये जाते है. तो विदेशी यह नहीं कह रहे की मीथेन गैस ख़राब है, लेकिन नैसर्गिक मीथेन गैस को जलाने पर जो गर्मी उत्पन्न होती है उससे पृथ्वी का पर्यावरण गर्म होने के दावे किये जाते है.

तो कुतर्क बस ऐसा दिया जाता है जिसपे घंटो चर्चा की जा सकती है और सालो तक उसका कोई अंत नहीं आ सकता है. स्वास्थ्य और पर्यावरण की रक्षा का मात्र एजेंडा चलाकर कुछ कथाकथित एजेंटो को लाभ देकर आंतराष्ट्रीय जनसमर्थन प्राप्त कराया जा सकता है. पृथ्वी आदि अनादि काल से है और इंसानो-जानवर की परस्पर जरुरत सालो से रही है, लेकिन विज्ञान का हवाला देकर अपना लाभ और योजनाए विश्व के देशो में केवल धन के प्रभाव से विदेशी संस्थाओ द्वारा चलाई जा रही है ऐसे दावे किये जाते है.

अब विदेशियों के कुतर्क अनुसार गायो की डकार से जो मीथेन गैस निकलती है उसका समाधान गायो को मास्क पहनाने से है ऐसा प्रकाशित किया जा रहा है. रिपोर्ट के मुताबिक, ये स्पेशल मास्क काफी अलग तरह का है. **जब गायों के मुंह से डकार निकलेगी, उस वक्त ये मास्क उस डकार में मौजूद मीथेन गैस को कार्बन डायऑक्साइड और जलवास्प में बदल देगा. पहले गाय की डकार मास्क में मौजूद एक कन्वर्टर तक पहुंचेगी और फिर इसे जलवाष्प और कार्बन डायऑक्साइड बनाकर**

वातावरण में छोड़ दिया जाएगा. रिपोर्ट के अनुसार इस मास्क की नोक पर एक सेंसर लगाया गया है, जो पता लगाता है कि गाय कब सांस लेती है और मीथेन का कितना प्रतिशत बाहर निकलता है. जब मीथेन का स्तर बहुत अधिक होता है तो मुखौटा ऑक्सीकरण तंत्र को एक्टिवेट कर देता है.

कोरोना काल में भी दुनिया में इंसानो के लिए दिया गया विचार की "अद्श्य वाइरस" कपडे के बने मास्क से रुक सकता है वह अपने आप मे हास्यास्पद है, लेकिन इसे भी विज्ञान का हवाला देकर लम्बे समय तक चलाया गया. मास्क के कपडे के छेद वाइरस से कई गुना बड़े होते है, जिसमे से कई वाइरस के कण हवा के साथ शरीर में आसानी से दाखिल हो सकते है. फिरभी कपड़ो के मास्क का प्रचार प्रसार कोरोना के समय में विशेष व्यक्ति और वैश्विक संस्थाओ द्वारा अधिक किया गया. जबकि अधिकतर वैज्ञानिक रिसर्च मास्क पहनने के अत्यंत घातक नुक्सान भी बता चुके है, जैसे शरीर में ऑक्सीजन की कमी और लम्बे समय तक उसे पहनने के के कारण ब्लैक फंगस जैसे हानिकारक बक्टेरिया का इन्फेक्शन और कैंसर जैसे रोगो को निमंत्रण.

अब ये गायो और पर्यावरण के हित के लिए कुछ नया लेकर आये है, जिसका समय के साथ पता चलेगा की मकसद क्या था और गायो की सेहद पर इसका क्या असर पड़ेगा. इतिहास देखे तो इन विदेशी संस्थाए जनहित के नाम पर ज्यादा अपने स्वार्थो की पूर्ति करती दिखी है. तो जहाँ **5%** फायदों के सामने जीवन और आरोग्य के लिए **95%** घातक नुक्सान हो सकते है और उसमे मास्क के केवल फायदे बताकर लोगो को नुक्सान के बारे में अनजान रखने में जनकल्याण का कोनसा हित समाया है यह विचार प्रत्येक व्यक्ति को करना जरुरी है. ऐसा ही सुरक्षा के नाम पे वाइरस के टीको के बारे में भी देखा गया है, जिसके लम्बे समय के प्रभाव दिखने के लिए समय की प्रतिक्षा की जानी चाहिए वहाँ इसके पूर्ण कारगर, प्रभावी और सुरक्षित होने के

अवैज्ञानिक दावे भी कुछ ही महीनो के भीतर लोगो के सामने किये गए है और दुष्प्रभावों को ना के बराबर प्रस्तुत किये जाने के आरोप लगे है. इसमें कौन से व्यक्तियों या संस्थाओ का फायदा है यह गहरे मनोमंथन करने का विषय है.

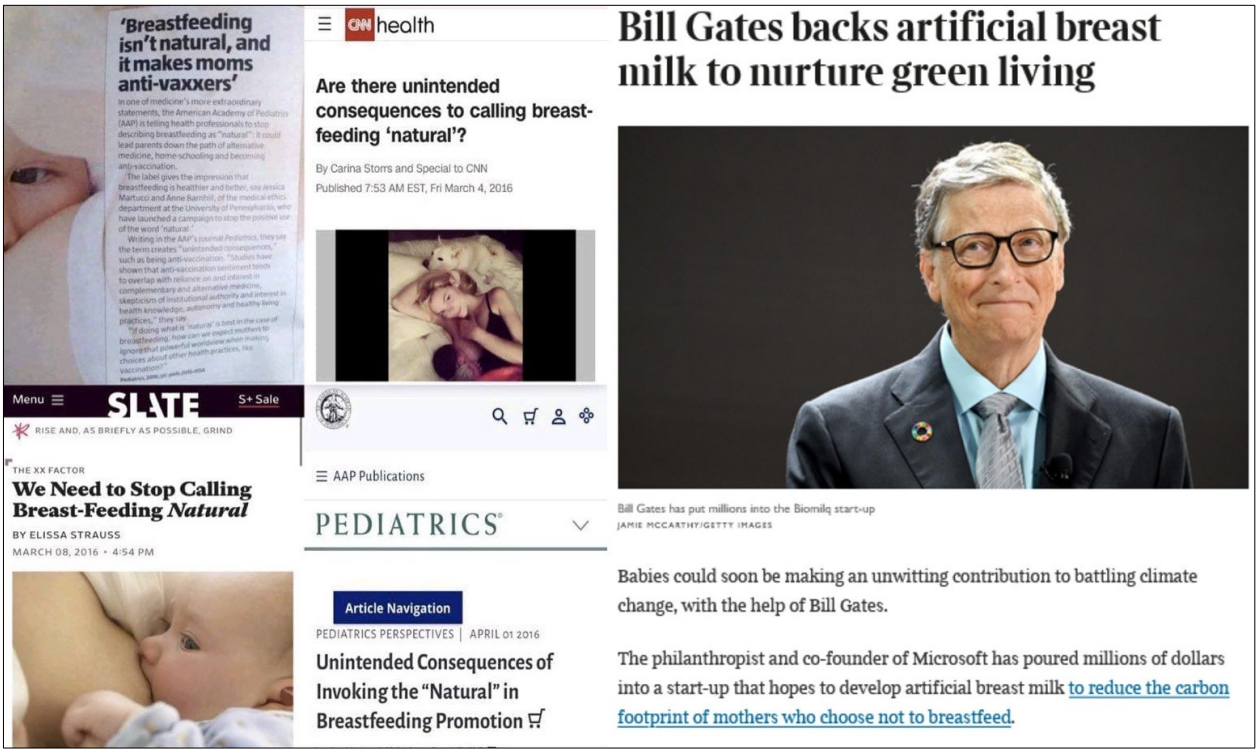

ठीक ऐसा ही कुतर्क **"माँ के दूध"** के बारे में सामने आया है जहाँ नवजात बच्चे के दूध को नैसर्गिक और अच्छा नहीं बताया गया. ये तो भारत का प्रश्न ना होकर समग्र विश्व की माताओ के लिए है, क्योकि सदियों से माताए अपना दूध अपने नवजात शिशु को पिलाती आयी है. आयुर्वेद के साथ आधुनिक मेडिकल विज्ञान भी इसका सालो से इसका समर्थन भी करता आया है. पर जब लेब से बना कृत्तिम दूध बाजार में लाने की बाते सामने आयी है, तो अब अपनी माँ का दूध बच्चो के लिए नैसर्गिक नहीं है ऐसा विज्ञान के नाम से प्रचारित कर जो माताए अपने बच्चो को दूध नहीं पिलाना चाहती उनकी कार्बन फुटप्रिंट ये लोग कम करके पर्यावरण को सुरक्षित रखेंगे. इस कारण से कृत्रिम दूध को भविष्य में अच्छा बताया जाएगा और इसके समर्थन में भी आपको बहुत सारे नामी लोग प्रचार मे उतरे दिख सकते है.

कृत्रिम दूध के अलावा भविष्य में संभवित कृत्रिम मांस या अन्य कृत्रिम चीजों का व्यापार करने के लिए लोगो को तरह तरह के प्रलोभन या वैज्ञानिक कुतर्क दिए जा सकते है. कोई "भूत वाइरस" फैलने का स्वांग रचकर नैसर्गिक चीजों को हानिकारक या दूषित बताकर विज्ञान के नाम से लोगो को कृत्रिम चीजों के उपयोग के लिए भविष्य मे प्रेरित किया जा सकता है. जानवर के शरीर या वनस्पति से कोई वाइरस

फैलने का कुतर्क देकर कृत्रिम केमिकल के माध्यम से वाइरस टेस्टिंग के नतीजों को पॉजिटिव या नेगिटिव बनाया जा सकता है तथा उसके जरिए किसी भी देश के खेती, पशुधन या व्यापार पर बायोवॉर द्वारा नियंत्रण पाया जा सकता है. इस तरह मानव या जीव सुरक्षा का नाम लेकर व्यापारिक लाभ हेतु किसी भी देश मे कुछ भी नियंत्रित या बर्बाद किया जा सकता है. इसीलिए वर्तमान समय मे वैज्ञानिक कलरबाजी से सावधान रहने की और विज्ञान के नाम से सामने लायी जा रही चीज वस्तुओ को ईमानदार व्यक्ति एवं विशेषज्ञों से चर्चा कर उपयोग करना सुरक्षा की दृष्टि से आवश्यक बताया जाता है.

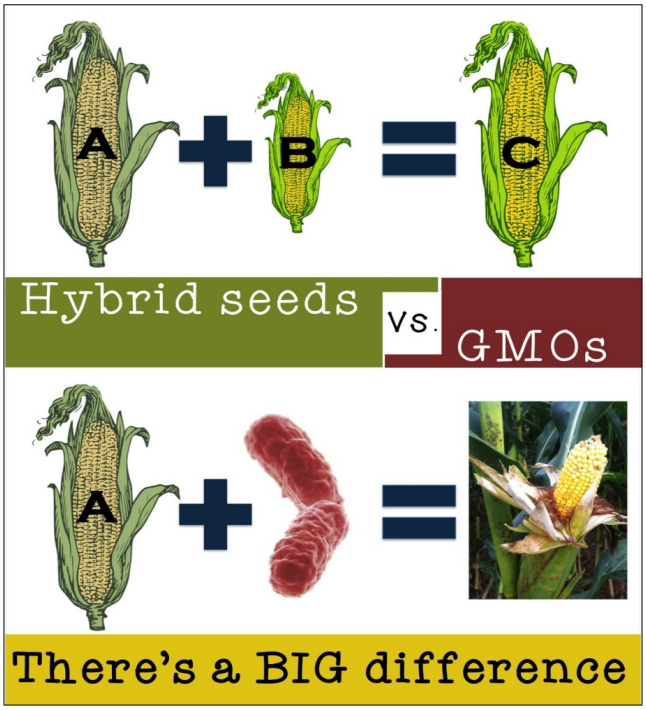

नजदीकी भविष्य में अगर वनस्पति-जानवर के जीन एडीटिंग की तकनीक से तैयार करवाए गए जी.एम.ओ बीज (Genetically Modified Organisms- GMO), फोर्टीफ़िएड (Fortified) नामसे सामने लायी जा रही किसी भी चीज जो फायदा बताकर प्रचारित की जाए तो उसे ईंमानदार और अनुभवी वैज्ञानिक के समूह द्वारा जांच परख करवाके ही उपयोग में लाने का विचार करना चाहिए, वरना ये सेहद के लिए खतरनाक और शरीर के लिए गंभीर समस्याए पैदा कर सकता है. इनके प्रचार से विदेशीयो के बड़े घ्येय की पूर्ति हो सकती है जो सामान्य व्यक्ति के समज से परे होती है और नयी टेक्नोलॉजी के बारे में भी अधिकतर साक्षर व्यक्ति भी अनजान होते है. लेकिन धोखे से विज्ञान के नाम से प्रचारित की जा रही वस्तु को वह अच्छा ही समझता है, जिसके परिणाम सालो के बाद भोगने पड सकते है. **जानकारी अनुसार, भारत में जी.एम.ओ (Genetically Modified Organisms- GMO) के खिलाफ महाराष्ट्र के डॉ. विलास जगदाले क़ानूनी लड़ाई लड़ रहे है.**

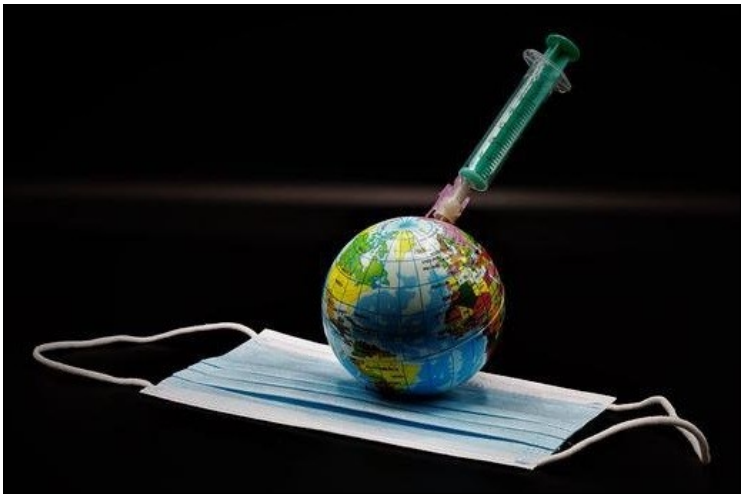

वर्ल्ड हेल्थ ओर्गेनाइज़ेशन (World Health Organization- WHO), वर्ल्ड इकनोमिक फोरम (The World Economic Forum- WEF), इंटरनेशनल मोनेटरी फंड (The International Monetary Fund- IMF) या वर्ल्ड बैंक (World Bank) की तरफ से कोई संधि (ट्रीटी- Treaty) देश के लिए आती है तो देश के नागरिको को इसकी अच्छे से जांच पड़ताल करनी चाहिए की यह देश के संविधान के हित में है या नहीं और संधि के नाम पर नागरिको के मुलभुत अधिकारों को छीनना इनका मकसद तो नहीं?. वरना विदेशी संस्थाओ द्वारा अपने फायदे की नीतिया किसी देश पर संधि के नाम से लागू करवाकर देश को गुलाम बनाने का प्रयास हो सकता है.

विश्व के जलवायु में बड़ा परिवर्तन केवल नैसर्गिक होता है यही अधिकतर लोग सोचते है, परंतु विकसित वैज्ञानिक तकनिक से इसमें मानवीय हस्तक्षेप संभव माना जाता है. ऐसी ही एक टेक्नोलॉजी का नाम है **HARPP (High Frequency Active Auroral Research Program)**. यह "हाई फ्रीक्वेंसी एक्टिव एरोरल रिसर्च प्रोग्राम" की विशेषता यह मानी जाती है की **इस तकनीक में विद्युत चुंबकीय तरंगें वायुमंडल में उच्च आवृत्ति के तहत छोड़ी जाती है, जिससे वायुमंडल का एक सीमित हिस्सा नियंत्रित किया जा सकता है. इससे बाढ़ तक की स्थिति पैदा की जा सकती है या फिर तूफान भी लाया जा सकता है. साफ है कि इसे विश्व के पर्यावरण को नियंत्रित करके उसे हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है.** इसकी अधिक जानकारी **हिंदी** और **अंग्रेजी** के इस आर्टिकल से ली जा सकती है. इस तरह टेक्नोलॉजी का अच्छा या बुरा उपयोग किसी के भी द्वारा किया जा सकता है. विदेशीयो द्वारा ऐसी ही किसी तकनीक का इस्तेमाल किसी भी देश की खेती, हवामान में परिवर्तन कर बाढ़, सूखे और तूफान की स्थिति पैदा करके देश की अर्थव्यवस्था को नुक्सान पहुंचा कर आर्थिक रूपसे कंगाल बनाने के लिए अथवा देश के साधनो को नुक्सान पहुंचाने के लिए किया जा सकता है जिसके बारे मे हर व्यक्ति को सोचने की आवश्यकता है.

अधिकतर पढ़े लिखे लोगो को इसकी जानकारी ना होकर घटनाओ को ढकने के लिए धरती गर्म या ठंडी होने के कोई वैज्ञानिक कुतर्क से भ्रमित कर किसी वस्तु, जानवर, व्यक्ति या संस्था पर पर्यावरण को दूषित, गर्म या ठंडा करने का आरोप लगाकर एक तीर से कई निशान साधे जा सकते है. देशो में जनता का ध्यान बटाने के लिए टीवी मीडिया या सोशियल मीडिया के माध्यम से सामजिक, राजकीय या अन्य मुद्दों पर लोगो का ध्यान भटकाकर मूल कार्य भ्रष्ट व्यक्तियो या संस्था द्वारा परदे के पीछे से करवाया जा सकता है. इसीलिए कथाकथित वाइरस, बीमारी और इलाज यह तीनो चीजों की ठीक से जांच परख कर लोगो को सजाग रहने की आवश्यकता है और मुख्य मीडिया के अलावा ईमानदार डॉक्टर, वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञों के संगठन द्वारा दिए गए अभिप्राय, तर्क और सबूत के आधार पर ही उसपे विश्वास करना चाहिए. ऐसे कुछ संगठन और संस्थाए है जैसे **यूनिवर्सल हेल्थ आर्गेनाईजेशन (UHO), अवेकन इंडिया मूवमेंट (AIM), इंडियन बार एसोसिएशन (IBA)** जिससे आपको सत्य की जानकारी मिल सकती है जो अन्य जगहों पर मुश्किल से मिलने की संभावना है.

विश्व के जागृत व्यक्तियों के ध्यान में कुछ ऐसी वैज्ञानिक तकनीक और खोज सामने आयी है, जिसकी पेटन्ट अप्लाई की गयी है और पुरे विश्व के ऊपर इसका सदुपयोग या दुरूपयोग दोनों संभव है. पेटन्ट नंबर देखे और इंटरनेट पे खोजे की कितनी खोजो पे सरकारो द्वारा ऐसी टेक्नोलॉजी पे पेटन्ट को मान्यता दी गयी है.

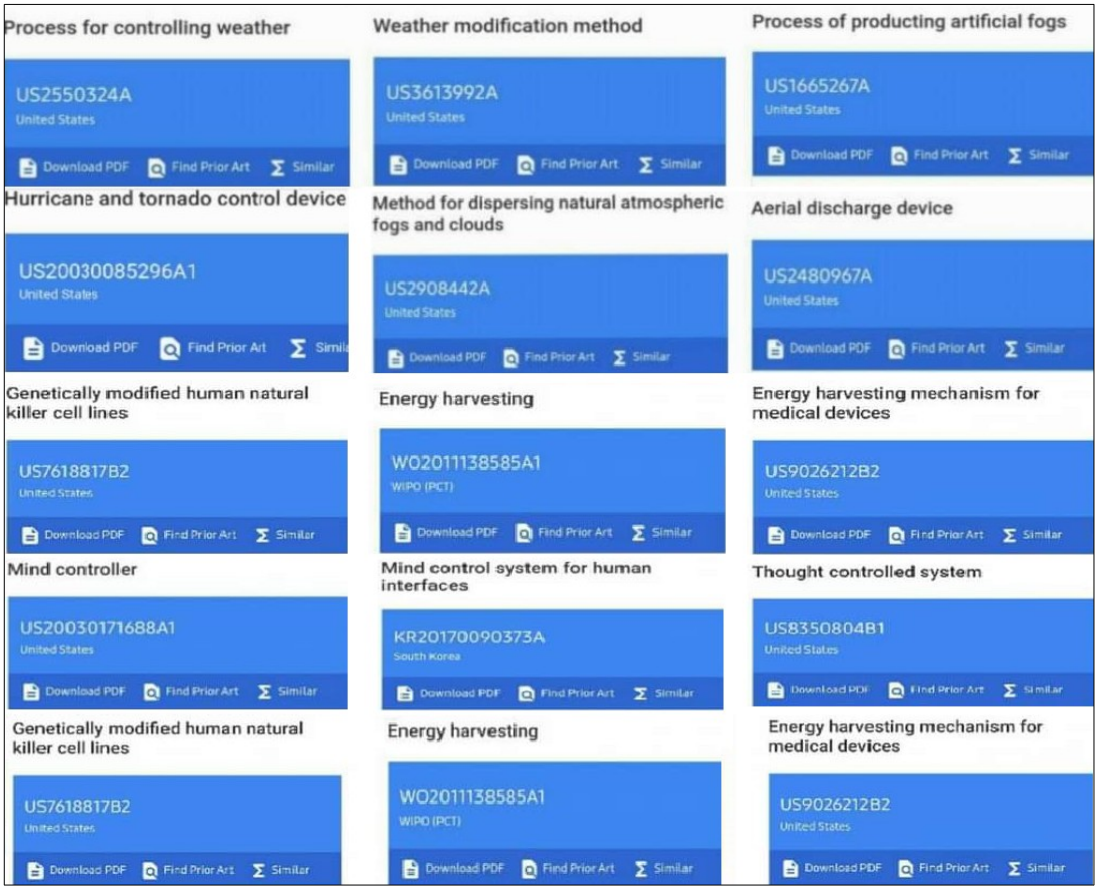

ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा अंग्रेज व्यापार और उदारीकरण का बहाना लेकर ही भारत आये थे और षड्यंत्र से अनजान देश सालो तक अंग्रेजो का गुलाम रहा. हमें ये कभी नहीं समझना चाहिए की हमारे या अन्य कोई देश पर किसी अदृश्य आक्रमण का खतरा नहीं है. **हर बार एक ही तरह गोली, बंदूक या बारूद से आक्रमण हो यह जरुरी नहीं, ये वाइरस, बीमारी या दवाई के स्वरुप में बायोवॉर की तरह भी हो सकता है.** नैनो टेक्नोलोजी और इंटरनेट के माध्यम से भी आक्रमण संभव है, इसीलिए देश के हर नागरिक को अपने परिवार की रक्षा के लिए हमेशा जागृत रहना जरुरी है.

अपनी मूल संस्कृति भूल चुके कुछ भारतीय, स्व. राजीव दीक्षित जी की भाषा में विदेशी शिक्षा प्राप्त शरीर से भारतीय, परंतु मनसे अंग्रेज हो चुके कुछ लोग, दुष्प्रचार से भ्रमित हुए जनसमूह और अनिष्ट विदेशी ताकते जानबूजकर धर्म और विज्ञान के नाम पे कुतर्क देकर देशो की मूल संस्कृति को नष्ट करने का काम सालो से करते दिख रहे है. क्योकि भारत एक कृषि-प्रधान देश है और यही भारत की आय का मुख्य स्रोत है. गाय के बिना किसान व भारतीय कृषि अधूरी है. प्राचीन भारत में गाय समृद्धि का प्रतीक मानी जाती थी. **युद्ध के दौरान स्वर्ण, आभूषणों के साथ गायों को भी लूट लिया जाता था. जिस राज्य में जितनी गाएं होती थीं उसको उतना ही संपन्न माना जाता था. किंतु वर्तमान परिस्थितियों में किसान व गाय दोनों की स्थिति हमारे भारतीय समाज में दयनीय है.**

एक समय वह भी था, जब भारतीय किसान कृषि के क्षेत्र में पूरे विश्व में सर्वोपरि था जिसका कारण केवल गाय थी. भारतीय गाय के गोबर से बनी खाद ही कृषि के लिए सबसे उपयुक्त साधन थे. खेती के लिए भारतीय गाय का गोबर अमृत समान माना जाता था. इसी अमृत के कारण भारत भूमि सहस्रों वर्षों से सोना उगलती आ रही है. किंतु हरित क्रांति के नाम पर सन् 1960 से 1985 तक रासायनिक खेती द्वारा भारतीय कृषि को अधिकतर नष्ट कर दिया गया है. अब खेतों

से कैंसर जैसी बीमारियों की उत्पत्ति होती दिखती है. रासायनिक खेती ने धरती की उर्वरा शक्ति को घटाकर बांझ जैसा बना दिया है. **गाय के गोबर में गौमूत्र, नीम, धतूरा, आक आदि के पत्तों को मिलाकर बनाए गए नैसर्गिक कीटनाशक द्वारा खेतों को किसी भी प्रकार के कीड़ों से आसानी से बचाया जा सकता है**. आधुनिक विकास के नाम पर विदेशी लोगों ने सभ्यता-संस्कृति के साथ ही हमारी धरती को भी अधमरा कर नष्ट होने की कगार पर खड़ा कर दिया है.

इसलिए गाय की रक्षा से जैविक खेती और मनुष्य के स्वास्थ दोनों की रक्षा हो सकती है. गौमाता साक्षात् ईश्वर का वरदान है और इसे भारत का राष्ट्रीय पशु बनाकर ही जतन किया जा सकता है जो सभी धर्म के लोगो के लिए हितकारी है. इतने दिव्य गुणों की वैदिक, वैज्ञानिक साबिती के बाद अगर गौमाता को कत्तलखानो का मुँह देखना पड़े तो ये हिन्दू धर्म और देश का दुर्भाग्य है. देश में आज कुछ गिनी चुनी संस्थाए या कुछ संख्या में व्यक्ति या सच्चे गौरक्षक है जिन्होंने गौमाता का पालन और जतन कर सनातन संस्कृति को बचा के रखा है. स्व. राजीव दीक्षित जी और उनके अनुयायी **"भारत बचाओ आंदोलन"** संस्था के द्वारा और ऐसी अन्य कुछ सेविक संस्थाए है जो गौमाता के लिए अपने स्तर पर लड़ाई लड़ रहे है जिनके कार्यो को नमन है. **श्री. उत्तम महेश्वरी जी** ने भी गौमाता, पंचगव्यो और आयुर्वेद का जो विशेष महत्त्व देश-दुनिया को बताया है वह सराहनीय है. रस्ते पर भटकती निराश्रित गाय और उसके साथ आत्महत्या कर रहे भारतीय किसान की दुर्दशा दोनों भारत के लिए कलंक के समान है, जिसके दिए देश के सभी लोगो को आगे आकर इसे मिटाने का प्रयास करना चाहिए. **गौमाता केवल हिन्दुओ के लिए नहीं, परंतु सभी धर्म एवं मानवजात के लिए उपयोगी है क्योकि अगर गाय बचेगी तो ही खेती, मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण, देश और विश्व बचेगा.**

एलोपैथी, होमियोपैथी, आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति का मूल्यांकन

एलोपैथि (Allopathy) मूल ग्रीक भाषा का मूल शब्द है जो दो शब्दों को जोड़कर बना है जिसका अर्थ होता है - **Allo** मतलब **"अन्य या दूसरी"** तथा **Pathy** का अर्थ है **"चिकित्सा पद्धति"** यानी इसका पूरा मतलब है **"इलाज की अन्य चिकित्सा पद्धति"**, जिसे आज अंग्रेजी में मॉडर्न मेडिकल प्रेक्टिस या ऐलोपैथी **(Allopathy)** कहा जाता है. **वर्ष 1810 में जर्मनी के होमियोपैथिक चिकित्सक सेम्युअल हैनिमेन (Samuel Hahnemann) ने पहली बार ऐलोपैथी शब्द का इस्तेमाल किया था.** ग्रीक भाषा में पैथॉज **(Pathos)** का मतलब होता है बीमारी. लेकिन **एलॉपथी का मूल जनक 400 ईसा पूर्व ग्रीस के एथेंस शहर में रहने वाले "हिप्पोक्रेट्स" को माना जाता है** जो ग्रीक के जानीते चिकित्सक थे.

इसतरह एलोपैथि चिकित्सा पद्धति का मूल **2600** वर्ष पुराना माना जाता है जो पिछले कुछ वर्षो से विश्व की अधिकतर सरकारों के प्रोत्साहन, वैज्ञानिक रिसर्च, दवा के व्यापार और धंधाकिय हेतु से किये गए धन निवेश के कारण आधुनिक चिकित्सा के रूप में विकसित हुआ है.

ऐलोपैथी में बीमारी के लक्षण से विपरीत यानी उसे दबाने की दवा दी जाती है. उदाहरण के रूप में शरीर का तापमान बढ़ने पर लक्षणों के अनुसार मरीज को बुखार घटाने की दवा दी जाती है. तो ऐलोपैथी में दवाइयों के माध्यम से "बीमारी के लक्षण" का इलाज किया जाता है, लेकिन इसमें बीमारी को जड़ से नहीं मिटाया जा सकता. इसीलिए किसी ऐलोपैथी चिकित्सक को आपने बीमारी को ठीक करने का दावा करते नहीं सुना होगा, क्योकी यहाँ चिकित्सा के मूल सिद्धांत में बीमारी की जड़ का नहीं, बल्की लक्षणों का उपचार किया जाता है जो आयुर्वेद से बिलकुल भिन्न है. ऐलोपैथी लक्षणों को ठीक करने में कारगर है जिससे रोगी को तुरंत आराम मिल सकता है, परंतु मूल रोग शरीर से दूर ना होकर लक्षणों का इलाज करते समय दी गयी दवाई की साइड इफ़ेक्ट या प्रतिकूल घटनाये हो सकती है. ऐलोपैथी में लगभग सभी दवाइयों के छोटे बड़े साइड इफेक्ट होते हैं जो पेथी द्वारा स्वीकार्य भी है. तो एलोपैथी से बीमारी को सिर्फ संभाला जा सकता है, लेकिन यह विशेषकर आपत्तिकाल में शीघ्र आराम हेतु मददगार सिद्ध हो सकती है.

सूक्ष्म में देखे तो एलोपैथी दवा रोगो को नहीं केवल लक्षणों को नियंत्रण में रखने के काम में आती है और रोग के दर्द से तुरंत आराम भी पहोचाती है. परंतु कुछ खास रोगो में जीवनभर वह दवाई मरीज को खानी पड़ती है और रोग वही का वही शरीर में बना रहता है. इस बड़े मुनाफे के कारण भी बड़ी कंपनिया एलॉपथी में निवेश करती है. ऐलोपैथी चिकित्सा महंगी और इसमें अधिक मुनाफा होने के कारण अधिकतर डॉक्टर भी ऐलोपैथी में ही अपनी कारकिर्दी बनाने का स्वप्न देखते है.

होमियोपैथी (Homeopathy) चिकित्सा पद्धति की शुरुआत 1796 में सेम्युअल हैनिमेन (Samuel Hahnemann) द्वारा जर्मनी से हुई. होमियोपैथी शब्द भी दो ग्रीक शब्दों को जोड़कर बनाया गया है. इनमेसे एक शब्द है "होमोइस" जिसका मतलब है

"समानता" और दूसरा शब्द है "पेथोस" जिसका मतलब है **"बीमारी या पीड़ा"**. होमियोपैथी का अर्थ होता है **"समानता के नियमानुसार दी जाने वाली दवाई"**. उदाहरण के तौर पर "जहर जहर को मारता है", "लोहा को लोहा काटता है" वाला नियम या "विष ही विष की औषधि" है. **मतलब होमियोपैथी में दी जानेवाली दवाये उन रोगों के समान होती है जो उन बिमारियों को दूर करती है, जिन्हें वे पैदा कर सकती है.** होमियोपैथी दवा के लिए पौधे और खनिजों जैसे प्राकृतिक पदार्थों का इस्तेमाल किया जाता है जो एक तरह से प्राकृतिक तत्वों द्वारा की जानेवाली नैसर्गिक चिकित्सा कही जा सकती है. इसमें मूल उपचार फूलों-पौधों या औषधीयो के स्रोतों द्वारा लिए गए अर्क से किया जाता है जो आल्कोहोल में घुले होते हैं.

होमियोपैथी का मानना है कि शरीर के अंदर एक महत्वपूर्ण शक्ति है जो कई बाहरी और आंतरिक कारकों से प्रभावित होती है. समान और कमजोर पड़ने के जुड़ने के सिद्धांतों में होम्योपैथी में दवाओं का आधार होता है और चिकित्सक रोगी के लक्षणों के आधार पर दवाइयाँ निर्धारित करता है. होमियोपैथी चिकित्सा का सूक्ष्म ध्येय यह है कि अधिक मात्रा में शरीर में जाने पर स्वस्थ व्यक्ति में हानिकारक लक्षण उत्पन्न करने वाले पदार्थ यदि बीमार व्यक्तियों को कम खुराक में दिए जाए तो समान हानिकारक लक्षणों को ठीक कर सकते हैं.

आयुर्वेद (Ayurved) मूल संस्कृत भाषा का शब्द है जो दो शब्दों के संयोग से बना है– आयुः + वेद. "आयु" अर्थात **लम्बी उम्र (जीवन)** और शाब्दिक भाषा में "वेद" अर्थात **विज्ञान**. अतः आयुर्वेद का शाब्दिक अर्थ जीवन का विज्ञान है जिसे अंग्रेजी में सायन्स ऑफ़ लाइफ (Science of Life) कहा जाता है. प्राचीन आचार्यों की व्याख्या अनुसार **आयुर्वेद का अर्थ मात्र चिकित्सा ना होकर बहुत व्यापक है जिसमे "शरीर, इंद्रिय, मन तथा आत्मा के संयोग" को आयु कहा है.** मात्र

चिकित्सापद्धति के अनुसार इसे आयुर्विज्ञान का नाम दिया जाता है. विज्ञान के रूप में आयुर्वेद ना केवल भारत, बल्की पुरे विश्व की सबसे प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति है. आयुर्वेद के पूर्ण ग्रंथ "चरकसंहिता" की रचनाकाल के समय अनुसार आयुर्वेद का लिखित इतिहास 3000 साल पुराना है, लेकिन ये ज्ञान सदियों से गुरु-शिष्य परंपरा अनुसार मौखिक रूप में अस्तित्व में रहा है, जो ऊपर के लेख में विस्तार से बताया गया है. **ऋग्वेद को सिर्फ भारत की नहीं, बल्की दुनिया की सबसे प्राचीन धार्मिक पुस्तक होने का गौरव प्राप्त है.**

अथर्ववेद में **114** श्लोक ऐसे हैं, जो आयुर्वेदिक पद्धति से इलाज का जिक्र करते हैं. अथर्ववेद में कई प्रमुख बीमारियों के बारे में बताया गया है जैसे बुखार, खांसी, पेट दर्द और स्कीन की बीमारियां. इन बीमारियों का इलाज कैसे करना है, इसके बारे में अथर्ववेद में उल्लेख मिलता है. इसके अलावा ऋग्वेद में भी **67** औषधियों का उल्लेख मिलता हैं. यजुर्वेद में **82** औषधियों का उल्लेख दिया गया है और सामवेद में आयुर्वेद से सम्बन्धित कुछ मंत्रों का वर्णन प्राप्त होता है.

वेद मानव सभ्यता के लगभग सबसे पुराने लिखित दस्तावेज हैं. वेदों की 28,000 पांडुलिपियां भारत में पुणे के "भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट" में रखी हुई हैं. इनमें से ऋग्वेद की 30 पांडुलिपियां बहुत ही महत्वपूर्ण हैं जिन्हें यूनेस्को ने विरासत सूची में शामिल किया है. यूनेस्को ने ऋग्वेद की 1800 से 1500 ई.पू की 30 पांडुलिपियों को सांस्कृतिक धरोहरों की सूची में शामिल किया है.

उल्लेखनीय है कि यूनेस्को की 158 सूची में भारत की महत्वपूर्ण पांडुलिपियों की सूची 38 है. ऋग्वेद के बाद यजु, फिर साम और बाद में अथर्व लिखा गया ऐसा इतिहास की खोज में सामने आया है.

तो अगर वेदो में आयुर्वेद के वर्णन अनुसार समयकाल की गिनती करे तो आयुर्वेद का लिखित इतिहास 3500-3800 वर्ष पुराना मान सकते है, पर अगर वेद और आयुर्वेद के मौखिक इतिहास की बात करे तो यह पृथ्वी की उत्पति के बाद मानवजाती के साथ ही विकसित हुआ माना जा सकता है जिसमे मर्म चिकित्सा भी शामिल है. मर्म शास्त्र और मर्म चिकित्सा का वर्णन आगे लेख में विस्तार से दिया गया है.

आयुर्वेद चिकित्सा पद्दति के सिद्धांत की बात की जाए तो यह "यथा पिण्डे तथा ब्रह्मांडे" अर्थात जो पिंड (शरीर) में है वही ब्रह्मांड में है इस नियम पर आधारित है. जिन पांच तत्वों (जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश) से यह ब्रह्मांड निर्मित है, उन्ही पांच तत्वों से यह पिंड (शरीर) भी बना है. इस प्रकार जो कुछ ब्रह्मांड में है, वही सब शरीर में भी अवस्थित होता है - ''यत् पिण्डे तद् ब्रह्मांडे''. इसलिए इस पिण्ड को ब्रह्मांड का लघु रूप भी कहा जाता है. इसी सत्यता के आधार पर आयुर्वेद में त्रिदोष सिद्धांत काम करता है. उदाहरण के तौर पर अगर ब्रह्मांड में वायु यानी पवन तेजी से चलने लगे तो चक्रवात की स्तिथि पैदा होगी, अगर सूर्य अधिक गर्मी छोड़ने लगे तो पृथ्वी गर्म होकर सब जलाने लगेगी या चन्द्र सूर्य से अधिक ठंडा हो तो पृथ्वी बर्फ से ढक जायेगी. ठीक इसी प्रकार जो ब्रह्मांड के तत्व शरीर में स्थित है उनके बिच जब असंतुलन पैदा होता है तब बीमारी जन्म लेती है. **शरीर में वायु का मतलब "गति" है. पित्त का मतलब "गर्मी" है और कफ का मतलब "शीतलता" है**. इसलिए निरोगी रेहनेके लिए शरीर में वात, पित्त और कफ (त्रिदोष) का संतुलन आवश्यक है.

वात, पित्त और कफ के त्रिदोष सिद्धांत अनुसार आयुर्वेद बीमारी का जड़ से इलाज करता है जहाँ से रोग उत्पन्न होता है. आयुर्वेद पूर्ण रूपसे नैसर्गिक चिकित्सा है, जिसमे इलाज के लिए औषधो को चूर्ण, प्रवाही या अन्य स्वरूपो से रोगी को दिया

जाता है. **तो अगर कोई चिकित्सा पद्धति पुरे विश्व में है जो सम्पूर्ण रूपसे प्राकृतिक और जड़मूल से साध्य बीमारी का इलाज कर सकती है तो वह केवल आयुर्वेद ही है.** मतलब, आयुर्वेद पद्धति ना केवल बीमारी के लक्षणों को ठीक करती है पर जो कारण उसके जन्म का मूल है उसे ठीक करती है. दूसरी इसकी खूबी यह है की बीमारिया शरीर में आने से पहले ही प्राकृतिक रूपसे अपनी रोगप्रतिकारक क्षमता को बढाकर और बिना शरीर को कोई हानी पहुंचाए स्वस्थ रखने के लिए आयुर्वेद चिकित्सा उपयोग में ली जा सकती है.

आयुर्वेद, होमियोपैथी, एलॉपथी के साथ अन्य चिकित्सा पद्धतियों का संक्षिप्त में इतिहास आपको यह तथ्य आसानी से समझने में मदद करेंगे.

प्राचीन भारत में आमतौर पर गंभीर अपराधों में सजा के तौर पर अपराधी के नाक-कान काट दिए जाते थे. इसके बाद सजा पानेवाला अपराधी चिकित्सा विज्ञान की मदद से नाक वापस पाने की कोशिश करता था. उस समय **सर्जरी के जनक माने जाने वाले सुश्रुत ऋषि नाक वापिस जोड़ने की सर्जरी सफलतापूर्वक किया करते थे.** उन्होंने ग्रंथ मे लिखा है कि नाक की सर्जरी कैसे हो और किस तरह से स्किन ग्राफ्टिंग की जा सकती है. संहिता में लगभग 300 तरह की सर्जिकल प्रक्रियाओं का उल्लेख प्राप्त होता है. इसमें कैटरेक्ट, ब्लैडर स्टोन निकालना, हर्निया और यहां तक कि सर्जरी के जरिए प्रसव करवाए जाने का भी जिक्र मिलता है.

आज जिस एलॉपथी को हम आधुनिक चिकित्सा कहते है और सर्जरी के लिए अत्यंत उपयोगी विज्ञान मानते है उसके जनक महान सुश्रुत ऋषि ही थे. आज उनके ज्ञानसे ही पूरी दुनिया लाभान्वित हुयी है और उनके ही सर्जरी के ज्ञान को तकनिकी मदद से आधुनिक विज्ञान के नाम से आज विकसित किया गया है.

सुश्रुत संहिता में जिक्र है कि गालों या माथे से नाक के बराबर की चमड़ी काट कर कैसे उसका सर्जरी के दौरान इस्तेमाल किया जाता था. सर्जरी के बाद किसी तरह का संक्रमण रोकने के लिए औषधियों के इस्तेमाल की सलाह दी जाती थी. इसके तहत नाक में औषधियां भरकर उसे रूई से ढंक दिया जाता था.

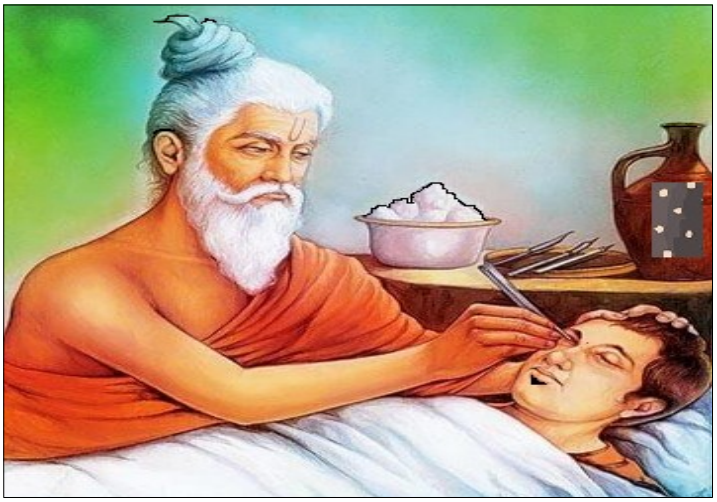

सुश्रुत संहिता का 8 वीं सदी में अरबी भाषा में अनुवाद हुआ, जिसके बाद ये पश्चिमी देशों तक पहुंचा. 14 वीं और 15 वीं सदी में इटलीवालों को इसकी जानकारी हुई. भारत में आधुनिक चिकित्सा पद्धति यानी ऐलोपैथी का इस्तेमाल 16 वीं सदी से शुरू हुआ था. तब पश्चिमी भारत के तटीय इलाकों पर पुर्तगाल का कब्जा था और पुर्तगाल से भारत आने वाले जहाजों में व्यापारियों के साथ डॉक्टर भी हुआ करते थे. पुतर्गाल से आए इन डॉक्टरों के माध्यम से ही भारत में ऐलोपैथी पद्धति का इस्तेमाल शुरू हुआ. 16 वीं सदी तक भारत में इलाज की पश्चिमी पद्धतियां इस्तेमाल नहीं होती थी. उस समय आचार्य, वैद्य, ऋषि और हकीम लोगों का इलाज करते थे और उन्हें भगवान तुल्य माना जाता था.

एलोपैथिक तरीके से इलाज कराने के लिए अंग्रेजों ने भारत में बड़े स्तर पर अभियान चलाया. कहा जाता है कि तब आचार्य और वैद्यों ने इसका विरोध भी किया, लेकिन अंग्रेजों ने इस विरोध को डर दिखाकर दबा दिया. वर्ष 1785 में ईस्ट इंडिया कम्पनी ने बंगाल, मद्रास और बॉम्बे प्रेजिडेंसी में मेडिकल विभाग का गठन किया. फिर वर्ष 1869 में इन तीनों मेडिकल विभागों को मिला कर इंडियन मेडिकल सर्विस की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य था इलाज के पश्चिमी तौर तरीकों को भारत में प्रोत्साहित करना और लोगों में इसके प्रति जागरुकता बढ़ाना. पश्चिमी भारत के तटीय इलाकों में पुर्तगालियों का लम्बे समय तक शासन रहा.

वर्ष 1860 तक गोवा पुर्तगाल के ही अधीन था. उस दौरान वर्ष 1840 में पुतर्गालियों ने गोवा मेडिकल कॉलेज की स्थापना की थी. अंग्रेजों ने भी ऐसा ही एक मेडिकल कॉलेज मद्रास में 1835 में बनाया था. इन संस्थानों में लोगों को मॉडर्न मेडिकल साइंस के बारे में पढ़ाया जाता था. ये उस दौर की बात है, जब भारत में बड़े अस्पताल नहीं होते थे और देश की अधिकतर आबादी अनपढ़ और गांवों में रहने वाली थी. तब लोग बाहर से पढ़ कर आए विदेशी डॉक्टरों से ज्यादा अपने वैद्य या हकीम पर ही भरोसा करते थे. लेकिन अंग्रेजों ने भारत में ऐलोपैथी का हेल्थ इन्फ्रास्ट्रक्चर **(Health Infrastructure)** खड़ा किया और लोग डॉक्टरों के पास इलाज के लिए जाने लगे.

आयुर्वेद, योग, सिद्ध चिकित्सा पद्धति, यूनानी पद्धति, होमियोपैथी, नेचरोपैथी को इस्टर्न मेडिसिन्स (Eastern Medicines) यानी पूर्वीय देशों से आई इलाज की पद्धति या वैकल्पिक दवाएं (Alternate Medicines) कहा जाता है.

एलोपैथी को भले ही आज के समय में कंप्यूटर और इंजीनियरिंग के समन्वय से आधुनिक चिकित्सा की उपाधि मिली हो और सर्जरी की विशेषता से उसका प्रचार बढ़ा हो, **लेकिन अगर चिकित्सा पद्धति के सिद्धांतो का मूल्यांकन करे जो रोगो को जड़ से मिटा सकती है तो वह केवल आयुर्वेद ही है**. भले ही आज आयुर्वेद वैकल्पिक चिकित्सा के नाम से जाना जाता हो पर आरोग्य और उपयोगिता की दृष्टि से देखे तो आयुर्वेद ही पूर्ण प्राकृतिक और मुख्य चिकित्सा कही जा सकती है. **होमियोपॅथी भी नैसर्गिक होने के कारण आयुर्वेद के बाद दूसरी श्रेष्ठ पद्धति गिनी जा सकती है, क्योकी होमियोपैथी भी आयुर्वेद की तरह प्राकृतिक पद्धति है जो नैसर्गिक औषधो का उपयोग करती है.** नैसर्गिक होने के बावजूद होमियोपैथी में मात्र एक त्रुटि गिनी जा सकती है की उसमे वात, पित्त, कफ जैसी प्रकृतियो का गहरा सिद्धांत नहीं है, परंतु

अपनी प्रकृति के अनुसार यह असर करनेवाली हो तो रोग पर खुद के अनुभव से परखी जा सकती है. नैसर्गिक होने के साथ डॉक्टर के परामर्श से निर्धारित मात्रा ली जाए तो यह साइड इफ़ेक्ट से मुक्त इलाज दे सकती है और रोगी के लिए प्रभावी सिद्ध हो सकती है.

मेरी दृष्टि से एलोपैथी का उपयोग मात्र सर्जरी और आपत्तिकाल में करना श्रेष्ठ है. शरीर के रक्त या अंगो की फोटग्राफी द्वारा जांच कराने, सर्जरी या अपवादित रूप में असाध्य रोग में असह्य पीड़ा से ग्रसित व्यक्ति के लिए भी यह उपयोगी सिद्ध हो सकती है. लेकिन दैनिक जीवन में प्रथम आयुर्वेद और द्वितीय क्रम में होमियोपैथी का उपयोग भी व्यक्ति की प्रकृति अनुसार चिकित्सापद्धति के गुणों की दृष्टि से श्रेष्ठ है.

योग-प्राणायाम, नेचरोपैथी मे भी प्राकृतिक तरीके से इलाज होता है जिसका कुछ हिस्सा आयुर्वेद की ऋतुचर्या से मिलता है वह भी आरोग्य के लिए हितकारी है. सिद्ध चिकित्सा भारत के तमिलनाडु राज्य की की एक पारम्परिक चिकित्सा पद्धति है. सिद्ध चिकित्सा के मूल सिद्धांत अन्य भारतीय स्वास्थ्य विज्ञान- आयुर्वेद जैसे हैं. परंतु इसमें बाल, प्रौढ़ और वृद्ध अवस्था में वात, पित्त और कफ की प्रमुखता को लेकर थोड़ी मान्यताएं भिन्न है. यूनानी चिकित्सा ग्रीक में उत्पन्न हुयी चिकित्सा पद्धति मानी जाती है. यूनानी चिकित्सा पद्धति प्राकृतिक रूप से उत्पन्न मुख्यतः वनौषधियों के प्रयोग पर जोर देती है, हालांकि पशु, समुद्रीय, खनिज मूल के संघटकों का उपयोग भी इसमें किया जाता है. इसकी उत्पत्ति का मूल इतिहास कुछ विवादास्पद माना जाता है और यह भी मूल भारत की आयुर्वेद की प्रेरणा के साथ मिस्र, अरब, ईरान, चीन, सीरिया की प्राचीन सांस्कृतिक परंपराओं और इन राष्ट्रों के युक्तियुक्त विचारों एवं अनुभवों के विलय से विकसित हुई मानी जाती है.

दुनियाभर में इलाज के लिए अलग-अलग पद्धतिया अपनायी जाती हैं जिसमे से भारत में आयुर्वेद, होमियोपैथी और एलोपैथी इलाज के लिए ज्यादा प्रचलित है. लेकिन आपकी जानकारी अनुसार शिक्षण और इलाज ये दोनों जो सदियों से सेवा के संस्थान हुआ करते थे जो आज अधिकतर व्यापार में परिवर्तित हो चुके है. अगर आप सुचमुच पढ़े लिखे है या साक्षर ना होकर भी व्यापार के गणित को समझते है तो आपको हर एक पैथी के लिए उपयोग में लिए जानेवाले शब्दों के मायाजाल को ठीक से समझना पड़ेगा. चाहे आयुर्वेद या होमियोपैथी की दवाई-औषध हो या फिर एलोपैथी दवाई के सॉल्ट या केमिकल्स, हर एक पैथी के अपने दुष्प्रभाव का मूल्यांकन दो प्रकार से किया जा सकता है.

1) चिकित्सा पद्धति में उपयोग में लिए जानेवाले “घटको" के दुष्प्रभाव
2) चिकित्सा पद्धति में उपयोग में लिए जानेवाले “घटको की मात्रा” के दुष्प्रभाव

“घटको के दुष्प्रभाव” की बात करे तो एलॉपथी में उपयोग में लिए जानेवाली दवाइयां सॉल्ट और मोलिक्यूल्स से बनती है. यह एक फॉर्मूला होता है, जिसमें अलग अलग कैमिकल मिलाकर दवाई बनाई जाती है. जैसे किसी दर्द को ठीक करने के लिए जिस पदार्थ का इस्तेमाल होता है, उस पदार्थ से दवाई बना ली जाती है. जब ये दवाई किसी बड़ी ड्रग कंपनी की ओर से बनाई जाती है तो यह ब्रांडेड दवाई बन जाती है. दवाइयों के ब्रांडेड कंपनियों द्वारा पेटेन्ट भी लिए जाते है जिसमे पैसा कमाने का व्यपारी उदेश मुख्य है. एलोपैथी से लाभ तो जो हैं, वे प्रत्यक्ष ही हैं, पर इस पद्धति में जो सबसे बड़ा दोष है, वह है दवाइयों का प्रतिकूल प्रभाव (साइड इफेक्ट).

एलोपैथी दवाइयों को बनाने में उपयोग में आनेवाली वनस्पति और प्राणी के शरीर के तत्व और साथ में कृत्रिम केमिकल्स शरीर की बीमारी में आराम पहुंचाने के साथ शरीर पर अपना दुष्प्रभाव भी छोड़ते है. एक तो दवाइयां रोग को दबा देती हैं, इससे रोग निर्मूल नहीं हो पाता, साथ ही वह किसी अन्य रोग को जन्म भी दे देता है. यह इस एलोपैथी के मौलिक सिद्धांत की न्यूनता कही जा सकती है.

होमियोपैथी और आयुर्वेद दोनों चिकित्सा पद्धतियो में वनस्पति, फल, फूल के चूर्ण, अर्क या खनिज उपयोग में लिए जाते है जो पूर्णतः नैसर्गिक होते है. एलोपैथी के साथ मूल्यांकन किया जाए तो आयुर्वेद और होमियोपैथी दोनो ही निर्दोष है, क्योकि प्राकृतिक तत्वों से बनी औषध या दवाई कृत्रिम तरीके से बनाई गयी दवाई के मुकाबले प्रतिकूल प्रभाव कम करती है. **परंतु आयुर्वेद और होमियोपैथी पूर्णतः प्रतिकूल प्रभाव या साइड इफ़ेक्ट से मुक्त है यह कहना भी गलत होगा, क्योकि यह औषध या दवाई की मात्रा से भी जुड़ा विषय है.**

दवाई या औषध की मात्रा की बात की जाए तो कोई भी चिकित्सा पद्धति प्रतिकूल प्रभाव या साइड इफ़ेक्ट से मुक्त नहीं मानी जा सकती. एलोपैथी की बात की जाए तो उसकी दवाई बनाने में कृत्रिम केमिकल्स का भी पयोग होने से वह निश्चित रूपसे प्रतिकूल प्रभाव देती है. दूसरी तरफ आयुर्वेद और होमियोपैथी की औषध या दवाई में नैसर्गिक केमिकल्स भले ही मौजूद हो, परंतु उसकी अधिक मात्रा भी शरीर के लिए अवश्य नुक्सानदेहि है. जब भी **"मात्रा की अधिकता"** के बारे में बात की जाए तो यह सामान्य ज्ञान है की वह शरीर को निश्चित रूपसे हानि पहोंचा सकता है. इतना फर्क जरूर स्वीकार किया जा सकता है की नैसर्गिक केमिकल्स थोड़ी कम हानि पहुंचाता है, वहीँ कृत्रिम केमिकल्स अधिक हानि पहोचा सकते है.

उदाहरण रूप आप चिकित्सा पद्धति को छोड़कर लड्डू ही ले लीजिये. अगर आपकी मर्यादा 2 लड्डू एकसाथ खाने की है और आप 3 या 4 लड्डू एक साथ खा लेते है तो भले ही लड्डू कोई नुक्सान देनेवाली वस्तु ना होने के बावजूद अधिक मात्रा में उसका सेवन आपका हाजमा बिगाड़ सकता है.

चिकित्सा पद्धति के दुष्प्रभाव और दवाई की मात्रा के अलावा हर एक पैथी को व्यापार की दृष्टि से बदनाम करने और ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए लोगो को तरह भ्रामक प्रचार द्वारा आकर्षित भी किया जाता है. जैसे आयुर्वेदिक तैयारियों में सीसा, पारा और आर्सेनिक पाने की बात कही जाती है जो पदार्थ मनुष्यों के लिए हानिकारक माने जाते हैं. लेकिन हमारे आसपास ऐसी कई औषधिया है जो जहरीली है पर सदियों से इंसान उसका उपयोग नहीं करता है. तो प्राकृतिक चीजवस्तुओ के उपयोग के कुछ दोष अवश्य है, जिसमे केवल उसके दोष के बारे में बात करना और गुणों के बारे में नहीं करना वह दुष्प्रचार का एक जरिया मात्र है.

भस्मों तथा धातुओं को लेकर लोगों में बहुत शोर है कि आयुर्वेद की औषधियां भस्मों से युक्त होती हैं तथा ये शरीर में जाकर किडनियों (वृक्कों) की कार्यशक्ति को समाप्त कर देती हैं. आयुर्वेद की औषधियों में आवश्यक भस्मों का इसलिए उपयोग किया जाता है कि यदि जड़ी-बूटियों के साथ भस्मों को मिलाकर किसी जीर्ण रोग में दिया जाता है तो वह शरीर में जाकर रोग का निवारण शीघ्र करती है. इसमें वैद्य की मुख्य जिम्मेदारी है कि वह ठीक तरह से जांच-परख कर रसौषधि (भस्मों से युक्त औषधि) का प्रयोग करे जो किसी रूपसे दूषित ना हो.

आयुर्वेद दवाओं में स्टिरॉयड्स मिलाने की बात भी होती है तो यह समज लेना आवश्यक है की स्टिरॉयड्स तो हमारा शरीर भी बनाता है. परंतु मूल आयुर्वेद दवाओं में कोई केमिकल स्टिरॉयड्स नहीं मिलाए जाते, बल्कि कुछ औषधीय पौधों में

स्वजनित फाइटोस्टिरॉयड्स होते हैं जो कि अत्यंत अल्प मात्रा में तथा शरीर को स्वस्थ बनाने में लाभप्रद होते हैं.

ऐसे आयुर्वेद के बारे में तरह तरह के दुष्प्रचार लोगो को नैसर्गिक चिकित्सा पद्धति से दूर करने के लिए षडयंत्रो के तहत किया जाता है. कुछ गिनीचुनी औषधो के कुछ दोष को इतना बड़ा शोर कर प्रचारित किया जाता है की लोग आयुर्वेद के प्रति भ्रमित होकर अन्य चिकित्सा पद्धतियो पर भरोसा करना शुरू करे. इन सबसे विपरीत अगर कोई आयुर्वेद का वैध या दवा बनानेवाली संस्थाए कभी कुछ औषध में मिलावट कर उसका उपयोग मुनाफे के चलते कर देते है, तो उसका दोष चिकित्सा पध्दति का ना गिनकर उस वैध या संस्था का समझना चाहिए.

होमियोपैथी जो की एक नैसर्गिक उपचार की पद्धति है जिसके ज्यादा प्रभावी ना होने के दावे पुरे विश्व में किये जाते रहे है. बड़े पैमाने पर किए गए अध्ययनों में होमियोपैथी को प्लेसीबो से अधिक प्रभावी नहीं पाया गया है, ऐसा रिसर्च करनेवाले वैज्ञानिको का दावा है. वहीँ कुछ वैज्ञानिक रिसर्च में उसे प्रभावी भी पाया गया है. प्लेसीबो ऐसी चिकित्सा को कहते हैं जिसका कोई वैज्ञानिक आधार न हो. ऐसी चिकित्सा पद्धति या तो प्रभावहीन होती है, या यदि कोई सुधार दिखता भी है तो उसका कारण मनोवैज्ञानिक या कोई अन्य चीज मानी जाती है. **परंतु सूक्ष्म स्तर पे होमियोपैथी का मूल्यांकन किया जाए तो ऐसा संभव नहीं दीखता की इतने सालो तक कोई चिकित्सा प्लेसीबो तरह की हो और लोगो द्वारा सालो से उसे उपयोग में भी लिया जाता हो.** वास्तव में होमियोपैथी शरीर के रोगो के लक्षणों के आधारित उपचार करनेवाली पद्धति अवश्य है, परंतु नैसर्गिक द्रव्यों के साथ किया गया उपचार कैसे प्रभावी सिद्ध हो सकता है उसका पूरा मुल्यांकन निचे विस्तार से दिया गया है.

होमियोपैथी चिकित्सको के अनुसार यह चिकित्सापद्धति आयुर्वेद की एक शाखा से मिलती है. **जहॉ आयुर्वेद में "समः यम समयति" का सिद्धान्त वर्णित है होमियोपैथी में यही "लॉ ऑफ सिमिलर्स" यानी समरूपता का सिद्धांत बना. इसतरह होमियोपैथी भी आयुर्वेद की तरह नैर्गिक चिकित्सा पद्धति ही है जिसमे फल, फूल और खनिज के अर्क को आल्कोहोल में सुरक्षित रखा जाता है.** इस पद्धति मे रोगी को दवाई देने से पहले उसकी शारीरिक एवं मानसिक स्थिति का इतिहास भी देखा जाता है. मेरे आंकलन अनुसार होमियोपैथी में बस गहरे में आयुर्वेद की तरह वात, पित्त और कफ (त्रिदोष) का मूल्यांकन नहीं है. इसीलिए यह संभव है की कुछ खास प्रकृति के लोगो को होमियोपैथी दवाइयाँ असरदार परिणाम दे सकती है और कुछ प्रकृति के लोगो को नहीं दे सकती. होमियोपैथी दवाईया अगर किसी रोगी की प्रकृति को अनुकूल है और उसकी निश्चित मात्रा अनुभवी चिकित्सक द्वारा निर्धारित की जाए तो यह रोगी के लिए अच्छे परिणाम ला सकती है.

ऐसा सोचना की केवल एलॉपैथी को ही आज के समय में धंधा बनाया गया है वह भी कथन पूर्णतः सत्य नहीं है. लोगो की चाहना आयुर्वेद और होमियोपैथी दोनों की तरफ बढ़ने से इनमे भी दवाईया और चिकित्सा में व्यापारीकरण बढ़ा है. परंतु अधिकतर एलॉपथी की दवाई का कारोबार करोडो से अरबो का है और उसे प्रचारित करने के माध्यम ज्यादा है जैसे इंटरनेट, टीवी, रेडियो और अखबार. एलॉपैथी दवाईयो में धन निवेश, प्रचार का खर्च और मुनाफा अधिक होने के कारण यह दवाए मॅहगी मिलती है और साथ एलॉपैथी चिकित्सक भी अच्छी कमाई करता है. हर एक पैथी का चिकित्सक अपने स्तर पर चिकित्सा पद्धति का प्रचार करता है और उसे ही श्रेष्ठ बताता है, इसीलिए एक पैथी के साथ दुरी पैथी की लड़ाई अनेको माध्यम से हमेशा चलती रहती है, क्योकि उसके पीछे उद्देश्य ज्यादा लोगो को आकर्षित कर अधिक मुनाफा कमाना ही प्रतीत होता है और बहुत ही कम चिकित्सक इससे अपवादरुप माने जाते है.

बेशक हर एक पैथी में ईमानदार चिकित्सक भी है जो अपनी पैथी के फायदे और मर्यादा दोनो जानते है और ईमानदारी से लोगो को सच बताते भी है, लेकिन इनकी संख्या समाज में बहुत ही कम है. किसी रोगी को दुष्प्रचारो से भ्रमित होने की आवश्यकता नहीं है, परंतु अपना रोग और उसके लिए सही चिकित्सा पद्धति का मूल्यांकन करना आवश्यक है ताकी अपने मूल्यवान शरीर की रक्षा हो सके.

एलोपैथी में आयुर्वेद और होमियोपैथी के मुकाबले वैश्विक स्तर पर व्यापार की दृष्टि से बड़ा निवेश हुआ है. एलोपैथी के विकास के लिए अद्यतन टेक्नोलॉजी, प्रचार के लिए माध्यम और मंच तीनो ही आयुर्वेद और होमियोपैथी के मुकाबले ज्यादा बड़े है. दूसरी तरफ जो मुनाफा एलॉपथी दवाइयों के माधयम से कमाया जा सकता है, वह आयुर्वेद और होमियोपैथी चिकित्सा द्वारा नहीं कमाया जा सकता, क्योकि एलोपैथी की दवाईया अन्य चिकित्सा पद्धति की दवाइयों से अनेको गुना महँगी है. **एलॉपैथी के इतने साइड इफेक्ट्स या प्रतिकूल घटनाएं अधिक होने के बावजूद उसपे पर्दा डालनेका और तोड़ मरोड़कर उसे श्रेष्ठ साबित करने का प्रयास अधिक होता है.**

उदाहरण के तौर पर त्रिफ़ला के संदर्भ मे लिवर के साथ ली जानेवाली एलॉपैथी दवाइयों के बारे में खबर को देखले तो **साइटोक्रोम (cytochrome P450)** से संबंधित अथवा डिप्रेशन की एलॉपथी दवाइयों के साथ त्रिफला को लेने से कुछ प्रतिकूल प्रभाव (साइड इफ़ेक्ट) आने का खतरा बताया जाता है. **तो कहने का मतलब यह है की वो लोग आपको यह जताना चाहते है की मुख्य रूपसे आप एलॉपैथी को प्राथमिक तौर की चिकित्सा के रूप में अपनाये और बाकी अन्य चिकित्सा पद्धतियों को वैकल्पिक तौर पर. लेकिन आपको ऐसा नहीं बताया जाएगा की लिवर या डिप्रेशन की एलॉपथी दवाई के कृत्रिम केमिकल्स त्रिफला के नैसर्गिक केमिकल्स के साथ मिलके अगर साइड इफ़ेक्ट दे रहे है, तो आप एलॉपैथी को छोड़ कर लिवर संबंधित बीमारियों या**

डिप्रेशन का इलाज केवल आयुर्वेद की त्रिफला या अन्य किसी नैसर्गिक चिकित्सा पद्धति की दवाइयों से करवाए.

कुछ एलॉपैथी दवाइयों के इलाज के साथ पाचनतंत्र, हार्ट, किडनी या अन्य शरीर के महत्वपूर्ण अंगो पर छोटे बड़े कई प्रकार के साइड इफेक्ट्स आते है यह प्रमाणित और लिखित मे होने के बावजूद जब उनका टीवी, अख़बार या इंटरनेट के माध्यम से प्रचार किया जाता है तब साइड इफ़ेक्ट की ज्यादातर कोई बात ना कर केवल उसके फायदे ही जनता के सामने प्रस्तुत किये जाते है. इसी कारण कुछ पढ़े लिखे लोग भी ज्यादा गहराई से अभ्यास ना कर एलॉपथी से इलाज करवाते है और जो अधिक पढ़ा लिखा नहीं है वह भी दवाईयो के साइड इफ़ेक्ट से अनजान होकर तत्काल आराम मिलता है इसीलिए एलॉपैथी को अपनाते जाता है.

पैथी के मूल सिद्धांत अनुसार एलॉपैथी में कुछ रोग ना मिटने का दावा प्रस्तुत कर उसको केवल नियंत्रण में रखने के लिए दवाईया बनायीं जाती है. **मतलब की जब आप रोगो से मुक्त नहीं होनेवाले और आपको उस बीमारी के लिए जीवनभर दवाई खानी है यह एलॉपथी चिकित्सक और दवाई बनानेवाली कंपनी दोनो के लिए जीवनभर का व्यापार बन सकता है.** क्योकि रोगी का रोग केवल नियंत्रण में रखना है तो उसे हर महीने किसी कंपनी से दवाई खरीदनी है और निदान करने के लिए डॉक्टर के पास भी जाते रहना है जिससे फीस द्वारा डॉक्टर की भी आय बढ़ती है. इस तरह व्यापार की दृष्टि से रोगी के कुछ रोग एलॉपैथी डॉक्टर और एलॉपैथी दवाई बनानेवाली कंपनियों के लिए पैसा कमाने का अवसर भी बन जाते है.

इसमें ध्यान देने की बात यह है की एलॉपथी का डॉक्टर पूर्णतः ईमानदार और निष्ठावान भी हो, लेकिन चिकित्सा पद्धति की मयार्दा के अनुसार आपकी कोई मदद

नहीं कर सकता और उसे भी वही नियम-कायदो के अनुसार बीमारी की दवाई देनी होती है जो दवाई बनानेवाली कंपनियों द्वारा बाजार में रखी जाती है. ये कहना भी गलत होगा की हर एलॉपैथी डॉक्टर केवल अधिक पैसा कमाने की मनशा से ही डॉक्टर बनता है, लेकिन यह उसकी पंसंदगी की पैथी भी हो सकती है और मूल सेवा भाव की दृष्टि से भी लोग इसमें जुड़ते है. कई एलॉपैथी डॉक्टर भी गरीबो का मुफ्त या न्यूनतम मूल्य में इलाज और दवाई दोनों ही समाज के लोगो को दे रहे है. पर जब रोग मूल पैथी में ठीक नहीं हो सकता और उसे नियंत्रण में रखने की बात है तो ईमानदार डॉक्टर उसमे चाहते हुए भी आपकी कोई मदद नहीं कर सकता.

ऐसे समय में रोगी को जागृत होकर अपने और अपने परिवार के लिए विविध चिकित्सा पद्धतियों को ठीक के समझकर ही उसे अपनाना चाहिए.

ये एकदम मिथ्य धारणा है की आयुर्वेद या होमियोपैथी में रोग ठीक होने में सालो लगते है या वह इतनी उपयोगी नहीं है. ये जरूर है की रोग को जड़मूल से मिटाने के लिए थोड़ा समय जरूर लग सकता है. और असाध्य रोगो को नियंत्रित करने में अन्य चिकित्सा पद्धतियो को छोड़कर आयुर्वेद में प्रवेश करते वक्त शुरुआत मे थोड़ी समस्या का सामना करना पड सकता है, परंतु रोगोको प्राकृतिक तरीके से नियंत्रित करने मे ही समझदारी है. उसमे भी त्रिफला जैसी दिव्य औषध जो त्रिदोष को संतुलित करनेवाली हो तो वह अधिक शीघ्रता से अपना प्रभाव दिखाती है.

अगर आयुर्वेद या होमियोपैथी चिकित्सा के किसी पेहलु को लेकर गुणों के बारे में अधिक जोर ना देकर केवल दोष को अधिक बढ़ा चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाए अथवा

किसी विज्ञान की रिसर्च का हवाला देकर प्रस्तुत किया जाये तो भी भिन्न चिकित्सा पद्धतियो के मूल सिद्धांत समज चुके व्यक्ति को संदर्भ पहचानकर उसका अर्थघटन करना चाहिए.

दूसरी यह भी समजनेवाली बात है की जितनी रिसर्च एलॉपैथी में की जाती है उसके सामने ना के बराबर आयुर्वेद और होमियोपैथी में की जाती है, क्योकि एलॉपथी में व्यापारीकरण अन्य चिकित्सा पद्धतियो से ज्यादा है और उनके पास प्रचार के माध्यम भी अधिक है. इन सबके बिच व्यक्ति को भ्रमणा और दुष्प्रचार से दूर रहकर समझदारी से अपना चिकित्सामार्ग चुनना चाहिए.

मर्म शास्त्र एवं मर्म चिकित्सा

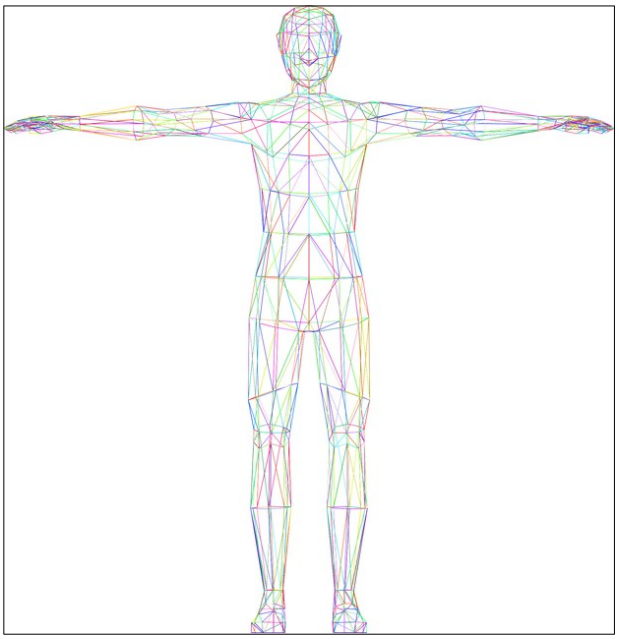

आयुर्वेद के ग्रंथो में मानवशरीर में कुल 107 मर्म स्थानों का विस्तृत वर्णन मिलता है जो हाथ-पैर, गले, पीठ तथा सीने में अदृश्य रूपसे स्थित है. मर्म स्थान शरीर में स्थित वह बिंदुस्थान होते है जिनके ऊपर आघात या प्रहार होने से व्यक्ति की मत्यु हो जाती है इसलिए ये जीव स्थान (Vital Parts) भी कहलाते है. मर्म चिकित्सा हजारों साल पुरानी वैदिक चिकित्सा पद्धति है जिसका विस्तृत वर्णन सुश्रुतसंहिता ग्रंथ में मिलता है. मर्म शब्द संस्कृत के “मृण” शब्द से निकला है जिसका अर्थ होता है “छिपा हुआ”. इन बिन्दुओ के दबाने मात्र से प्राणशक्ति का संचालन और बिना किसी औषध एवं शश्त्रक्रिया के रोगो का इलाज किया जा सकता है. मर्म चिकित्सा विश्व की सबसे सुलभ, सस्ती, सार्वभौमिक, स्वतंत्र और सद्यःफल देने वाली चिकित्सा पद्धति कही जा सकती है.

अत्यंत प्रभावशाली होने तथा अज्ञानतावश की गई मर्म चिकित्सा के घातक प्रभाव होने से इस पद्धति का स्थान आयुर्वेदीय औषधि चिकित्सा ने ले लिया था, यह पद्धति मर्मचिकित्साविदों द्वारा गुप्त विद्या के रूप में परम्परागत रूप से सिखाई जाने लगी. जहाँ मर्म विद्या के द्वारा लौकिक एवं परलौकिक सुखों की प्राप्ति संभव है, वहीँ इस विद्या के दुरूपयोग से यह घातक भी सिद्ध हो सकती थी. इसीलिए मर्म चिकित्साविद के अतिरिक्त यह विद्या राजाओं एवं योद्धाओं को ही सिखाई जाती थी. **आयुर्वेद की औषधो द्वारा भी मानसिक आघात या शारीरिक प्रहार से खंडित हुए मर्म को पुनः संचालित करके रोगो से मुक्ति पायी जा सकती है जिसकी जानकारी आयुर्वेद ग्रंथो में मौजूद है.**

मर्म चिकित्सा बिंदुओ के द्वारा त्वरित रोगो को ठीक करनेवाली यह विस्मयकारी चिकित्सा पद्धति बौद्ध काल में बुद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ दक्षिण-पूर्वी एशिया सहित सम्पूर्ण विश्व में मूल 107 बिन्दुओ से अलग क्रमशः हाथ-पैर के सूक्ष्म बिंदुओ के दबाव तथा सुई से उपचार की जानेवाली **एक्यूप्रेशर, एक्यूपंचर** आदि अनेक नयी विधाओं के रूप मे विकसित हुई मानी जाती है.

नाड़ी, योग- प्राणायाम, चक्र और कुंडलिनी

हठयोगीयो के कथन अनुसार मर्म स्थानों के अलावा हमारे शरीर में अदृश्य रूपसे 72,000 नाड़ियां विद्यमान मानी जाती है. जिस प्रकार प्रत्येक पदार्थ अणु और परमाणु से मिलकर बना हैं, परंतु उसके अस्तित्व को हम नहीं देख पाते उसी प्रकार

शरीर में विद्यमान नाड़ियों के अस्तित्व को स्थूल आखो से नहीं देखा जा सकता. यानी अगर आप शरीर को काट कर इन्हें देखने की कोशिश करें तो आप उन्हें नहीं खोज सकते. नाड़ी योग में 'नाड़ी' का मतलब शरीर की स्थूल धमनी या नस नहीं है. उपनिषद और योग शास्त्र के अनुसार 14 (चौदह) नाड़ियां मुख्य है जैसे इंगला, पिंगला, सुषुम्ना, गांधारी, हास्तजिह्वा, कुहू, सरस्वती, पूषा, शंखिनी, पयस्विनी, वारुणी अलम्बुषा, विश्वोदरी और यशस्विनी. यह नाड़ियां **14 भवनो (Dimensions)** को दर्शाती है जिसमें 7 (सात) लोक ऊपर के है जैसे- ॐ, भू ,भुव ,स्व ,मह, तप, सत्य लोक. अतल, वितल ,सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल जो निचे के 7 (सात) लोक बताये गए है. इन्हीं सब नाड़ियो से हमारे शरीर में नैसर्गिक ऊर्जा प्रवाहित होती है जिसके लिए इन्हे प्राणमयकोष भी कहा जाता है.

इंडा, पिंगला और सुषुम्ना ये 3 (तीन) नाडिया प्रमुख है जिनका प्रभाव हमारे व्यक्तित्व पर पड़ता हैं. इड़ा को चंद्र नाड़ी और पिंगला को सूर्यनाडी भी कहा जाता है. हवन और पूजा के समय में स्त्री को बाई और पुरुष को दाईं तरफ बिठाया जाता है. यह वैज्ञानिक तथ्य इंड़ा और पिंगला नाड़ी से ही जुड़ा हुआ हैं क्योकि स्त्री-पुरुष में दोनों नाड़ियो का स्थान विपरीत दिशा में होता है. इड़ा का संबंध भूतकाल से और पिंगला का संबंध भविष्यकाल से माना जाता है. अधिकतर लोग इड़ा और पिंगला में जीते और मरते हैं और सुषुम्ना नाड़ी निष्क्रिय बनी रहती है जो एक तरह की शून्यता या खाली स्थान है. सुषुम्ना में ऊर्जा का प्रवेश हो जाए, तो व्यक्ति एक नए किस्म का संतुलन पा कर बहिर्मुखी से अंतर्मुखी हो जाता है क्योकि सुषुम्ना का संबंध वर्तमान काल से है. **इंडा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ियो के साथ कुल 72000 नाड़ियो का गहरा संबंध शरीर के 7 (सात) चक्र और "कुंडलिनी शक्ति" जागरण की क्रिया से है जो परमात्मा की ऊर्जा से संबंध स्थापित करने के लिए तथा आत्मिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए द्वार माना गया है.**

चक्र या पहिया हमारे सूक्ष्म शरीर में प्राण (ऊर्जा) का एक बिंदु है जो हमारे शरीर के भौतिक समकक्षों जैसे शिराओं, धमनियों और तंत्रिकाओं में स्थित होता है. **हमारे शरीर में "कुंडलिनी" नामक शक्ति होती है जो मरे हुए सांप की तरह हर इंसान के शरीर में जन्म से ही मौजूद रहती है.** जब यह जागती है, तो इंसान की सांसारिक चेतना चली जाती है और जब यह सोती है, तो इंसान फिर संसार के प्रति चेतन हो जाता है. आत्मा और परमात्मा के मध्य विराम स्थलों को "**चक्र**" कहा गया है. कुंडलिनी योग के तहत कुंडलिनी शक्ति शरीर के 6 (छह) आध्यात्मिक ऊर्जा चक्रों को सक्रिय करते हुए सिर के शीर्ष पर मौजूद सहस्रार चक्र को जगाती है जिस स्थान से आत्मा के साथ परमात्मा के मिलन की यात्रा प्रारंभ होती है जो समाधी और मोक्ष तक लेकर जाती है.

कुंडलिनी योग क्रिया के सबसे ज़रूरी हिस्से हैं चक्र, नाड़ियां और प्राण (वायु).

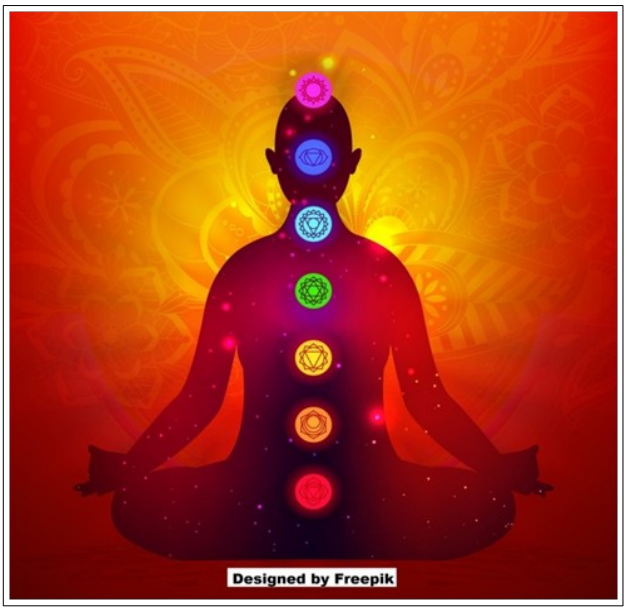

हमारे शरीर में मूल 7 (सात) चक्र हैं- मूलाधार चक्र, स्वाधिष्ठान चक्र, मणिपूर चक्र, अनाहत चक्र, विशुद्ध चक्र, आज्ञा चक्र, सहस्त्रार चक्र. हर एक चक्र का अपना बीज मंत्र है. ये प्राणशक्ति के मुलभुत केन्द्र है. सुषुम्ना वह नाड़ी है जो सहस्रार चक्र तक पहुंचती है. लेकिन अगर यह अशुद्ध हो तो प्राण वायु इसमें से नहीं गुज़र पाती. इसकी शुद्धि के लिए प्राणायाम और दूसरी योग क्रियाओं को जरूरी बताया गया है.

शिव क्षेत्र को "**सहस्त्रार**" कहते है और शक्ति क्षेत्र को "**मूलाधार**" कहते है और इन दोनों को परस्पर जोडनेवाली शक्ति का नाम "कुंडलिनी शक्ति" है. ॐ का उच्चारण

सुषुम्ना नाड़ी को क्रियाशील करने में मदद करता है. यह शून्यता, स्थिरता और वैराग्य को दर्शाती हैं.

भगवान शिव को अर्धनारीश्वर इसलिए कहा जाता है, क्योंकि उनकी इंडा और पिंगला दोनों नाड़ियां जागृत अवस्था में है. इसके साथ ही साथ वह एक योगी भी है अतः उनकी सुषुम्ना नाड़ी भी चेतन अवस्था में है. इसी कारण उन्हें "देवो के देव महादेव" कहा जाता है. कुंडलिनी जागृत होने के बाद व्यक्ति सामान्य ना होकर अलौकिक शक्तियों का स्वामी हो जाता है जो भूत और भविष्यकाल की यात्रा करने को सामर्थ्यवान बनता है

जो पिंड में है वही ब्रह्मांड में है. महर्षि पंतजलि ने आत्मा को परमात्मा से जोड़ने की क्रिया को आठ भागों में बांटा है जो अष्टांग योग के नाम से प्रसिद्ध है. आत्मा में बेहद बिखराव (विक्षेप) है जिसके कारण वह परमात्मा, जो आत्मा में भी व्याप्त है उसकी की अनुभूति नहीं ही पाती. अष्टांग योग अर्थात योग के आठ अंग. महर्षि पंतजलि ने योग की समस्त विद्याओं को आठ अंगों में श्रेणीबद्ध कर दिया है. यह आठ अंग हैं- (1) यम (2) नियम (3) आसन (4) प्राणायाम (5) प्रत्याहार (6) धारणा (7) ध्यान (8) समाधि. उक्त आठ अंगों के अपने-अपने उप अंग भी हैं.

कुंडलिनी जागरण मात्र ध्यान साधना से ही संभव माना जाता है. आज्ञा चक्र तक अकेले ध्यान साधना से पहुंचा जा सकता है, पर बिना जिवंत गुरु या सिद्धपुरष के सानिध्य उसे भेदके सहस्त्रार चक्र तक पहुंचना या उससे आगे की यात्रा करना असंभव माना जाता है. धर्मो के परे आज्ञा चक्र तक पहुंचने से साधक को प्रकाश दिखाना,

अपने इष्ट देव के दर्शन होना या व्यक्ति की जिस विशेष व्यक्ति, वस्तु पर श्रद्धा है वह दिख सकता है और उसी को वह ईश्वर की पूर्ण अनुभूति मानता है, परंतु जब तक कुछ भी दिखाई पड़ता है तब वह यात्रा की शुरुआत मानी जाती है. आज्ञा चक्र तथा सहस्त्रार के बाद ब्रह्मनाद की अनुभूति होती है जिसमे दिखना पूर्ण बंद हो जाता है और मात्र ब्रह्म का मधुर नाद सुनाइ देता है. पूर्वजन्म की साधना फल स्वरुप परमात्मा द्वारा किसी भी वस्तु या जिव के सानिध्य से **कुंडलिनी जागरण** होना एक दुर्लभ घटना है जो करोडो में से किसी एक के साथ घटती है.

एकाग्रता, मूर्तिपूजा, ध्यान, समाधी और मोक्ष

दार्शनिक शास्त्र अनुसार **"एकाग्रता"** मन के विचारो को नियंत्रित करने की क्रिया है. एकाग्रता (Concentration) का मतलब ध्यान (Meditation) नहीं है, पर ध्यान में जाने के लिए प्रथम द्वार है जहाँ से ध्यान में प्रवेश किया जाता है. परमशक्ति से संबंध स्थापित करने के लिए मन को एकाग्र करना पड़ता है. मन की एकाग्रता तभी संभव है जब मन नियंत्रित होता है. इसलिए मन को किसी विशेष वस्तु पर केन्द्रित कर उसे नियंत्रित करने की विधि को एकाग्रता कहते है. एकाग्रता के लिए वस्तु कोईभी हो सकती है. इसके लिए दीपक की ज्योत के सामने शांतचित होके देखते रहने को त्राटक विधि कहा जाता है जो एकाग्रता लाने की एक मात्र विधि है जिससे मन अनेक विषयो से दूर होकर केवल दीपक की ज्योत पर केन्द्रित होता है. त्राटक की विधि में अन्य विचार कम होते जाते है और अंत में केवल "दीपक की ज्योत" ही मन के विचार में बाकी रहती है. दीपक की ज्योत अग्नि का स्वरुप है और प्रकृति के पंच महाभूत नाशवान नहीं है. ऐसे ही श्वास या नाभि पर ध्यान केन्द्रित करना भी एकाग्रता लाने की अलग अलग विधिया है. एकाग्रता की कुछ विधि आँखों को खुली रखकर की जाती है तो कुछ आँख बंद करके की जाती है.

हिंदू धर्म मे मूर्ति पूजा का सिद्धांत समयांतर से साधु संतो द्वारा यही एकग्रता के आधार पर ही निर्मित हुआ है, जिसमे किसी भौतिक या नाशवान वस्तु पर ध्यान ना केन्द्रित कर ईश्वर की मूर्ति को स्थापित किया जाता है जिसे परमात्मा का रूप मानकर उसकी पूजा आराधना की जाती है. मन ईश्वर की आराधना करते समय अन्य किसी नाशवान वस्तु में ना भटककर मूर्ति के रूप में परमेश्वर का ध्यान हमेशा रहे और मनुष्य की आध्यात्मिक प्रगति हो इसी आधार पर मूर्ति पूजा का सिद्धांत हिंदू धर्म मे निर्मित और विकसित हुआ है. इसीलिए किसी भी स्थान पर मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा करनेवाला व्यक्ति जितना शुद्ध और पवित्र होता है उतना ही चैतन्य उस मूर्ति से प्रवाहित होता है और उसके दर्शन अथवा सानिध्य में आनेवाले लोगो को सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करती है. **एकाग्रता में देखनेवाला और दृश्य दोनो होते है, जबकी ध्यान में केवल देखनेवाला बचता है.** मतलब मन की निर्विचारता की स्थिति को ध्यान कहते है जब कोई विचार मन में शेष नहीं रह जाते.

धरती, गाय को माता कहने के पीछे और सूर्य को देव कहने के पीछे का उदेश्य परमात्मा द्वारा पंचतत्व और पंचमहाभूतो से जो भी हमें जीवन के लिए मिलता है उसके प्रति अपना अहोभाव प्रगट करना है जिससे सूक्ष्म में शरीर के सात चक्रो की शुद्धि होती है तथा मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति होती है. इसी कारण से हिंदू धर्म मे विधि के रूपमे इन क्रियाओ को स्थापित किया गया है.

आत्मा जब देह और माया के बंधनो में बंधी है तब उसे "जीवात्मा" कहते है और जीवात्मा जब इन बंधनो से बंधी होने का अहसास करती है तब वह "आत्मा" कहलाती है. आगे आत्मा अपना अस्तित्व और उदेश्य जानकार ध्यान साधना के द्वारा परमतत्व में लीन हो जाती है तब वह अवस्था "समाधी" कहलाती है और अंत में जब आत्मा परमात्मा से मिल जाती है तब वह परम अवस्था "मोक्ष" कहलाती है. मोक्ष मृत्यु के बाद नहीं, बल्कि जीते जी पायी जानेवाली अवस्था है. दूसरी भाषा में

मोक्ष ध्यान साधना के बाद पायी गयी परम अवस्था समाधी का शुद्ध फल है. मोक्ष को ही आध्यातिक भाषा में सर्व बंधनो से मुक्ति कहते है. मोक्ष प्राप्ति के साथ शरीर का अंत होने के बाद आत्मा कभी पुनः शरीर धारण नहीं करती अर्थात उसका पुनर्जन्म नहीं होता यही सनातन संस्कृति और हिंदू धर्म का सार है. इसीलिए मोक्ष को स्वयं यानी "मैं" (अहंकार) को पहचानना, "अहंकार की मृत्यु" या "आत्मसाक्षात्कार" भी कहा जाता है.

सनातन धर्म सहित कुछ अन्य धर्मो में भी पुनर्जन्म के सिद्धांत को वर्णित किया गया है. जीवन और मृत्यु के बारे में सबसे बड़ा ज्ञान गीता में मौजूद है, जिसे भगवान श्री कृष्ण की अमृत वाणी कहा जाता है. इसलिए हिंदू धर्म में जीवन, मृत्यु और पुनर्जन्म को एक चक्र माना जाता है. इसका कारण यह है कि भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन का मोह भंग करने के लिए गीता का उपदेश देते हुए कहा है कि **"हे अर्जुन ऐसा कोई काल नहीं है जिसमें तुम नहीं थे या मैं नहीं था और आगे भी ऐसा कोई समय नहीं होगा जब तुम और मैं नहीं रहेंगे. मेरे और तुम्हारे कई जन्म हो चुके हैं. मुझे अपने बीते हुए सभी जन्मों का ज्ञान है और तुम्हें नहीं क्योंकि तुम नर हो और मैं नारायण. इसलिए हे अर्जुन जीवन और मृत्यु के मोह में मत उलझो. जैसे मनुष्य वस्त्र बदलता है वैसे ही आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में प्रवेश कर जाती है यानी नया शरीर धारण कर लेती है"**

पुनर्जन्म और पूर्वजन्म के रहस्य से पर्दा उठाने के लिए वेदांत दर्शन में जीवन मृत्यु के बारे में काफी कुछ कहा गया है. वेदांत जीवन और मृत्यु के चक्र में पुनर्जन्म की गुत्थी गीता दर्शन की ओर ले जाती है और बताती है कि जीवन, मृत्यु और पुनर्जन्म यह सब जीव के कर्मों का परिणाम होता है. व्यक्ति का पुनर्जन्म उसके पूर्व जन्मों के संचित कर्म, ऋणानुबंध, इच्छा, भोग और वासना पर निर्भर करता है. जीव की जैसे

इच्छा, वासना और भोग की कामना रहती है उसी अनुसार उसे नया शरीर, परिवेश और बाकी सारी चीजें भी मिलती हैं. **पुनर्जन्म के विषय पर गायत्री देवी के उपासक श्री. पंडित रामशर्मा आचार्य जी पुस्तके पढ़ने लायक है जो विस्तृत रूपसे भौतिक, सूक्ष्म शरीर, आभामंडल, आत्मा और परमात्मा के स्वरुप का वर्णन भी करती है और मृत्यु के बाद नए जीवन की यात्रा की विस्तृत माहिती प्रदान करती है.** श्री. पंडित रामशर्मा आचार्य जी मोक्षप्राप्त महापुरुष माने जाते है, जिन्होंने आध्यात्म के अनेको विषयो पर विशेष ज्ञान समाजको दिया है.

शरीर और आत्मा के बीच मन सेतु का काम करता है. वह कर्मों के संस्कार रचता है. अगर वह बनाना छोड़ दे या पूर्व संस्कारों को मिटाने लगे तो जीव अपना अस्तित्व खो देता है. मृत्यु के बाद जीवन के अस्तिव पर हुई शोधों मे दो शोध (रिसर्च) महत्त्वपूर्ण मानी जाती है. उनमें एक अमेरिका की वर्जीनिया यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक डॉ. इयान स्टीवेन्सन के निर्देशन में हुई. 40 साल तक इस विषय पर शोध करने के बाद एक रिपोर्ट **"रिइंकार्नेशन एंड बायोलॉजी"** के नाम से तैयार हुई. दूसरी शोध बंगलुरू की नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरो साइंसेज में क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट के तौर पर काम करते हुए डॉ. सतवंत पसरिया के निर्देशन में हुई. पसरिया ने भी एक "क्लेम्स ऑफ रिइंकार्नेशनर एम्पिरिकल स्टी ऑफ केसेज इन इंडिया" शीर्षक ले लिखी. इसमें भारत में हुई 500 पुनर्जन्म की घटनाओ का उल्लेख है.

ऐसे अनेको जिवंत उदाहरण आज समाज में उब्लब्ध है जो पुनर्जन्म की जीवंत गवाही देते है. भले ही आधुनिक विज्ञान के पास आज पुनर्जन्म के बारे में कोई आधारभूत तर्क ना हो पर अखबार से लेके इंटरनेट पर इसके जिवंत उदाहरण मौजूद

है, जिसमें अनेको व्यक्तियों को उनका पुनर्जन्म याद है की पूर्वजन्म में उनकी मृत्यु कैसे हुयी थी. ऐसे ही आत्मा के अनुभव काफी लोगो ने बताये है जिसमे उनकी जान किसी दुर्घटना में या बीमारी ऑपरेशन के समय जाते जाते बची थी. उस समय उन्होंने जो शरीर में आत्मा का अनुभव किया था वह अखबार के आर्टिकल या इंटरनेट पे वीडियो के स्वरुप में कई जगह पर मौजूद है. विज्ञान के पास आज भी इन सब बातो का कोई जवाब नहीं है. इसीलिए दुनिया में हर चीज विज्ञान के परिपेक्ष्य से सिद्ध होकर आपको मिले यह जरूरी नहीं है, क्योकि विज्ञान के यंत्रो की भी अपनी एक सीमा है जो हमे खुली आँखों से दिखाई नहीं पड़ती.

सनातन संस्कृति एवं हिन्दू धर्म के अनुसार ईश्वर यानी परमात्मा निराकार हैं जो विश्व के कण कण में एक शक्ति के रूप में बिराजमान है, लेकिन वह साकार रूप भी धारण करते हैं. सनातन संस्कृति के वेद और पुराण इसके साक्षी है. मूल रूप से हम सभी में ईश्वर का ही अंश है जो आत्मा के स्वरुप में शरीर में बिराजमान है. सनातन धर्म में ईश्वर की साकार और निराकार दोनों रूपों में पूजा होती है. इतना ही नहीं अनेकों आध्यात्मिक व्यक्तियों ने ईश्वर का सगुण-निर्गुण दोनों रूपो में साक्षात्कार किया है. मीराबाई, वाल्मीकि जी, तुलसीदास, सूरदास, तुकाराम, रामकृष्ण परमहंस आदि अनेक भक्तों ने ईश्वर का साकार रूप में दर्शन किया है. जब जब पृथ्वी पर धर्म की ग्लानि होती है तब ईश्वर साकार रूप यानी शरीर धारण करके आते है जिसे अवतार कहा जाता है.

महाभारत युद्ध में जब अर्जुन ने अपने साथियों, गुरुजनों, संबंधियों को युद्ध के लिए तैयार देखा तो, उसने मोह और सांसारिक माया में आकर जब युद्ध लड़ने से

मना कर दिया. तब योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण ने आत्मा, परमात्मा एवं इस ब्रह्मांड को चलाने के लिए अत्यंत गोपनीय गीता का ज्ञान प्रदान किया. यह श्लोक गीता के अध्याय 4 का श्लोक 7 और 8 है. संस्कृत के इस श्लोक का मतलब है- **"जब-जब इस पृथ्वी पर धर्म की हानि होती है, विनाश का कार्य होता है और अधर्म आगे बढ़ता है, तब-तब मैं इस पृथ्वी पर आता हूँ और इस पृथ्वी पर अवतार लेता हूँ. सज्जनों और साधुओं की रक्षा करने लिए और पृथ्वी पर से पाप को नष्ट करने के लिए तथा दुर्जनों और पापियों के विनाश करने के लिए और धर्म की स्थापना के लिए मैं हर युग में बार-बार अवतार लेता हूँ और समस्त पृथ्वी वासियों का कल्याण करता हूँ".**

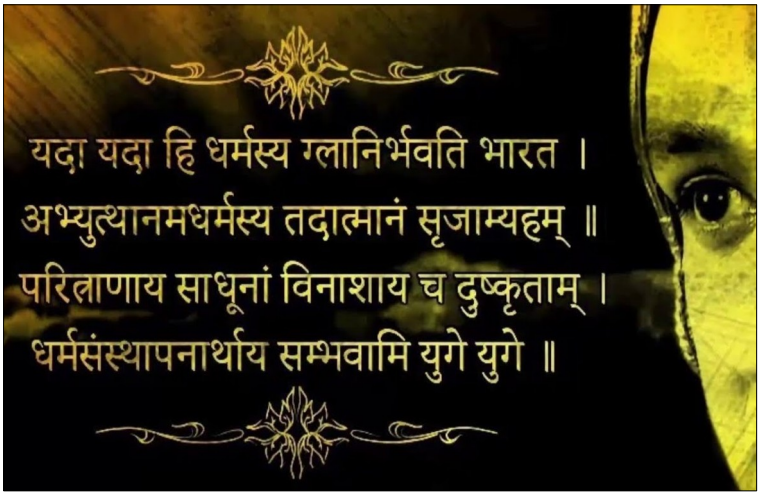

इसीलिए ईश्वरीय अवतरण के अलावा कोई भी मनुष्य शरीर परमात्मा नहीं हो सकता. ईश्वर भी प्रकृति के नियम का पालन करते हुए सृष्टि के कल्याण हेतु मनुष्य के रूप में अवतरित होकर आते है. लेकिन सगुण या निर्गुण के रूप में आत्मसाक्षात्कार यानी मोक्ष पा चुके जिवंत आध्यात्मिक मनुष्य परमात्मा का माध्यम बन जाते है और गुरु के रूप में लोगो की आध्यात्मिक प्रगति के लिए आगे मार्ग प्रतस्थ करते है. इसलिए गुरु को भी परमेश्वर तुल्य कहा गया है. विश्व के सभी धर्म ईश्वर या परमात्मा को लेकर भिन्न मान्यता रखते है, जिसमे कुछ ईश्वर को शक्ति ना मानकर केवल साकार स्वरुप में ही देखते है और अपने धर्म अनुसार उसे किसी अन्य नाम से पुकारते है. परंतु वास्तव में देखा जाए तो सभी धर्म केवल ईश्वर तक पहोंचने की सीडी मात्र है या कहे ईश्वर तक पहोचने के अलग अलग रास्ते है. विश्व के किसी भी व्यक्ति को धर्म चुनाव से नहीं मिलता, परंतु यह उसके पूर्वजन्म के संचित कर्म के आधार पर जन्म के साथ ही मिलता है. इसीलिए धर्म से ऊपर भी आध्यात्मिकता मानी जाती है जो सभी पंथो का आदर करनेवाले व्यक्ति को ईश्वर तक पहोचने में मदद करती है. जीवन में सत्य को स्वीकार कर आचरण में स्थित करनेवाला व्यक्ति ही आगे पवित्र होकर ईश्वरदर्शन के योग्य बन सकता है.

"इलुमिनाटी संगठन" और शैतान (लूसिफर) का गुप्त धर्म

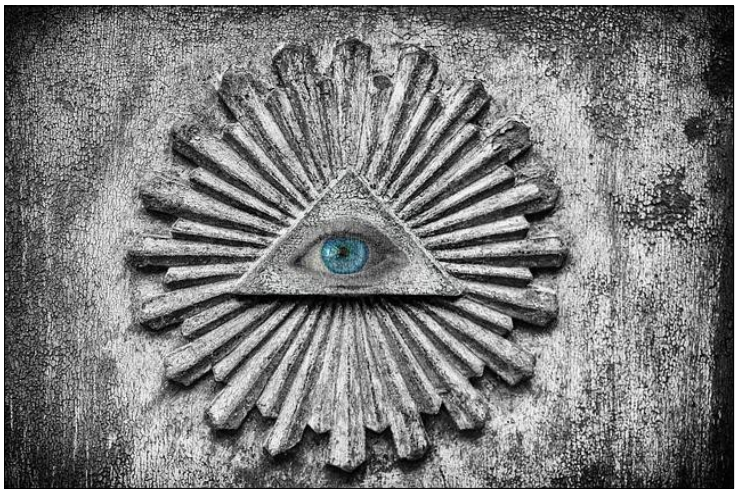

आपने शायद कभी अपने जीवन मे **"इलुमिनाटी"** या **"लूसिफर"** शब्द सुने होंगे. **इलुमिनाटी विश्व का गुप्त, रहस्यमयी और सबसे खतरनाक संगठन माना जाता है.** इलुमिनाटी शब्द का मतलब **"रोशनी या प्रकाश देनेवाला"** और लूसिफर शब्द का मतलब **"शैतान"** होता है. **लूसिफर और इलुमिनाटी संगठन विश्व के सभी धर्म, मनुष्यजाति और समग्र जीवसृष्टि के अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा खतरा माने जाते है, क्योकि इनका मूल मकसद विश्व में ईश्वर को माननेवाले सभी धर्मो के लोगो की जनसँख्या कम कर शैतानियत के धर्म को स्थापित करने का माना जाता है.** आम तौर पर "इलुमिनाटी और लूसिफर" के बारे चर्चाएं कुछ लोगो को मजाक, बच्चो को सुनाई जानेवाली कोई काल्पनिक वार्ता या केवल परीकथाएं लगती है, क्योकि इन दोनों शब्दो के बारे में इंटरनेट पर अध्यहन करने पर इसे मात्र कॉन्सपिरेसी थ्योरी **(Conspiracy Theory)** या **"षड़यंत्र का दावा"** कहा जाता है. कॉन्सपिरेसी थ्योरी शब्द भी इंटरनेट पर इलुमिनाटी संगठन के द्वारा ही प्रचारित किया हुआ माना जाता है, ताकी सत्य तक पहोच चुके लोग इसे कोई काल्पनिक वार्ता या केवल भ्रम मानकर विश्वास ना करे और गुप्त रूपसे वैश्विक षडयंत्रो का कार्य जारी रहे.

बुद्धिमान लोग जानते है की षडयंत्र कभी खुले में नहीं किये जाते और गुप्त रूप से प्रायोजित घटनाएं हो जाने के बाद उसके सबूत जुटाना या उसे साबित करना आसान नहीं होता, क्योकि यह सब योजनाबद्ध तरीके से किया जाता है जिसमे सबूतों को भी समय के साथ नष्ट कर दिया जाता है. कुछ सांयोगिक घटनाये और वर्तमान में विश्व की परिस्थति का निष्पक्ष मूल्यांकन करेंगे तो इसके सामने विश्व में किये गए दावे, गुप्त या अप्रत्यक्ष रूपसे मिले सबूत देखकर आप अपने विवेक से सच-झूठ का फैसला कर सकते है. **मेरा कार्य बिना किसी पूर्वग्रह केवल आपको संभवित**

तथ्य दिखाने का प्रयास है, जिसे भारत मे आजतक इतनी गहनता से ना तो एकसाथ प्रस्तुत किया गया है और ना ही अधिक लोग इसके बारे में जानते है.

विश्व के 13 मुख्य आर्थिक रूप से शक्तिशाली लोग अतः शैतान (लूसिफर) के पूजक इलुमिनाटी संगठन के संचालक माने जाते है. विश्व मे सबसे ज्यादा संपत्ति इन्ही लोगो के पास है, परंतु तरकीब से इन संपत्तियों को विविध हिस्सों में बांटकर यह लोग विश्वके सामने अधिक धनवान होने का दावा जान बुज़कर नहीं करते. विश्व की लगभग 90% संपत्ति के असली मालिक यही माने जाते है, जो उनके ही खानदान में विभाजित है. विश्व के सबसे अमीर व्यापारी होने का ख़िताब जिन्हे विश्व का मीडिया देता है, उनकी और पुरे विश्व की संपत्ति मिलकर केवल 10% से भी कम मानी जाती है. यह केवल धन के माध्यम से परदे के पीछे रहकर ही विश्व के गुप्त शाशक बने रहने की मनशा रखते है. **मूल रूपसे इन्ही 13 लोगो के साथ जुड़े 300 अन्य दूसरे नंबर के धनी व्यक्तियों के समूह को "इलुमिनाटी संगठन" के नाम से जाना जाता है.**

दावो के अनुसार, इलुमिनाटी संगठन ने **विश्व के सभी देशो की स्वायत्तता ख़तम कर पुरे विश्व में "एक वैश्विक सरकार" (One World Government) लाने के लिए "नया वैश्विक आदेश" (New World Order) तैयार किया है. विश्वके कई देशो के बड़े राजकीय नेताओ को चुनाव जितवाकर उनके द्वारा आंतराष्ट्रीय व्यापार, निजीकरण और जनसँख्या नियंत्रण की विदेशी नीतिया उनके देशो में लागू करवाकर शैतानियत के गुप्त धर्म को स्थापित करने की विधि में इलुमिनाटी संगठन सक्रीय रूपसे कार्यरत होने के दावे पुरे विश्व में किये गए है. पुरे विश्व का मूल ढांचा और देशो की आंतरिक व्यवस्था को परिवर्तित कर उसे एक नए रूपसे विकसित कर "एक**

विश्वीय सरकार" के अधीन लाने की प्रक्रिया को शैतान के पुजको की भाषामे "ध ग्रेट रिसेट" (THE GREAT RESET) या "महान परिवर्तन" के नाम से जाना जाता है.

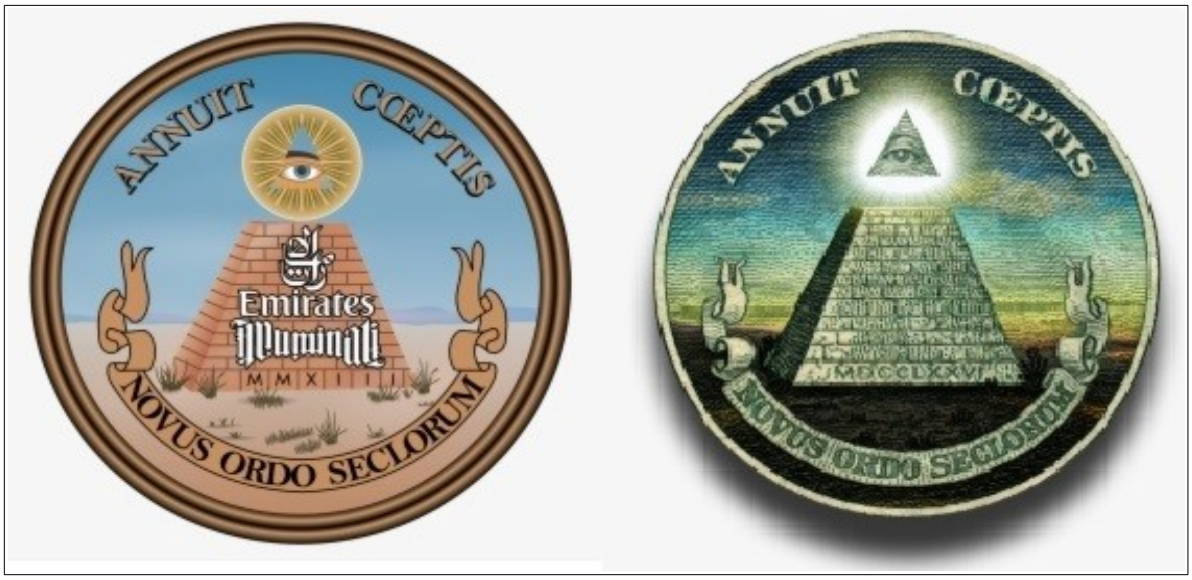

इलुमिनाटी की शुरुआत जर्मनी के बवेरिया शहर में हुई थी. 1776 में इंगोल्स्ताद यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर एडम वीशॉप्ट (Adam Weishaupt) ने इस संगठन का निर्माण किया था. शुरुआत में इलुमिनाटी का नाम **"ऑर्डर ऑफ इलुमिनाटी"** था. उस दौरान चर्च और क्रिश्चियन धर्म के कट्टरपंथ की जड़ें समाज में काफी गहरे तौर पर विद्यमान थीं. एडम को यकीन था कि चर्च और कैथोलिक विचारों के कारण सोसाइटी खुलकर नहीं जी पा रही है. यही देखते हुए उन्होंने एक ऐसी सोसाइटी तैयार करने की सोची, जो हर तरह की धार्मिक बंदिशों से मुक्त हो. इसी कट्टरपंथ से आजाद होने के लिए प्रोफेसर विशॉप्ट ने इस संगठन की शुरुआती की थी. इलुमिनाटी संगठन के जरिए उनका मकसद एक ऐसी दुनिया को बनाना था, जहां पर मात्र कट्टरपंथ और मजहब की दीवारें ना हों और विज्ञान को भी समान रूप से देखा जाए.

शुरुआत में जब सदस्यों की पहली मीटिंग हुई, जिसमें प्रोफेसर **एडम वीशॉप्ट** के नेतृत्व में यूनिवर्सिटी के 5 लोग थे. बाद में इस संगठन के साथ उनके कुछ छात्र जुड़े और साल 1784 में ग्रुप में लगभग 3000 सदस्य हो चुके थे. धीरे धीरे इलुमिनाटी का दायरा बढ़ने लगा और हजारों लोग इस संगठन में आने लगे. बाद में वीशॉप्ट कई खुफिया बैठकें आयोजित करवाते थे, जिनमें समाज और सरकार को लेकर कई बातें हुआ करती थीं. इलुमिनाती को पहले बिना किसी नुकसान का संगठन माना गया, लेकिन फिर इसकी अजीबोगरीब बातें निकलकर आने लगीं. **इस संगठन का यकीन था कि तकलीफ में खुदकुशी सही चुनाव है. साथ ही ये कि धर्म पर यकीन करने वाले मूर्ख हैं और उन्हें सजा मिलनी चाहिए.** ऐसी बातें सामने आने के साथ ही इस संगठन पर लगाम कसी जाने लगी. बाद में स्थानीय सरकार को इस खुफिया संगठन बारे में पता चल गया और और इलुमिनाटी के सदस्यों की पहचान कर धरपकड़ शुरू हुई. **धरपकड़ में सदस्यों के घरों से न दिखाने देने वाली इंक जब्त हुई, जिससे आपत्तिजनक बातें फैलाई जाती थीं.** खुदकुशी को प्रोत्साहन देने वाला साहित्य मिला. साथ ही कई अजीबोगरीब एजेंडा पर साहित्य का ढेर मिला. तब दुनिया के किसी भी देश में गर्भपात बैन था, लेकिन इस संगठन के पास गर्भपात को बढ़ावा देने वाले उपकरण भी मिले. **इस तरह संगठन के मूल विचारो मे ही ईश्वर मे माननेवाले धार्मिक लोगो की जनसँख्या कम करने का उदेश्य प्रमुख था.**

इसके बाद सरकार ने इलुमिनाटी संगठन की सदस्यता लेने पर मौत की सजा का फर्मान सुना दिया. इलुमिनाटी के ऊपर बैन लगा दिया वहीं प्रोफेसर वीशॉप्ट को यूनिवर्सिटी से निकालकर बाद में जेल भेजा गया. इस घटना के बाद अधिकतर यह संगठन टूट गया, पर इससे जुड़े कुछ लोगो ने दुनिया पर अपना अधिपत्य जमाने की मनशा से इस गुप्त संगठन का दुरूपयोग करने का विचार किया और सालो तक गोपनीयता रख इसमें सदस्यों को जोड़ने का कार्य चालू रखा. इलुमिनाटी के सदस्य गुप्त रूप से एक दूसरे के साथ संपर्क करने के लिए और संदेश भेजने के लिए कुछ खास संज्ञा और चिह्न इस्तेमाल करते थे, जिससे उन्हें आसानी से पकड़ा ना जा सके.

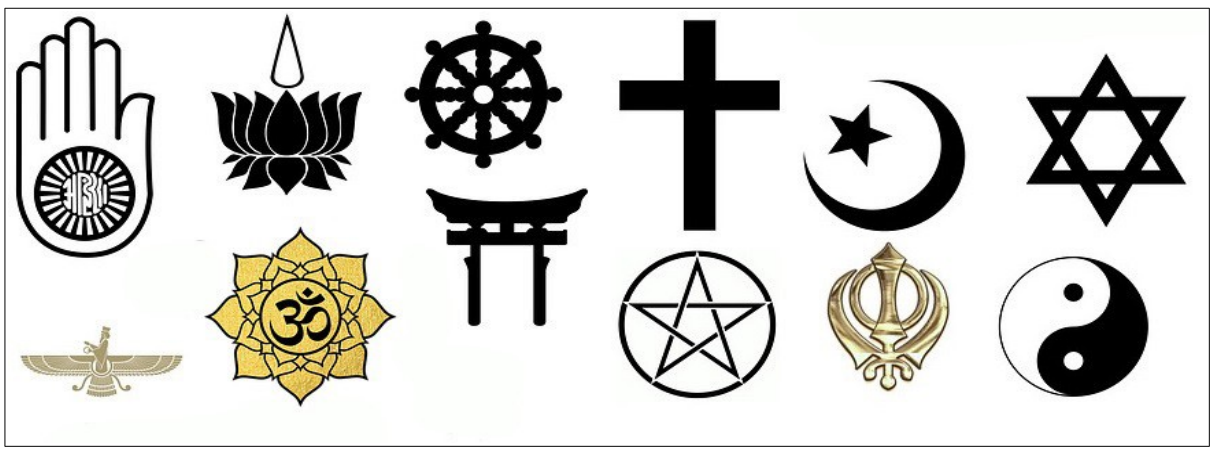

विश्व के सामान्य लॉग अधिकतर हिन्दू, मुस्लिम, शिख, ईसाई, यहूदी, बुद्ध, जैन और पारसी जैसे ईश्वरवादी धर्मो के नाम ही जानते है. पर विश्व में अनेको शैतानियत के गुप्त धर्म भी है, जिसके बारे में लोग आज भी अनजान है. आम तौर पर किसी धर्म को शैतान का धर्म कहते किसी ने नहीं सुना, लेकिन जैसे हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बुद्ध, जैन, यहूदी और पारसी जैसे विश्व के भिन्न धर्म ईश्वरी शक्ति को मानते है, वैसे इलुमिनाटी संगठन से जुड़े लॉग लूसिफर यानी शैतानी शक्ति में विश्वास करते है. **इनकी मान्यता के अनुसार लूसिफर ही सर्व शक्तिमान है और अन्य किसी धर्म की ईश्वरी शक्ति का शैतान के आगे कोई वजूद नहीं.**

शैतान (लूसिफर) शब्द का प्रचलन मूल ईसाई (क्रिस्चियन) धर्म के साथ अधिक हुआ है, क्योकि उनकी संख्या विश्व में अधिक है तथा वैश्विक षडयंत्रो के मामले मे भी जाग्रति फैलानेवालो में उनकी संख्या अधिक मानी जाती है. क्रिस्चियन धर्म में शैतान को लूसिफर (Fallen Angel) के नाम से व्याख्यित किया जाता है जो बुराई के प्रतिकमे तब्दील होता है, परंतु गहरे में अध्यहन करने पर शैतान की उत्पत्ति का मूल सनातन संस्कृति के प्राचीन काल के साथ ही जुड़ा है. इसीलिए प्रचलित क्रिस्चियन धर्म के अनुसार लूसिफर का इतिहास पहले समझते है और बाद मे सनातन धर्म का.

ईसाई (क्रिस्चियन) धर्म के पवित्र ग्रंथ **बाइबल** के अनुसार अच्छाई के देवता को "ईश्वर" कहा जाता है और बुराई के देवता को "शैतान" कहा जाता है. ईश्वर ने इस सृष्टि का सर्जन करने से पहले हेवेन यानी स्वर्ग का निर्माण किया और वहाँ रहने के उन्होंने **एंजेल्स (Angels)** को बनाया. इनमे से मुख्य एंजेल्स को "आर्केंजल्स" का नाम दिया गया, जिन्हे ईश्वर के प्रचारकों में सबसे ऊँची पदवी प्राप्त थी. इन आर्केंजल्स के प्रमुख आर्कएंजेल का नाम था **लूसिफर (Lucifer)**, जो बाकि के आर्केंजल्स से सबसे ज़्यादा सुंदर, सबसे ज़्यादा शक्तिशाली और बुद्धिमान था.

लूसिफर ईश्वर की उस वक्त की बनाई गई सबसे श्रेष्ठ रचना थी. पुरे ब्रह्मांड में ऐसा कोई भी नहीं था जो लूसिफर की बराबरी कर सकता हो. इस बात का घमंड खुद लूसिफर को भी था कि वह बाकई हेवेन पर मौजूत सभी आर्केंजल्स से श्रेष्ठ है और इसी बजह से लूसिफर के अंदर धीरे-धीरे घमंड बढ़ने लगा. फिर लूसिफर को यह तक लगने लगा कि वह इतना ओतुल्य है कि उसे ईश्वर के स्थान पर होना चाहिए. लूसिफर के अंदर खुद ईश्वर की पदवी हासिल करने की इर्षा जागने लगी. लूसिफर की इसी घमंड, इर्षा और लालच के साथ सबसे पहले पाप ने जन्म लिया. अपने इस लक्ष के प्राप्ति के लिए लूसिफर ने हेवेन के अन्य आर्केंजल्स को भी ईश्वर के खिलाफ भड़काना शुरू कर दिया. लेकिन कुछ एंजेल्स तब भी ईश्वर के प्रति ईमानदार बने रहे और इसके बाद हेवेन पर कब्जे के लिए एक घमासान युद्ध शुरू हुआ, जिसमें लूसिफर के बिरुद्ध और ईश्वर की ओर से सेंट माइकल ने अगुवाई की और लूसिफर अपने सारी कोशिशों के बावजूद यह युद्ध हार गया.

ईश्वर ने यह साबित कर दिया की वे ही सबसे श्रेष्ठ हैं, क्यूंकि उन्होंने लूसिफर जैसे सबसे शक्तिशाली आर्केंजल्स को बिना युद्ध में प्रत्यक्ष रूप से भाग लिए बिना ही हरा दिया था. लूसिफर और उसके साथियों को स्वर्ग से बाहर निकाल दिया गया. बाइबल में इशू ने बताया है "मैं शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था". अब लूसिफर ईश्वर की सबसे अच्छी और सबसे प्रिय रचना नहीं रही थी, क्यूंकि इस युद्ध के बाद ईश्वर ने इंसानो का सर्जन किया और सबसे पहले एडम और ईव को इस दुनिया में रहने के लिए भेजा. इन दोनों ने ही दुनिया में जीवन की शुरुआत की.

इसी बीच अब लूसिफर ईश्वर के चहेता आर्कएंजेल होने का सौभाग्य खो चूका था और इसी के साथ लूसिफर हेवेन में वास करने की योग्यता खो बैठा फिर हेवेन से धरती पर आ गिरा. तभी से लूसिफर को **The Fallen Angel** के नाम से जाना

जाने लगा. ऐसा माना जाता है जबकि लूसिफर एक बुरी आत्मा बन चूका था और अब वह धरती पर आ चूका था. लूसिफर की धरती पर मौजूदगी ही धरती की सारे पापो की शुरुवात थी. तभी से लूसिफर बुराई का देवता बन गया और अपने अनुयाइयों को अपने बताए रास्ते पर चलने की सिख देने लगा. बदले में अपने अनुयाइयों को बेशुमार दौलत और सोहरत देने का वादा भी किया. तभी से लोग लूसिफर की पूजा करने लगे और इस दुनिया में बुराई का फेलाब बढ़ता चला गया.

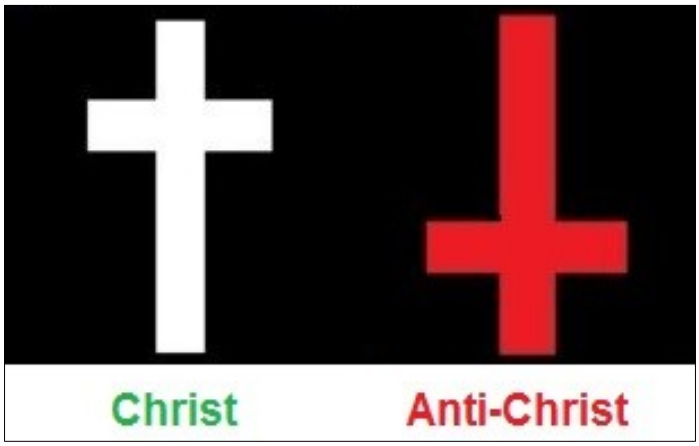

इस तरह शैतान के पूजको को **“एंटी-क्राइस्ट” (Anti-Christ)** यानी क्रिश्चियन विरोधी भी कहा जाता है. क्रिश्चियन लोग अपने ईश्वर इशू के प्रतिक के रूप में क्रॉस चिह्न का उपयोग करते है, वैसे शैतानियत को माननेवाले प्रतिक के रूप में क्रॉस को उल्टा प्रदर्शित करते है. उल्टा क्रॉस ईश्वर (इशू) के विरोध का प्रतिक माना जाता है.

वैदिक सनातन हिन्दू पुराणों के अनुसार शैतान को असुर, दैत्य, दानव या राक्षस के नाम से पुकारा जाता है, जिनके गुरु शुक्राचार्य को माना जाता है. असुरों के आचार्य होने के कारण ही इन्हें “असुराचार्य” भी कहते हैं. शुक्राचार्य की जो कहानी है वही लूसिफर की कहानी है की शुक्राचार्य को स्वर्ग से निकला गया था, क्योकि वह अहंकारी हो गए थे और अपने आप को सर्वस्व मानने लगे थे. एक पौराणिक कथा के अनुसार महर्षि शुक्राचार्य ने भगवान शिव की घोर तपस्या की थी और उनसे **"मृतसंजीवनी मंत्र"** प्राप्त किया था जिस मंत्र का प्रयोग उन्होंने देवासुर संग्राम में देवताओं के विरुद्ध किया था. युद्ध मे जब असुर देवताओं द्वारा मारे जाते थे तब शुक्राचार्य उन्हें मृतसंजीवनी मंत्र विद्या का प्रयोग करके वापिस जीवित कर देते थे. इसी कारण देवासुर संग्राम में असुर अनेक बार युद्ध जीते थे. शुक्राचार्य ने जो विद्या प्राप्त की थी वह अति गोपनीय ओर कष्टप्रद साधनाओं से सिद्ध होती थी. **इसीलिए शैतान के पुजक विश्व मे कहीं भी अगर पूजा का कोई स्थान निर्मित करते है तो उसे**

"सेटनिक चर्च" के साथ "सेटनिक टेम्पल (मंदिर)" के नाम से भी संबोधित करते है, क्योकि शैतान (असुर या लूसिफर) अपनी उत्पत्ति सनातन काल से ही मानते है.

शुक्राचार्य | दज्जाल | लूसिफर

हिन्दू शास्त्र में भगवान के वामनावतार में तीन पग भूमि प्राप्त करने के समय, शुक्राचार्य राजा बलि की झारी (सुराही) के मुख में जाकर बैठ गए थे और वामनावतार द्वारा सुराही को साफ करने की क्रिया में शुक्राचार्य की एक आँख फूट गई थी. **मुस्लिम धर्म में** भी शैतान को "दज्जाल" के नाम से जाना जाता है और वह एक आँख से अँधा है ऐसा भी बताया गया है. **शैतानीयत को माननेवाले** भी लूसिफर को भी प्रतिक के रूप में एक आँख से देखनेवाला ही दर्शाते है. **दूसरी समान बात है की शुक्राचार्य और लूसिफ़र दोनों को स्वर्ग से निकला गया था, क्योकि वे अहंकारी बन गए थे और खुद ईश्वर बनाना चाहते थे. शुरुआत में दोनों ही अच्छे थे और बाद में बुरे बनते है. वेदिक हिन्दू पुराण एवं वैदिक ज्योतिष अनुसार शुक्राचार्य शुक्र ग्रह (Venus) के प्रतिक रूप में माना जाते है और लूसिफर को भी शैतान "राइजिंग मॉर्निंग स्टार" (Rising Morning Star) वीनस (शुक्र) के रूप में ही संबोधित करते है. इसतरह न्यूमरोलोजी यानी अंक-ज्योतिष में शुक्राचार्य और लूसिफर दोनों ही नंबर "6" का प्रतिनिधित्व करते है.**

भले ही विविध धर्म ग्रंथो में शुक्राचार्य, लूसिफर या दज्जाल के अलग नामो से दर्शाया गया हो, लेकिन यकीनन इसे हर धर्म मे ईश्वरविरोधी शैतानी शक्ति या बुराई के प्रतिक के रूप में ही वर्णित किया गया है. **इसीलिए "6", "66" या "666" शैतानियत मे माननेवालो के लिए शुभ अंक है जिसे क्रिश्चियन मान्यता अनुसार "मार्क ऑफ़ ध बीस्ट" (Mark of the Beast), "पशु की छाप" या "शैतान की छाप" के नाम से भी जाना जाता है. इलुमिनाटी संगठन से जुड़े लोग 6 अथवा 666 के अंक को प्रदर्शित करके अपने गुप्त संदेश एक-दूसरे के साथ पहुंचाते है या एक-दूसरे के कार्य से जुड़े होने का सबूत देते है. 666 नंबर के अलावा 11, 13, 322 जैसे अन्य नंबर भी अंकशास्त्र के अनुसार उनके लिए शुभ नंबर माने जाते है.**

जैसे ईश्वरी धर्म मे माननेवाले शुभ कार्य को करने से पहले तारीख, तिथि, नक्षत्र देखते है, वैसे ही शैतान के पूजक उनके लिए शुभ मानेजानेवाले किसी नंबर को दिन, महीने या साल की तारीखो में छुपाकर दुनिया मे विध्वंशक घनाओंको अंजाम देते है.

कुछ खास नंबर-चिह्नों को बाद करले तो जितने भी अंक शास्त्र के नंबर, हाथ की ऊँगली, शरीर की मुद्राएँ, धार्मिक चिह्न, चित्र जो शैतान के पुजको द्वारा उपयोग में लिए जाते है, वह वास्तव में उन्होंने किसी ना किसी ईश्वरी धर्म से चुराए हुए ही माने जाते है, जैसे की सनातन हिंदू धर्म के "भगवान शिव का त्रिशूल" एवं "शिव की त्रिकालज्ञानी एक आँख", क्रिस्चियन धर्म से "क्रॉस". क्योकी शैतान खुद ईश्वर बनने की इच्छा रखता है, इसीलिए सारे पवित्र चिह्न अलग अलग ईश्वरी धर्म से चुराकर उस पर शैतान का अधिपत्य एवं मालकियत प्रस्थापित करने का वैश्विक स्तर पर एक प्रयास मात्र है.

कलिपुरुष (दैत्य कलि) मुखालिफ़ मसीह

सनातन हिंदू धर्म के ग्रंथो के अनुसार जब असुर, दैत्य, दानव या राक्षस मानवशरीर धारण करेगा तो वह "कलिपुरुष" या "दैत्य कलि" के नाम से जाना जाएगा, वहीँ क्रिश्चियन धर्म मे जब शैतान का मानव रूप मे अवतरण होगा तो वह "मुखालिफ मसीह" (Mukhalif Masih) यानी झूठा मसीहा, फरिस्ता मतलब इशू का विरोधी प्रतिक बनके आएगा ऐसे उल्लेख क्रिस्चियन लोगो द्वारा बताये गए है. सनातन हिन्दू धर्म के ग्रंथो की भविष्यवाणी अनुसार कल्कि भगवान के हाथो अत्यधिक शक्तिशाली "कलि पुरुष" या "दैत्य कलि" का वध कैसे होगा उसकी संक्षिप्त जानकारी पुस्तक के अंत में "कल्कि अवतार के वर्णन" में दी गयी है.

लूसिफर का प्रतीकात्मक चित्र (बेफोमेट)

BAPHOMET

शैतान को डेविल (Devil) या सेटन (Satan) कहा जाता है और शैतानियत को माननेवाले धर्मो को सेटनीज़म (Satanism) कहा जाता है. हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई जैसे ईश्वर को माननेवालो धर्मो की अलग पूजाविधि या प्रथनाविधि है, वैसी ही **शैतानियत पर विश्वास करनेवालों के भी भिन्न रीतिरिवाज और क्रियाविधि है. इनकी पूजा पद्धतियों में ज़्यादातर पशुबलि, नरबलि या बालक बलि, हत्या और आत्महत्या जैसी चीज़ें भी होती हैं.** परंपरागत शैतानवादी काला जादू भी करते है और यंत्र, तंत्र की विधि भी उनकी क्रियाओ का हिस्सा होती है.

विज्ञान या अन्य ईश्वरवादी धर्म मे माननेवाले अधिक लोगो को भी जानकारी नहीं है की सनातन शास्त्रों में तंत्र विधा भी एक अलग शास्त्र है, जिसमे शरीर की प्राणशक्तियो द्वारा यंत्र, तंत्र और मंत्र प्रयोग से इच्छित कार्य सिद्ध किये जा सकते है. मूल रूपसे इन विद्याओ का उपयोग अच्छे काम के लिए किया जा सकता है. **लेकिन शैतानियत को माननेवाले अपने ज्ञान का उपयोग काला जादू टोना करके प्राणशक्तियो को अवरोधित कर लोगो का अनिष्ट करने के लिए ही सालो से करते आये है.** इसीलिए सनातन संस्कृति को पूरी तरह ना समजनेवाले कुछ लोग योग, यंत्र, तंत्र और मंत्र की विधि को भी शैतान की विधि के रूप में देखते है, परंतु सत्य यह है की यह शरीर की प्राण ऊर्जा को विकसित करने का यह एक शास्त्र है जो सिद्ध होने के बाद उसका अच्छे और बुरे दोनों तरीके से उपयोग संभव है और उसका कर्मफल भी शास्त्रों में निर्धारित किया गया है. ध्यान साधना से उच्च आध्यात्मिक ऊर्जा विकसित कर चुके मनुष्य, गायत्री या अन्य ऊर्जावान सिद्ध मंत्र शक्ति और ईश्वर पर सच्ची श्रद्धा रखनेवाले व्यक्तियो पर कोई बुरी ऊर्जा असर नहीं कर पाती ऐसे विधान भी तंत्र ग्रंथो में प्राप्त होते है. अगर आध्यात्मिक ऊर्जा की बात करे तो किसी भी धर्म को माननेवाला व्यक्ति अगर पवित्र हो और सच मे ईश्वरी कार्य से जुड़ा हो तो बुरी शक्तियाँ उसपर हावी नहीं हो सकती.

इलुमिनाटी संगठन से जुड़े सभी संप्रदाय शैतानी शक्ति को मानने वाले है, पर गहरे में इसके तार मिस्र (इजिप्त) और ग्रीक (Greek) देश की प्राचीन संस्कृति से भी जुडते है, जहाँ जादू टोना, तंत्र, यंत्र, बलि प्रथा के रीतिरिवाज उस समय की शैतानी सभ्यता से जुड़े लोग करते थे एवं आधे जानवर और आधे इंसान के रूप में अपने आपको मानते थे.

इलुमिनाटी संगठन से जुड़े लोग काले जादू में उपयोग होनेवाने बकरे का सिर, इंसानी खोपड़ी, पिरामिड, बाज़ या उल्लू पक्षी, एक आँख जैसे अनेको प्रतिक से विविध सभ्यताओ की शैतानी परंपराओ का सन्मान देने के लिए उपयोग करते है. लूसिफ़र की मूर्ति का चित्र जो की "बेफोमेट" कहलाता है उसे ऍलिफ़स लेवि (Éliphas Lévi) नामक व्यक्ति ने बनाया है, जिसमें शैतान को आधा इंसान और आधा जानवर दिखाया गया है तथा उसके शरीर के अंगो को स्त्री-पुरुष दोनों के मिक्षण के रूपमे बताया गया है. चित्र में लूसिफर के पंख भी दिखाए गए है जो की कहानी में एंजल बताया गया था. मतलब चित्र (बेफोमेट) अनुसार ऐसा नहीं की शैतान वास्तव में ऐसा ही दीखता है, पर यह शैतानियत को माननेवाले सभी धर्मो के लिए एकता का प्रतिक माना जाता है.

जिन्हे इलुमिनाटी और लूसिफर केवल परीकथाएं लगती है उन्हे कोलंबिया देश में स्थापित लूसिफर के चर्च और उसमे उपयोग किये गए चिह्नों को एक बार देखना आवश्यक है; जिसमे प्रकाशित उल्टा क्रॉस, लूसिफर का प्रतीकात्मक चित्र और उसके हाथ में जादू या तंत्रविद्या में उपयोग किये जानेवाली वस्तु, बकरे का सिर और यंत्र, 2 मेसोनिक खंभे, बैठने की जगह पिरामिड, एक आँख का चिह्न और ठीक उसके निचे 666 नंबर तथा लाल, सफ़ेद-काली चीज वस्तुए भी देख सकते है. लूसिफर के चर्च स्थापित करते समय इनके पुजको के समर्थन का **वीडियो** भी देख सकते है और अन्य जगहों पे **विरोध प्रदशन का आर्टिकल** भी पढ़ सकते है. इलुमिनाटी संगठन के बारे में प्रतिष्ठित अखबारों के कुछ आर्टिकल भी देख सकते है. 1, 2

इलुमिनाटी संगठन और शैतानियत की कुछ विकृत एवं रहस्यमयी रस्मे

- शैतान में मानने वालो की कुछ रस्म अनुसार आप किसी के भी साथ शारीरिक संबध बना सकते है, फिर चाहे वो माँ-बाप को छोड़कर कोई भी हो. ऐसा करने के पीछे उनका मानना है की वो इस संसार के रिश्तो में विश्वास नहीं रखते. कुछ रीत-रीवाजो में एक दूसरे के खून को चखना, बालक-नर-पशु बलि देना और उसका खून पीना, मांस खाना जैसी क्रियाये शामिल मानी जाती है. इनके जीवन में कोई नीति-नियम नहीं होता.

- इस संगठन से जुडने के लिए अपनी आत्मा को शैतान (लुसिफर) को सौंपना पड़ता है. मतलब की जब उस व्यक्ति की मृत्यु हो जाएगी तब उसकी आत्मा शैतान के पास चली जायेगी. शैतानियत की मान्यता अनुसार, जो लोग जीतेजी ऐसा करते है वह बाकी लोगों के मुकाबले अपनी जिंदगी में जल्दी सफल होते हैं. बदले मे उन्हें शैतान की तरफ से शोहरत और वो तमाम चीज़े मिलती है जिसकी कामना वह अपने जीवनमे करते है.

- जवान रहने के लिए समयांतर से बच्चो के खून का सेवन करना या उनका मांस खाना भी कुछ शैतानी विधियो मे शामिल माना जाता है. इन्हे **एड्रीनोक्रोम (Adrenochrome) सोसाइटी** (समाज) भी कहा जाता है. इसके लिए बच्चो को प्रताड़ित कर उनके शरीर के खूनसे एड्रीनोक्रोम पदार्थ निकाला जाता है. ऐसा भी माना जाता है की जितना बच्चे को पताड़ित करते है उतना ही ज्यादा एड्रीनोक्रोम पदार्थ बच्चे के खून से निकलता है जिसका सेवन त्वचा और शरीर को जवान रखने मे इन्हे मदद करता है.

- शैतानियत मे माननेवाले अपने शैतान को ट्रांसजेंडर यानी स्त्री पुरुष दोनों का मिश्र स्वरुप मानते है. इसलिए, इलुमिनाती के सदस्य भी स्त्री-पुरुष समानता का मुदा विश्व में छेड़ते रहते है और अपने बच्चो को भी स्त्री-पुरुष दोनों के कपडे पहनाते है. इनका यह कदम स्त्री-पुरुष के समान हक़-अधिकारों के लिए ना होकर शारीरिक रूप से भी स्त्री या पुरुष को एक बनाने का प्रयास है और इनका अंतिम मकसद ईश्वरवादियों के शरीर के प्राकृतिक डीएनए **(DNA)** में भी बदलाव लाने की पैरवी करता है, जिससे हॉर्मोन्स में बदलाव के कारण स्त्री के शरीर में पुरुष और पुरुष के शरीर में स्त्री के मिश्र लक्षण दिखे. ऐसा करके अपने शैतान को प्रसन्न करना इनका मकसद मात्र माना जाता है. **वाइरस और बीमारियों को रोकने की आड़ में दवाइयों का उपयोग कर इस कार्य को पूरा करना इनका वर्तमान ध्येय माना जाता है.**

- दुनिया में ईश्वर की बनायी हर नैसर्गिक या प्राकृतिक चीजों को कृत्रिम या अप्राकृतिक बनाना और ऐसा करके शैतान (लूसिफ़र) की रचना को ईश्वर की रचना से श्रेष्ठ साबित करना ही इनका परम उदेश माना जाता है. इन्हे पूरा समझने के लिए **“जोर्जिया गाइडस्टोन्स” (Georgia Guidestones)** स्मारक क्या है और उसे क्यों बनाया गया वह ठीक से समझना जरुरी है.

जोर्जिया गाइडस्टोन्स: रहस्यमयी स्मारक या करोडो लोगो की मौत का फरमान?

अमेरिका देश के जॉर्जिया (Georgia) राज्य की एल्बर्ट काउंटी (Elbert County) क्षेत्र में स्थित है **"जोर्जिया गाइडस्टोन्स" (Georgia Guidestones)**. **जॉर्जिया गाइडस्टोन्स ग्रेनाइट पत्थरो का एक स्मारक है, जिसके ऊपर विश्व की 4 प्राचीन (संस्कृत, ग्रीक, बेबीलोनियन, प्राचीन मिस्र) और 8 आधुनिक भाषाओं (अंग्रेजी, स्पेनिश, स्वाहिली, हिंदी, हिब्रू, अरबी, चीनी और रूसी) में विश्व के लिए 10 आज्ञाए लिखी गयी है. इन्हे पढ़ने पर ऐसा मालूम पड़ता है जैसे ये विश्व के हित के लिए लिखी गयी है और इससे मानवजात का कल्याण होगा. क्योकी शैतान के पुजारी ईश्वर के माननेवालो को धोखा देने के लिए हर चीज को उल्टा करते है, इसीलिए स्मारक पर लिखी आज्ञाओ का असली मतलब समझे बिना शैतानियत का पूरा षड्यंत्र समजमे आना असंभव माना जाता है.**

जून 1979 में रोबर्ट. सी क्रिश्चियन (Robert C. Christian) ने "वफादार अमेरिकियों के एक छोटे समूह" की ओर से "एल्बर्टन ग्रेनाइट फिनिशिंग कंपनी" (Elberton Granite Finishing Company) से संपर्क किया और बताया की स्मारक के पत्थर एक कंपास (होकायंत्र), कैलेंडर और घड़ी के रूप में कार्य करेंगे तथा स्मारक का

निर्माण इस तरह से होना चाहिए की वह "विनाशकारी घटनाओं का सामना करने" में सक्षम हो. जॉर्जिया गाइडस्टोन्स को स्थापित करने के लिए 5 एकड़ जमीन रोबर्ट. सी क्रिश्चियन द्वारा 1 अक्टूबर 1979 को "वायने मुल्लेनिक्स" **(Wayne Mullenix)** नाम के खेत के मूल मालिक से खरीदी गयी जिसपर मुलिनेक्स और उनके बच्चों को गाइडस्टोन साइट पर आजीवन मवेशी चराने का अधिकार भी दिया गया. **March 22, 1980** को जनता के लिए स्मारक का अनावरण हुआ और बाद में रोबर्ट. सी क्रिश्चियन द्वारा इसके मालिकी अधिकार को अल्बर्ट काउंटी को दे दिया गया.

रोबर्ट. सी क्रिश्चियन (Robert C. Christian) एक छद्म नाम बताया जाता है और उसकी सही पहचान आजतक एक रहस्य मानी जाती है. अमेरिका के एक वीरान इलाके में जहाँ इंसानो का अधिक आना जाना नहीं है वहाँ विश्व की प्राचीन और आधनिक भाषाओ में इतनी बड़ी कीमत देके भारी भरखम पत्थरो से स्मारक बनवाना एक गूढ़ रहस्य बना हुआ है.

जॉर्जिया गाइडस्टोन्स के मुख्य पांच ग्रेनाइट पत्थरो के शीर्ष पर एक कैपस्टोन (वास्तुकलामयी पत्थर) स्थित है, जो खगोलीय रूप से संरेखित हैं. **ऐसे जोर्जिया गाइडस्टोन्स कुल 6 पत्थरो से मिलकर बना एक समारक है जिसमे निचे के मुख्य 4 पत्थरो का वजन लगभग 19 टन, बिच के आधाररूप पत्थर का वजन 20 टन और सबसे ऊपर के कैपस्टोन का वजन 11 टन के आसपास है. इसकी ऊंचाई 19 फ़ीट के आसपास है.** स्मारक के पश्चिम में कुछ फीट की दूरी पर, एक अतिरिक्त ग्रेनाइट लेज़र को जमीन के साथ समतल किया गया है. यह टैबलेट संरचना की पहचान करता है और इसमें इस्तेमाल की जाने वाली भाषाएं पत्थरों के आकार, वजन और खगोलीय

विशेषताओं के बारे में विभिन्न तथ्यों को सूचीबद्ध करती हैं. यह टैबलेट के नीचे दबे हुए टाइम कैप्सूल को भी संदर्भित करता है जिस तारीख को कैप्सूल को दफनाया गया था और जिसे निश्चत समयपे खोला जाना है. पर वहाँ कोई तारीख नहीं लिखी गयी है.

विश्व में शैतानियत के धर्म को स्थापित करने के लिए जॉर्जिया गाइडस्टोन्स पर लिखी मूल 10 आज्ञाओ को ईश्वरवादी धर्मो की भाषा में समझने का प्रयास करते है. **वास्तव में यह मूल 10 आज्ञाएँ ईश्वर में माननेवाले किसी धर्म के लोगो के लिए नहीं लिखी गयी नहीं मानी जाती. बल्कि इसे शैतानी धर्म में माननेवाले अनुयायीओ के लिए आदेश के रूप में लिखा गया है, जिससे शैतानी शक्ति मे विश्वास करनेवाले सभी पंथो को एक कर विश्व मे शैतानियत का अधिपत्य स्थापित किया जा सके. शैतान के गुप्त धर्म में माननेवालो की संख्या पुरे विश्व में 1% से भी कम मानी जाती है.** परंतु विश्वमे व्यापार के जरिये देशो पर बड़ा आर्थिक नियंत्रण लादकर उसके लोगो को अपने मन मुताबिक कार्य करवाके ईश्वर के बदले शैतान की गुलामी स्वीकारने के लिए बाध्य करवाना उनके जीवन का प्रमुख लक्ष्य माना जाता है.

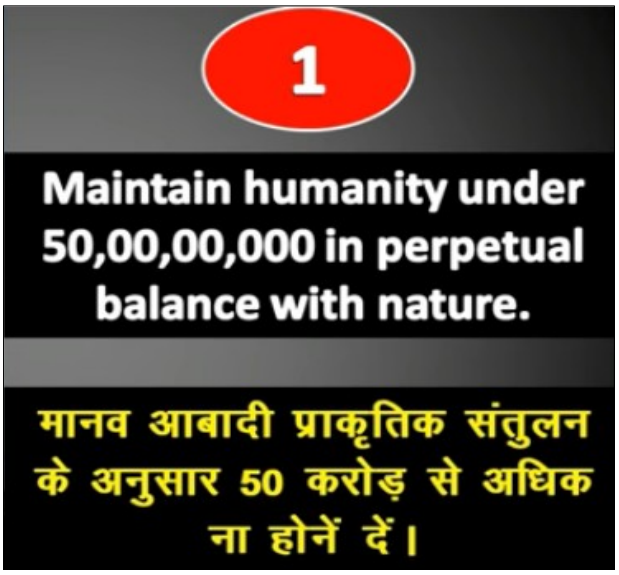

1) कलरबाजी: इसे पढ़ने पर ये मालूम पड़ता है की इन्हे प्रकृति और मानव संतुलन की अत्यधिक चिंता है और अगर इंसान की बस्ती को नियंत्रित ना किया गया तो प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाएगा. इसीलिए मानव बस्ती को नियंत्रण में रखना अति आवश्यक है, जिससे पेड़पौधे, पक्षी, जानवर, दरियाई जीव, कीटक या सूक्ष्म जीवसृष्टि का प्राकृतिक संतुलन ना बिगड़े.

आरोपित वास्तविकता: विश्व में ईश्वरवादीयो की संख्या सबसे ज्यादा है और उन्हें शैतानियत की तरफ जीतेजी ले जाना असंभव है. क्योकी धार्मिक भावनाये व्यक्ति के मूल डीएनए में जन्म से मौजूद होती है, जिसे तुरंत बदल पाना इतना आसान नहीं होता. इसीलिए उनके अनुसार सभी ईश्वरी धर्म मे माननेवालो की जनसंख्या कम से कम हो तभी विश्वमे शैतानियत के धर्म को स्थापित किया जा सकता है. 2022 में विश्व की कुल जनसंख्या 800 करोड़ के आसपास मानी जाती है, जिसे 2030 तक कम कर 50 करोड़ करना इनका प्रमुख वर्तमान ध्येय माना जाता है.

विश्व की जनसँख्या कम करने के लिए वर्तमान मे शैतान के पुजको द्वारा देशो पर हमला कर युद्ध के माध्यम से खून बहाकर हत्या करने का रास्ता ना अपनाकर विज्ञान और टेक्नोलॉजी के माध्यम से इस कार्य को अंजाम देने का रास्ता चुना हुआ माना जाता है, जिसमे विशाल जनसमूह की हत्या का आरोप किसी वाइरस या बीमारियो पर डालकर लोगो को मृत्यु के हवाले करने की योजना प्रायोजित मानी जाती है. **इसके लिए जहर को दवाइयों के स्वरुप मे अमृत बनाकर लोगो को देना और दवाईयो को किसी वाइरस-बीमारी के इलाज के लिए अक्सीर बताकर लोगोकी रक्षा के नाम पर विशाल जनसमूह को खिलाना इनकी आज्ञा का प्रमुख उदेश्य माना जाता है.** समयांतर से लोगो की मृत्यु होने पर दोष का ठीकरा शराब, तंबाकू, दूषित

हवामान, आबोहवा, खान-पान और व्यक्ति की जीवनशैली पर डालकर लोगो को छल पूर्वक मारने का गुप्त प्रयास इनके द्वारा वर्तमान में जारी होने के दावे किये जाते है.

विदेशो में बैठकर कार्य को अमली बनाने के लिए दुनिया में वाइरस और बीमारी का काल्पनिक डर फैलाना और अंत में समाधान के रूप में उनके नियंत्रण की संस्थाओ से दवाइयाँ बनवाकर पुरे विश्व में पहोचाना योजना का प्रथम चरण माना जाता है. दूसरा की वाइरस को अप्राकृतिक रूपसे अधिक संक्रामक बनाकर फैलाना, जिससे कुछ खास लक्षण लोगो को शरीर में दिखे तथा वाइरस की मानवशरीर में मोजुदगी को साबित करने के लिए केमिकल से फर्जी टेस्टिंग किट निर्मित करवाकर लोगो का वाइरस-बीमारी के विज्ञान पर भरोसा कायम करवाना योजनाओ मे शामिल बड़ा कार्य माना जाता है. कुछ लोगो के शरीर में नजदीकी समय में दिखे दवाई के दुष्प्रभाव को अधिक प्रचारित ना करवाना, जिससे दवाई वैज्ञानिक कसौटी पर सबसे कारगर दिखे, साथ ही दवाई को नहीं लेनेवाले निर्दोष लोगो पर वाइरस फैलाने का आरोप लगाकर साथमे आयुर्वेद, होमियोपैथी के प्रभावी नैसर्गिक इलाज को दबाना, बदनाम करना तथा नैसर्गिक पैथी के चिकित्सको को कानून द्वारा प्रतिबंधित कर लोगो को जहरीली दवाई खाने के लिए कायदे से बाध्य करवाना शैतान के पुजको की वर्तमान योजना मानी जाती है.

जनस्वाथ्य के नाम पर वाइरस-बीमारी का काल्पनिक भ्रम और डर विश्व मे फैलाकर सीधे रूपसे इस कार्य को अंजाम दिया जा सकता है. इसलिए यह वैश्विक संस्थाओ के माध्यम से लोगो के स्वास्थ्य की अधिक चिंता करनेवाले और उनके हित के लिए कार्य करनेवाले देवदूत बनने का स्वांग रचते माने जाते है. शैतानी संगठन से जुड़े वैज्ञानिक, डॉक्टर और पत्रकार हकीकत को तोड़ मरोड़कर पेश कर इनके कुतर्को का समर्थन करवाते रहते है, जिससे इस कार्य को वेग मिल सके. षड़यंत्र से अनजान इनके झूठे प्रचार-प्रसार को सत्य मानकर माता-पिता खुद के लिए एवं अपने बच्चे-परिवार की सुरक्षा के लिए सामने से इनकी दवाइयों तक पहुंचकर अपना जीवन बर्बाद करे ऐसी इनकी मनशा मानी जाती है. **दावों के अनुसार, शैतान के पुजको द्वारा कैसे इस कार्य को विश्व में सफल बनाया जा सकता है उसका विस्तृत वर्णन 8 नंबर की आज्ञा में किया गया है.**

2) कलरबाजी: मानव बस्ती और प्रकृति का संतुलन ना बिगड़े उसके लिए कम बच्चे पैदा करना और जीवन मे एक ही संतान काफी है इसे वास्तविकता बनाना तथा पुरुष को कंडोम, नसबंदी और स्त्रियों को गर्भ निरोधक गोलिया या अन्य माध्यम से यौनसंबधो के समय गर्भ धारणा ना हो उसके लिए प्रयास करना चाहिए ऐसा ईश्वरवादी लोग इस आज्ञा को लेकर समझते है.

आरोपित वास्तविकता: शैतान के पूजक ईश्वरवादीयो को बुद्धिहीन आंकते है, क्योकि वह शैतानी शक्ति की बजह ईश्वरी शक्ति में आस्था रखते है. उनके मुताबिक ईश्वरवादियों का अंश मूल्यवान नहीं है और इसका सीधा संबध युजनिक्स **(Eugenics)** से है जो मान्यताओं और पद्धतियों का एक सेट है जिससे मानव

आबादी की आनुवंशिक गुणवत्ता में सुधार लाया जा सकता है. **ईश्वरीशक्ति में विश्वास रखनेवालों की धार्मिक मान्यताओं में बदलाव लाना और उनकी मानसिक वृतियो को शैतानियत की तरफ ले जाने के लिए उनके जीन (Gene) को बदलना मुख्य लक्ष्य में शामिल माना जाता है. शरीर मे जीन गुणसूत्रों (Chromosome) पर स्थित डी.एन.ए. (D.N.A.) की बनी अति सूक्ष्म रचनाएं है, जो अनुवांशिक लक्षणों धारण करती है एवं उनका एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानान्तरण भी करती हैं जिन्हे जीन के अलावा "वंशाणु" या "पित्रैक" नामक शब्दों से भी जाना जाता है.**

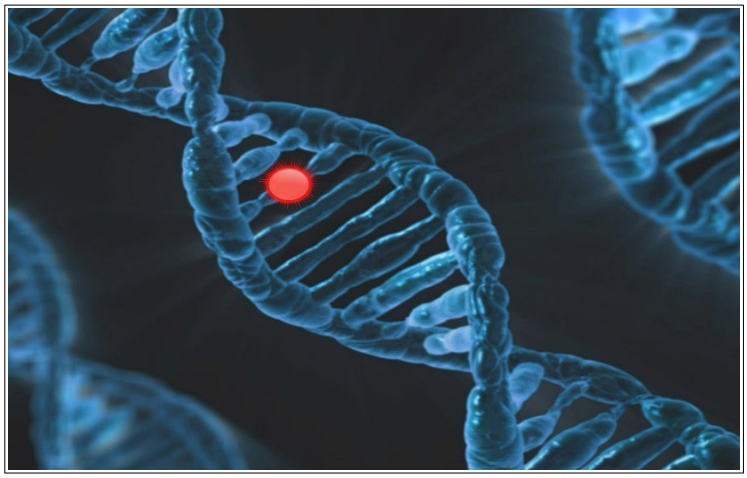

यूजीनिक सिद्धांतों का प्राचीन ग्रीस में अभ्यास किया हुआ माना गया है. यूजीनिक्स का समकालीन इतिहास 19 वीं शताब्दी के अंत में शुरू हुआ माना जाता है. जब यूनाइटेड किंगडम (UK) में एक लोकप्रिय यूजीनिक्स आंदोलन उभरा और फिर संयुक्त राज्य अमेरिका सहित कई देशों में फैल गया था. यूजीनिक सिद्धांतों में विवाह निषेध और प्रजनन के लिए अयोग्य समझे जाने वाले लोगों की जबरन नसबंदी और मानसिक या शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियो को प्रजनन के लिए अनुपयुक्त माना जाता था. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के दशकों में, मानवाधिकारों पर अधिक जोर देने के साथ, कई देशों ने यूजीनिक्स नीतियों को छोड़ना शुरू कर दिया, हालांकि कुछ पश्चिमी देशों (संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और स्वीडन) ने जबरन नसबंदी करना जारी रखा और काफी समय तक चला. यूजीनिक्स सिद्धांत की बड़ी आलोचना यह थी की आनुवंशिक चयन मानदंड उस समूह द्वारा निर्धारित किए जाते थे जिनके पास उस समय राजनीतिक शक्ति होती थी.

शैतानीधर्म से जुड़े लोग ईश्वरवादियों की जनसँख्या को नियंत्रित करने के लिए आज भी गुप्त रूप से कार्यरत माने जाते है जिसमे स्त्रियों को गर्भधारणा ना हो उसके लिए दिए जानेवाली गर्भनिरोधक दवाईयो के साइड इफ़ेक्ट से बच्चे पैदा होने में तकलीफ

होना या समय बढ़ना, गर्भ का गिर जाना भी शामिल माना जाता है. **जनसँख्या को नियंत्रित करने के लिए पुरुषो से अधिक बच्ची और स्त्रियाँ इनका प्रमुख निशाना मानी जाती है.**

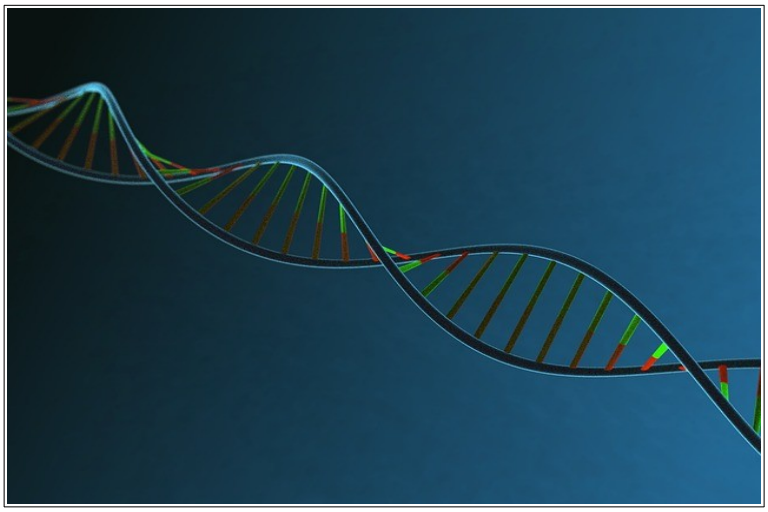

विश्व की आबादी कम करने के लिए वाइरस और बीमारी की आड़ में विश्व में दी जानेवाली दवाइयों से ईश्वरी शक्ति में माननेवाले सभी स्त्री-पुरुष दोनों द्वारा नवजात शिशु के जन्मदर में कमी लाना और साथ ही कुछ सालो में दवाइयों के दुष्प्रभाव से वयस्क स्त्री पुरुष की संख्या को समयांतर से कम करते जाना इनका गुप्त ध्येय माना जाता है. **कृत्रिम दवाइयों के माध्यम से ईश्वरवादियों के मूल डीएनए में बदलाव कर ईश्वरीशक्ति की प्राकृतिक रचना से ज्यादा शैतान (लूसिफर) की कृत्रिम रचना को श्रेष्ठ सिद्ध करना इनकी परम आज्ञा एवं आखरी उदेश्य माना जाता है. मनुष्य के प्राकृतिक डीएनए में छेड़छाड़ से जन्म लेनेवाले बालक में विकृतिया उत्पन्न हो सकती है और शरीर के अंगो का आकर, कद और मुलभुत ढांचा भी परिवर्तित हो सकता है. मान्यता के अनुसार, ईश्वरवादियों के डीएनए को कृत्रिम दवाई या अप्राकृतिक माध्यम से परिवर्तित करने की क्रिया को "शैतान की मालकियत" या “शैतान की छाप” अंकित करने के स्वरुप में यह लोग देखते है.**

विश्वमे ईश्वरवादीयो की जनसंख्या और वंश बरबाद हो उसके लिए शैतान के पूजक इंटरनेट के माध्यम से सेक्स और पोर्नोग्राफी को बढ़ावा देकर उनकी वीर्य प्रजनन शक्ति को नष्ट करना, स्त्री-स्त्री में आपस में संबध (लेस्बियन) और पुरुष-पुरुष में आपसी संबंध (गे) को समानता अधिकार के दायरे में लाकर कानूनी मान्यता दिलवाना ताकी बच्चे पैदा होने की कोई गुंजाईश ना रहकर जनसंख्या नियंत्रण में रहे ऐसी योजना में कार्यरत माने जाते है. विश्व के किसी देश में युवा षडयंत्रो से जागृत होकर बड़ी क्रांति ना कर सके उसके लिए दारु, ड्रग्स जैसे मादक पदार्थो से उन्हें नशे

की गर्द में धकेलना, मोबाइल ऍप्लिकेशन्स के जरिये काल्पनिक गेमों की लत लगाना, निपूर्ण युवाओ का मन-चित मात्र नौकरी और पैसो में रख भौतिकतावाद को बढ़ावा देना और साथ ही शिक्षित बेरोजगारी से गुनाह प्रवृति, युवाओ की देश के लिए भक्ति या समर्पण को मजाक बनाना, खुद के लिए सोचना, पैसा कमाना और भोगविलास के कार्यक्रमों में उन्हें व्यस्त रखने का वातावरण निर्मित करने का कार्य हर देशो में शैतान के पुजको द्वारा निर्मित माना जाता है.

शैतान के पुजको का हमला ईश्वरवादियों के ऊपर ना केवल शारीरिक और मानसिक, परंतु वाइरस और बीमारी की आड़ में दी जानेवाली दवाई को बनाने में विविध धर्मो के लिए पवित्र-अपवित्र मानी जानेवाली वस्तुए मिलाकर उनके धर्म, संस्कृति और परंपरा को नष्ट करने की तरह तरह की विधिया निर्मित करना भी षड़यंत्र का बड़ा हिस्सा माना जाता है. ईश्वरवादियों को मुर्ख बनाकर दवाई के माध्यम से उनके डीएनए को शैतानियत की तरफ प्राविहत करने के लिए यह वर्तमान में सक्रीय रूप से कार्यरत माने जाते है.

शैतानियत के धर्म के साथ जुड़े टीवी-सीरियल और फ़िल्मी जगत के लोग स्त्रियों के लिए भी **"फेमिनिज़म"** का राग छेड़ते रहते है, जिसमे स्त्रियाँ अगर घर संभाल कर पति, बच्चे और परिवार की सेवा करती है तो वह कमजोर है और नौकरी कर संस्था की सेवा से पैसा कमाती है तभी वह हिम्मतवान है ऐसे कुतर्क टीवी सीरियलों के माध्यम से चलाकर घर संभालनेवाली स्त्रियों को हिन् भावना से ग्रसित करने का काम किया जाता है. फेमिनिज़म को प्रचारित करने का मूल मकसद स्त्री उत्थान का ना होकर ईश्वरवादियों की कुटुंब व्यवस्था, संयुक्त परिवारो को तोड़ना तथा उन्हें मानसिक रूप से असहाय बनाना माना जाता है.

आम तौर पर किसी ईश्वरवादी को यह सब सुनने या घटनाये देखने के बाद भी जल्द यकीन नहीं आता की दुनिया में करोडो लोगो को नष्ट करने की योजनाको कोई सचमे अंजाम दे सकता है, क्योकि ईश्वरीशक्ति में माननेवाले धर्म के लिए जनूनी हो सकते है, परंतु मूल शिक्षा अनुसार निर्दोष लोगो के हत्यारे नहीं बन सकते. **लेकिन इससे ठीक विपरीत, शैतानियत के धर्म में माननेवालो की मान्यता अनुसार जितनी आत्माये मरने के बाद शैतान के पास जायेगी या उसके कब्जे में होगी उतना ही शैतान अधिक शक्तिशाली बनेगा.** तो शैतानियत की वर्तमान परिभाषा अनुसार, ईश्वरवादी व्यक्तियों के डीएनए को दवाई से अप्राकृतिक बनाकर उन्हे मौत के हवाले करने की विधि (Cult) को वह अपने मसीहा (शैतान) को **"बलि देना"** कहते है. ईश्वरवादियों की बलि जितनी बड़ी संख्या में दी जायेगी, उतने ही शैतानियत को माननेवाले अधिक शक्तिशाली बनेंगे और विश्व में शैतानियत का धर्म बड़े मुकाम पर स्थापित होगा ऐसी उनकी मान्यता मानी जाती है.

दावों के अनुसार इनके द्वारा वाइरस-बीमारी की दवाइयाँ ईश्वरवादीयो के डीएनए में धीरे धीरे परिवर्तन लाती है और शरीर के अंगो को नष्ट करती जाती है,

जिससे शुरआत के समय में शरीर में कोई विपरीत परिवर्तन का आभास नहीं होता. इसतरह शरीर मे विचित्र बीमारियाँ पैदा होने के कारण जनसंख्या भी निश्चित समय से नष्ट होती जाती है. इनके प्रथम निशाने पर विश्व के बूढे व्यक्ति, बाद में नौजवान माने जाते है. सबसे अंत में अपवादरुप नवजात बालक जिनको नष्ट करने से नहीं, परंतु दवाइयो के जरिये बच्चो के आनुवंशिक गुणो (डी.एन.ए) मे परिवर्तन लाकर शुरुआत से ही उन्हे शैतानियत के धर्म की शिक्षा देकर विश्व मे शैतानियत को स्थापित करने का परम उदेश्य माना जाता है. **इसलिए बच्चो पर अधिपत्य स्थापित करने से पहले उनके माँ-बाप को दवाइयों तक पहुचाकर मृत्यु के हवाले करना शैतान के पुजको के लिए अनिवार्य कार्य माना जाता है.**

जो ईश्वरवादि शैतान के पुजको का षड़यंत्र जानते है और उनके द्वारा लायी जानेवाली किसी दवाई या योजना का हिस्सा नहीं बनते, उनके डीएनए में बदलाव लाने के लिए उन्होंने दैनिक आहार में उपयोग में आनेवाली नैसर्गिक वस्तुओं को **जी.ऍम.ओ (G.M.O) या शारीरिक पोषण के नाम से फोर्टिफाइड (Fortified)** में रूपांतरित करने की योजना अमल मे लायी मानी जाती है, जिससे उनके आनुवंशिक गुणो (डी.एन.ए) मे बदलाव लाया जा सके और ईश्वरशक्ति में माननेवाले व्यक्तियों की आस्था के केन्द्र को आहार के माध्यम से शैतानी वृतियो की तरफ झुकाया जा सके.

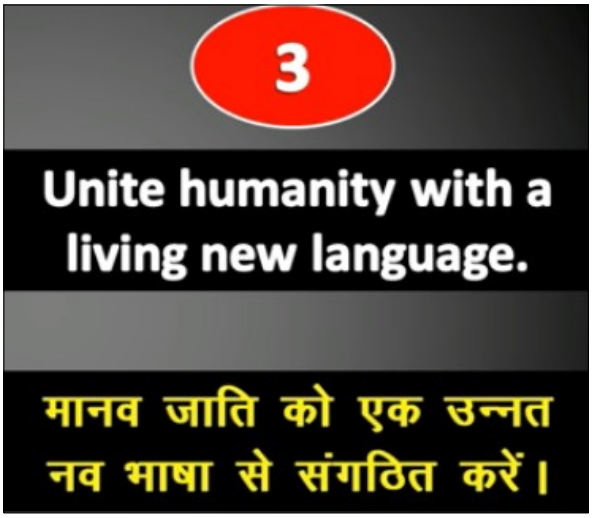

3) कलरबाजी: विश्व में मानवजात एकजूट हो उसके लिए एक वैश्विक भाषा का निर्माण विश्व की एकता के रूपमे होना चाहिए.

आरोपित वास्तविकता: विश्व के सभी ईश्वरवादी धर्मो की मूल विरासत, प्राचीन साहित्य, संस्कृति और परंपरा के लेखो को नयी भाषा से मिटाना इस आज्ञा के साथ देखा जाता है. नयी पीढ़ी को उसी नयी भाषा में प्राचीन साहित्य से अनजान रख या

उसे ईश्वरवादियों के मूल ज्ञान को नयी भाषा मे रूपांतरित कर शैतानीवृति की तरफ झुकाने के लिए उनके वंश को प्रेरित करना इस आज्ञा का मूल अर्थ माना जाता है. शैतानियत में माननेवालो की पसंदी नयी भाषा लिखने और बोलने में कैसी होगी या फिर वर्तमान की किसी भाषा में बदलाव कर उसे अलग ढंग से पेश किया जाएगा उसका राज समय के साथ ही खुलने के दावे किये जाते है. **ईश्वरवादी धर्म के लोगो को धोखा देकर वैश्विक एकता का नाम लेकर "नए वैश्विक धर्म" की अधिकृत स्थापना करना तथा अंत मे उस धर्म को शैतानियत में बदलकर साथ एक नयी भाषा को उस धर्म का माध्यम बनाना भी इस आज्ञा के साथ जोड़कर देखा जाता है.**

4) कलरबाजी: दुनिया के सभी धर्मो की रस्म, मान्यता, विश्वास, त्यौहार, विधियाँ सभी को केवल आस्था या धर्मग्रंथो के कथन अनुसार नहीं, बल्कि वैज्ञानिक प्रमाण अनुसार ही सही और गलत का फैसला देना चाहिए. बिना कारण या वैज्ञानिक सबूत के धार्मिक विधियों पर विश्वास नहीं करना चाहिए.

आरोपित वास्तविकता: विश्व में ईश्वरी शक्ति में माननेवाले सभी धर्मो की विधियों पे लगाम लगे और उनकी आस्था, परंपरा और धर्म की संस्कृति को नष्ट करने के लिए उनके ऊपर कोई "कारण" यानी वैज्ञानिक तर्क देकर नियंत्रण लगाए जाए ऐसा मतलब इस आज्ञा का माना जाता है. धर्मो की आस्था के रूप में की जानेवाली विधियों को जांचने, परखने और सुक्ष्म में शरीर या मन पर इसका क्या असर होता है यह अनुभव करने के पूर्ण साधन भले ही विज्ञान के पास ना हो, लेकिन समाज मे पढ़े लिखे लोगो के मन मे वैज्ञानिक कुतर्क पैदा कर ईश्वरवादियों की धार्मिक विधियाँ, संस्कृति और परम्पराओं को नष्ट कर शैतानियत के लिए नया मार्ग खुला करना इनका मकसद माना जाता है.

विश्व में सभी धर्मो के भिन्न त्योहारों और रस्मो को बेवफूफी बताना और उनमे की जानेवाली विधियों से धुएं-ध्वनि का प्रदुषण फैलना, जल-भूमि या पर्यावरण को नुक्सान पहोचने का राग विश्व में छेड़ने से मतलब भिन्न ईश्वरवादी धर्मो एवं संप्रदायो को बदनाम कर निचा दिखाना तथा अपने ही धर्म का अनुसरण करनेवाले व्यक्ति के मन मे रिवाजो के प्रति धृणा एवं हीनता का भाव पैदा करवाना माना जाता है. **विदेशी शिक्षा से प्रेरित केवल विज्ञान को आखरी सत्य तथा धर्म से ऊपर समजनेवाले ईश्वरवादी लोगो को गुमराह कर और केवल वैज्ञानिक कुतर्क देकर सभी धर्मो का पतन करवाना इनका प्रमुख मकसद माना जाता है.**

दुनिया में सभी ईश्वरी धर्म के लोगो को आपस में लड़वाकर उनकी जनसंख्या कम करना शैतान के पुजको की पहली प्राथमिकता मानी जाती है. इसे पूरा करने के लिए शैतानी संगठन द्वारा नियंत्रित इंटरनेट, टीवी या सोशल मीडिया के जरिये विश्व के हर देश में आबोहवा अनुसार धार्मिक लड़ाई करवाने के लिए माहौल तैयार करवाते रहना इनकी प्राथमिकता मानी जाती है. उदाहरण के रूप मे क्रिस्चियन देश की बस्ती में कैथोलिक और प्रोटोस्टेंट या काले-गोरे के नाम से, मुस्लिम देशो में शिया-सुन्नी के नाम से और हिंदू प्रधान देशो में हिंदू-मुस्लिम के नाम से एक दूसरे धर्म के विरुद्ध लड़ाई का माहौल तैयार करवाने के लिए संसाधन मुहैया करवाने का काम शैतान के पुजको द्वारा किये जाने के दावे विश्वभर में पेश किये गए है. एक दूसरे धर्म को आपस में लड़ाने के लिए उनके रीती-रिवाज़, वस्त्र-आभूषण, रस्मे, त्यौहार में विधिया, धार्मिक यात्रा, जुलुस इन सब की अपने माध्यमों से आलोचना और मजाक बनवाकर लोगो की धार्मिक भावनाये भड़काना दिनचर्या में शामिल कार्य माने जाते है. मकसद यही है की धार्मिक और राजकीय स्तर पर दुनिया मे जितना ईश्वर को माननेवाले धर्मो के बिच तनाव, विभाजन और घर्षण रहेगा, उतना ही शैतान के पुजको के लिए विश्व मे शैतानियत को स्थापित करने मे इन्हे आसानी होगी.

5) कलरबाजी: लोगो और राष्ट्रो की समुचित क़ानून और अदालतों द्वारा रक्षा करे. ईश्वरवादियों को यह बात राष्ट्र की सुरक्षा से जुडी लगती है और जनहित में कल्याणकारी भी.

आरोपित वास्तविकता: यहाँ बात विश्वमे शैतानियत में माननेवाले जिस किसी राष्ट्र में रहते है वहाँ शैतान को पूजने का अधिकार ईश्वरवादियों की तरह उन्हें समानता से मिले और इसके लिए कानून और अदालतों द्वारा शैतानी धर्म में माननेवालो की रक्षा हो ऐसी व्यवस्था तैयार करने से है. मतलब अधिकृत रूप से राष्ट्र और कानूनी व्यवस्था का उपयोग कर विश्व के हर कोने में शैतान को पूजने का धार्मिक अधिकार मिले और शैतान को पूजने का स्थल भी निर्माण करने में कोई अड़चन खड़ी ना हो उसके लिए कानून और अदालतों द्वारा शैतानियत में माननेवाले सभी लोगो की रक्षा करने की बात इस आज्ञा में की गयी मानी जाती है.

6) कलरबाजी: ईश्वरवादियों के अनुसार इस आज्ञा का मतलब है की विश्व के हर देश के आंतरिक शाशन मे न्यायपालिका के ऊपर भी उच्चतम न्यायपालिका के रूप में कोई वैश्विक न्यायपालिका (कोर्ट) हो तो विश्व के हर नागरिक के लिए न्याय पाने की संभावना बढ़ेगी जो जनहित के लिए उचित कार्य है.

आरोपित वास्तविकता: आज्ञा का सीधा मतलब है की विश्व में शैतानियत का राज स्थापित करने के लिए सभी देशो के ऊपर एक महासत्ता स्थापित करना, जिसमे देश के अंदरूनी मामले खुद उसी देश द्वारा देखे जाए परंतू देशो के बिच के बाहरी सरहदी विवाद या अन्य मामले केवल आंतराष्ट्रीय अदालत के द्वारा ही निपटाए जाए. इसके माध्यम से किसी भी देश के ऊपर अपना अधिपत्य स्थापित कर उसके संसाधनों, उधोगो और अर्थव्यवस्था पर अदृश्य नियंत्रण स्थापित किया जा सकता है. यानी सभी देश के संविधान या स्वायतत्ता को आंशिक रूप से ख़तम किया जाए जहाँ बड़ी **विश्व अदालत (World Court)** के साथ एक **विश्व सरकार (One World Government)** हो जिसके हाथ में सभी देशो की बागदौर या नियंत्रण हो ऐसा इस आज्ञा का मूल मतलब माना जाता है.

बोलने के लिए इसे "वन वर्ल्ड गवर्मेन्ट" यानी “एक वैश्विक सरकार” कही जा सकती है, परंतु वास्तविक रूप से ये केवल विश्व के मूल 13 लूसिफ़र (शैतान) के पुजको द्वारा ही निजी रूपसे चलायी और नियंत्रित की जायेगी. इस मकसद को पूरा करने के लिए न्यायपालिका सहित हर देश के सरकारी एकमो को ऑनलाइन या डिजिटल करके इंटरनेट के माध्यम से विदेशो में बैठकर ही देशो के आंतरिक मसले, सरकारे तथा लोगो की निगरानी रखना इनका प्रमुख ध्येय माना जाता है. विश्व के सभी देशो की अपनी पेपर करेंसी नष्ट कर सुरक्षा और सुविधा के नाम से डिजिटल

करेंसी बनाने और अंत मे सभी देशो की डिजिटल करेंसी (मुद्राओ) को एक में मिलाकर एक **"वर्ल्ड करेंसी" या "वैश्विक मुद्रा"** स्थापित करने की योजना इसके साथ कार्यरत मानी जाती है. विश्व के हर नागरिक को इंटरनेट, अनाज-पानी खरीदने से लेकर जीवन की सारी सुविधाएं वैश्विक मुद्रा के साथ जोड़कर विश्व को गुलाम बनाने की अंतिम योजना इन कार्यो से जुडी मानी जाती है.

7) कलरबाजी: ईश्वर मे माननेवाले सभी धर्मो के लोग यही सोचते है की इस आज्ञा का मतलब विश्व के हर देश में बेकार और भ्रष्ट अधिकारियो को दूर कर जनहित में बेकार कानूनों को भी साथ मे नाबूद करना है.

आरोपित वास्तविकता: इस आज्ञा का असली मतलब है की विश्व के हर देश में ऐसे कानूनो पे रोक लगाना या नाबूद करवाना जो शैतानियत के धर्म को फैलने से रोके और ऐसे अफसरो को सत्ता से बेदखल करना जो शैतानियत को फैलाने में उनकी योजना का हिस्सा ना बने. गहरे में इसका मतलब है की **भले ही भ्रष्ट अधिकारी को धन-पद का लालच देकर उससे ऐसे गैरकानूनी आदेश पारित करवाए जाए जो शैतानियत के समर्थन में हो और उनकी षडयंत्रकारी योजनाओ को पूर्ण करने में उनकी सहायता करते हो, लेकिन अंत में वह ईश्वरवादी धर्म में माननेवाला है, इसीलिए ऐसे अधिकारियो को सीडी बनाके उपयोग कर आगे शैतानियत में माननेवाले निजी अधिकारी की स्थापना कर ही अपनी अन्य गुप्त योजनाओ को अंजाम तक पहोचाया जा सकता है.** ठीक ऐसे ही तुच्छ नियमकानून जो उन्हें जो विश्व के हर देश में शैतानियत को आगे बढ़ने में रूकावट लगते है उसे अपने संगठन से जुड़े राजकीय सत्ताधारियो की मदद से दूर करवाना इस आज्ञा का परम उदेश्य माना जाता है.

इस मकसद को पूरा करने के लिए और उसे गति देने के लिए ही विश्व के हर देश में निजीकरण को बढ़ावा देना बड़ा कारण माना जाता है. निजीकरण को बढ़ावा देने के सामने तर्क यह दिया जाता है की सरकार का काम व्यापार करना नहीं है और केवल निजी कंपनियों द्वारा ही कुशल वहीवटी कार्य हो सकता है. परंतु यह पूर्ण सच ना होकर इसके पीछे असली कारण शैतानियत के संगठन से जुड़े बड़े उधोग और कॉर्पोरेट कंपनियों को सरकारी संस्थाए पूर्ण रूपसे खरीदने का अवसर मिले या उसे चलाने का ठेका मिले जिससे विश्व की सभी सरकारो की महत्तम संपत्ति एवं उधोग इनके हाथो में चले जाए और उनकी स्वतंत्र आर्थिक सत्ता कायम हो. यहाँ तक विश्व की सरकार के सभी विभागों में कर्मचारियों को भी प्राइवेट करने का एक बड़ा षड़यंत्र माना जाता है, जहाँ उच्च पदों पर नियुक्त अधिकारी भी निजी संस्थानों के हो तभी यह लोग शैतानियत को स्थापित करने में सफल सकते है ऐसे दावे किये गए है. **आगे की योजनाओ को पूरा करने के लिए और जनता पर सीधा नियंत्रण पाने के लिए विश्व के सभी देशो की पुलिस और सैन्यबल का भी निजीकरण सरकारों द्वारा करवाना अति महत्वपूर्ण माना जाता है, ताकी शैतान के पुजक विश्व के सभी देशो की आंतरिक और आंतराष्ट्रीय सरहदों की नाकाबंदी करवा सके तथा ईश्वरवादियो पर नियंत्रण स्थापित कर उन्हें अपना गुलाम बना सके.**

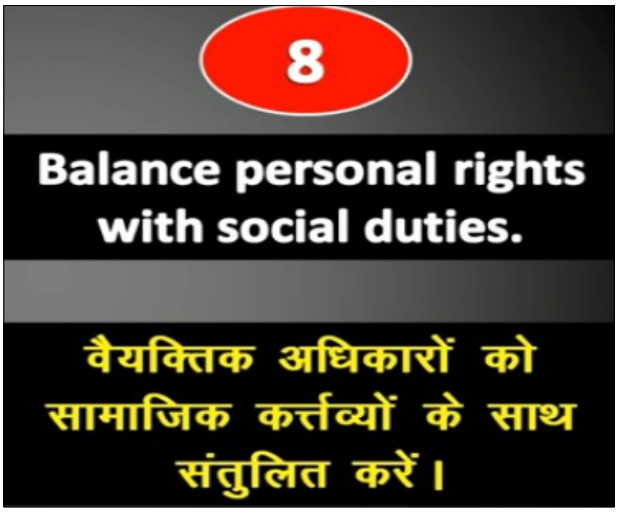

8) कलरबाजी: हर मांगे गए हक़ के सामने सामाजिक कर्तव्य या जिम्म्मेदारी निर्धारित होती है जो हर व्यक्ति को निभानी पड़ती है यही सामान्य मतलब ईश्वरवादी लोग इस आज्ञा का समझते है.

आरोपित वास्तविकता: इस आज्ञा में **"सामाजिक कर्तव्य"** का मतलब है विश्व में एक **कल्ट (Cult) या विधि** निर्माण करना जिसमे ईश्वरमें माननेवालो को डराकर, आकर्षित कर या धोखे से उस विधि में विश्वास पैदा करवाना और बाद में उसके समाधान के रूप में कुछ क्रियाओ को करवाकर उनकी **"बली देना"**, अतः ईश्वरवादियों की जनसँख्या को कम करना इस आज्ञा का मूल मकसद माना जाता है. ठीक इससे विपरीत जो भी ईश्वरी धर्म में माननेवाले बुद्धिमान और जागृत व्यक्ति शैतानियत के कल्ट (Cult) या विधि में ना फसे उनके समूह को पहले से ही भ्रमित होकर फस चुके लोगो के कुटुंब, समाज और देश के लिए बड़ा खतरा बताना, ऐसे दोनों समूहों को विभाजित कर एकसाथ नष्ट करना इनका वर्तमान लक्ष्य माना जाता है. सामान्य व्यक्ति के लिए इस आज्ञा का पूरा मतलब एक-दो वाक्य में समजपाना असंभव है इसलिए इसे विस्तारपूर्वक समझना जीवनरक्षा के लिए महत्वपूर्ण बताया जाता है.

असल में शैतान के पुजको के लिए इस आज्ञा का मतलब बहोत अत्यंत और सूक्ष्म है जिससे ईश्वर में माननेवालो को टुकड़ो में विभाजित कर नष्ट किया जा सके और शैतानियत के कल्ट (विधि) में फसकर अपनी जान गवा चुके लोगो के धन, जमीन, संपत्ति पर बाद में कब्ज़ा किया जा सके. षडयंत्रो को पहचानकर अपने परिवार की जान बचा लेनेवाले ईश्वरवादी व्यक्तियों का मुर्ख ईश्वरवादियों के साथ वैचारिक युद्ध करवाकर उन्हें इस कल्ट (विधि) का हिस्सा बनने पर मजबूर करना जिससे विश्व मे शैतानियत को स्थापित करने के मार्ग में कोई बाधा खड़ी ना हो, ऐसी गुप्त विधि (कल्ट) की रचना करना इस आज्ञा का मकसद माना जाता है. सालो से विश्व

के हर कोने मे बसे ईश्वरी धर्म मे माननेवाले लोग रंग-रूप, रीत-रिवाज, संप्रदाय, गरीब-धनवान, प्रांत, प्रदेश, वर्ण-जाती, भाषा, वेशभूषा और अन्य प्राकृतिक या अप्राकृतिक मतभेदों के कारण विभाजित रहे है. परंतु इन विवादो को अपने नियंत्रित प्रचार माध्यमों से चरमसीमा तक पहोचाने का वैश्विक कार्य शैतान के पुजको द्वारा योजनाबद्ध तरीके से किया गया है, ताकी ईश्वर में माननेवाले लोग हमेशां टुकड़ो मे विभाजित रहे तथा उन्हें कमजोर या नष्ट कर उनपे विजय प्राप्त की जा सके.

समय के साथ युद्ध करने के तरीके भी बदलते है. **दावो के अनुसार, अब शैतान के पुजको ने ईश्वरवादियों से अदृश्य रूपसे लड़ाई लड़ने के लिए जैविक युद्ध (बायो वॉर) को चुना है, जिसमे ना तो कोई शस्त्र नजर आता है और ना ही खून बहता है.** जैविक युद्ध में लेब में प्राकृतिक वाइरस को कृत्रिम केमिकल्स की मददसे अप्राकृतिक बनाकर उसकी लोगो को संक्रमित करने की क्षमता को बढ़ाया जा सकता है. जैविक युद्ध में सूक्ष्म जीवो का उपयोग होता है, जो खुली आँखों से दीखते नहीं पर उसे वातावरण या इंसानी शरीर में फैलाकर अधिक संक्रामक बनाया जा सकता है जो आगे चलके उसकी घातकता अनुसार मानव शरीर को बीमार करने या अन्य जीवसृष्टि को नष्ट करने की क्षमता रखते है. **दावों के अनुसार, शैतान के पुजको ने वर्तमान में अपने प्रचारित माध्यमो से केवल जैविक युद्ध का काल्पनिक डर लोगो में बिठाकर सभी धर्मो के लोगो को वाइरस-बीमारी और इलाज के नाम पे भ्रमित कर विश्व का एक नए रूप में विभाजन किया है, जो शारीरक या धार्मिक ना होकर केवल वाइरस-बीमारी के "काल्पनिक भय" स्वरुप मे है.**

शैतान के पुजको की असली मनशा विश्व के वातावरण में वाइरस फेलाकर लोगो को नष्ट करने की बजाय नैसर्गिक वाइरस को कृत्रिम बनाकर उसे दवाई के स्वरुप में ईश्वरवादियों के शरीर में दाखिल कर उनको नष्ट करने की मानी जाती है. इसकी

बजह शैतान के पुजको की अपनी सुरक्षा भी मानी जाती है की वातवरण में घातक वाइरस फैलने से उनकी अपनी मृत्यु भी संभव है. इसीलिए वाइरस बीमारी का काल्पनिक डर बिठाकर ईश्वरवादी लोगो को खुद की सुरक्षा के नाम से भ्रमित कर जैविक हथियार के स्वरुप में दवाई देना मात्र है जिनसे निर्धरित कार्यक्रम अनुसार उनकी जनसंख्या कम की जा सके. दूसरा की दवाई के माध्यम से जैविक हमला करने से ईश्वरवादी मनुष्य के प्राकृतिक डीएनए को बदलकर एवं उसे अप्राकृतिक बनाकर अपने "शैतान की छाप" अंकित करने का ध्येय भी पूरा हो सकता है.

तो यहाँ शैतान के पुजको का असली ध्येय समज लेना है की-

"दवाई के लिए वाइरस है, नाकी वाइरस के लिए दवाई"

इस विधि द्वारा शैतान के पुजक विश्व के सभी ईश्वरवादी धर्म के लोगो को 2 विशाल समूहों में बांटने की मनशा रखते है, जहाँ एक ईश्वरवादियों का समूह ऐसा हो जो उनके द्वारा वाइरस-बीमारी और दवाई के कुतर्को को सच मानकर समाधान स्वरुप वाइरस से बचने के लिए मास्क पहनना, एक दूसरे से कुछ अंतर की शारीरिक दुरी रखना, भीड़ में ना रहकर धरो से बहार ना निकलना, संक्रमण संभवित इंसानी भीड़ या व्यक्ति के संपर्क में आने के बाद बचाव के लिए कुछ दिन अपने ही घरो में कैद होकर रहना, फर्जी सुरक्षा से भ्रमित होकर वाइरस के इलाज के रूप में उनके द्वारा दी जानेवाली दवाइयों को अपना हित समझकर सेवन करना, ऐसी **कल्ट (विधि)** निर्माण करने के लिए विश्व में सक्रीय रूप से कार्यशील माने जाते है. दूसरी तरफ जो भी बुद्धिमान ईश्वरवादियों का जनसमूह अपने विवेक से षड्यंत्र के झांसे मे आकर ना फसे उनको भ्रमित हुए ईश्वरवादियों के समूह के साथ मानसिक तथा शारीरिक घर्षण पैदा करवाकर आपस में लड़वाना और शैतानी **कल्ट (विधि)** की गुलामी स्वीकारने के लिए मजबूर करने का गुप्त शैतानी फरमान माना जाता है.

शैतानी कल्ट या विधि निर्मित करने का एक उदेश्य मानसिक रूप से कमजोर ईश्वरवादी व्यक्तियों को विश्वभर में पहचान कर उनके परिवार के मन पर सूक्ष्म हमला करना है, जिन्हे केवल अवैज्ञानिक काल्पनिक तर्क मात्र से नियंत्रित किया जा सकता है. मृत्यु का भय हर व्यक्ति को मानसिक रूपसे कमजोर और बुद्धि को शून्य कर देता है, इस मनोविज्ञान को आधार बनाकर अपने नियंत्रित प्रचार माध्यमों से वाइरस-बीमारी का काल्पनिक भय विश्व में निर्मित कर अंत मे लोगो को इलाज के रूप मे उनके संस्थानों द्वारा निर्मित दवाई लेने के लिए तैयार करवाना माना जाता है. काल्पनिक मृत्यु के भय और अकेलेपन से व्यक्ति के शरीर की नैसर्गिक रोगप्रतिरोधक क्षमता और मानसिक शक्ति को कमजोर करना इनकी विधि का एक भाग माना जाता है. बीमारी के डर से उसे अपने परिवार और समाज से वंचित कर अलग करने के साथ चारो तरफ से टीवी, अख़बार, रेडियो, इंटरनेट एवं स्थूल जगहों पर भी वाइरस-बीमारी का काल्पनिक वातावरण निर्मित कर व्यक्ति को अधिक भयभीत बनाने की मानसिक तरकीब शैतान के पुजको द्वारा निर्मित मानी जाती है.

कमजोर ईश्वरवादियों के समूह को वाइरस-बीमारी का काल्पनिक डर वास्तविक लगे उसके लिए शैतानी संगठन के सदस्य नेता, फिल्म जगत के कलाकार, खिलाड़ी, मीडियाकर्मी और डॉक्टरों को भी वाइरस-बीमारी से संक्रमित बताकर मास्क पहनने और बचाव के रूप में उनकी दवाइयों का सेवन करते हुए इंटरनेट, टीवी, सोशियल मीडिया और अखबारों में जोर-शोर से प्रचारित किया जाता है. ऐसे ठग व्यक्तियों को अपने जीवनमे आदर्श माननेवाले या उनकी ठगवाणी या कार्यो से प्रभावित होकर प्रेरणा लेनेवाले निर्दोष लोगो के बाल मन पर इसका गहरा असर होता है जो वाइरस-बीमारी की काल्पनिक कहानी को सच मानने पर मजबूर हो जाता है. शैतानी संगठन द्वारा स्थापित नेता, फिल्म जगत के कलाकार, खिलाड़ी जैसे प्रभावी लोगो को मीडिया में वाइरस-बीमारी से बचाव हेतु फर्जी दवाईयो का सेवन करते हुए दिखाकर अधिक लोगो को इस विधि का शिकार बनाने की विधि शेतानो द्वारा निर्मित मानी जाती है.

आंतराष्ट्रीय षडयंत्रो से अनजान मासूम और निर्दोष ईश्वरवादी लोगो के वाइरस-बीमारी के डर को चरमसीमा तक पहोचाने के लिए विज्ञान के नाम पर "वाइरस टेस्टिंग" की फर्जी पद्धतिया विकसित करवाना और बाद में उन पद्धतियों द्वारा व्यक्ति की टेस्टिंग कर उन्हे वाइरस से संक्रमित (पॉजिटिव) होने की खबरो को प्रकाशित कर वाइरस-बीमारी के डर को अत्यधिक बढ़ाना शैतान के पुजको की अनैतिक चाल का एक हिस्सा माना जाता है. **वाइरस को जानलेवा और धातक सिद्ध करवाने के लिए फर्जी टेस्टिंग पद्दतियो से पॉजिटिव आये लोगो को अस्पतालों में भर्ती कर प्राथमिक इलाज के रूप मे कुछ खास दवाइयों के डोज़ को दो-तीन गुना बढाकर उनके हृदय, किडनी, लिवर जैसे अंगो को क्षति पहुचाकर उन्हें मृत्यु के हवाले करना छलनीति का पहला चरण माना जाता है.** फर्जी दवाइयों से छल पूर्वक मारे गए व्यक्तियों की मृत्यु को वाइरस के संक्रमण से होने का जाहिर कर वाइरस-बीमारी अत्यंत घातक होने का एक डरावना माहौल विश्व भर में निर्मित करना इस कहानी का दूसरा चरण माना जाता है. इस तरह शहर के भीड़ वाले इलाको से शुरू कर दूर गाँवो मे भी वाइरस बीमारी का डर टीवी, अख़बार और इंटरनेट के जरिये फैलाकर लोगो को सुरक्षा के नाम पर उनकी बनायीं दवाइयों तक पहुचाकर मृत्यु के हवाले करना इस खेल का अंतिम मकसद माना जाता है.

ईश्वरवादियों का भावनाशील होना और अपने परिवार की सुरक्षा के लिए संवेदनशील होना शैतान के पुजको का गुप्त और घातक हथियार माना जाता है. शैतान के पूजक दया, भावना और करुणा में विश्वास नहीं रखते और उन्हें इंसान की कमजोरी समझते है. इसीलिए **ईश्वरवादी व्यक्ति को अपने कल्ट (विधि) के जाल में फ़साने के लिए वाइरस-बीमारी को खुद के लिए और अपने परिवार के लिए भी घातक सिद्ध कराना उनके लिए जरुरी कार्य माना जाता है तभी बड़े स्तर पर इलाज के रूप दवाइयों तक लोगो को पहोचाने का मनसूबा साकार हो सकता है.** इस कार्य को पूरा करने के लिए ईश्वरवादी व्यक्ति को अपने परिवार की सुरक्षा के लिए चिंतित कर उन्हें अपनी निर्मित दवाइयों का सेवन करने के लिए प्रोत्साहित करवाना शैतानी मायाजाल का हिस्सा माना जाता है. भीतर और बहार से भय का वातावरण निर्मित कर साथ मे दवाई "मुफ्त देना" या "कम दामों पर" देने का लालच देकर ईश्वरवादी व्यक्तियों को उनकी बनायीं दवाइयों तक पहोचाने का आसान रास्ता भी शैतान के पुजको द्वारा निर्मित माना जाता है. शिकारी के जाल में जैसे शिकार फसता है वैसे ही शैतान के पुजको द्वारा दी गयी दवाई को अपने परिवार के लिए अमृत समझकर ईश्वरवादी व्यक्ति अपने साथ समस्त परिवार को भी दवाई खिलाने के लिए कतार मे खड़े हो जाए ऐसा खेल शैतान के पुजको द्वारा पुरे विश्व मे आयोजित माना जाता है.

ईश्वरवादी व्यक्ति और उसके परिवार को "भूत" वाइरस-बीमारी के लिए जो घातक दवाई दी जाए उसका असर तुरंत ना दिखकर कुछ सालो के बाद हो और तबतक व्यक्ति को दवाई से फर्जी सुरक्षा का आभास वर्तमान में होता रहे, इसीलिए यह विश्व में बड़े पैमाने पर दवाई देने के बाद फर्जी वाइरस टेस्टिंग की रफ़्तार कम कर वाइरस से संक्रमित लोगो की संख्या में कटौती दिखाई जाती है. **इस तरह भ्रमित और षड़यंत्र का शिकार हुए लोगो को फर्जी दवाई से सुरक्षा मिलने का काल्पनिक आभास करवाना इस विधि का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है.** ऐसा करने के पीछे मकसद वाइरस को दवाई से कमजोर होने का झूठा वैज्ञानिक दावा प्रस्तुत कर दवाई के प्रति जनविश्वास स्थापित करना तथा उनके जरिये दवाई को अधिक प्रचलित बनाना माना जाता है. **दवाई के साथ भ्रमित लोगो को एक अवैज्ञानिक कुतर्क भी दिया जाए की वाइरस घातक है और टेस्टिंग ना करवानेवाले, मास्क ना पहननेवाले, एक दूसरे से कुछ अंतर की दुरी ना रखनेवाले, भीड़ में रहनेवाले एवं वाइरस की दवाई ना लेनेवाले लोग उनके परिवार, समाज और देश के लिए बड़ा खतरा है.**

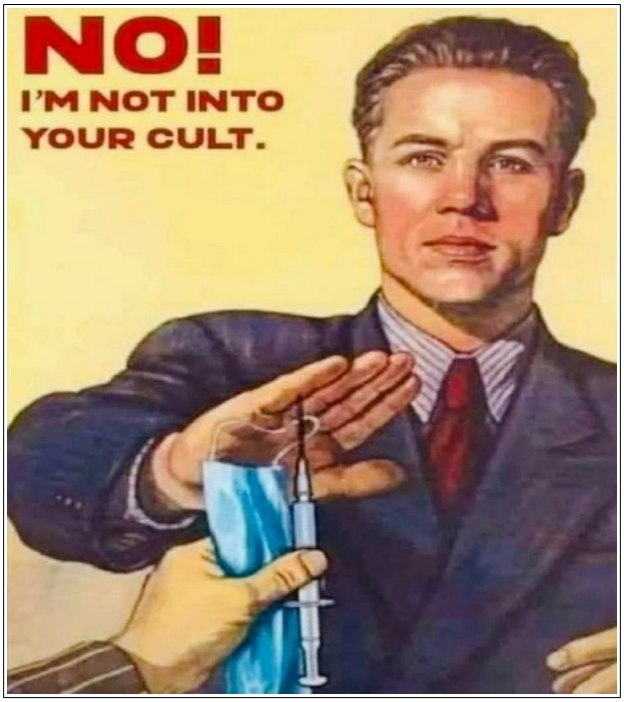

अतः **"वाइरस, बीमारी और दवाई का विरोध करनेवालों के कारण विश्व में वाइरस फेलने से रुक नहीं रहा"**, ऐसा झूठा और अवैज्ञानिक कुतर्क देकर बुद्धिमान लोगो पर शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से आक्रमण कर दोनों विभाजित समूहो को कुत्तो की तरह आपस मे ही लड़वाकर नष्ट करने का वैश्विक षड्यंत्र इस आज्ञा को लेकर माना जाता है.

इस तरह अपने परिवार की सुरक्षा के लिए संवेदनशील, मानसिक रूप से कमजोर, काल्पनिक मृत्यु के भय से ग्रसित या भ्रष्ट मीडिया के दुष्प्रचार से भ्रमित लोगो के साथ "षडयंत्रो के खिलाफ जागृत" लोगो का सीधा मानसिक संघर्ष हो तथा उन्हें किसी भी कीमत पर दवाई लेने के लिए मजबूर किया जा सके ऐसा वैश्विक वातावरण पैदा करवाना इस आज्ञा का मूल ध्येय माना जाता है. इसके साथ ही विश्व के सभी देशो की सरकारों को आंतराष्ट्रीय संस्थाओ के माध्यम से नियंत्रित कर उनसे फर्जी दवाई ना लेनेवालेवालो पर सख्ती के सरकारी आदेश पारित करवाकर उनकी नौकरी, धंधे, व्यवसाय, अनाज-पानी, घूमने फिरने या जीवन जरुरी चीजों की खरीद करने की आज़ादी को छीनकर शैतानी विधी का जबरन हिस्सा बनाने तथा हर शैतानी आज्ञाओ की गुलामी स्वीकारने को मजबूर करवाना आज्ञा का सार माना जाता है. इसके साथ शैतानी संगठन के सदस्य षड़यंत्र में ना फसे बुद्धिमान ईश्वरवादियों को वाइरस फैलाने के लिए जिम्मेदार ठहरना, दवाई ना लेनेवालो को अपने ही घर या कोरन्टाइन सेन्टर बनाके कैद करना, संविधान के सारे मुलभूत अधिकार एवं सरकारी योजना के लाभ से वंचित रखना, घूमने फिरने की आज़ादी छिनकर फर्जी सुरक्षा का वातवरण विश्व में निर्मित करने के लिए शैतान के पूजक कार्यरत माने जाते है.

वाइरस की सामान्य बीमारी को महामारी का स्वरुप देकर तथा फर्जी सुरक्षा के नाम पे सरकारी क़ानून निर्मित करवाकर षड़यंत्र से जागृत ईश्वरवादी लोगो के घर में

जबरन घुसना तथा पुलिस-सैन्यबल द्वारा उन्हें जबरन दवाई खिलाकर "शैतान की छाप" लेने को मजबूर करना इस आज्ञा की पराकाष्ठा माना जाता है. इस उदेश्य की पूर्ति में कोई वैज्ञानिक बाधा या अड़चन खड़ी ना हो उसके लिए विश्व के ईमानदार वैज्ञानिक, डॉक्टर या जागृत सामाजिक कार्यकारो के सोशियल मीडिया एकाउंट्स, बयान, वीडियो और इंटरव्यू डिलीट कर लोगो को असली विज्ञान से वंचित रखना तथा धन के उपयोग से "फेक्ट चेक" वेबसाइटों को उनके पक्ष में परिणाम दिखाने के लिए शैतान के पुजको की अग्रिम भूमिका मानी जाती है. इसके पीछे मकसद यही माना जाता है की सत्य के नजदीक पहुंच चुके शिक्षित व्यक्ति भी इसे केवल अफवा मानकर वो ही बात स्वीकारे जो शैतान के पूजक चाहते है.

फर्जी वाइरस-बीमारी के मायाजाल में फसे ईश्वरवादी के लिए इस आज्ञा का सबसे ख़राब पहलु यह है की जिस दवाई को वह अमृत समजके अपने साथ पुरे परिवार के लिए ले रहा है वह वास्तव में एक धीमा ज़हर माना जाता है. आम तौर पर शैतान के पुजको की कोई भी योजना कम 5 साल से लेकर 10 साल के भीतर की मानी जाती है, ताकी योजना पूर्वायोजित ना दिखकर नैसर्गिक दिखे. इस हिसाब से शैतान के पुजको द्वारा दवाई के रूप में दिए जानेवाले केमिकल्स 5-10 साल के भीतर शरीर के अंगो को नष्ट कर सकते है, जिसमे हार्ट, लिवर, किडनी से संबंधित समस्याए होने पर उसके इलाज के रूप में जीवनभर कमाया धन चला जाए और मृत्यु होने तक शैतानी संगठन से जुड़े संस्थाए बीमारी के इलाज का दूसरा धंधा कर सके ऐसी व्यवस्था का जाल शैतान के पुजको ने बिठाया माना जाता है.

कुछ अपवादरुप किस्सों में जहाँ किसी व्यक्ति की रोगप्रतिरोधक क्षमता कम है या पहलेसे ज्यादा बीमारियों से ग्रसित है तो दवाई का धीमा जहर भी तुरंत असर

कर सकता है और उसकी अकाल मृत्यु (Sudden Accute Death) होने पर दोष हृदयघात, ब्रैनस्ट्रोक, आबोहवा, खान-पान में मिलावट, जलवायु परिवर्तन, दारु, तंबाकू या जीवनशैली का बताकर लोगो को मुर्ख बनाने का कार्य इनके द्वारा पूर्वआयोजित माना जाता है. नजदीकी समय में ऐसे किसी की अकाल मृत्यु होने पर फर्जी दवाई का पाखंड खुल सकता है जो शैतानी योजना का हिस्सा बिलकुल नहीं माना जाता. लेकिन बुद्धिमान लोग ऐसी घटनाओ को ईश्वर के द्वारा दिए गए संकेत के रूप में देखते है. समयांतर से बड़ी संख्या में होनेवाली मौतों को छुपाने के लिए कुछ महीनो के अंतराल से वाइरस के वैरिएंट्स (नए स्वरुप) आने की बात करना और बड़ी संख्या में हो रही मौतों का कारण "वाइरस का नया वैरियंट" सिद्ध कर समयांतर से लोगो को छलपूर्वक दवाई बार बार खिलाने का मार्ग तैयार करवाना शैतान के पुजको की "चांडाल नीति" का आयोजित कार्यक्रम माना जाता है.

साथ ही दवाई से करोडो जान बचाने का झूठा नाटक कर दवाई को वाइरस के इलाज के लिए सबसे प्रभावी बनाना और दूसरी तरफ आयुर्वेद-होमियोपैथी जो की दवाई के ज़हर को नैसर्गिकता के प्रभाव से षड़यंत्र के शिकार हुए लोगो का जीवन बचाने में समर्थवान मानी जाती है, उससे कोई लाभ ना होने की बात कर लोगो की मृत्यु होने तक उन्हे अंधेरे मे रखने की कूटनीतिक चाल शैतान के पुजको द्वारा निर्मित मानी जाती है. दूसरी तरफ बुद्धिमान ईश्वरवादीयो के लिए भी फर्जी वाइरस-बीमारी की कहानी का दुखद पहलु यह है की उसके परिवार में भी अगर कोई सदस्य फर्जी सुरक्षा के नाम पर भ्रमित हो चूका हो तो सबकुछ जानते हुए भी उसके लिए अपने परिवार के सदस्य की जान बचना और उसे दवाई से दूर रखना नामुमकिन कार्य बनजाये. पति अपनी पत्नी, माँ-बाप अपने बच्चो को अथवा बच्चे अपने माँ-बाप को तथा पत्नी अपने पति को भी इस योजना का शिकार होने से ना बचा सके ऐसी गहरी चाल का संदेश इस आज्ञा के साथ जुड़ा माना जाता है.

वाइरस-बीमारी के नाम की दवाई से जनसँख्या कम करने को लेकर शैतान के पुजको का अंतिम मकसद बिना माँ-बाप के बच्चे हासिल करना ही माना जाता है. बिना माँ बाप के बच्चो से मतलब है की माता पिता के मृत्यु के बाद बच्चो पर अपना अधिपत्य स्थापित करना, क्योकी दृढ़ ईश्वरवादियों के विचार बदलना इतना आसन नहीं, बल्कि बच्चो को जन्म के बाद दिए गए संस्कारो तथा नयी शिक्षा पद्धति से शैतानियत को विश्व में कायम करना आसान बनाया जा सकता है. इसके लिए नयी वैश्विक व्यवस्था स्थापित होने के बाद मृत माता-पिता की संपत्तियों को कानूनी मदद से जप्त कर उनके बच्चो की परवरिश का जिम्मा उठाना जहाँ पर शिक्षा व्यवस्था शैतान के पुजको द्वारा निर्मित की जायेगी ऐसे मजबूत दावे विश्व में पेश किये गए है. **फिरभी इन दावों के साथ मनमे प्रश्न आना स्वाभाविक है की विश्व की जनसख्या को कम करने के बाद शैतान के पुजको द्वारा विश्व चलाने के लिए बिना अधिक इंसान की आबादी कार्य किस से करवाए जाएँगे? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए 10 वी आज्ञा के दावों को ठीक से समझना जरुरी है जो विस्तार से वहाँ पर प्रस्तुत किये गए है.**

तो कुल मिलाकर ईश्वरवादी मुर्ख हो या बुद्धिमान, उसका मानसिक संघर्ष तबतक ख़त्म ना हो जब तक वह अपने ईश्वर को भूलकर शैतान की गुलामी स्वीकारने के लिए राजी ना हो ऐसा अदृश्य मनोवैज्ञानिक जाल शैतान के पुजको द्वारा विश्वमे निर्मित किया माना जाता है. दावों के अनुसार, **शैतान के पुजको द्वारा कल्ट (विधि) के तौर तरीके हमेशा एक जैसे ना होकर बदलते रहते है. कभी एक रास्ते से सफलता ना मिलने पर दूसरे तरीके से योजनाएँ अमल में लायी जाती है. बुद्धिप्रधान और भावनाप्रधान समाज को मुर्ख बनाने के लिए इनके तरीके और माध्यम भी अलग माने जाते है. इसीलिए समयांतर से इनकी करतूतो का निष्पक्ष मूल्यांकन कर विशाल जनजागृति से ही इनसे बचाव संभव माना जाता है.**

9) कलरबाजी: सत्य है वहाँ धर्म है, क्योकी सत्य ही धर्म का मूल आधार है. सौंदर्य, प्रेम और अनंत (ईश्वर) की खोज करनेवाले को पुरस्कृत करना चाहिए, मतलब उसको इनाम देना चाहिए या उसकी सराहना होनी चाहिए. यही सामान्य मतलब ईश्वरवादी लोग इस आज्ञा के संदर्भ में मानते है.

आरोपित वास्तविकता: शैतान के पुजको की मान्यता अनुसार शैतान (लूसिफर) या आसुरी शक्ति ही सत्य है. लूसिफर (शैतान) ही सृष्टि की सबसे सुंदर रचना है और उसके लिए प्रेम रखनेवाले और अनंत (शैतान) की पूजा या आराधना करनेवाले व्यक्ति को पुरस्कार से नवाज़ा जाना चाहिए. मतलब उन्हें शैतान की भक्ति करने के लिए इनाम स्वरुप धन, पद या जो भी पुरस्कार की व्यक्ति कामना करे उसे पूर्ण करना चाहिए. **विश्वभर में शैतानियत के संस्थानों से जुड़े सदस्यों का कार्य और बदले में उन्हें इनाम स्वरुप जो भी मिलने के दावे किये गए है उसका विस्तृत वर्णन 10 वी आज्ञा और उसका विश्लेषण पूरा होने के बाद विस्तृत रूप से किया गया है.**

10) कलरबाजी: प्रकृति का मनुष्यजाति से रक्षण करना जरुरी है क्योकी अगर प्रकृति (नैसर्गिक संसाधनों) को मनुष्यो ने अधिक दूषित बना दिया तो जीवसृष्टि का संतुलन बिगड़ जाएगा और मानवजात भी खतरे में आ जाएगी. इसीलिए प्रकृति के पांच महाभूत जैसे की धरती (पृथ्वी), आकाश, वायु (हवामान), अग्नि और जल दूषित ना हो तभी पर्यावरण और समस्त जीवसृष्टि की रक्षा हो सकती है यही सामान्य मतलब इस आज्ञा का ईश्वरी धर्म में मानेवाले लोग समझते है.

आरोपित वास्तविकता: असल में शैतान के पुजको के जीवन में इस आज्ञा का जितना गहरा मतलब और महत्त्व है उतना अन्य किसी चीज का नहीं है. शैतानियत के धर्म को पुरे विश्व में स्थापित करने के लिए और शैतानरूपी अपने मसीहा को ईश्वर की जगह बिठाकर ब्रह्मांड में सर्वशक्तिमान साबित करना इस आज्ञा का असली मतलब एवं उनके जीवन का परम उदेश्य माना जाता है. इस आज्ञा में प्रकृति का मतलब ब्रह्मांड के सारे "ईश्वरनिर्मित नैसर्गिक संसाधन" है. पंचतत्व या पंचमहाभूत भारतीय दर्शन में सभी पदार्थों के मूल माने गए हैं जैसे आकाश (Space), वायु (Quark), अग्नि (Energy), जल (Force) तथा पृथ्वी (Matter). इन्ही पांच पदार्थो से सृष्टि का प्रत्येक पदार्थ बना माना गया है और इन्ही पंचतत्वों पर अपना अधिपत्य स्थापित कर खुद ईश्वर का स्थान ग्रहण करना शैतान के पुजको का परम ध्येय माना जाता है.

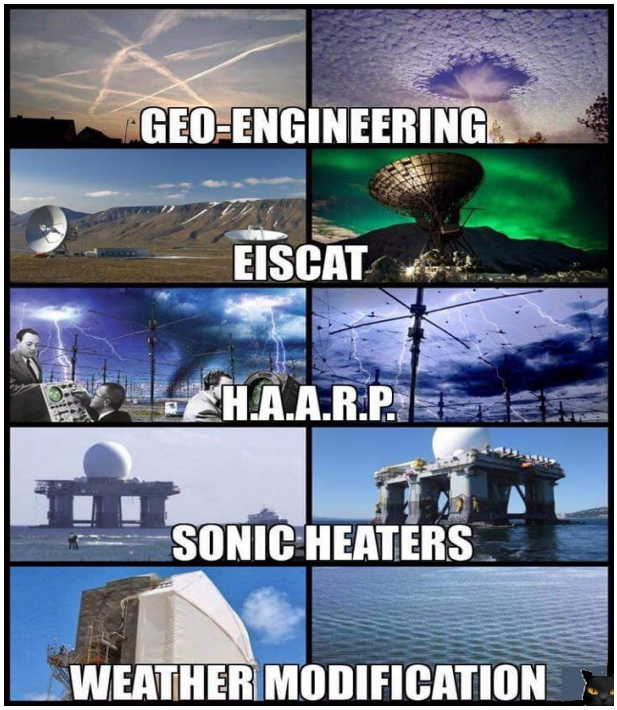

सभी नैर्सर्गिक संस्थानों पर शैतानियत का अधिपत्य ज़माने के लिए ना केवल विश्व के सभी ईश्वरवादी मनुष्य बल्की पशुपक्षी सहित समस्त जीवसृष्टि की संख्या पर

नियंत्रण करना इस आज्ञा का महत्वपूर्ण लक्ष्य माना गया है. साथ ही **प्रकृति पर अपना पूर्ण कब्ज़ा करने के लिए विश्व के सभी देशो की नैसर्गिक खेती को नष्ट कर अनाज की कमी पैदा करवाना और साथ ही पिने के पानी पर भी कब्ज़ा कर लोगो को "शैतान की छाप" लेने के लिए मजबूर करना इनकी आज्ञा का अहमपूर्ण हिस्सा माना जाता है.** क्योकी विश्व की पूर्ण मनुष्य आबादी को अपना गुलाम बनाने के लिए पहले अनाज और पानी पे कब्ज़ा करना जरुरी है. मनुष्य कितना भी धनवान या बेशुमार संपत्ति का मालिक हो, लेकिन अगर उसका अनाज-पानी नियंत्रित किया जाए तो उस पर आसानी से नियंत्रण किया जा सकता है. दूसरा की गरीब और मध्यम वर्ग जिनका धंधा, रोगजार या नौकरी ख़तम कर उसपर केवल धन से प्राथमिक नियंत्रण पाना संभव है, लेकिन इसमें भी अगर बात रोटी-पानी की हो तो अनाज पानी को नियंत्रित करनेसे विश्व के गरीब या धनवान मनुष्य सहित समग्र जीवसृष्टि पर एकसाथ अधिपत्य स्थापित करना कोई असंभव कार्य नहीं माना जाता.

"पर्यावरण और स्वास्थ्य" मनुष्यता के साथ जुड़े ऐसे मुद्दे है, जिनको सुरक्षित करने के नाम पर विश्व मे अपनी षड्यंत्रकारी योजनाओ को हर देश में आसानी से लागू करवाया जा सकता है. शैतान के पुजको की नयी वैश्विक व्यवस्था लाने के लिए वैश्विक योजना के बारे मे जाने उससे पहले यह समझना जरुरी है की **ईश्वरवादियों से अदृश्य युद्ध लड़ने के लिए शैतान के पुजको के पास कैसे और कितने हथियार है?**

ग्लोबल वॉर्मिंग (Global Warming) पृथ्वी के वायुमंडल में मौजूद अधिक गर्मी को कहा जाता है जिसके कारण वैश्विक तापमान में वृद्धि होती है. ग्लोबल वार्मिंग को ही **जलवायु परिवर्तन (Climate Change)** का मुख्य कारण बताया जाता है, जिसकी वजह से समुद्र का स्तर बढ़ता जा रहा है और साथ ही मौसम की स्थिति भी खराब होती जा रही है. तो क्लाइमेट चेंज (Climate Change) या जलवायु

परिवर्तन का मतलब है तापमान और मौसम के पैटर्न में लंबे समय पर आनेवाले बदलाव. ये बदलाव प्राकृतिक हो सकते हैं, लेकिन 1800 के दशक से, मानव गतिविधियां क्लाइमेट चेंज का मुख्य कारण बताई जाती हैं. जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार प्रचारित कारणों में मुख्य रूप से **जीवाश्म ईंधन (Fossil Fuel)** जैसे कोयला, तेल और गैस के जलने पर पैदा होनेवाली गर्म गैस को क्लाइमेट चेंज के लिए जिम्मेदार बताया जाता है. आरोपो के अनुसार, जीवाश्म ईंधन को जलाने से ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन होता है जो पृथ्वी के चारों ओर लिपटे एक कंबल की तरह काम करता है और तापमान को बढ़ाता है. कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड, जल वाष्प, और सिंथेटिक फ्लोरिनेटेड गैसों को ग्रीनहाउस गैसों के रूप में जाना जाता है, और उनके प्रभाव को ग्रीनहाउस प्रभाव कहा जाता है. विशेष रूप से कोयला, तेल, गैसोलीन, और प्राकृतिक गैस को ग्रीनहाउस के लिए जिम्मेदार बताया गया है. **यह सब ईमानदार वैज्ञानिक तर्क है? कलरबाजी से भरा वैज्ञानिक कुतर्क है? या पूर्ण "षडयंत्रो का जाल"? इसका निष्पक्ष मूल्यांकन आवश्यक है क्योकि प्रश्न ना केवल वर्तमान, बल्कि भावी पीढ़ी की सुरक्षा और जीवन के अस्तित्व से भी जुड़ा है.**

दावों के अनुसार बेशुमार दौलत की विरासत के कारण शैतान के पुजको ने दुनिया के अलग अलग हिस्सो में जलवायु परिवर्तन करने के लिए ऐसे गुप्त हथियार और टेक्नोलॉजी विकसित की हुयी मानी जाती है, जिससे विश्व के सभी देशो के नैसर्गिक हवामान को आसमान मे कृत्रिम केमिकल का छिड़काव कर परिवर्तिति किया जा सकता है. कुछ टेक्नोलॉजी ऐसी मानी जाती है जिसे वैज्ञानिक कुतर्को द्वारा जनहित में अच्छी साबित की जा सकती है, उसे जनता के बिच पेटन्टेड करके रखी हुयी है. साथ ही कुछ टेक्नोलॉजी को इंसानो से गुप्त रख उसका उपयोग अपनी कूटनैतिक योजनाओ को पूरा करने के लिए शैतान के पुजको द्वारा किया जाता है ऐसे दावे किये गए है.

दृश्य और अदृश्य जलवायु परिवर्तन की टेक्नोलॉजी के उपयोग द्वारा विश्व के नैसर्गिक वातावरण में बड़ा बदलाव कर सभी देशो में कमोसमी भारी बरसात, हिमपात, सुनामी, भूकंप, तूफ़ान, बाढ़, सूखा, गर्मी की लहरे, जंगलो में आग लगाना, बर्फीले प्रदेशो की बर्फ पिघलाकर नदी और समुद्र में पानी के स्तर को बढाना तथा ज्वालामुखी मे विस्फोट कर पर्यावरण को दूषित बनाने जैसी खतरनाक चीजों को अंजाम दिया जा सकता है ऐसे दावे विश्व में पेश किये गए है. ऐसा करके विश्व के सभी देशो में अप्राकृतिक रूप से खेती को बड़े स्तर पर नष्ट किया जा सकता है जिससे अनाज की पैदावार कम हो और खाने का संकट निर्माण हो. खेती के साथ भूगर्भ जल को भी इन कारणों से प्रभावित किये जाने के प्रबल दावे है जिससे आने वाले समय में खेती, उधोगो और मनुष्यो के लिए पीने के पानी का संकट निर्मित किया जा सकता है. विश्व के सभी देशो में बाढ़, सूखे या भुखमरी की स्थिति पैदा कर जनसँख्या को तो नष्ट किया ही जा सकता है, परंतु इससे बचनेवाले मनुष्यो के लिए भी अनाज और पानी को नियंत्रित कर गुलाम बनाया जा सकता है.

सूर्य की अधिक गर्मी से धरती को बड़ा ख़तरा होने का वैज्ञानिक तर्क विश्व में खड़ा करना और धरती पर सूर्य की अधिक गर्मी को बाधित करने के लिए आसमान में केमिकलो का छिड़काव कर विश्व के सभी देशो के नैसर्गिक हवामान को दूषित करने का नया तरीका शैतान के पुजको द्वारा निजात किया हुआ माना जाता है. **इसके पीछे का मूल ध्येय ही धरती पर सूर्य की किरणे अवरोधित कर नैसर्गिक फल, फूल, वनस्पति और अनाज की पैदावार कम करने का और खाने का संकट विश्वभर में निर्मित करने का माना जाता है.**

प्रकाश संश्लेषण यानि **'फोटो सिंथेसिस' (Photosynthesis)** आवश्यक रूप से पेड़ पौधों की प्रक्रिया मानी जाती है, जिसमे सूर्यप्रकाश बड़ी भूमिका निभाता है और

उन्हें विकसित करने में भी मदद करता है. समाधान रूप आधुनिक खेती के नाम पर जी.एम्.ओ (GMO-जेनेटिकली मॉडिफाइड ऑर्गनिज़म) बीज देकर विश्वभर में खेती का स्वरुप बदलना इनकी मूल मनशा मानी जाती है. कम सूर्यप्रकाश और सिंचाई पानी, वनस्पति-जानवर के डीएनए के मिश्रण या जिन एडिटिंग से बने जी.एम्.ओ (GMO) बीज द्वारा अनाज का उत्पादन करवाना और इसके सेवन से लम्बे समय पर लोगो के शरीर में कॅन्सर जैसी गंभीर बीमारिया निर्मित करवाना इनका गुप्त ध्येय माना जाता है. साथ ही विश्व के अनाज पर शैतानी संगठन से जुड़े संस्थानों का कब्ज़ा हो इसीलिए किसानो को आधुनिक खेती के नाम पर **कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग (Contract Farming)** की तरफ झुकाने के लिए सरकारों के माध्यम से नए कृषि कानूनों को विश्व भर में निर्मित करवाने की योजना शैतान के पुजको द्वारा आयोजित मानी जाती है.

विश्व में जलवायु परिवर्तित कर खेती को नष्ट करनेवाले तीड जैसे कीटको की संख्या में वृद्धि कर किसानो की प्राकृतिक फसलो को नुक्सान पहोचाने का कार्य अनाज का कृत्रिम संकट पैदा करने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है. कीटको की संख्या में वृद्धि कर पुरे विश्व की खेती को नष्ट किया जा सकता है. खेती को जलवायु परिवर्तन से नुक्सान पहुंचने के जूठे और अवैज्ञानिक दावों को सच साबित कर अधिकृत रूप से विश्व की खेती रक्षण करने के नाम पर शैतानी योजनाओ को लागू करने का मौका विदेशी संस्थाओ को मिले ऐसा बड़ा उदेश्य शैतान के पुजको द्वारा निर्मित माना जाता है.

खेती के लिए नुकसानदायी तीड जैसे कीटको की संख्या में वृध्दि करने के साथ विश्व मे मधुमक्खीयो की संख्या को कम कर खेती और जीवसृष्टि को नुक्सान पहोचाने की बड़ी योजना भी षडयंत्रो का हिस्सा माना जाता है. क्योकी मधुमक्खियां,

तितलियां, भंवरे व अन्य कीटपतंगों की संख्या घटने का मतलब है फूलों का ठीक से पराग-निषेचन नहीं होने से फसल भी अच्छी नहीं होगी. शहद बनाने वाली मुधुमक्खियां, भवरे और दूसरे कीट पतंगे परागकण फैलाने व फूलों के निषेचन में भी अहम भूमिका निभाते हैं. लेकिन खेतीबाड़ी के आधुनिक तरीक़ों के बीच इन जीवों की संख्या घट रही है जिससे विश्व कृषि का नुक़सान हो रहा है. आधुनिक खेती में काम आने वाले कीटनाशकों ने मधुमक्खियों का जीना औरभी दूभर कर दिया है और कीटनाशकों द्वारा शैतान के पुजको का विश्वभर मे खेती को नष्ट करने का मनसूबा कामयाब होता देखा जा सकता है. यह तथ्य वैज्ञानिक खोजो में विश्वभर में समाने आये है की विश्व की खेती को बचाने के लिए मधुमक्खियों का रक्षण बहुत ही अनिवार्य है **Link**.

जलवायु परिवर्तन से ना केवल खेती, बल्कि मत्स्य पालन को भी बड़ा नुकसान पहोचाया जा सकता हैं. साथ ही पानी की कमी से सूखे की स्थिति उत्पन होने पर अल्पाइन घास के मैदानों, पौधों और उस पर जीवन के लिए निर्भर जानवरों की प्रजातियों को भी विलुप्त कर पर्यावरण और पोषणकड़ी का संतुलन बिगाड़ा जा सकता है. वायु प्रदूषण के उच्च स्तर और रोगजनकों और मच्छरों के अनुकूल परिस्थितियों के प्रसार के कारण मनुष्यो और जानवरो में संक्रामक रोगो की वृध्दि करवाई जा सकती है. जलवायु परिवर्तन से कुछ सालो के भीतर धरती बंजर हो जाने पर सभी देशो में खाने के लिए संघर्ष पैदा करवाकर ईश्वरवादियों के बिच मारामारी, आंतरिक लूटफाट से समग्र विश्व की अर्थव्यवस्था को धराशायी किया जा सकता है. बाद मे खाने का संकट, कानून-व्यवस्था को ठीक करने के लिए निजी पुलिस एवं सैन्यबल से लोगो को काबू कर शैतानियत के संगठनों को विश्वभर में अनाज पैदा और संग्रहित करने का ठेका दिलवाकर ईश्वरवादियों को अपना गुलाम बनाने का मनसुबा शैतान के पुजको द्वारा आसानीसे पूर्ण किया जा सकता है.

ठीक ऐसा ही तर्क देना की विश्व में भूगर्भ जल केवल इंसानो द्वारा पानी के दुरूपयोग के कारण अधिक निचे चला गया है और साथ झूठा वैज्ञानिक संशोधन करवाकर खेती और उधोग के लिए जरुरी पानी को मनुष्यो के लिए बाधित करने की गहरी योजना कार्यरत मानी जाती है. भूमि से जल निकालने या खुदाई काम के लिए सरकारो द्वारा ही नए कानून निर्मित करवाकर जल को नियंत्रित करने की भी बड़ी योजना अमल मे मानी जाती है. इस तरह समयांतर से जलवायु परिवर्तन द्वारा विश्व में किसानो की आय में कमी लाना, सारी आफतो को कुदरती बताकर किसानो द्वारा लोन या कर्ज ना चुकापाने की स्थिति में जमीनो को अधिकृत रूप से जप्त करना, अधिक आय का लालच देकर किसानो से जी.एम्.ओ (GMO) बीज द्वारा खेती करवाकर फसलों और जमीन को दूषित बनाने के साथ उससे पैदा हुए अनाज को खिलाकर लोगो के स्वास्थ्य को बिगड़ना शैतान के पुजको द्वारा निर्मित एक बड़ा षड्यंत्र माना जाता है. **इनका मूल मकसद विश्व के सभी देशो के गाँव, नदी या समुद्र के किनारे बसी आबादी को शहरों में आकर्षित कर उनकी जमीन-संपत्ति, खेती-अनाज पर अपना अधिपत्य स्थापित करनेका तथा पानी को भी प्राइवेट करना माना जाता है, जिससे सभी ईश्वरवादी मनुष्यो को आसानीसे अपने नियंत्रण में लाया जा सके.**

अपने उपरोक्त सभी शैतानी मनसूबो को पूरा करने के लिए विश्व के सभी देशो के आसमान मे विमानों (Chemtrails) द्वारा जहरीले केमिकलो का छिड़काव करवाकर जमीन, हवामान और नदी-समुद्र के जल, जमीन को दूषित करना इस आज्ञा का परम विधान माना जाता है. उपरोक्त चित्र में दर्शाये गए खतरनाक केमिकल्स जलवायु परिवर्तन के लिए उपयोग किये जाने के दावे किये जाते है जो मनुष्यजाति सहित समस्त जीवसृष्टि के लिए अत्यंत हानिकारक माने जाते है. दावों को झूठा साबित करवाने के लिए इंटरनेट पर यह प्रचार करवाया जाता है की वह केमट्रेल्स (Chemtrails) नहीं, बल्कि कोनट्रेल्स (Contrails) है जो किसी अन्य उपयोग के लिए बनाये गए है और विमानो से धुआँ निकलना वातावरण और तकनिकी कारणों पर निर्भर है. दावों की सच्चाई जानने के लिए **यह वीडियो देख सकते है** और साथ में न्यूज़ आर्टिकल को भी पढ़ सकते है 1 , 2 .

कृत्रिम एवं हानिकारक केमिकलो द्वारा विश्व में जलवायु परिवर्तन करवाना और इससे दूषित हवामान, खेती और पानी से लोगो का स्वास्थ्य ख़राब होने का आरोप किसी वाइरस और उसके द्वारा फैली बीमारी के ऊपर लादना शैतान के पुजको की कूटनैतिक योजना का हिस्सा माना जाता है. साथ ही विश्व का पर्यावरण को दूषित कर उसमे वृद्धि करने का आरोप छोटे कारखानों पर लगाना तथा छोटे-बड़े उधोगो द्वारा कोयला, तेल, गैसोलीन जैसे इंधनो के उपयोग से कार्बन डाइऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड जैसे तत्वों के उत्सर्जन होनेका आरोप लगाकर धंधे रोजगार को नष्ट करना इनका बड़ा लक्ष्य माना जाता है. साथ ही केमिकल के दूषित पानी से जलजीवो और मत्स्य पालन के उद्योगों को नष्ट करना भी इनके ध्येयो में शामिल माना जाता है.

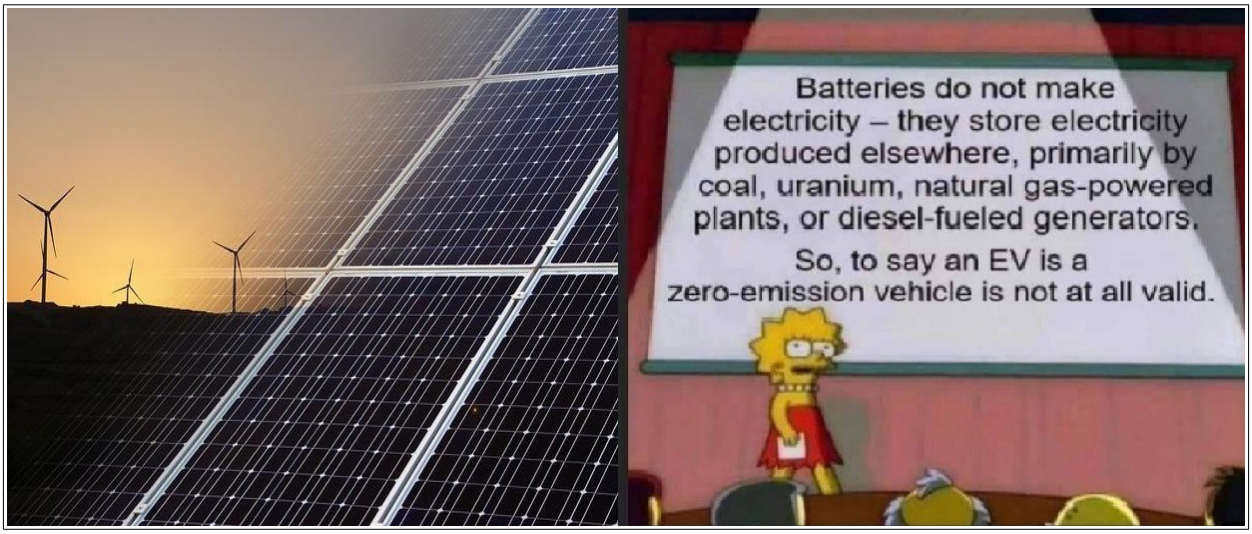

विश्व में कोई भी मनुष्य लकड़ी, कोयला, मेथेन गैस जैसे नैसर्गिक इंधनो का उपयोग कर स्वतंत्रता से गाँवो में भी अपना जीवन ना जी सके और अंत में बिजली

उत्पादन कोयला जैसे इंधनो से ना होकर सौर्य ऊर्जा (सोलर एनर्जी) या पवन चक्की से हो ऐसी योजना शैतान के पुजको द्वारा द्वारा निर्मित मानी जाती है. यहाँ पर भी नैसर्गिक रूपसे बिजली पैदा करवाने के पीछे की मनशा नैसर्गिक श्रोतो का उपयोग करने के लिए नहीं, परंतु ऊर्जा को लेकर उनका उदेश्य विश्व की सामान्य जनता को सार्थक लगे और साथ ही पेट्रोल-डीज़ल की आय पर निर्भर विश्व के सभी देशो की अर्थव्यवस्था को बर्बाद कर उन्हें बिजली से संचालित करना है. **योजना के सबसे आखरी पड़ाव में "डिजिटल इलेक्ट्रिसिटी मीटरो" द्वारा शहर-गाँव के घर एवं सभी उधोग केवल बिजली से संचालित हो तथा उन्हें अपने शैतानी संगठनो से जुडी संस्थाओ द्वारा ही नियंत्रित कर बिजली के लिए उनपर हमेशा के लिए निर्भर बनाने का उदेश्य इसके पीछे कार्यरत माना जाता है. विश्व में बैटरी से चलनेवाले साधनो को विकसित करने के पीछे की मूल मनशा नैसर्गिक ऊर्जा को प्रोत्साहन देने के बजाय उसे बिजली के ऊपर निर्भर करने की मानी जाती है, ताकी मनुष्यो की ज्यादा दूर की यात्रा, घूमने फिरने की आज़ादी ना रहे तथा बैटरी से संचालित वाहनो को चार्ज करने के लिए शैतानी संगठन से जुडी संस्थाओ पर आजीवन निर्भर रहे.**

जलवायु परिवर्तन में उपयोग होनेवाले केमिकल के हानिकारक दुष्प्रभावों का आरोप किसी "भूत वाइरस" पर डालकर तथा वाइरस टेस्टिंग फर्जी पद्धतियाँ विकसाकर लोगो का बीमारी पर यकीन कायम करवाना और बाद में दवाई को वाइरस के इलाज के लिए अक्सीर बताकर भ्रमित लोगो को दवाई के रूप में धीमा जहर देना कूटनैतिक चाल का पहला हिस्सा माना जाता है. भूत वाइरस से प्रचारित मृत्यु के काल्पनिक डर, दुष्प्रचार से भ्रमित या परिवार के लिए मिलनेवाली फर्जी सुरक्षा के नाम से आस्वस्थ होकर शैतान के पूजाको द्वारा बनाई दवाई से लोगो का शरीर कुछ सालो में गंभीर रोगो का घर बन जाए और उनकी मृत्यु होने तक शैतानी संस्थानों द्वारा अन्य बीमारीयो के लिए दवाइयों का व्यपार करना दूसरा ध्येय माना जाता है.

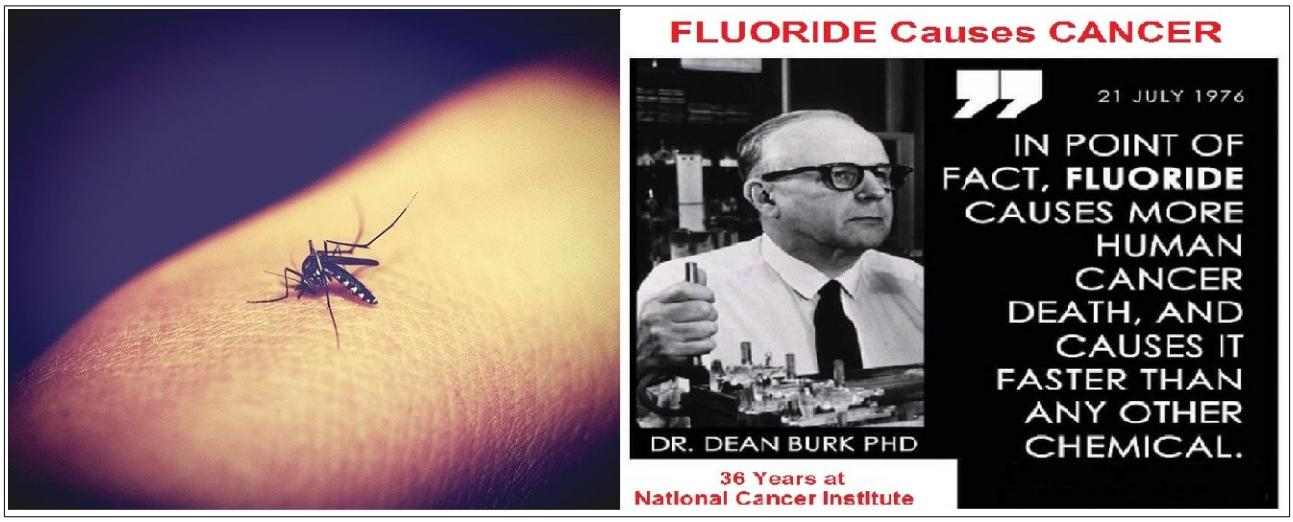

शैतानी कूटनैतिक चालो में ना फसनेवाले व्यक्ति को बीमार करने के लिए शैतान के पुजको ने युक्तिपूर्वक मच्छरो का चुनाव किया है, ऐसे दावे विश्व मे किये गए है. मच्छरो द्वारा अधिक बिमारिया फैलने का तर्क देकर नाट्यात्मक योजना के भाग स्वरुप उसे रोकने के लिए **"जीनेटिकली मॉडिफाइड मच्छरो" (Genetically Modified (GM) Mosquitoes)** का लैब में निर्माण करवाना जो अपने डंख द्वारा व्यक्ति का खून चूसते वक्त बीमारियों के प्रसार को रोकने के तर्क इसके पीछे दिए जाते है. **लेकिन वास्तव मे "जीनेटिकली मॉडिफाइड मच्छर" के निर्माण करने का उदेश्य वायरस के नाम पे फर्जी दवाईया ना ग्रहण करनेवाले जागृत व्यक्तियों के खून में मच्छरो के दंश द्वारा केमिकल-वाइरस दाखिल करवाना माना जाता है जिससे उनका शरीर प्रायोजित बीमारियों का घर बने तथा उस वाइरस के संक्रमण से ग्रसित व्यक्तियों की संख्या विश्व में बढाकर उसे महामारी का स्वरूप दिया जा सके.**

जलवायु परिवर्तन के जहरीले केमिकलो से विश्व में पीने के पानी के श्रोत जैसे पहाड़ी नदियाँ, तालाब, जलाशय को दूषित कर उस पानी को फ्लोराइडेशन की प्रक्रिया से शुद्धिकरण करने के नाम पर "सुरक्षा के मानक से अधिक फ्लोराइड की मात्रा" पानी मे मिलाना योजनाओं में शामिल कार्य माना जाता है. अधिक फ्लोराइडयुक्त पानी के सेवन से लोको को जल्द केन्सर जैसी गंभीर बीमारियों से ग्रसित कर मृत्यु के मुखमें धकेलना विश्व की जनसंख्या कम करने के लिए महत्वपूर्ण कदम माना जाता है. **उपयुक्त सारी वस्तुओ से जीवन की रक्षा करने के लिए त्रिफला जैसी आयुर्वेद या होमियोपैथी की कुछ असरकारक दवाएं जो खासकर खून को साफ़ रखने में और मष्तिष्क की बीमारियों से भी लड़ने में मददगार साबित हो सकती है उन दवाइयों के प्रचार को रोकना, फर्जी रिसर्च द्वारा नैसर्गिक दवाओं के असरदार ना होने अथवा नुक्सानदेहि होने के झूठे सबूत पेश करने जैसे कार्य जनसंख्या को कम करने की योजनाओ को बिना किसी अवरोध पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण माने जाते है.**

मनुष्यो की जनसँख्या की तरह विश्व मे पशुओ की संख्या भी कम करने के पीछे उनके प्राकृतिक डीएनए को कृत्रिम दवाइयों से अप्राकृतिक बनाना तथा जानवरो द्वारा मनुष्यो को मिलनेवाले दूध, मांस सहित अन्य सभी वस्तुओ को दूषित एवं खतरनाक बताकर उनपर नियंत्रण लादना शैतान के पुजको का बड़ा लक्ष्य माना जाता है. **वनस्पति तथा जल को आसमान से छिड़के केमिकलो द्वारा दूषित कर पशुओ के शरीर मे अजीब बीमारियाँ पैदा करवाना जिसे बादमे कोई घातक वाइरस का संक्रमण है ऐसा प्रचारित करवाकर वाइरस से बचाने के लिए पशुओ को ज़हरीली दवाइयाँ खिलाकर बीमार करने के साथ पशुओ से मनुष्यो मे वाइरस का संक्रमण घातक होने का काल्पनिक डर फैलाकर विश्व मे बड़े पायमाने पर करोडो पशुओ की कतल करवाना इनकी कूटनैतिक योजना का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है.** पशुओ के शरीर में रोगो की उत्पत्ति करवाकर उनके दूध, मांस को मनुष्य के लिए घातक सिद्ध कर तथा पशुओ की क़त्ल करने का भावी उदेश्य शैतानी संगठनो द्वारा लेब से बने कृत्रिम दूध-मांस जैसी वस्तुओ का व्यापार कर मनुष्यो को इसके जरिये बीमार रखना तथा उनका स्वास्थ्य नियंत्रण करना माना जाता है. **भविष्य मे मनुष्यो का भोजन वनस्पति या पशु-मांस जैसा नैसर्गिक ना होकर शैतानी जीवनशैली अनुसार कीड़े, मकोड़े तथा लेब मे कृत्रिम तरीके से बना अप्राकृतिक भोजन रहे जो केवल शैतानियत से जुड़े संस्थानों द्वारा ही निर्मित और संग्रहित करवाया जाए ऐसी व्यवस्था लाने की योजना इसके पीछे कार्यरत मानी जाती है.** वाइरस की सामान्य बीमारी को महामारी बनाकर ना केवल मनुष्यो, जानवरो बल्कि वनस्पति में भी कोई वायरस का घातक संक्रमण हुआ है ऐसा वैज्ञानिक कुतर्को के माध्यम सिद्ध कर खेती नष्ट करने का हक़ प्राप्त करना बताया जाता है जिससे अनाज का कृत्रिम संकट पैदा किया जा सके. सरकारों को नियंत्रित कर हर देशो मे महामारी के क़ानून निर्मित करवाना जो व्यक्ति के घर में घुसने, जबरन टेस्टिंग करने, दवाई खिलाने, कैद करने तथा फर्जी सुरक्षा के नाम पर खेती-अनाज के साथ घर के सामान को नष्ट करने की इजाजत दे जिनके द्वारा लोगो पर दमन करके गुलाम बनाना बड़ा उदेश्य माना जाता है.

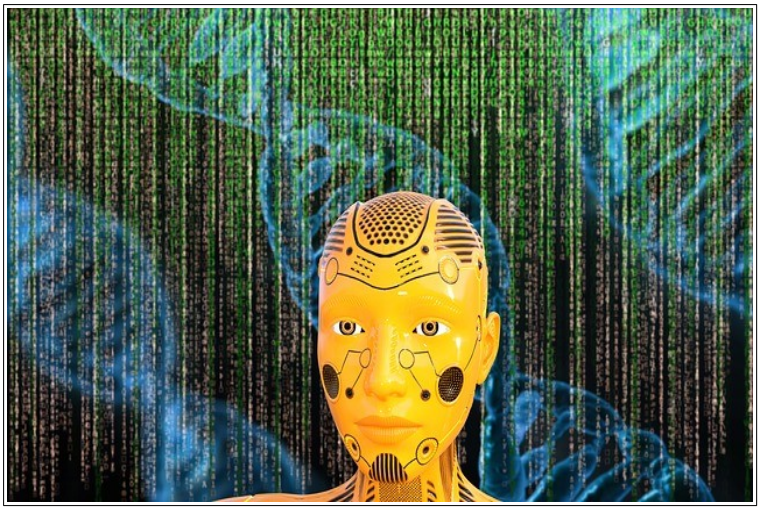

चौथी औधोगिक क्रांति (The Fourth Industrial Revolution, 4IR) के तहत आज शैतान के पुजको के पास विज्ञान की सबसे अद्यतन टेक्नोलॉजी होने के दावे विश्वभर मे किये गए है जिसमे आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (Artificial Intelligence) यानी **"कृत्रिम बुद्धिमत्ता"** शामिल है. दूसरे शब्दों में इसे मशीनी बुद्धि या मशीनी दिमाग भी कहा जाता है जिसकी मदद से मशीनों को समझदार और बुद्धिमान बनाया जा सकता है ताकि वे स्वचालित रूप से काम कर सके और इंसानों पर उनकी निर्भरता कम हो सके. आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस एक उच्च कोटि का कम्प्यूटर विज्ञान है जिसकी मदद से मशीनों में बुद्धिमत्ता का विकास किया जा सकता है. अर्थात् ऐसे रोबोट्स (Robots) और कंप्यूटर प्रोग्रामस (Computer Programs) बनाए जा सकते हैं, जो मानव मस्तिष्क के सिद्धांत पर कार्य करें और उन्हीं तर्कों का इस्तेमाल करें जो मानव मस्तिष्क करता है. **बेशुमार दौलत और सालो की रिसर्च के बाद शैतान के पुजको ने आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस क्षेत्र में अपार सिद्धियाँ प्राप्त की हुयी मानी जाती है जिसका उपयोग विश्व मे केवल अपने शैतानी गुप्त मनसूबो को पूरा करने के लिए आरोपित है. इसीलिए वाइरस और बीमारी की आड़ में ज़हरीली दवाइयाँ देकर जब विश्व की जनसँख्या कुछ सालो के भीतर धिरे से कम होती जाए तभी तबक्के से आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस से संचालित रोबोट की टेक्नोलॉजी लोगो के बिच लाकर जो काम मनुष्य कर सकता है उसे रोबोट द्वारा करवाने की लम्बी योजना शैतान के पुजको की बताई जाती है.**

दशक मे दवाइयो के जरिये जनसँख्या कम करने के बाद विश्व में बचे हुए व्यक्तियों को गुलाम बनाने के लिए शिक्षण, औधोगिक उत्पादन, मकान निर्माण, निगरानी तंत्र, पुलिस और लश्करी दल, अवकाशी खोज, नर्सिंग, सर्जरी, भाषा की पहचान-अनुवाद तथा अन्य कई क्षेत्रो में बिना किसी मानव की मदद कार्य आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस से संचालित रोबोट द्वारा करवाने मे शैतान के पुजको को सफलता प्राप्त हो चुकी है,

परंतु विश्व में अपार शिक्षित बेरोजगारी और गरीबी आने से जन विरोध का सामना ना करना पड़े उसके लिए जनसंख्या को पहले ही कम करना और अंत में उसे लोगो के बिच टेक्नोलॉजी को स्थापित करना शैतान के पुजको का ध्येय माना जाता है.

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के साथ **नैनो टैकनोलजी (Nano Technology)** क्षेत्र मे भी शैतान के पुजको ने सफलता प्राप्त की मानी जाती है, जो की मनुष्य के बाल से भी अनेक गुना छोटी या सूक्ष्म मानी जाती है. नैनो टैकनोलजी चिकित्सा विज्ञान और अन्य वैज्ञानिक क्षेत्रो मे क्रांति मानी जा सकती है, जिसके तहत ऐसे नैनो रोबोट निर्माण किये जा सकते है जो हृदय की धमनियों में जाकर सर्जरी क्रिया कर सकते है या शरीर के अंदर लगाईं गयी माइक्रोचिप जो बड़ी मात्रा में सूचनाएं भंडारित कर कंप्यूटर या मोबाइल के साथ इंटरनेट के माध्यम से जुड़कर शरीर के अंदर की सूचनाओं, हॉर्मोन या मानसिक विचारो में बदलाव को दूसरे स्थान पर भेज सकती है.

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और नैनो टैकनोलजी के समन्वय से शैतान के पुजको को मनुष्य के प्राकृतिक डीएनए को हैक करने मे सफलता मिल चुकी है ऐसे दावे किये गए है. यह टेक्नोलॉजी मनुष्य के शरीर में दाखिल करने के लिए वाइरस-बीमारी की दवाइयों से बीमार किये गए मनुष्योको तथा पहले से गंभीर बीमारियों से ग्रसित मनुष्य की पुरानी बीमारियां दूर करने का प्रलोभन देकर उनके शरीर में टेक्नोलॉजी दाखिल करने की योजना मानी जाती है. इन टेक्नोलॉजी के माध्यम से ना केवल मनुष्य के शरीर, मन का डाटा ग्रहण करने की बात है, परंतु साथ इंटरनेट के माध्यम से बहार से सूचनाएं भेजकर मनुष्य के शरीर और मन को नियंत्रित करने की योजना भी मानी जाती है. क्योकि अगर इंटरनेट से कुछ भेजा जा सकता है तो ग्रहण भी किया जा सकता है. **समस्त विश्व को केवल बिजली से संचालित करने के पीछे भी आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और नैनो टैकनोलजी कारणभूत मानी जाती है,**

जिसमे इंसान के शरीर में दाखिल किये गए नैनो रोबोट को चलाने के लिए बिजली की आवश्यकता होती है और कद-वजन अनुसार नैनो रोबोट को संचालित या चार्ज करने के लिए ना के बराबर ऊर्जा जरुरी मानी जाती है. कुल मिलाकर शैतान के पुजको द्वारा मशीन और मनुष्य के बिच समन्वय स्थापित कर विश्व के सभी ईश्वरवादि मनुष्यो को गुलाम बनाकर इंटरनेट के माध्यम से नियंत्रण स्थापित करने का गुप्त और महत्वपूर्ण लक्ष्य शैतान के पुजको का माना जाता है.

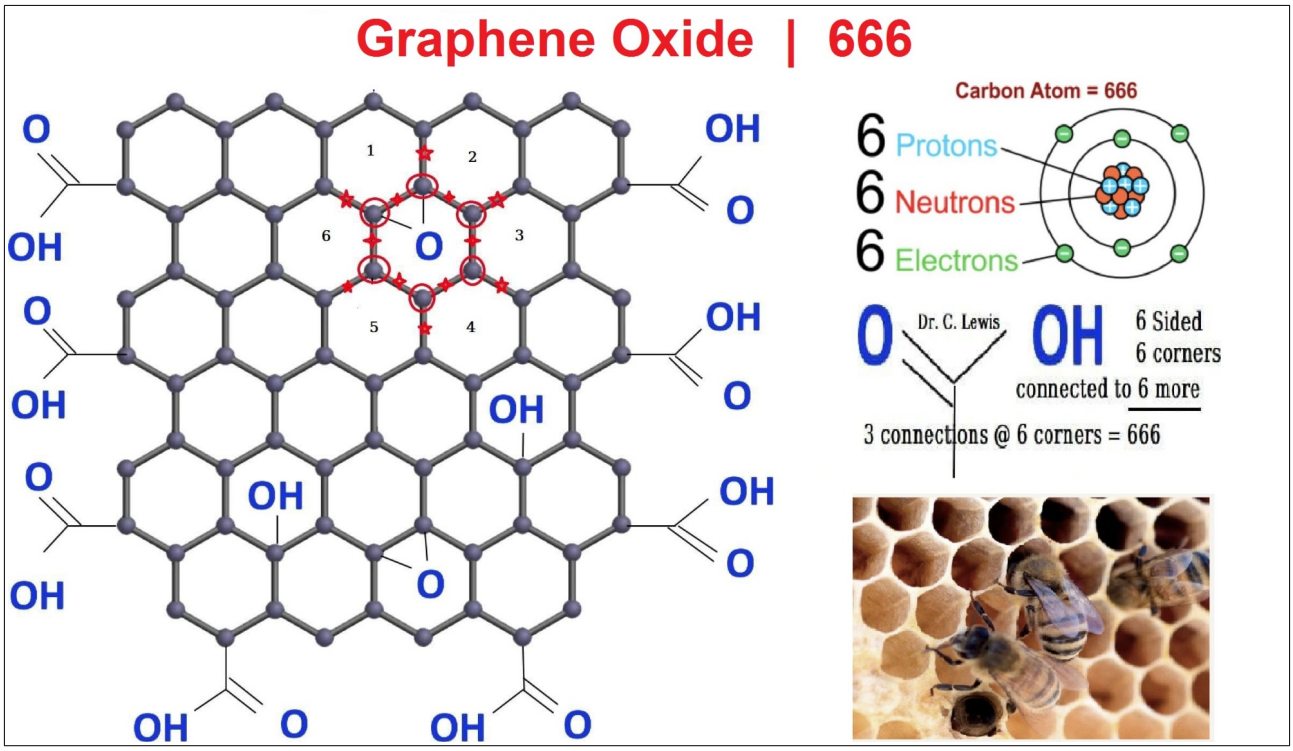

मनुष्यो के शरीर में नैनो रोबोट जैसे सूक्ष्म उपकरणों को बिजली के जरिए चार्ज कर उसे इंटरनेट के माध्यम से जोड़कर बिना इंसान की जानकारी के ही शरीर का डाटा ग्रहण करने तथा भेजने के लिए शैतान के पुजको द्वारा "ग्राफीन ऑक्साइड" (Graphene Oxide) नामक पदार्थ को चुने जाने के मजबूत दावे विश्व में किये गए है. ग्राफीन ऑक्साइड (Graphene Oxide) कार्बन परमाणुओं से बना एक पदार्थ है, जो मधुमक्खियों के छत्ते की तरह दिखनेवाले षट्कोणीय (Hexagonal) पैटर्न में एक साथ बंधे होते हैं. ग्राफीन को दुनिया में सबसे मजबूत सामग्री माना जाता है, साथ ही बिजली और गर्मी के लिए सबसे अधिक प्रवाहकीय में से एक माना जाता है. इलेक्ट्रॉनिक्स और चिकित्सा क्षेत्र जैसी अन्य जगहों पर इसका प्रयोग किया जाता है. शरीर में चुंबकीय आकर्षण पैदा करने के लिए भी इसे जिम्मेदार माना जाता है.

दावों के अनुसार शैतान के पुजको द्वारा वाइरस-बीमारी की फर्जी टेस्टिंग किट और फर्जी दवाइयों में ग्राफीन ऑक्साइड मिलाकर शरीर में गुप्त तरीके से प्रवेश करवानने

का मार्ग खोजा हुआ माना जाता है जो शरीर मे गंभीर बीमारियो को जन्म देने के लिए भी जिम्मेदार माना जाता है. संभवतः इसे नाक से या कॉकटेल के स्वरुप मे दी जानेवाली दवाइयों के माध्यम से भी इंसानो के शरीर में प्रवेश करवाना इनके ध्येयो में शामिल माना जाता है. वाइरस और फर्जी बीमारी के नाम पर दवाइयों द्वारा कृत्रिम केमिकल के माध्यम से भ्रमित एवं मानसिक रूप से कमजोर व्यक्तियों का डीएनए बदलना तथा इंटरनेट के माध्यम से आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और नैनो टैकनोलजी द्वारा उनकी मानसिक स्थिति का अध्यहन करना, मधुमक्खियों के छत्ते की तरह कम्प्यूटर प्रोग्राम के जरिये संदेश भेज कर उनके मनको नियंत्रित करना इस प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य माना जाता है. दावों के अनुसार, **इस कार्य को पूरा करने के लिए इंटरनेट के साथ मोबाइल टावरों की फ्रीक्वन्सी और रेडिएशन की मात्रा भी अनिवार्य प्रक्रिया का हिस्सा मानी जाती है.**

शैतान के पुजको की बड़ी उपलब्धियों में **कोंटम फिजिक्स (Quantum physics)** यानी पदार्थ विज्ञान भी शामिल माना जाता है. कोंटम पदार्थ विज्ञान का वह हिस्सा है जिसमें बहुत छोटे कणों जैसे की मॉलिक्यूल (molecule), ऐटम, इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन, जैसे सब-अटॉमिक कणों को समझा जाता है. कोंटम कम्प्यूटिंग (Quantum Computing) के जरिये कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) में बहुत बड़ा बदलाव संभव हुआ है. एक साधारण कंप्यूटर चिप बिट्स (Bits) का उपयोग करता है. प्रत्येक ऐप (App) जो हम उपयोग करते हैं, हर वो वेबसाइट जिसे हम खोलते हैं, हर फोटो जो हम कैमरे या मोबाइल से खींचते हैं वे सभी ऐसे ही लाखों-करोड़ों बिट्स और 1 व 0 के संयोजन से बनती है, लेकिन यह तकनीक हमें आज तक यह नहीं बता पाई कि वास्तव में ब्रह्मांड किस तरह काम करता है. यहां तक कि मानव द्वारा बनाए गए सबसे बेहतरीन सुपर कंप्यूटर (Super Computer) भी आज तक इस सवाल का जवाब नहीं दे पाए.

यह दरअसल हमारे फिजिक्स (Physics) की नींव है जो रसायन विज्ञान (Chemistry) से भी जुड़ी हुई है, जिसका सीधा संबंध जीव विज्ञान (Biology) से है. इसलिए वैज्ञानिकों को फिजिक्स, केमिस्ट्री और बॉयोलॉजी की सटीक गणना के लिए ज्यादा बेहतर कम्प्यूटर तकनीक की जरुरत को पूरा करने के लिए तथा तीनों में मौजूद किसी भी अनिश्चितता (Uncertainity) को संभालने के लिए कोंटम कम्प्यूटर विकसित किये गए है. **सुपर कंप्यूटर बाइनरी नंबर सिस्टम Bit का उपयोग करते हैं वहाँ पर कोंटम कंप्यूटर न्यूट्रॉन और प्रोटॉन आधारित Qubit सिस्टम का उपयोग करते हैं. सुपर कंप्यूटर एक बार में एक bit या तो 0 या तो 1 लेता है, वहाँ पर कोंटम कंप्यूटर एक बार में 0 OR 1 OR (0,1) दोनों नंबर ले सकता है.** सुपर कंप्यूटर की अपनी कोई वर्किंग मेमोरी नहीं होती है, वहाँ कोंटम कंप्यूटर अपनी वर्किंग मेमोरी होती है, जिसके कारण वे सुपर कंप्यूटर से फास्ट होते हैं.

विश्व के लगभग सभी देशो में सब सुविधाओं को डिजिटल करने का और गुनाह को पकड़ने के लिए सहायभूत होने का तर्क देकर सब लोगो की चहेरे, ऊँगली, अंगूठे और आँखों की पुतली की छाप लेकर उन्हें डिजिटल पहचान (Digital Identitiy) देने के पीछे शैतान के पुजको की मूल मनशा नजदीकी भविष्य मे समूह निगरानी तंत्र (Mass Surveillance State) निर्मित करवाने की मानी जाती है. मतलब आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस, नैनोटेक्नोलाजी और क्लाउड कंप्यूटिंग की मदद से मनुष्य के शरीर की अंदरूनी और बहार की सारी गतिविधिया जिवंत रिकॉर्ड करने की है, जिससे उनपर पूर्ण तरीके से नियंत्रण स्थापित किया जाए और इंटरनेट के जरिये बाहरी संदेश भेजकर उनके मन और विचारो को ऐसे परिवर्तित किया जाए जिसमे किसी भी प्रकार की वैचारिक क्रांति जन्म ना ले एवं उनके शासन को भविष्य में कोई खतरा ना रहे, ऐसी योजना शैतान के पुजको की मानी जाती है. साथ ही जनसँख्या

कम होने के बाद बचे हुए लोग असल दुनिया से अलायदा होकर हमेंशा के लिए काल्पनिक दुनिया में जीवन जिए उसके लिए गेम्स या यंत्रो की मददसे मेटा यूनिवर्स (Meta Universe) निर्माण करना इनके उदेशो में शामिल माना जाता है.

कुल मिलाकर इंसान के काम करने से लेकर उसके घूमने फिरने के हर गली-नुक्कड़ के रास्ते पर लगभग 500 मीटर के अंतर पर कैमरा से संचालित पूर्ण निगरानी तंत्र स्थापित करने के लिए शैतान के पुजक विश्व में हर मुमकिन चीज को डिजिटल करने के लिए प्रोत्साहित और प्रलोभन देने के लिए कार्यशील माने जाते है. ना केवल बहार की दुनिया, लेकिन बिजली से संचालित उपकरणों का उपयोग और समय-विधि बिजली के डिजिटल मीटरो के माध्यम से रेकॉर्ड करना और ऊर्जा वपराश के लिए मर्यादा स्थापित करना भी उनके उदेशो में शामिल माना जाता है. **हर देश मे ट्राफिक, वाहन व्यवहार नियंत्रित करने के लिए मानव पुलिस-आर्मी को हटाकर आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस से संचालित रोबोटस द्वारा मानव चहेरे एवं गाड़ियों की पहचान कर सभी कार्यो को बिना किसी इंसान केवल इंटरनेट के माध्यम से नियंत्रित करने की योजना कार्यरत मानी जाती है.**

वाइरस-बीमारी का काल्पनिक डर निर्मित कर दवाइयों के माध्यम से जनसँख्या कम करने के साथ जलवायु परिवर्तन से खेती को नष्ट कर पुरे विश्व में भुखमरे की स्थिति पैदा करवाना, देशो की अर्थव्यवस्था बर्बाद कर धंधे रोजगार, लघु उधोग और रिटेल व्यापार को नष्ट कर ऑनलाइन व्यापार को प्रोत्साहित कर देशो में बेरोजगारी बढ़ाना, सरकारी नौकरिया ख़तम कर सभी संस्थानों को प्राइवेट करवाना, जलवायु परिवर्तन से देशो में बाढ़-सूखे, ठंड-गर्मी, सुनामी, भूकंप के प्रक्रोप से मनुष्य, जानवर सहित समस्त जीवसृष्टि की जनसँख्या धीरे धीरे कम करते जाना शैतान के पुजको के मूल ध्येयो में शामिल माना जाता है. लेकिन इसके अलावा वाइरस बीमारी के नाम

पर विश्व के देशो की अर्थव्यवस्था को बर्बाद कर उन्हें आर्थिक रूप से पायमाल कर कुछ सालो के भीतर सारे सरकारी संस्थानों को प्राइवेट करना इनका दूसरा ध्येय माना जाता है, ताकि सभी देशो मे बिना स्थानीय सरकार सबकुछ केवल विदेश के निजी संस्थानो द्वारा ही चले एवं नियंत्रित किये जाए.

इससे भी आगे जाकर जब सारे देश विदेशी कर्ज में डूब जाने पर तथा देशो के सरकारों की अपनी कोई आय और संपत्ति ना रहने पर फर्जी वाइरस-बीमारी से देश को सुरक्षित करनेका का नाटक कर सभी अमीर लोगो की संपत्ति जैसे घर, प्राइवेट जमीन, बैंक खातो या लोकरो में जमा धन को सरकारो के माध्यम से "नया आपदा कानून" निर्मित कर जप्त करवाना इनका अंतिम ध्येय माना जाता है.

पुरे विश्व की अर्थव्यवस्था को नष्ट करने के लिए कृत्रिम आफतो के निर्माण से वाहन व्यवहार को अवरोधित करने के साथ ATM मे पैसो की किल्लत खड़ी कर देशो की पेपर करंसी (Paper Money) को नष्ट करना इनके मुख्य ध्येयो में शामिल माना जाता है. साथ मे ग्लोबल सप्लाई चैन को तोड़कर अनाज का कृत्रिम संकट पैदा करवाना, विश्वयुद्ध का वातावरण निर्मित कर शेर मार्किट को तबाह करना तथा पेट्रोल-डीज़ल सहित कोयले जैसे नैसर्गिक इंधनो की कृत्रिम अछत पैदा करवाकर बिजली से संचालित औधोगिक व्यवस्था लाने की वैश्विक योजना कार्यरत मानी जाती है. इन कार्यो को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के लिए, शैतान के पुजको द्वारा विश्व में कोई बड़ा साइबर अटैक (Cyber Attack) करवाने के साथ ब्लैकआउट (Blackout) कर निश्चित समय के लिए विश्व की बिजली तथा पुरे विश्व का इंटरनेट बंद करवाने की योजना कार्यरत मानी जाती है. इसका दूसरा मकसद हर देश की अपनी पेपर करंसी (Paper Money) को हमेंशा के लिए बंद कर बैंक खातों को सुरक्षित करने के नाम पर डिजिटल करंसी अमल मे लाना भी माना जाता है.

विश्व के देशो की अपनी **राष्ट्रिय मुद्रा (Paper Currency)** को हमेशा के लिए नष्ट कर उन्हें सुरक्षा और सुविधा के नाम पर डिजिटल करने का महत्वपूर्ण लक्ष्य इसके पीछे कार्यरत माना जाता है. यूँ तो विश्व के सभी देशो में पेपर करेंसी को डेबिट, क्रेडिट कार्ड के स्वरुप मे रूपांतरित तो पहले से ही कर दिया गया है. साथ में सरकारी मुद्रा को डिजिटल कर मोबाइल एप्लीकेशन या वायर ट्रान्सफर के रूप में भी विकसीत किया गया है जो वर्तमान मे लोगो की जरूरियात एवं सुविधा से योग्य भी माना जाता है. **लेकिन डिजिटल मुद्रा की व्यवस्था में अभी भी सभी देशो के अलग अलग बैंक है जो मोबाइल एप्लीकेशन या ऑनलाइन बैंक खाते से जुड़े व्यवहार को नियंत्रित करते है.** उदाहरण के रूप में डिजिटल मुद्रा से पेमेन्ट करने के लिए अलग अलग बैंक और मोबाइल ऍप्लिकेशन्स है और सामने डिजिटल मुद्रा में पेमेंट ग्रहण करनेवाले व्यक्ति के भी अलग अलग बैंक खाते है और मोबाइल ऍप्लिकेशन्स भी है. विश्व के हर देश में लोगो द्वारा कुछ लेनदेन पेपर मुद्रा, डेबिट-क्रेडिट कार्ड या मोबाइल ऍप्लिकेशन्स द्वारा मिश्र प्रकार से किया जाता है. दुनिया के हर देश में पेपर मुद्रा को बंद कर डिजिटल मुद्रा उपयोग करने के लिए हर जगह लोगो को प्रोत्साहित भी किया जाता है.

पेपर मुद्रा का नष्ट होना इसके लिए अति महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है, क्योकि सरकार मान्य पेपर मुद्रा कहीं पर सिक्को या नोटों के स्वरुप में संचित कर व्यक्ति किसी भी स्थान पर उसे ले जा सकता है तथा उसका उपयोग कर जीवन के लिए जरुरी चीजवस्तुए खरीदकर बिना किसी नियंत्रण के अपना जीवन व्यतीत कर सकता है. पैसो का व्यवहार अगर डिजिटल में हो तो व्यक्ति उसके लिए बैंक, मोबाइल एप्लीकेशन और इंटरनेट पर निर्भर हो जाएगा और डिजिटल व्यवहार को उनके द्वारा विश्व में कही भी आसानी से ट्रैक किया जा सकता है. इसके लिए विश्व के हर व्यक्ति को डिजिटल पहचान देने के लिए **डिजिटल आईडी (Digital ID)** देना शैतान के पुजको का लक्ष्य माना जाता है. इसके साथ व्यक्ति पर पूर्ण नियंत्रण के लिए सभी देशो में अनेको बैंक और मोबाइल ऍप्लिकेशन्स की जगह हर एक देश की अपनी सरकार मान्य एक **डिजिटल या वर्चुअल करेंसी (Central Bank Digital or Virtual Currency- CBDC, CBVC)** हो, जिस डिजिटल या वर्चुअल करेंसी को देश की सरकार द्वारा एक ही ब्लॉकचैन नेटवर्क आधारित मोबाइल एप्लीकेशन के जरिये "डिजिटल वॉलेट" (Digital Wallet) में अंको के रूप मे स्टोर किया जाए. इसतरह पूरी डिजिटल लेनदेन को केवल देश की सर्वोच्च बैंक ही संभाले ऐसी व्यवस्था लाने की योजना शैतान के पुजको की मानी जाती है. हरएक देश के मुख्य बैंक द्वारा ब्लॉकचैन आधारित डिजिटल या वर्चुअल करेंसी निर्मित करवाने के पीछे मुख्य उदेश्य

सभी स्वतंत्र बैंको का विलय कर केवल देश की अपनी सर्वोच्च बैंक को ही कार्यरत रखना माना जाता है. **सबसे अंतिम मकसद सभी देशो की अपनी अलग बैंक-करंसी ख़तम कर "पुरे विश्व की एक ही बैंक और एक ही करेंसी" लाना है जिसे मुख्य 13 शैतान के पुजको द्वारा भविष्य में संचालित किया जाएगा. इस तरह पुरे विश्व की अर्थव्यवस्था पर पूर्ण कब्ज़ा करना शैतान के पुजको का परम ध्येय माना जाता है.**

विश्व की एक करंसी निर्मित करने के कार्य को **बिटकॉइन (Bitcoin) और ब्लॉकचैन (Blockchain)** जैसी नयी टेक्नोलॉजी बाधित करने मे सक्षम मानी जाती है. ब्लॉकचैन ऐसी टेक्नोलॉजी है जो जनसूचि (पब्लिक लेजर) पर आधारित है, जिसे हैक करना या उसमे सेंध लगाना असंभव माना जाता है. उदाहरण के रूप में बिटकॉइन जो की वास्तव में कोई सिक्का या पेपर करंसी ना होकर एक सॉफ्टवेयर आधारित करंसी है जिसे डिजिटल वॉलेट में स्टोर किया जाता है और इसे ब्लॉकचैन आधारित पेमेंट सिस्टम के रूप में बनाया गया है. **विश्व के किसी भी कोने मे बिना किसी मध्यस्थ बैंक या सरकार के केवल मोबाइल एप्लीकेशन के जरिये बिटकॉइन वॉलेट का उपयोग कर एकदूसरे को बिटकॉइन के रूप में पैसा भेजने के लिए आज इसका उपयोग किया जाता है.** बिटकॉइन का खोजक सतोशी नाकामोतो (Satoshi Nakamoto) को बताया जाता है जिसका असली नाम और पहचान गुप्त मानी जाती है और वह असल में किस देश का है उसे भी आजतक कोई नहीं जान पाया. परंतु बिटकॉइन को हैक करना इसीलिए असंभव माना जाता है, क्योकि वह कोई नियंत्रित सैन्ट्रल सिस्टम ना होकर ब्लॉकचैन आधारित पब्लिक लेजर है जिसे हैक करने के लिए नेटवर्क से जुड़े सभी कंप्यूटर को एकसाथ हैक करना पड़ता है जो किसी भी हैकर के लिए एक साथ करपाना मुमकिन नहीं माना जाता. लेकिन आपत्ति को अवसर बनाकर ब्लॉकचैन टेक्नोलॉजी से बनायीं गयी वैश्विक करेंसी से पब्लिक ब्लॉकचैन को हटाकर "प्राइवेट ब्लॉकचैन" निर्मित कर विश्व के हर व्यक्ति के बैंक

खातों और करेंसी ट्रांज़ैक्शन्स पर सीधा नियंत्रण स्थापित करने हेतु शैतान के पुजको द्वारा प्राइवेट ब्लॉकचैन आधारित अन्य करेन्सियां बनाकर विश्व को इस टेक्नोलॉजी और नयी सिस्टम के आदि पहले ही बनाया दिया गया है ऐसे दावे किये जाते है.

विश्व के हर व्यक्ति को डिजिटल आईडी देकर उनके हाथो के अंगूठे और उंगलियों के बिच चमड़ी के निचे **आर.ऍफ़.आई.डी माइक्रोचिप (RFID Microchip)** लगाना और उस माइक्रोचिप के साथ ब्लॉकचैन आधारित विश्व बैंक खाता लिंक करना शैतान के पुजको का अंतिम लक्ष्य माना जाता है. इस विधि को उनकी भाषा में **"शैतान की छाप देना"** और क्रिश्चियन धर्म के लोगो की मान्यता अनुसार **"मार्क ऑफ़ ध बीस्ट" (Mark of the Beast)** कहा जाता है जिसे लेने को मना किया गया है. शैतान की छाप मतलब की माइक्रोचिप लगवाए बिना कोई भी व्यक्ति स्वतंत्र रूप से चीज वस्तु खरीदने, बेचने या जीवननिर्वाह करने की कोई भी प्रवृति ना कर पाए. माइक्रोचिप के जरिये डिजिटल पैसो की लेनदेन और **क्वांटम डॉट टैटू (Quantum-Dot Tattoo)** के जरिये इंसान की सांस या दिल की धड़कने, हॉर्मोन्स में बदलाव सहित आंतरिक डाटा भी इंटरनेट के जरिये मिलता रहे यह उदेश चमड़ी पर क्वोंटम टैटू लगवाने के पीछे का मकसद माना जाता है.

इंसान के शरीर के मूल डीएनए की छाप ग्रहण करना भी व्यक्ति को डिजिटल पहचान देने से पहले जरुरी कार्य माना जाता है, इसके लिए विश्व के देशो में गुनाह पर काबू पाने का स्वांग रचकर सरकारी कानून बनाकर या अन्य किसी सुरक्षा के नाम की कलरबाजी कर हर व्यक्ति के मूल डीएनए की छाप ग्रहण करना उनकी योजनाओ का अहम् हिस्सा माना जाता है. इन सभी उदेशो की पूर्ति करने के लिए विश्वभर में पेपर करंसी की किल्लत खड़ी करना, एटीएम को कार्यरत ना रखना, एटीएम की संख्या कम करते जाना, बैंको में पेपर रहित डिजिटल के माध्यम से

अधिक कार्य करवाना, पेपर करंसी की जगह डिजिटल से व्यवहार के बदले फायदों का प्रलोभन या डिस्काउंट ऑफर देना यह सब कार्य करने का मकसद देश मे पेपर करंसी का उपयोग बंद कर सबकुछ डिजिटल के माध्यम से करना माना जाता है. कुल मिलाकर भ्रष्टाचार को ख़तम करने के नाम पर, सरकारी सब्सिडी योजना का सीधा लाभ व्यक्ति को अपने बैंक खातों में देने के नाम पर या आगे पेपर करेंसी से कोई वाइरस फैलने का नाटक कर सबकुछ डिजिटल करने का मार्ग प्रस्तुत करना इनकी योजनाओ का हिस्सा माना जाता है. दूसरे क्रम में विविध देशो में अलग नामो से चल रही वन राशन, वन पेन्शन, वन हेल्थ कार्ड, वन टैक्स आईडी, वन बैंक कस्टमर आईडी, वन बिज़नेस आईडी से लेकर अनेको योजनाए हर व्यक्ति को **"वन डिजिटल आईडी" (One Digital ID)** देने के लिए निर्मित की गयी मानी जाती है, ताकि देश में व्यक्ति के सारे खातों की एक पहचान की जा सके. तीसरा मकसद हर देश में सभी बैंको का विलीनीकरण कर अंत में उन्हें देश की सर्वोच्च बैंक के साथ मिलाना और सबसे आखिर में सभी देशो की सर्वोच्च बैंको का भी विलीनीकरण कर **"एक वैश्विक बैंक"** के जरिये **"एक वैश्विक मुद्रा"** स्थापित करने की गुप्त योजना मानी जाती है.

World Social Credit System | World Currency

माइक्रोचिप से एक वैश्विक मुद्रा का जो मोडल है वह चाइना देश की तरह **"सोशियल क्रेडिट सिस्टम" (Social Credit System)** पर आधारित माना जाता है. इसका मतलब है शैतान के पुजको द्वारा निर्मित कायदे, व्यवस्था और विधि का जितना अच्छा पालन किया जाएगा उसके बदले में लोगो को कुछ **रिवॉर्ड पॉइंट्स (Reward Points)** दिए जायेंगे जिसके आधार पर ही डिजिटल गुलामो को शिक्षण, नौकरी, वेतन, घूमने-फिरने की आज़ादी, खाने के सामान की खरीदी, लोन, गाडी वगैरह सेवाएं दी जायेगी. जो जितनी अच्छी गुलामी करेगा उतने ही अच्छे रिवॉर्ड पॉइंट्स दिए जाएंगे. सार्वजनिक जगहों पर कैमरा के द्वारा चेहरे की पहचान कर लोगो के आवागमन पे निगरानी रखना और साथ ही शरीर का अंदर का डाटा भी

टेक्नोलॉजी से ग्रहण कर व्यक्ति को पूर्ण नियंत्रण में रखना इनका ध्येय माना जाता है. **शैतान के पुजको की गुलामी ना करनेवालों का इंटरनेट या माइक्रोचिप डीएक्टिवेट कर उसके बैंक खातों को स्थगित या बंद करने तथा व्यक्ति को गुलामी स्वीकारने के लिए मजबूर करने की मनशा इस योजना के पीछे कार्यरत मानी जाती है.**

भविष्य में उपर्युक्त सारी योजनाओ को पूरा करने के लिए हर देशो में घुसपैठिये और नागरिकता से जुड़े कायदे निर्मित कर लोगो को सरकार के विरुद्ध आंदोलन करने के लिए उकसाना और साथ में पुलिस-सैन्य का निजीकरण कर शैतानी संस्थानों द्वारा बुरे काम करनेवाले व्यक्तियों की नियुक्ति करवाकर लोगो को नियंत्रित करने की योजना कार्यरत मानी जाती है. इसके लिए विश्व के हर देशो में **कॉन्सन्ट्रेशन कैम्पस (Concentration Camps)** या **डिटेंशन सेन्टर्स (Detention Centers)** निर्मित कर लोगो को उसमे कैद करना, उनकी संपत्ति कानून बनाकर जप्त करना और उपद्रवी की छाप लगाकर उन्हें कैद कर प्रताड़ित करना या नष्ट करना इसके पीछे का उदेश्य माना जाता है. ऐसी योजना भले ही किसी धर्म, जाती के विशेष लोगो को काबू करने के नाम से लायी जाए, परंतु इसका मूल उदेश सभी ईश्वरवादी लोगो को नष्ट करना माना जाता है. इनकी योजना चरणबद्ध तरीके से सबको वाइरस-बीमारी के नाम से दवाइयाँ देना, सभी धर्म के लोगो तथा पुलिस-सैन्य के बिच गृहयुद्ध करवाकर उन्हे नष्ट करना माना जाता है जिससे पुलिस-सैन्य और सामान्य लोगोकी जनसंख्या क्रमशः कम होसके. इसतरह, नयी वैश्विक व्यवस्था लाने से पहले ईश्वरवादी लोगो की जनसँख्या कम कर कैमरा आधारित **निगरानी तंत्र (Mass Surveillance State) निर्माण करने के साथ रोबोट से संचालित पुलिस और सैन्यकर्मी भी समयांतर से स्थापित करना** तथा जीवन के लिए संघर्ष कर रहे लोगो को गुलामी स्वीकारने के लिए मानसिक रूप से मजबूर करना योजना का अहम हिस्सा माना जाता है.

नयी वैश्विक व्यवस्था लागू होने के बाद गुलाम बनी जनसँख्या को भोजन के स्वरुप मे कीटक जैसे टिड्डे, लारवेस्ट नामक कीड़े तथा अन्य कीटको के साथ लेब द्वारा निर्मित कृत्रिम दूध, मांस और जी.एम् आधारित खाना लोगो को खिलाने की व्यवस्था शैतान के पुजको द्वारा कार्यरत मानी जाती है. शैतानी संस्कारो को सामान्य बनाने के लिए फिल्म स्टारो से लेकर संस्थानों से जुड़े डिजिटल कलाकारो द्वारा अनाज की कमी और दुर्गम स्थिति मे मानवजात को बचाने के नाम पर उन्हें कीड़े खिलाने के लिए मानसिक रूप से तैयार करते होने के दावे किये गए है. कुदरत की बनायीं सृष्टि से मानवसीमा का कोई संपर्क ना रहे उसके लिए नैसर्गिक कृषि और गांवो को बरबाद कर शहरों में बसाने जिसमे दोनों तरफ कांच से ढ़की वर्टिकल यानी उंचाईवाली गगनचुंबी इमारतों का निर्माण कर भेड-बकरीयो की तरह लोगो को उनमे बसाना, डिजिटल एवं इंटरनेट सुविधा के नाम से उन्हें आकर्षित कर आवागमन के लिए हज़ारो किलोमीटर लंबी शहरो की टनल (रास्तो) को आपस में जोड़ने का कार्य नजदीकी भावी योजनाओ में शामिल कार्य माने जाते है. **कुल मिलाकर प्राइवेट जमीन, प्राइवेट घर तथा प्राइवेट वाहन की व्यवस्था को नष्ट कर विश्व के सभी लोगो की संपत्ति, बैंक एकाउंट्स, नौकरी, धंधे-रोजगारो को अपने आधीन कर सब शैतानी संगठन से जुड़े संस्थानों के हवाले करने का तथा लोगो को अस्तित्व के लिए उनपर आजीवन निर्भर बनाना शैतान के पुजको का भावी लक्ष्य माना जाता है जिसकी नीव वर्तमान मे रख दी गयी मानी जाती है.** वाइरस-बीमारी और फर्जी दवाई से लोगो का शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य पर नियंत्रण स्थापित करना तथा जलवायु परिवर्तन से पर्यावरण को सुरक्षित करने के नाम पर नैसर्गिक खेती को नष्ट कर सभी कृत्रिम वस्तुओ को मनुष्य के लिए फायदेमंद साबित कर उन्हें लोगो को बिच विज्ञान के नाम से प्रचारित करवाने के मजबूत दावे पेश किये गए है. इसीलिए आधुनिक तकनिक द्वारा निर्मित "स्मार्ट सिटी" (Smart City) के नाम से विश्व मे प्रचारित की जा रही शहरीकरण की नयी व्यवस्था वास्तव में डिजिटल कारावास मानी जाती है.

प्रोजेक्ट ब्ल्यूबीम (Project Bluebeam) शैतान के पूजको का सबसे बड़ा और अंतिम गुप्त हथियार माना जाता है, जिसमे विश्व के लोगो को यह जूठा अहसास दिलाना की पृथ्वी को परग्रही एलियंस से बड़ा खतरा है और एलियंस पृथ्वी पर मानवजाति को नष्ट करना चाहते है ताकी एलियंस के खिलाफ वैश्विक जंग लड़ने के बहाने देशो को किया जा सके एवं "एक विश्व सरकार" बनाने के लिए अधिकृत रूप से नीव रखी जा सके. **इस काम को पूरा करने के लिए होलोग्राम (Hologram) एवं उपग्रहों की अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी, सोडियम तथा लेज़र लाइट की मदद से सभी देशो के आसमान में फ़िल्मी चित्र की तरह एलियंस के उड़ते वाहन, सॉसर-डिस्क, फ्लाइंग स्पेसशिप या तेज रौशनी से प्रकाशित एलियंस स्पेसक्राफ्ट दिखाकर लोगो के मन मे भय पैदा करवाना की एलियंस धरती पर हमला करेंगे.** जैसे जादूगर हाथ की सफाई करते है और परदे के पीछे चल रहा खेल इंसानो को पता नहीं चलता, ठीक वैसे ही ब्ल्यूबीम टेक्नोलॉजी द्वारा आसमान में उपग्रहों की मदद से ऐसी तस्वीर या चलचित्र पैदा किये जाने का दावा किया जाता है जिससे आँखों के सामने वह घटना वास्तविक मालूम पड़ती है और कैमरे में घटना की रिकॉर्डिंग देखने के बाद भी आम दृष्टि से उसके जूठे होने का अहसास नहीं होता.

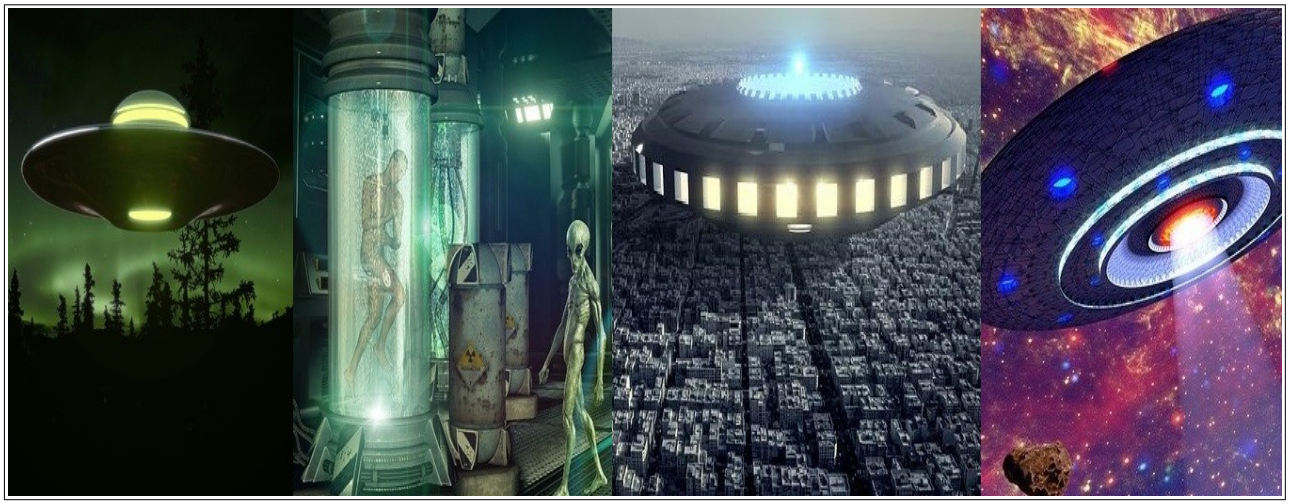

प्रोजेक्ट ब्ल्यूबीम (Project Bluebeam) का उदेश्य "शैतान" को दुनिया का मसीहा बनाकर पेश करना और उसे सभी धर्मो के लोगो की नजर में उसे "असली ईश्वर" साबित कर "नए वैश्विक धर्म" की स्थापना करना माना जाता है. इसके लिए **होलोग्राम (Hologram)** टेक्नोलॉजी का उपयोग कर उपग्रह द्वारा आसमान में एलियंन स्पेसक्राफ्ट का चित्र दिखाकर परदे के पीछे से शैतान के पुजको द्वारा ही विश्व पर हमला किया जाए और हमले का आरोप एलियंस पर लगाकर विश्व को भ्रमित किया जाए की पृथ्वी पर परग्रही एलियंस द्वारा कोई बड़ा आंतकी हमला किया गया है. एलियंस के अस्तित्व को लेकर लगभग 19 वी सदी से शैतान के पुजको ने विश्व के लोगो की माइंड प्रोग्रामिंग की हुयी मानी जाती है और फिल्मो द्वारा इसे अधिक प्रचारित करवाया है की वास्तव में एलियंस बुरे है और पृथ्वी पर हमला करने की योजना बना रहे है. इसके साथ टीवी प्रोग्राम और इंटरनेट के माध्यम से एलियंस की दो विरोधाभासी छबियाँ भी शैतान के पुजको द्वारा ही निर्मित की गई है जैसे "एलियंस ही ईश्वर है" और "एलियंस ही शैतान है". एलियंस को शैतान-ईश्वर दोनों विरोधी स्वरुप में प्रस्तुत करने का मूल मकसद केवल सामान्य इंसान के मन में परग्रही जीव या एलियंस का सच जानने को लेकर कुतूहल पैदा करना और अनुभवी व्यक्तियों द्वारा किये गए एलियंस के कुछ सच्चे दावो के प्रति लोगो के मन मे शंका पैदा करवाना माना जाता है. **प्रोजेक्ट ब्ल्यूबीम (Project Bluebeam) की पूरी जानकारी इस वीडियो के माध्यम से ले सकते है. दावों के अनुसार अमेरिका पर "9/11 का आतंकी हमला" भी प्रोजेक्ट ब्ल्यूबीम (Project Bluebeam) का सफल परिक्षण माना जाता है, जिसकी अधिक जानकारी भी वीडियो में प्राप्त कर सकते है.**

दावों के अनुसार, एलियंस को भगवान या शैतान मानने के दोनों ही तर्क जूठे है, जो वास्तव में शैतान के पुजको द्वारा ही निर्मित करवाए माने जाते है. क्योकी शैतान के पूजक ईश्वरवादियों को बेवक़ूफ़ बनाने के लिए हर खेल को उल्टा खेलते है

वैसे ब्ल्यूबीम टेक्नोलॉजी के मदद से आकाश में एलियंस को शैतान के रूप में मानवता का दुश्मन बनाके पेश किया जाए, मतलब विश्व में हिन्दू धर्म में माननेवालो को शिव-कृष्ण, क्रिस्चियन को इशू, मुस्लिम को अल्लाह जैसे अन्य सभी धर्मो के ईश्वर की भिन्न छबियाँ दिखाकर अहसास दिलाया जाए की ईश्वर ही वास्तव में एलियंस है और ईश्वर ने ही पृथ्वी पर आक्रमण किया है. इसके विरुद्ध दूसरा दावा यह बताया जाता है की अवकाश में सभी धर्मो के ईश्वर तथा एलियंस की छबी एकसाथ दिखाकर हर धर्म के ईश्वर को एलियंस से लड़ने मे असमर्थ दिखाया जाए ताकी लोगो के मन में अपने धर्मशास्त्रों की शिक्षा झूठी लगे की "उनके ईश्वर ने ही दुनिया निर्मित की है और वही ब्रह्मांड मे सर्व शक्तिमान है". **फिल्म के अंत में टेक्नोलॉजी की मदद से शैतान को पृथ्वी को बचानेवाला मसीहा बनाकर लोगो के सामने पेश किया जाए और एलियंस के साथ झूठी लड़ाई कर उन्हें पृथ्वी से दूर भगाने का नाटक किया जाए ताकी शैतान को "सर्वशक्तिमान नए ईश्वर" के रूप में स्थापित किया जा सके.** तो योजना का अंतिम मकसद टेक्नोलॉजी का उपयोग कर शैतान को शक्तिशाली अवतार का रूप देकर लोगो के दिल में ईश्वर की जगह स्थापित करना माना जाता है जिसे आगे चलकर एक नए "वैश्विक धर्म" के रूप मे विकसित किया जा सके. **कुल मिलाकर प्रोजेक्ट की सफलता के साथ एक विश्वीय सरकार, एक वैश्विक मुद्रा और एक विश्वीय धर्म के साथ शैतानियत को विश्व में कायम कर प्रत्यक्ष रूपसे शैतान के पुजको द्वारा विश्व पर शाशन किया जा सकता है.**

रही बात एलियंस के अस्तित्व को लेकर की वास्तव में इस पृथ्वी पर या कोई अलग ग्रह पर उनका अस्तित्व है या नहीं, तो इसके लिए **12 सरकारी रेकॉड पर दर्ज घटनाये** होने की बात कही जाती है. सरकारी रेकॉड को प्रभावित करने की बात मान भी ले तो **गेरी मैकिनन (Gary McKinnon)** जो की ब्रिटिश मूल के हैकर है और उन्हें 2002 में सबसे सुरक्षित मानेजानेवाले अमेरिकन सरकार और उसके मिलिट्री

नेटवर्क को इसीलिए हैक किया था की वह एलियंस और **UFO (अनआइडेंटीफाईड ऑब्जेक्ट्स)** का सच जान सके. गेरी मैकिनन ने अमेरिकन स्पेस एजेंसी नासा (NASA) द्वारा संग्रहित एलियंस की कुछ तस्वीरें नेटवर्क को हैक करके प्राप्त की थी. उस वक्त की इंटरनेट की स्पीड कम होने के कारण वह इस काम को आंशिक रूपसे ही पूरा करने में सफल रहे थे और कुछ ही डाक्यूमेंट्स प्राप्त कर सके थे. इसकी विस्तृत जानकारी आर्टिकिल में पढ़ सकते है. 1, 2. हैकर गेरी मैकिनन द्वारा किये गए गए दावों में एलियंस द्वारा हमला होने का जूठा नाटक करने की योजना के बारे मे स्पेनिश भाषा के आर्टिकल का इंटरनेट से अपनी भाषा में अनुवाद करके जान सकते है. उनके मतानुसार सरकारों के "शाशक" और "विपक्ष" यह दो पक्ष एक ही है जिन्हे वैश्विक ताकतों द्वारा लोगो को विभाजित कर योजनाओ को अंजाम देने के लिए रचे गए है.

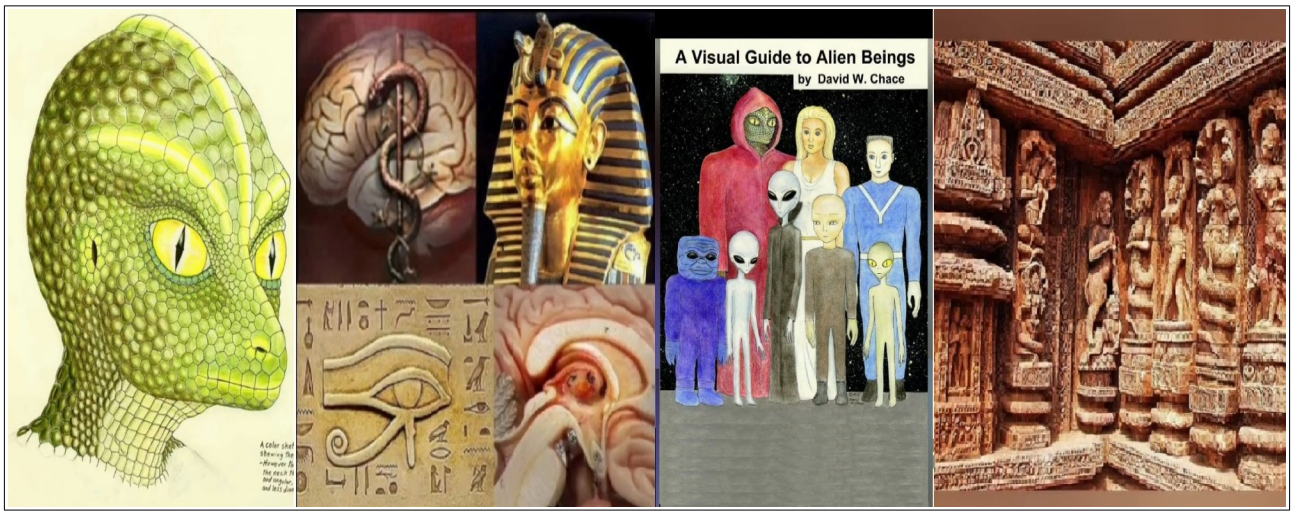

एलियंस के अस्तित्व को लेकर किये जानेवाले प्रमुख दावों मे उनके एंटार्कटिका खंड मे बर्फ-जमीन के निचे गुप्त रूपसे बसे होने के दावे किये जाते है जो स्वतंत्र खोजियो द्वारा कुछ घटनाओ के आधार पर भी किये गए है. जैसे मनुष्यो में अच्छे बुरे इंसान होते है वैसे ही एलियंस में भी कुछ मानवजात को मदद करनेवाले और कुछ उनको नुक्सान पहुचानेवाले बताये जाते है. एलियंस को लेकर किये जानेवाले दावो में से सबसे प्रबल और सत्य से प्रमाणित दावा **फील स्नाइडर (Phil Schneider)** द्वारा किया हुआ माना जाता है जो अमेरिकन सरकार में भूवैज्ञानिक (Geologist) और संरचनात्मक इंजीनियर (Structural Engineer) के रूप मे कार्यरत थे. **वास्तव मे यह केवल दावा ना होकर उनका खुद का अनुभव दुनिया के सामने प्रस्तुत किया था जो बाद में स्वतंत्र व्यक्तियों द्वारा किये गए शोधन, अध्यहन, संशोधनों और सांयोगिक सबूतों के आधार पर पूर्ण सत्य माना जाता है.** अपनी जान और कारकिर्दी को दांव पर लगाकर 1995 मे फील स्नाइडर द्वारा किये

गए खुलासो ने विश्व की सरकारो सहित दुनिया के होश उड़ा दिए थे जिसके बाद 11 बार उनकी हत्या करने के प्रयास किये गए थे उन सभी घटनाओ का जिक्र उन्होंने वीडियो के माध्यम से किया था **Link 1**, **Link 2**. **दावों के अनुसार उनकी असली हत्या को भी बाद मे आत्महत्या का झूठा रूप देने का प्रयास किया गया था** **Link 3**.

फील स्नाइडर द्वारा किये गए खुलासो के अनुसार वह अमेरिकन सरकार के लिए **Deep Undeground Military Bases (DUMBS)** मतलब जमीन के निचे मिलिट्री के ठिकाने बनाने के कार्य से जुड़े थे जिसमे खुदाई के लिए अत्याधुनिक मशीने उपयोग की जाती थी. उनके खुलासो के अनुसार, अमेरिकन सरकार एवं मिलिट्री को एलियंस की जानकारी 1900 के बाद ही हो चुकी थी, लेकिन इस जानकारी को सालो से गुप्त रखा गया था. फील स्नाइडर के अनुसार 1957 में अंतरिक्ष के किसी वीनस ग्रह से पृथ्वी पर आए एक एलियन जिसका नाम **वेल वलिएंट थॉर (Val Valiant Thor)** था जो मनुष्य की तरह दिखता था और वह काफी सालो तक अमेरिकन सरकार के साथ रहा था. उसके जरिये स्पेसशिप उसके पोषक से लेकर काफी सारी अत्यंत आधुनिक टेक्नोलॉजी का अध्यहन अमेरिका द्वारा किया गया था. मनुष्यो की तरह दिखनेवाला "वेल वलिएंट थॉर" अच्छे एलियंस की प्रजाति में गिना जाता है जिसने आधुनिक टेक्नोलॉजी को समझने मे मदद की थी. फील स्नाइडर ने वीडियो मे कई प्रकार के "एलियन मटीरियल" के बारे मे बताया था जो जानकारी काफी सालो तक इंसानो से गुप्त रखी गयी थी.

1979 मे अमेरिकन सहित नाटो (NATO) के सदस्य देशो की संयुक्त मिलिट्री के साथ ग्रीन एलियंस की मुठभेड़ होने की बात फील स्नाइडर द्वारा कही गयी है जिसमे कुल 66 सैनिक मारे गए थे और उनमे से 44 अमेरिका के सैनिक थे. मुठभेड़

मे बचनेवालो मे कुल 3 लोगो मे से वह एक थे जिन्होंने लड़ाई मे 2 एलियंस को भी मार गिरिया था और एलियंस द्वारा किये गए हमलो मे उनके हाथ की उँगलियाँ भी कट गयी थी. एलियंस को लेकर विश्व मे चर्चित अमेरिका के **"एरिया 51" (Area 51)** के अलावा भूगर्भ मे बनाये मिलिट्री ठिकाने केवल अमेरिका में स्थित ना होकर ऐसे लगभग 1477 से भी ऊपर ठिकाने पुरे विश्व में होने का खुलासा उन्होंने किया था तथा उन जगहों पर एलियंस की मोजुदगी उन्होंने अपनी आँखों से देखी थी. वह ठिकाने एक दूसरे के साथ ट्रेनों के जरिये आवागमन के लिए जुड़े बताये गए थे. वहाँ कुछ खास बंकरो मे मानव और परग्रही जीवो के ऊपर गुप्त प्रयोग होते थे.

फील स्नाइडर के खतरनाक खुलासो मे भूगर्भ मे बसे एलियंस की लगभग 9 शैतानी प्रजातियों का भी जिक्र मिलता है जो अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी से विकसित तो है, परंतु वे किसी जानवर की तरह मानवशरीर को खुराक के रूप में ग्रहण करते है. फील स्नाइडर के अनुसार, अमेरिकन मिलिट्री के साथ भूगर्भ मे बसे कुछ शैतानी **एलियंस (Draco Reptilians)** की प्रजातियो की गुप्त संधि थी जिसमे बच्चो से लेकर वयस्क मानव शरीर को मुहैया करवाने के बदले उन्होंने कुछ टेक्नोलॉजी इन्हे प्रदान की थी. ड्रैको रेप्टिलियंस सरीसृप जिव जैसे साँप, छिपकली, मेंढक, मगरमच्छ की तरह दिखने मे अत्यंत गंदे, डरावने, परंतु इच्छा अनुसार अपना रंग-आकर मनुष्य की तरह बदलने की क्षमता वाले होने के कुछ अन्य आँखों देखे दावे प्रस्तुत किये गए है. ड्रैको रेप्टिलियंस के लिए मानव मांस खुराक ना होकर केवल **एड्रीनोक्रोम (Adrenochrome)** यानी मानव के खून मे मौजूद पदार्थ नशे के सामान था जिसका खुलासा स्नाइडर ने बयानों में किया था. अमेरिका और विश्वभर से लाखो बच्चे और वयस्क गुमनाम कारणों से गायब होने के पीछे स्नाइडर ने रेप्टिलियंस को ही बड़ा कारण बताया था. **एलियंस द्वारा टेक्नोलॉजी का उपयोग होने के सबूत प्राचीन काल**

से ही मौजूद होने के दावे है जिस पर प्रवीण मोहन जी ने अद्भुद संशोधन किया है जो उनकी चैनल पर अनेको वीडियो मे प्रदर्शित भी किये गए है.

कुछ खास शैतानी व्यक्तियों द्वारा एलियंस द्वारा दी जानेवाली अद्यतन टेक्नोलॉजी के माध्यम से अपनी गुप्त एवं षड्यंत्रकारी योजनाओ की पूर्ति कर 2029 तक विश्व की अधिक जनसँख्या नष्ट करने की योजना को स्नाइडर ने **एलियंस वर्ल्ड आर्डर (Aliens World Order)** के नाम से संबोधित किया था. **डेविड आइक (David Icke)** जिन्हे विश्व मे कॉन्सपिरेसी थियोरिस्ट के नाम से प्रचलित बनाया गया है उनकी वेबसाइट पर **प्रकाशित वीडियो** के माध्यम से ड्रैको रेप्टिलियंस के बारे मे कुछ अहम् जानकारियाँ मिलती है जो फील स्नाइडर द्वारा किये गए खुलासो को पूर्ण सत्य साबित करने के निकट ले जाता है. भविष्य में महासत्ता के दावेदार देशो के बिच संभवित तीसरे विश्वयुद्ध मे अच्छे या बुरे एलियंस की वास्तविक भूमिका क्या रहेगी यह आज भी पहेली मानी जाती है. उस युद्ध के दौरान जो टेक्नोलॉजी असल मे उपयोग होगी वह मानवजात के लिए अत्यंत घातक होने के दावे किये जाते है. लेकिन एलियंस का असली सच लोगो को ना बताकर **प्रोजेक्ट ब्ल्यूबीम (Project Bluebeam)** का उदेश्य ईश्वर में माननेवालो को धोखा देकर शैतान को नए ईश्वर के रूप मे अंकित कर वैश्विक धर्म की स्थापना करना माना जाता है.

पूर्व इसरायाली स्पेस चीफ हेम इशेद (Haim Eshed) द्वारा एलियंस के बारे में किया गया दावा भी उपर्युक्त सभी दावों के साथ मेल खाता है. उनके अनुसार सालो से एलियंस अमेरिका और इसरायल के गुप्त रूप से संपर्क में है तथा एलियंस के अस्तित्व को लेकर सच इसीलिए नहीं बताया गया की मानवजात उसे स्वीकारने के लिए मानसिक रूप से अभी तैयार नहीं है. उनके खुलासो के अनुसार भिन्न प्रकार के

एलियंस पृथ्वी पर मानवजात के साथ ही मौजूद है जिन्होंने अपना संगठन बनाया है जिसे **"गेलेक्टिक फेडरेशन" (Galactic Federation)** कहा जाता है **Link**.

शैतान के पुजको के पास इंसानो के **हमशक्ल बनाने (Human Cloning)** की अधतन टेक्नोलॉजी का अविष्कार भी मौजूद माना जाता है जिसे एलियन द्वारा दी गयी टेक्नोलॉजी में से एक गिना जाता है. विश्व में नामचीन नेताओ के हमशक्ल आज भी विद्यमान होने के दावे है जिसकी अधतन टेक्नॉलजी के बारे **डोनाल्ड मार्शल (Donad Marshall)** ने कुछ चौंकानेवाले खुलासे किये है जो अपने आपको इस प्रोजेक्ट का हिस्सा बताते है. **लेकिन एलियन या हमशक्ल जैसी बाते टेक्नोलॉजी से अपरिचित लोगो के गले उतरे ऐसी नहीं मानी जाती. ये ठीक ऐसी बात है जैसे टीवी, कैमरा और मोबाइल खोजे जाने से पहले अगर कोई उन टेक्नोलॉजी की बात करता तो लोग उसे पागल समझते.** ऐसे ही केवल इंटरनेट पर वेबसाइट या वीडियो के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर दुसरो के अभिप्रायो को बिना किसी तर्क या रिसर्च के सच मानलेना या पूर्ण रूपसे नकार देना बुद्धि का स्तर अति निम्न होने का प्रतिक माना जा सकता है. विज्ञान और टेक्नोलॉजी के समय मे किसी संभावना या आविष्कार को नकारा नहीं जा सकता और भविष्य के लिए भी वही अविष्कार आखरी होगा यह दावा भी नहीं किया जा सकता. वर्तमान मे मानवरूप मे रेप्टिलियन एलियन के अस्तित्व मे होने का दावा यूट्यूबर अल्मास जेकब (Almas Jacob) ने किया है जिसके बारे मे **वीडियो** को देखकर अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते है.

क्रिस्चियन धर्म के अनुसार शैतान के पुजको की मान्यताये और उनकी वैश्विक करतूतों को बेनकाब करने मे **"अल्मास जेकब"** का अद्भुत योगदान रहा है जिसमे उनके द्वारा अपने क्रिस्चियन धर्म के प्रचार कार्य को बुरा ना समझते हुए मानवजात

के खिलाफ किये जानेवाले षड़यंत्र के ज्ञान को महत्त्व देना चाहिए. ठीक ऐसे ही आंतराष्ट्रीय षडयंत्रो को उजागर करने मे **"डॉ. विलास जगदाले"** भारत में सबसे बड़ा नाम है जिन्होंने धर्मो से परे मनुष्यता को बचाने तथा जागृतता लाने के लिए भारत मे अग्रेसर कार्य किया है. अन्य सोशियल मीडिया को छोड़कर टेलीग्राम पर कुछ महत्वपूर्ण चैनल है जिनका जनजाग्रति के लिए महत्वपूर्ण योगदान रहा है. Link 1, 2, 3. आंतराष्ट्रीय स्तर पर "डेविड आइक" बड़ा नाम है जिन्होंने शैतानी षडयंत्रो का पर्दाफाश कर लोगो की रक्षा करने का बड़ा कार्य किया है. ऐसे ही ख़ुफ़िया प्रयोगो मे **"फिला डेल्फिया एक्सपेरिमेंट" (Philadelphia Experiment)** और **"प्रोजेक्ट लुकिंग ग्लास" (Project Looking Glass S4 - Area 51)** भी माने जाते है जो भूत-भविष्य की घटनाओ और समययात्रा (Time Travel) को टेक्नॉलजी के माध्यम से जानने के लिए किये गए थे. फिला डेल्फिया एक्सपेरिमेंट मे निकोला टेस्ला और अल्बर्ट आइंस्टाइन जैसे महान वैज्ञानिक भी शामिल माने जाते है. इनके बारे मे अधिक जानकारी वीडियो के माध्यम से ले सकते है Link 1, Link 2.

एलियंस भगवान नहीं होने का तर्क धार्मिक और आध्यात्मिक भी माना जाता है की विविध धर्मो में ईश्वर का स्वरुप सगुण या निराकार रुप में होने का वर्णन मिलता है तथा ईश्वर केवल पुण्यशाली आत्माओ को ही दर्शन देते है. **ऐसे ही सामान्य राह चलते मनुष्यो को ईश्वर एलियंस के रूपमे अपने वाहन के साथ आसमान मे या अन्य जगहों पर दर्शन दे यह सत्पुरुषों के वचनो, अनुभवो तथा धर्मग्रंथो की साक्षी से असंभव घटना मानी जाती है.** इसतरह एलियंस को मनुष्य से अलग किसी विशिष्ट आयाम (Dimension) के जीव के रूप में देखा जा सकता है, लेकिन एलियंस के "ईश्वर" या "परमशक्ति" होने का तर्क सीधे रूपसे ख़ारिज हो जाता है. बुरे मनुष्यो की तरह एलियंस भी बुरी शक्तियों के माध्यम हो सकते है, परंतु वह ब्रह्मांड मे शैतानीशक्ति का आखरी स्वरुप है यह भी स्वीकार्य नहीं किया जा सकता.

एलियंस की तरह **बिंग-बैंग थ्योरी (The Big Bang Theory)** की जिसमे ब्रह्मांड की उत्पत्ति एक बड़े धमाके से हुयी है ऐसा तर्क प्रचलित करवाने के पीछे भी शैतान के पुजको की मनशा यही मानी जाती है की ईश्वर ने ब्रह्मांड का निर्माण नहीं किया है और ईश्वर का ब्रह्मांड पर कोई अधिपत्य नहीं है. यह विकृत मानसिकता ईश्वर को शैतान से निचा दिखाने और भविष्य में शैतान को ईश्वर से अधिक शक्तिमान साबित कर सृष्टि के नए मसीहा के रूप में प्रस्थापित करने की मानी जाती है. भारत के महान वैदिक सायंटिस्ट आचार्य **"अग्निव्रत नैष्ठिक"** ने भारत में बेंगलुरु स्थित आंतराष्ट्रीय कॉन्फरन्स में बिग-बैंग थ्योरी का पूर्ण खंडन किया था और उसके सामने 12 बड़े महत्वपूर्ण सवाल पूछे थे, जिसका जवाब शायद आज तक विश्व में कोई सायंटिस्ट नहीं दे पाया. स्टीफन हॉकिंग्स ने इस घटना के बाद क्रमश: अपनी थ्योरी में बिना किसी वैज्ञानिक तर्क के कुछ बदलाव किये माने जाते है. घटना की पूरी जानकारी **इस वीडियो** के माध्यम से ले सकते है.

लगभग 4000 साल पहले अगस्त ऋषि द्वारा रचित पुस्तक **"अगस्त्य संहिता"** मे लिखे सूत्रों अनुसार बैटरी बनाकर उपकरणों को बिजली से संचालित करने का जिवंत उदहारण प्रवीण मोहन जी ने **वीडियो** के जरिये दिखाया है. लेकिन केवल अंग्रेजी ज्ञान से प्रभावित या विदेशी विज्ञान के नाम पर सनातन संस्कृति, सभ्यता या ऋषि मुनियो के ज्ञान का मजाक उड़ानेवाले इसे चुनौती देकर अपने ज्ञानी होने का सबूत दे सकते है. अगर मनुष्य बंदर से विकसित होने की बात है तो आज बंदर कैसे बचे हुए है और वह मनुष्य में तब्दील क्यों नहीं हो पाए? ऐसे बहोत से सवाल आज विज्ञान के सामने खड़े है जिसमे केवल तर्क है लेकिन वह पूर्ण सच्चाई से दूर माने जाते है. **हज़ारो साल पहले सुश्रुत ऋषि ने बिना किसी टेक्नोलॉजी शल्यक्रिया (ऑपरेशन) करने का ज्ञान कैसे प्राप्त किया था और शल्यक्रिया के दौरान व्यक्ति के प्रकृति के हिसाब से उसे बेहोश करने की दवाई और उसका नाप कौनसे विज्ञान से निकला था यह साबिती देने के लिए आधुनिक विज्ञान की चादर भी छोटी पड़ेगी.**

"वेदविज्ञान-आलोकः" (Ved Vigyan-Alok) पुस्तक द्वारा आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक ने लगभग 7000 वर्ष पूर्व लिखित **"ऐतरेय ब्राह्मण"** ग्रंथ मे वर्णित वैदिक रश्मि सिद्धांत द्वारा ब्रह्मांड को जानने का अद्भुत वैदिक सिद्धांत दिया है. भारत के अन्य सायंटिस्ट **आभाष मित्रा (Abhas Mitra)** ने भी ब्लैकहोल थ्योरी को झूठा साबित कर उसे नकार दिया है जिसकी अधिक जानकारी **वीडियो में** प्राप्त कर सकते है और आभाष मित्रा जी द्वारा इस विषय पर **लिखित पुस्तक** भी पढ़ सकते है. इस तरह सर्वप्रथम अमेरिका द्वारा चाँद पर पहोचने की थ्योरी को भी झूठा माना जाता है

जिसमे चाँद पर पहुंचे इंसानो, वस्तुओ की परछाई और तारे ना दिखने के ऊपर अनेको दावे किये गए है और इसे किसी कैमरे की मदद से केवल स्टूडियो मे फिल्माया गया माना जाता है. तो जहाँ भी अवसर मिले वहाँ शैतान के पुजको द्वारा ईश्वर का अस्तित्व नकारने और शैतान को बड़ा बनाकर ईश्वर के रूप में स्थापित करने की चेष्टा मानी जाती है. आयुर्वेद के ग्रंथो मे जो वात, पित्त और कफ और शरीर की तंदुरस्ती का ज्ञान जो भारत के ऋषि मुनियो द्वारा प्रस्तुत किया गया है उसे जांचने और समझने के लिए भी आधुनिक विज्ञान की अपनी सीमा है.

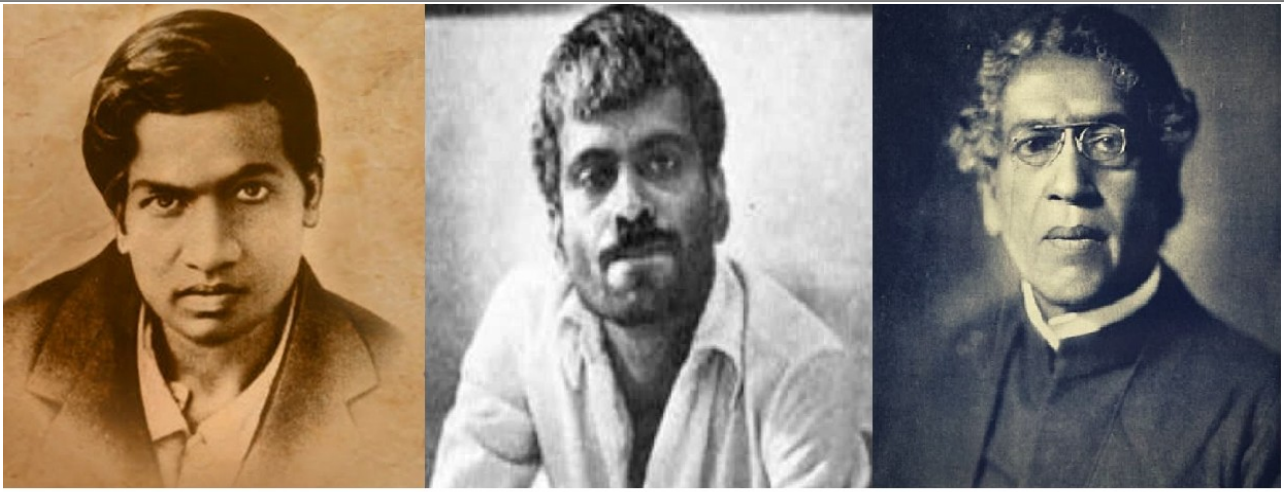

श्रीनिवास रामानुजन | वशिष्ठ नारायण सिंह | जगदीशचंद्र बसु

भारत के रत्नो मे शून्य के खोजक आर्यभट्ट के बाद अगर किसी व्यक्ति को उच्च गौरव मिला तो वे 19 वी सदी में भारत मे जन्मे श्रीनिवास रामानुजन थे. शून्य की खोज आर्यभट के पहले ही भारत के ग्रंथो में अन्य स्वरूपो मे विद्यमान होने के दावे भी है, परंतु आर्यभट्ट ने शून्य सिद्धांत के साथ अपने ग्रंथ मे अन्य बहोत से उपयोगी सूत्रों की खोजो के साथ प्रस्तुत किया था. ठीक उसी प्रकार **रामानुजन के अनुसार शून्य का अर्थ "कुछ भी ना होना" नहीं होता बल्कि "अनंत" (Infinite) भी होता है यह सिद्धांत प्रस्तुत किया था जिसे गणितीय सूत्रों, ब्लैकहोल को समझने तथा कोंटम फिजिक्स में गिनती के लिए आज भी उपयोग किये जाने के प्रमाण है.** उस वक्त विश्व के विख्यात गणितज्ञ मानेजानेवाले प्रोफ़ेसर हार्डी ने रामानुजन को विश्व के महान गणितज्ञ में गिनने लगे थे. अत्यंत गरीब घर में जन्मे और अल्पकाल में क्षय रोग से मृत्यु होने से पहले उन्होंने ने अनेको महान सूत्र लिखे थे जिसे आज तक किसी गणितज्ञ या वैज्ञानिक के द्वारा पुरे सुलझा नहीं पाने के दावे है **Link.** रामानुजन ना केवल महान गणितज्ञ बल्कि एक उच्च कोटि के आध्यात्मिक व्यक्ति भी थे क्योकि वह हर सवाल का जवाब तुरंत दे देते थे जो बुद्धि-तर्क से परे होता था. ओशो के कथन अनुसार रामानुजन की तीसरी आँख जागृत थी, जिसे आजकी भाषा मे लोग **"पिट्यूटरी ग्रंथी" (Pituitary Gland) या "त्रिनेत्र"** भी कहते है **Link**.

ऐसे ही महान गणितज्ञों मे भारत के वशिष्ठ नारायण सिंह का नाम भी शामिल है जिन्होंने आइंस्टाइन के "सापेक्षता के सिद्धांत" (Theory of Relativity) को चुनौती दी थी. भारत से अमेरिका के नासा (NASA) तक का सफर तय करनेवाले वशिष्ठ नारायण गणित में इतने तेज थे की जब **"अपोलो मिशन" के दौरान कुछ तकनीकी खराबी से जब नासा के 31 सुपर कंप्यूटर बंद हो गए थे तब वशिष्ठ नारायण ने अपने दिमाग से कुछ गिनतियाँ करके दी थी जिसे कप्यूटर ठीक होने के बाद पता किया गया तो कम्पूटरो की गिनती वही थी जो उन्होंने खुद अपने दिमाग से की थी.** दुर्भाग्यवश भारत वापिस आनेके बाद उनके घर वालो को उनकी दिमागी बीमारी के बारे में पता चला और जीवन के अंत समय तक वह इस बीमारी से लड़ाई लड़ते रहे. उनका आखरी वक़्त ऐसा था जब उनके शब को लेने के लिए शबवाहिनी के लिए भी काफी इंतजार करना पड़ा था जो इस देश का दुर्भाग्य है की ऐसी महान विरासत की मृत्यु तक उन्होंने वह सन्मान नहीं मिला जिसके वे हकदार थे **Link**. वनस्पतियो में मनुष्यो की तरह जिव होने की खोज करनेवाले जगदीशचंद्र बसु (बोज) भी ऐसे महान वैज्ञानिको में शामिल थे जो आज के ज़माने में सबसे ज्यादा उपयोग में आनेवाली टेक्नोलॉजी वाई.फाई (Wifi) के भी असली जनक माने जाते है जिसकी रोचक कहानी वीडियो के माध्यम से जान सकते है **Link.**

एक तरफ सूर्य की गर्मी से जीवसृष्टि का विनाश होने की बात करना, नैसर्गिक इंधनो से प्रकृति दूषित होने का तर्क देकर सूरज को आइना दिखाकर गर्मी को कम करने का समाधान दिखाना तथा आसमान मे कृत्रिम हानिकारक केमिकलो का छिड़काव कर सूर्य की किरणो को पृथ्वी पर आने से रोकना यह सब छिछोरी हरकतों से शैतान के पूजक वास्तव मे सभी धर्मो के ईश्वर को सीधी चुनौती दे रहे है की उनके द्वारा रची गयी सृष्टि अपूर्ण और खामियुक्त है. इन सब करतूतो से वह सूर्य और प्राकृतिक ईंधन जैसी प्राकृतिक वस्तुओ मे दोष निकालकर ईश्वर का मजाक

बनाकर ईश्वरीशक्ति को खुले मे चुनौती दे रहे है. लेकिन यह कार्य धर्म की जगह विज्ञान के नाम से होने के कारण सामान्य लोग इन करतूतो का मतलब समझने मे असमर्थ माने जाते है. दूसरी तरफ विज्ञान को जादूगरी खेल का माध्यम बनाकर ईश्वर की बनायी हर प्राकृतिक चीज को केमिकलो से अप्राकृतिक बनाकर ईश्वर को निचा दिखाने तथा ईश्वरीशक्ति में श्रद्धा रखनेवाले सभी लोगो को मुर्ख बनाके यह लोग विकृत आनंद ले रहे है तथा उन्हें गुलाम बनाने की योजनाओ को विश्व में अमली भी बना रहे है.

विविध धर्मो के पवित्र ग्रंथो को विज्ञान के हवाले से कोई काल्पनिक वार्ता या काव्य होने का तर्क देकर ईश्वर से लोगो की आस्था को विक्षिप्त करना शैतान के पुजको की करतूतों में शामिल कार्य माने जाते है. इसके लिए कुतर्की विज्ञान से भ्रमित पढ़े-लिखे लोगो का तथा ईश्वर मे ना माननेवाले नास्तिको को बलि का बकरा बनाकर उनके विचारो का भरपूर उपयोग किया जाता है. इंटरनेट पर वीडियो, ब्लॉग, वेबसाइट या सोशियल मीडिया पर विज्ञान का चश्मा लगाकर हर धर्म के रीत-रिवाज, परंपरा, धार्मिक विधियों का मजाक उड़ाकर उनकी धार्मिक भावनाये भड़काना और मासूम लोगो को जाल मे फसाकर उनके अपने धर्म या रीत-रिवाजो के विरोधी बनाना इनकी योजनाओ मे शामिल कार्य माने जाते है. उदाहरण के रूप मे हिन्दू धर्म मे रावण के दस सिर होने की बात को विज्ञान की भाषा से असंभव घटना दिखाना. लेकिन जैसे व्यवहारिक जीवन में हम मुहावरे और कहावते प्रयोग करते है वैसे धर्म की भाषा से दस सिरों को "अत्यंत अहंकारी" के रूप में प्रस्तुत किया गया है.

विज्ञान मे किसी एक विषय पर दो वैज्ञानिको के अलग मत हो तो उसे स्वाभाविक घटना बताई जाती है और किसी धार्मिक व्यक्तियो के एक विषय पर दो मत हो तो दोनों को झूठा साबित करने का प्रयास विज्ञान के नाम से किया जाता है.

सालो तक किसी वैज्ञानिक खोज और नियमो का समर्थन करने के बाद अगर कोई दूसरा वैज्ञानिक बाद में उस नियम को झूठा साबित करे फिरभी बेशर्मी से उस पर गर्व करना और विज्ञान के पास ब्रह्मांड की उत्पत्ति से लेकर वर्तमान में मौजूद हर चीज को साबित करने का सामर्थ्य या यंत्र मौजूद है ऐसा भ्रम पालनेवाले मुर्ख लोग भी जाने अनजाने मे शैतान के पुजको के माध्यम बन जाते है. केवल खुदाई के दौरान मिले पुरातत्व के प्रमाणों के आधार पर ही किसी धर्म का इतिहास या ग्रंथो की रचना को विज्ञान का नाम लेकर झूठा या सही ठहरना तथा मौखिक इतिहास की उपेक्षा कर उन ग्रंथो की रचना का श्रेय किसी दूसरे धर्म को देकर विविध ईश्वरी धर्मो मे आस्था रखनेवालो का अपमान कर धार्मिक समूहो को आपसमे लड़वाने का कार्य करवाना भी शैतान के पुजको द्वारा ही निर्मित बड़ा षड़यंत्र माना जाता है. सूक्ष्मता से अवलोकन करने पर उपर्युक्त सभी कार्यो से शैतान के पुजको की आखरी आज्ञा का मकसद पूर्ण होता देखा जा सकता है और प्रकृति के पंचतत्व जैसे **आकाश (Space), वायु (Quark), अग्नि (Energy), जल (Force) तथा पृथ्वी (Matter)** को दूषित कर मनुष्य को प्रकृति से दूर किया जा सकता है.

हाल ही में 6-July-2022 को अमेरिका मे बनी संदेहपूर्ण घटना, जिसमे "जॉर्जिया गाइडस्टोन्स" के एक स्तंभ को बम्ब से उड़ा दिया गया है. इस घटना के बाद बाकी के स्मारक को भी अधिकृत रूप से गिरा दिया गया है. 24 घंटे CCTV कैमरा की निगरानी में रहनेवाली जगह को बिना किसी अवरोध बम्ब द्वारा उडाया जा सकता है और आरोपी व्यक्ति की ठोस पहचान ना मिल सके यह बात हजम होने के लायक नहीं मानी जाती. ये घटना भी शैतान के पुजको द्वारा ही आयोजित मानी जाती है, ताकि जॉर्जिया गाइडस्टोन्स को मानवता के मूल्यों से भरा निर्दोष प्रतिक साबित किया जा सके और उसे तबाह करने का आरोप शैतानियत के विरुद्ध लड़ाई लड़नेवालों पे डालकर उन्हें उपद्रवी साबित किया जा सके.

अंकशास्त्र से मूल्यांकन करने पर जॉर्जिया गाइडस्टोन्स को **6-July-2022** को तोडा गया है, जहाँ **6** तारीख **6** नंबर को दर्शाता है. जॉर्जिया गाइडस्टोन्स का अनावरण अंग्रेजी पद्धति में तारीख March-22-1980 को किया गया था यानी तीसरे महीने का **3** अंक और **२२** तारीख मिलाके नंबर **322** बनता है जो की शैतानियत से जुड़े एक संगठन **"स्कल एंड बोन्स" (Skull and Bones)** का शुभ अंक माना जाता है. 1980 साल के अंको को जोड़े तो **1+9+8+0=18** नंबर बनता है, जिसे तीन बरोबर हिस्सों में बांटे तो **666** नंबर को प्रदर्शित करता है. जिस तारीख (6-July-2022) को जॉर्जिया गाइडस्टोन्स तोडा गया है, उसका दिन **6** और **7** वा महीना मिलाके नंबर **13** बनता है और साल की गिनती करे तो **2+0+2+2=6** नंबर बनता है. आखरी बात की जॉर्जिया गाइडस्टोन्स को रात के **4 बजे 3 मिनट और 33** सेकंड पर बम्ब से उड़ाया गया है, जिन सभी अंको को आपस मे जोड़ने पर **4+3+3+3=13** नंबर बनता है. **दुनिया मे जब भी कोई बड़ी और अजीब घटना होती है उसके दिन, तारीख, वर्ष या घडी में इलुमिनाटी संगठन का कोई ना कोई शुभ अंक हमेशा अप्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शित होता है जो घटना के शैतानियत से जुड़े होने का पक्का सबूत माना जाता है.**

कई लोगो को जॉर्जिया गाइडस्टोन्स पर पहली आज्ञा में लिखी 50 करोड़ की जनसँख्या को लेकर असमंजस है, लेकिन यह मूल अमेरिका में स्थापित अंग्रेजी भाषा से अनुवादित कर अन्य भाषाओ में लिखा हुआ माना जाता है, जिसमे 50 अंक के साथ मिलियन और बिलियन का उपयोग नहीं किया गया. अगर इसे 50 मिलीयन या बिलियन में रूपांतरित करे तो संख्या अत्यंत कम या फिर करोडो-अरबो मे जाती है जो मुमकिन नहीं मानी जाती. इसीलिए जॉर्जिया गाइडस्टोन्स के उदेश्यो को लेकर असमंजस हमेशा बना रहे उसके तहत मूल अंग्रेजी में लिखी आज्ञा मे 50 अंक के पीछे हज़ार, मिलियन या बिलियन जान बुज़कर नहीं लिखा गया. इसलिए आधुनिक टेक्नोलॉजी से संचालित दुनिया मे इन्हे अधिक इंसानो की जरुरत ना होकर यह संख्या 50 करोड़ ही मानी जाती है.

इलुमिनाटी संगठन के सदस्यों के कार्य और उनके आरोपित कृत्य

इल्लुमिनाटी आज आर्थिक रूपसे अत्यंत ताकतवर और अनैतिक लोगों का एक संगठन बन चूका है जो पुरी दुनिया पर शैतानियत का राज कायम करना चाहते है. **आज की तारीख में विश्व के अनेको प्रतिष्ठित नेता, आंतराष्ट्रीय संस्थाए, ख़ुफ़िया एजेंसियां, ग्लोबल माफिया, आडंबरी धर्मगुरु, बड़े उधोगपति, वकील, डॉक्टर, मीडिया, लेखक, फिल्म जगत के स्टार्स, डिप्लोमैट, खिलाड़ी, सेलिब्रिटीज, बड़े-बड़े ठग-लुटेरे जैसे अनेको प्रकार के लॉग इलुमिनाटी संगठन के गुप्त सदस्य होने के दावे किये जाते है.** लिखित सभी संस्थानों से जुड़ा हर कोई व्यक्ति इल्लुमिनाटी संगठन का सदस्य हो यह जरुरी नहीं, लेकिन योजना के अनुसार संगठन के साथ जोड़े गए कुछ खास व्यक्तियों को पैसे, पद या प्रतिष्ठा का लालच देकर भी कुछ कार्य करवाए जाते है. शैतानियत की मान्यता अनुसार संगठन से जुड़े व्यक्तियों को उनकी पदवी अनुसार ही योजनाओ की आंशिक या पूर्ण माहिती होती है. किसी भी तरह का प्रलोभन देकर जिन ईश्वरवादी लोगो को संगठन की योजनाओ में शामिल किया जाता है उन्हें मूल योजना और संगठन के बारे मे कोई जानकारी नहीं दी जाती. **वास्तव मे इलुमिनाटी कोई गुप्त संगठन ना होकर इनके सदस्य विश्व के हर कोने मे समान्य लोगो के बिच नेता, सेलिब्रिटीज, पत्रकार, डॉक्टर, वैज्ञानिक या अन्य ठगो के स्वरूपों मे मौजूद है, लेकिन इनका शैतानी धर्म और मान्यताये गुप्त होने के कारण लोग इन्हे पहचानने मे धोखा खा जाते है. आम इंसान का चोला पहनकर इनके सदस्यों का समाज के बिच मे रहना ही असल मे शैतान की माया और आजतक इनकी योजनाएँ सफल होने का गुप्त रहस्य भी है. मानवता और जनकल्याण का नाम लेकर अपनी शैतानी योजनाए विश्व पर लागु कर लोगो को डिजिटल गुलाम बनाना ही इनका वर्तमान ध्येय माना जाता है.**

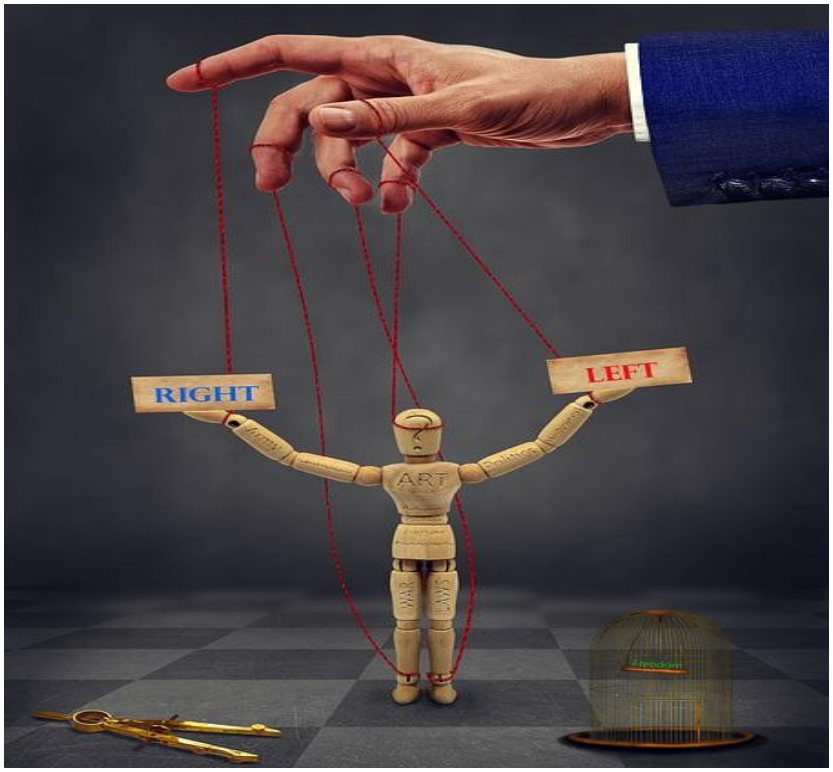

पढ़े-लिखे और साक्षर व्यक्ति भी धोखा खा जाए उसके लिए इल्लुमिनाटी संगठन विश्व के किसी देश में किसी शाशक पक्ष के व्यक्ति को नियंत्रित नहीं करते, बल्कि देशो के दो-चार अन्य विरोधी राजनैतिक पक्षों के खास व्यक्तियों के जरिये भी अपने कार्य करवाते होने के दावे किये जाते है. जब संगठन कोई एजेंडा अपनी छबी अनुसार कोई राजनैतिक पक्ष का शाशक व्यक्ति पूरा नहीं कर पाता तो वह खेल दूसरे पक्ष के व्यक्ति से शुरू कर पूरा करवाया जाता है. इनके मनसूबे और कार्यशैली किसी के पकड़ मे ना आये उसके लिए कभी खेल उल्टा भी खेला जाता है, जहाँ खेल विपक्ष के किसी सदस्य से शुरू करवाकर शाषक पक्ष के अपने व्यक्ति द्वारा पूरा करवाया जाता है. **इस तरह भिन्न भिन्न मानसिकता से ग्रसित राजनैतिक व्यक्ति या पार्टी को समर्थन करनेवाले लोगो को मुर्ख बनाकर अपने कार्यो को पूरा करवाया जाता है.**

राजनैतिक पक्ष के सामान्य कार्यकारो या इनके साथ जुड़े व्यक्तियों को भी राजनेताओ का असली खेल मालूम नहीं होता और वह देशभक्ति, लोगो की भलाई समझकर इनके कार्यो से जुड़कर पूर्ण साथ देते है और नीतियों का अंधसमर्थन भी करते जाते है. कई भ्रष्ट और बेईमान लोग भी इसे केवल पैसे कमाने का व्यापारी खेल समजके राजनेताओ के द्वारा चलाये जा रहे कार्यो को समर्थन देते जाते है और शैतानी योजनाओ को अनजाने मे आगे ले जाने मे सहायता भी करते है. **लेकिन, देश के सबसे बड़े गद्दार और देशद्रोही होने का सर्टिफिकेट मिलने के बाद ही उन व्यक्तियों को शाशक या विपक्ष के नेता के रूपमे स्थापित करने के प्रयास संगठन द्वारा किये जाते है. रोटी, कपड़ा, मकान के पीछे लगे गरीब-मध्यम वर्ग के लोग तथा व्यापार, मुश्किल से गुजरा कर रहे मध्यमवर्गी लोग या मनोरंजन तथा भोगविलास मे लिप्त अमीर लोग टीवी-सोशियल मीडिया पर चलाये जा रहे अनजान आंतराष्ट्रीय षडयंत्रकारी योजनाओ को देशहित मे समज़कर राजनेता का अंध समर्थन करते जाते है और अपने साथ पुरे परिवार को भी बर्बादी की तरफ आगे बढ़ाये जाते है.** इस तरह ये शाशक और विरोध पक्ष के सदस्य बनके काम इलुमिनाटी संगठन के लिए करते है और अपनी राजनैतिक पार्टी, देश को धोखा देते है.

इल्लुमिनाटी संगठन से जुड़े मूल राजकीय नेता अव्वल नंबर के नौटंकीबाज़ माने जाते है, जिन्हे राजनेता से ज्यादा अभिनेता या रंग-मंच के कलाकार के रूप में कार्य करना होता है. दुनिया में सक्षम माने जानेवाले कई छोटे-बड़े नेता भी वास्तव में इल्लुमिनाटी संगठन के हाथो की कठपुतली और गुलाम माने जाते है. उनके देशो मे चुनाव से लेकर उन्हें राजकीय पद दिलाने में इल्लुमिनाटी संगठन अहम् भूमिका निभाता है. शैतान के पुजको की हर योजना की अवधि कम 5 साल और अधिक में 10 साल के ऊपर मानी जाती है, ताकि कार्य पूर्वनियोजित ना लगे. इस प्रक्रिया का

मकसद होता है देश में किसी स्थानिक देशद्रोही व्यक्ति का चुनाव कर उसे अपने राष्ट्रीय और आंतराष्ट्रीय मीडिया द्वारा इतना प्रचारित किया जाए की सामान्य लोग उसे अपने गाँव, प्रदेश, राज्य, देश या धर्म का मसीहा माने. इसके लिए देश के कुछ राजकीय, जातीय या धार्मिक विवादो को उस व्यक्ति द्वारा निराकरण लाने का प्रचार कर पीछे भेड़-बकरी की तरह मानवभीड़ का निर्माण करना, जिससे उस राजकीय नेता द्वारा किये जानेवाले हर शैतानी कार्य का लोग अपना हित समझकर समर्थन करे.

इल्लुमिनाटी संगठन द्वारा चुने गए किसी भी नेता को स्वतंत्र रूप से कार्य करने की इजाजत नहीं होती, बल्कि इन्हे दी जानेवाली आंतराष्ट्रीय स्क्रिप्ट पर ही कार्य करना होता है. इनका कार्य आंतराष्ट्रीय योजनाओ को देशभक्ति का तड़का लगाकर अपने देश के लोगो के बिच पेश करना और अंध भीड़ के समर्थन से उसे लागू करवाना माना जाता है. देश के लोगो का मानस अच्छी तरह से पढ़ने के बाद उनकी समस्याओ को कुछ साल के भीतर दूर कर विकास के लम्बे और जूठे वादे लोगो से किये जाते है. वास्तव मे लम्बे वादो के पीछे उदेश्य शैतानी षडयंत्रो को अमली बनाने समय का होता है, जिसकी अवधि शैतानो द्वारा निर्धारित की जाती है. समय से वादे पुरे ना होने पर आयोजित कार्यक्रम अनुसार दोष किसी पूर्व शाशको, भ्रष्ट तंत्र, पर्यावरण या लोगो की बुरी मानसिकता पर डालकर गंगास्नान किया जाता है.

राजनेता के रूप में स्थापित होने के बाद वास्तविक जीवन में इन्हे देश को बरबाद करने के अलावा कोई दूसरा कार्य नहीं करना होता. **इन्हे केवल "कैमराजीवी" बनकर किसी बंद स्टूडियो मे या प्राकृतिक स्थान पर फोटोशूट करवाना होता है.** राजनेताओ के भावनात्मक फोटो और वीडियो का उपयोग नियंत्रित टीवी मीडिया और

सोशियल मीडिया के माध्यम से लोगो के साथ झूठा भावनात्मक संबंध स्थापित करने के लिए तथा गद्दार राजनेता को देशभक्त सिद्ध करने के लिए किया जाता है. **फोटोग्राफी की मदद से राजनेता की ठगाई को देशप्रेम, त्याग, बलिदान, परिश्रम और भावनाओ का नकली रंग लगाकर प्रचारित किया जाता है. षड्यंत्र से अनजान लोगो के मानस पर यह गहरी छाप छोड़ता है और लोग जाने अनजाने ही बिना कोई तर्क करे या खबरों की सच्चाई जाने राजनेताओ के प्रशंसक और समर्थक बन जाते है.** कूटनीति मे माहिर शैतान के पूजक देश में मात्र किसी शाशक पक्ष के नहीं, किन्तु विपक्ष के नेताओ को भी स्थापित करते है. इस तरह दोनों राजनेताओ के समर्थको को कुत्तो की तरह आपस मे लड़वाया जाता है और देश को बर्बाद करने का आरोप एक दुसरे पर लगाकर लोगो को मुर्ख बनाया जाता है.

शैतानियत के संगठन से जुड़े पत्रकार और अनेको प्रतिष्ठित व्यक्ति भी "ठगपुरुष: को "युगपुरुष" बनाने मे अपना अहम् योगदान निभाते है और राजनेताओ को किसी दिव्य शक्ति का अवतार साबित करने के लिए घर्मग्रंथो के कथनो को भी तोड़ मरोड़कर पेश किया करते है. 19 वी सदी मे "शैतान के परम पुजक" के ख़िताब से सन्मानित **एलिस्टर क्राउली (Aleister Crowley)** का जीवन सभी ठगो के लिए आज भी आदर्श माना जाता है जिसने अपने जीवनकाल मे कवि, नवलकथाकार, संगीतकार, चित्रकार, जादूगर, नेता, धर्मगुरु, जासूसी एजेन्ट जैसे अनेको बहुरूपी किरदार एक-साथ निभाए थे **Link**.

आम तौर पर इल्लुमिनाटी संगठन से जुड़े सारे राजनेता भावनाविहीन माने जाते है, जिन्हे अपने सदस्य मंडल में शामिल करने से पहले शैतानियत के संस्कार दिए जाते है. इनका जन्म किसी भी ईश्वरी धर्म मे हुआ हो, लेकिन मूल रूप से यह सभी ईश्वरवादी धर्मो के विरोधी बनकर कार्य करते है तथा ईश्वर को माननेवालो में

दया, करुणा, सेवा जैसे मानवीय गुणों को इंसान की कमजोरी समझते है. इल्लुमिनाटी संगठन का जो राजकीय नेता श्रेष्ठ अभिनय और नाट्यकला से जितने लोगो को जाल मे फसाकर बड़ी भीड़ निर्माण कर सकता है उतना ही बड़ा दाइत्व और कार्यभार उन्हें संगठन द्वारा सौपा जाता है. बेशर्मी इनका गहना होता है तथा वेशभूषा बदलने मे यह कुशल बहुरूपी और व्यवहारीक जीवनमे उच्च कोटी के ठग माने जाते है. मुद्दों को भावनात्मक कलरबाजी के साथ उछालना और लोगो की आपत्ति मे कूटनीति पूर्वक अपने फायदों का अवसर ढूंढ निकालने मे यह निपूर्ण माने जाते है.

शैतानियत के संस्कार ग्रहण करने के बाद असली जीवन में भावनाविहीन होने के कारण रोना-धोना, घड़ियाली आंसू बहाना, धार्मिक, भावुक या देशभक्त होने का नाटक करना इनके लिए अत्यंत कठिन कार्य माना जाता है. **लेकिन जो भी राजनेता अपनी श्रेष्ठ नाट्यकला और अभिनय से ईश्वर में माननेवालो की बड़ी भीड़ को भावनात्मक कलरबाजी से वशीभूत कर सकता है, उसे संगठन मे उतना ही निपूर्ण और बुद्धिमान व्यक्ति माना जाता है.** झूठ बोलना, देश की आम जनता के लिए भावुक बनने का स्वांग रचना, रोने-घोने की कलरबाजी कर छल पूर्वक लोगो से भावनात्मक संबंध स्थापित करना तथा हर विदेशी योजनाओ को स्वदेशी बनाकर देश मे अमली बनाना इनका प्रमुख कार्य माना जाता है. **इसतरह राष्ट्रीय और आंतराष्ट्रीय दोनो स्तर पर श्रेष्ठ भावनात्मक कलरबाजी करने के लिए सामर्थ्यवान नेता को संगठन द्वारा पुरस्कृत किये जाने तथा उच्च पदवी मिलने के दावे किये जाते है.**

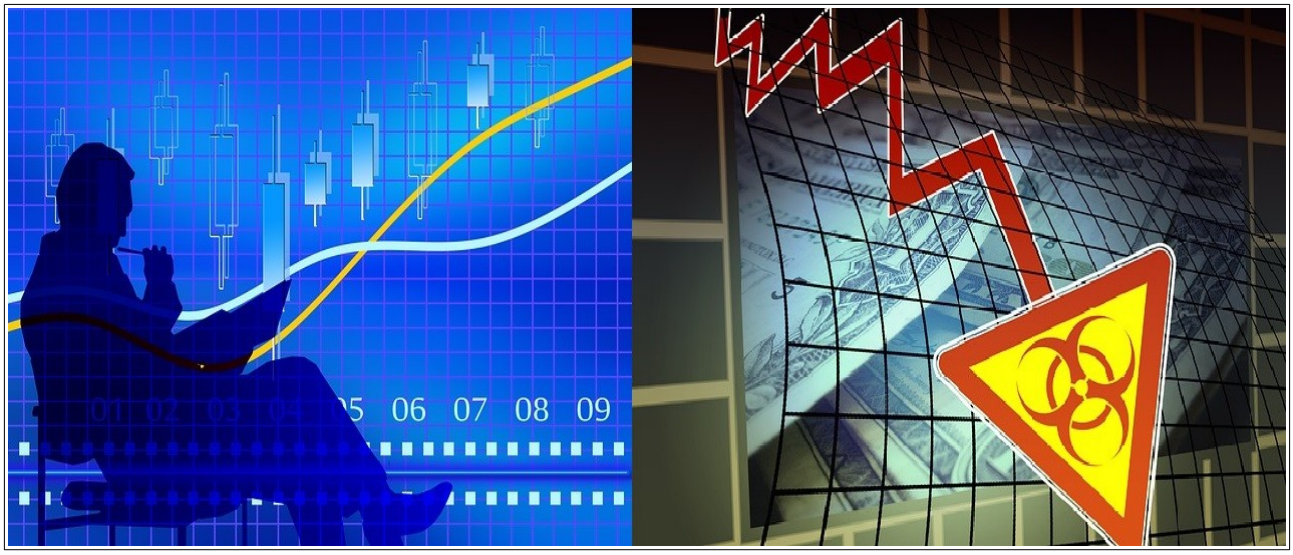

इल्लुमिनाटी संगठन द्वारा स्थापित किये गए नेताओ को अपने ही देश की अर्थव्यस्था को बर्बाद करने का मूल कार्य सौपा जाता है. देश में व्यापर के लिए ऐसी रूपरेखाएँ निर्मित करवाना जिससे लधु उधोग नष्ट होकर धीरे धीरे संगठन से जुड़े बड़े

संस्थानों के कब्ज़े में आये और देश की संपत्ति को निरर्थक कार्यो में खर्च कर उससे सरकारी संस्थानों को घाटे में लाने का कार्य करना तथा विदेशो से कर्ज लेकर विदेशी नीतियों को देश में लागू कर अपने ही देश को गरीबी एवं कर्ज में डुबोना इनकी प्रमुख कार्यसूची मानी जाती है. घाटे में लायी सरकारी संपत्तियों को बेचते जाना और देश के उधोग और सुविधाओ को निजी संस्थानों को सौपने का अवसर प्रदान करना बड़ा उदेश्य माना जाता है. देश में एक तरफ महेंगाइ बढाकर और दूसरी तरफ अधिक टेक्स (कर) लादकर सफ़ेद ठग बनकर जनता को लूंटने का कार्य संगठन के राजनेताओ द्वारा करवाया जाता है. शैतानियत की स्थापना करने मे इनके रास्ते में आनेवाले व्यक्ति या संस्थाओ को सरकारी एजेंसीयो और मशीनरीयो का दुरूपयोग कर फर्जी कार्यवाही से डराने, धमकाने या किसी केस में फ़साने का कार्य भी संगठन के द्वारा चुने गए नेताओ द्वारा करवाए जाने के दावे विश्व मे किये जाते है.

विश्वके कुछ ईमानदार नेता जो शैतान के पुजको के सामने सर नहीं झुकाते वह जाबाज़ नेता अधिकतर आफ्रिकन देशो से माने जाते है. अफ्रीकन देशो के नेता और जनता अन्य देशो के मुकाबले दवाई से लेकर अन्य चीजों में सालो से किये जा रहे विदेशी षडयंत्रो से परिचित एवं अधिक जागृत मानी जाती है. अफ्रीकन देशो के कुछ नेता जो सीधे रूपसे इनके नियंत्रण में नहीं आते उनकी हत्या कर उन्हें रास्ते से हटाने का कार्य करवाए जाने के दावे किये जाते है. विश्व के लोगो को षडयंत्रो की गंध ना आ सके उसके लिए शैतान के पुजको द्वारा ईमानदार नेताओ की मौतों को दुर्घटना, हृदयघात या बीमारी से होने का थप्पा लगवाकर विश्व के अन्य नेताओ को उनके खिलाफ ना जाने की चेतावनी दिया करते है जो सामान्य लोग की समज से परे होती है. लेकिन फिरभी अफ्रीकन देशो सहित अन्य देशो के कुछ नेता इनकी कूटनीतियों के आगे बिना सर झुकाये हिम्मत से खड़े होकर अपने देश के लोगो की रक्षा करते माने जाते है. आंतराष्ट्रीय व्यापार या अन्य दबाव के चलते वह भी केवल

नाम मात्र दिखावे के लिए विदेशी योजनाओ को कागजो पर जिंदा रखते है, पर वास्तव में जनता पर कोई कूटनीतिक विदेशी योजनाए थोपने का प्रयास नहीं करते.

यही कारण माना जाता है की शैतान के पूजक कोई "भूत वाइरस या बीमारी" का जन्म और प्रसरण का स्थान अधिकतर आफ्रिकन देशो से निर्मित होने का आंतराष्ट्रीय नाटक करते है और उन्हें अपने नियंत्रण में लाने का प्रयास करते रहते है. विश्व में किसी भी देश का बड़ा नेता अगर शैतान के पुजको द्वारा निर्मित आंतराष्ट्रीय दबाव को किनारा कर अपने देश को आत्मनिर्भर बनाने की हिम्मत करता है तो उनके मारे जाने के दावे विश्व में किये जाते है. ऐसा करने पर उस देश के नेता को आंतकवाद से लेकर अन्य आंतराष्ट्रीय आरोपों में घेरकर युद्ध करके जितना तथा उसके देश के सभी संसाधनों पर कब्ज़ा करना शैतान के पुजको की कूटनीति का बड़ा हिस्सा माना जाता है.

विश्व के अधिकतर लोगो की यही मान्यता होती है की मीडिया स्वतंत्र है या कुछ हद तक किसी देश की शक्तिशाली राजकीय पार्टी द्वारा ही नियंत्रित होता है. **लेकिन वास्तव में पुरे विश्व का टीवी मीडिया, अख़बार, इंटरनेट, सोशियल मीडिया, रेडियो या प्रचार के अन्य माध्यम अप्रत्यक्ष रूप से शैतान के पुजको द्वारा ही नियंत्रित माने जाते है. किस देश में कौनसी राजनैतिक पार्टी या नेता को प्रचार के माध्यम से मसीहा बनाकर ऊपर लाना है या उसे बदनाम करके निचे गिराना है, यह शैतान के पुजको द्वारा ही निर्धारित किया जाता है**. जब किसी देश में कोई नेता उनकी नीतियो का समर्थन ना कर उसके विरुद्ध कार्य करता है तो उसके व्यक्तित्व या पार्टी को लोको के बिच बदनाम कर उसे नुकसान पहोचाने का कार्य नियंत्रित मीडिया के माध्यमों से किया जाता है. **देशो के कुछ स्थानिक मीडिया को छोड़कर बड़ी**

तरकीब से इन्होने विश्व का 95% मीडिया नियंत्रित किया हुआ माना जाता है, जिसमे एडवरटाइजिंग नेटवर्क से लेकर मीडिया कंपनी के कमाई के श्रोतो पर शैतान के पुजको का अप्रत्यक्ष रूप से कब्ज़ा माना जाता है. विभिन्न देशो के गिने चुने कुछ स्वतंत्र मीडिया और स्वतंत्र पत्रकारो को छोड़कर कोई भी मीडिया ईमानदार होकर भी पूर्ण रूपसे इनके नियंत्रण से बहार नहीं माना जाता.

मीडिया के साथ टीवी शैतान के पुजको का प्रमुख हथियार माना जाता है. सामान्य रूपसे टीवी को एक मनोरंजन के साधन के रूप में प्रचारित किया गया है, परंतु इसका उपयोग हथियार के रूप में भी किया जा सकता है. **आँखों से दिखनेवाले चलचित्र के साथ एक खास लय का संगीत संमोहन का काम कर सकता है और उसके जरिये टीवी को देखनेवाले व्यक्ति के मन में जो भी विचार प्रस्थापित करना चाहे वह बिना किसी तर्क के उसके मन में स्थापित किया जा सकता है.** टीवी को **मस्तिष्क नियंत्रण (Mind Control)** के लिए तथा अदृश्य तरंगो का उपयोग कर व्यक्ति का माइंड कन्ट्रोल करने के लिए बदनाम प्रोजेक्ट को **एम. के. अल्ट्रा (M.K Ultra)** के नाम से जाना जाता है. सुनने मे अजीब, लेकिन इस प्रोजेक्ट को पूर्ण वास्तविकता माना गया है जिसके अप्रत्यक्ष प्रमाण भी मौजूद माने जाते है. माइंड कंट्रोल और M.K Ultra (एम. के. अल्ट्रा) प्रोजेक्ट के बारे में जो भी दावे किये गये है उसकी जानकारी वीडियो द्वारा प्राप्त की जा सकती है **TV 1**, **TV 2**, **MK 1**.

इल्लुमिनाटी संगठन के सदस्यो मे बहुत से फिल्मस्टार, डायरेक्टर, पॉप सिंगर और म्यूजिशियन शैतानियत को गुप्त तरीके से प्रचारित करने के लिए बदनाम हस्ती माने जाते है. फिल्मो के जरिये बुराई को हिम्मत का प्रतिक बताना और अच्छाई को कमजोरी दिखाना इनका प्रथम हथियार माना जाता है, जिससे ईश्वर में माननेवालो

की वृतियो को बुराई की तरफ धकेला जा सके. **फिल्मो मे किरदार चाहे हीरो का निभाना हो या विलन का, लेकिन दोनों किरदारो के सामान्य गुणों मे शैतानी वृतियो को प्रचारित करना इनकी प्राथमिकता मानी जाती है.** दुनिया में अमीर बनने के लिए या सफलता प्राप्त करने के लिए बुराई का होना आवश्यक है ऐसे गुप्त संदेश फिल्मो के जरिये देकर लोगो को बुरा बनने के लिए प्रेरित करना इनका प्रमुख लक्ष्य माना जाता है. लोगो का हकीकत पर विश्वास कायम ना रहे उसके लिए वास्तविकता को फिल्म के माध्यम कल्पना या हसी मजाक के रूप में दिखाना और कल्पना को सत्य दिखने का उल्टा खेल ईश्वरवादियों को भ्रमित करने के लिए फिल्मस्टारो के माध्यम से करवाया जाता है.

पॉप सिंगर भी अपने गानो में शैतानियत के चित्र, जादूटोना और शैतान की तारीफ़ में गाने गाकर शैतानियत को प्रचारित करने के सबूत पेश किये जाते रहे है. म्यूजिशियन के द्वारा भी गानो में कुछ साउंड बिट्स का प्रयोग किया जाता है, जिससे गाना सुननेवालों के मष्तिस्क पर यह शैतानियत की गहरी छाप छोड़ता है. दावों के अनुसार 432 HZ संगीत की फ्रीक्वेन्सी ब्रह्मांड की सारी नैसर्गिक वस्तुओ मे पायी जाती है जो मनुष्य के मन को शांत तथा एकाग्र रखने, बौद्धिक और शारीरिक रूप से फायदा पहुचनेवाली सिद्ध हुयी है. परंतु शैतान के पुजको द्वारा संगीत की नैसर्गिक मानी जानेवाली फ्रीक्वेन्सी को आंतराष्ट्रीय स्तर पर बदलवाकर 440 HZ कर दिया गया है जो अप्राकृतिक एवं मनुष्यो के मन को विक्षिप्त करने, स्वाभाव को क्रोधी बनाने तथा उनका बौद्धिक विकास रोकने के लिए विध्वंषक बताई जाती है. 432 और 440 की फ्रीक्वेन्सी मे मुलभुत फर्क क्या है उसका अंकशास्त्र के नज़रिये से अद्भुद विवरण वीडियो में दिया गया है **Link**. साथ ही इसके संदर्भ मे प्रारंभिक वैज्ञानिक रिसर्च भी देख सकते है **Link**.

लूसिफर के बेफोमेट की तालीम अनुसार फिल्मो के माध्यम से समाज मे **लेस्बियन, गे, बाईसेक्सयुअल, ट्रांसजेंडर (Lesbian, Gay, Bisexual, Transgender-LGBT) तथा लिव-इन रिलेशनशिप (Live-in Relationship)** एजेंडा को प्रचारित करना फिल्मस्टारो का दूसरा प्रमुख कार्य माना जाता है.

फिल्मो के माधयम से स्त्री-स्त्री और पुरुष-पुरुष (Lesbian & Gay) के समलैंगिक संबंधो को प्रचलित करने से मतलब ना केवल ईश्वर में माननेवालो लोगो की जनसँख्या को नियंत्रित करना है, **परंतु शैतानियत की मान्यता अनुसार यह अपने मसीहा शैतान को ट्रांसजेंडर (Transgender) यानी स्त्री-पुरुष के मिश्र भौतिक-मानसिक स्वरुप में एकसाथ देखते है.** जिसके कारण वास्तविक जीवन मे भी यह बाईसेक्सुअल यानी स्त्री-पुरुष दोनो के साथ हमबिस्तर होने मे कोई आपत्ति महसूस नहीं करते या जी चाहे वैसे "गे" या "लेस्बियन" होनेको भी कोई विकृति नहीं समझते. **ट्रांसजेंडर ना केवल शारीरिक, बल्कि मानसिक स्तर पर भी स्त्री-पुरुष का मिश्र स्वरुप है जो शैतानियत की मान्यता अनुसार परम पूजनीय स्वरुप माना जाता है.** इसीलिए फिल्मस्टारो के लिए ट्रांसजेंडर एजेंडा को समाज में प्रचलित करना और वास्तविक जीवन मे भी इसका अनुकरण करना बड़ा पूजनीय कार्य माना जाता है. इसीलिए शैतानी संगठन से जुड़े फिल्मस्टारो के जीवन मे पति-पत्नी के अलावा गे-लेस्बियन संबंधो सहित लिव इन रिलेशनशिप का होना आम चीज मानी जाती है.

टीवी सीरियलों की कहानी के माध्यम से किशोर अवस्था से पहले ही ईश्वरवादियों के बच्चो को सेक्स मे रूचि जगाना, स्त्री या पुरष के प्रति प्रेम के नाम पर आकर्षण पैदा करवाना, समलैंगिक संबंधो को जायज़ ठहराकर सामाजिक दूषण फैलाना तथा पीढ़ियों के बिच विचारो का फासला पैदा करवाकर परिवारवाद को नष्ट करना इन कार्यो के पीछे कारणभूत मनशा मानी जाती है.

यही कारण माना जाता है की अपने फिल्म के प्रमोशन, प्रीमियर, या खुद के सगाई या लग्नप्रसंग में मौका पाकर स्त्री-परुष दोनों के मिश्र कपडे पहनकर फिल्मस्टार्स ट्रांसजेंडर (Transgender) एजेंडा को प्रदर्शित करते देखे जाते है. टीवी-सीरियल मे शैतानियत को प्रमोट करना या कॉमेडी शो मे पुरुषो को स्त्रियों के और स्त्रियों को पुरुषो के कपडे पहनाके फैशन के नाम से नॉर्मल दिखाकर ईश्वर मे माननेवालो की मानसिकता को विकृत बनानेका कार्य शैतानो द्वारा प्रायोजित माना जाता है. स्त्री पुरुष समानता के नाम पर दोनों के लिए एक ही तरह के टॉयलेट निर्माण करने का कार्य वास्तव मे ट्रांसजेंडर एजेंडा का हिस्सा माना जाता है. हीरो और हीरोइन का पैसो के लिए नंगा होकर फोटोशूट करवाना सुंदरता या फैशन की आड़ मे ईश्वरवादियों के बिच "गे" और "लेस्बियन" जैसे समलैंगिक संबंधो को प्रचारित करने का बड़ा माध्यम माना जाता है जिससे समलैंगिक संबंधो के शिकार हुए ईश्वरवादी लोग कभी संतान पैदा ना कर पाए ऐसे दावे किये जाते है.

ट्रांसजेंडर का एजेंडा आंतराष्ट्रीय स्तर पर कुछ फिल्मस्टार्स ना केवल खुद प्रचारित करते है, बल्कि अपने संतानो को भी चित्र-विचित्र स्त्री-परुष की मिश्र पोशाक पहनाके उन्हे समाज मे और इंटरनेट पर प्रचलित करवाकर शैतानी योजनाओ मे शामिल करने के दावे है. सबसे महत्वपूर्ण बात है की LGBT का तमाम एजेंडा स्त्री-पुरुष के बिच कोई भेदभाव मिटाकर समानता का हक़ दिलाने के नाम पर तथा स्वतंत्रता के सिद्धांत को गलत तरीके से प्रचारित कर किया जाता है. इस तरह ईश्वर में माननेवालो के पवित्र मन को दूषित मानसिकता से ग्रसित करने के प्रयास शैतान के पुजको द्वारा करवाए जाते है. सोशियल मीडिया के जरिये सेलिब्रिटीज के चाहनेवालो की भीड़ निर्मित कर विविध धर्मो के लोगो को शैतानियत के विचार एवं आचरण के प्रति आकर्षित कर उनके व्यवहार में बदलाव लाना शैतानी संगठन से जुड़े फिल्मस्टार, पॉप सिंगर, म्यूजिशियन जैसे अन्य लोगो का मकसद माना जाता है.

फिल्मो के माध्यम से LGBT की तरह लिव-इन रिलेशनशिप यानी बिना शादी के जीवनसाथी की पसंदगी कर घर बसाना और बच्चे पैदा कर जीवन व्यतीत करने की रस्म पचारित करने के पीछे इरादा ईश्वर में माननेवालो की पारिवारिक व्यवस्था और धार्मिक संस्कारो को नष्ट कर उन्हें शैतानियत के संस्कार की तरफ झुकने का माना जाता है. इसको प्रचारित करने के पीछे फिल्मस्टार्स और डायरेक्टर की मनशा साफ़ सुथरी लगे उसके लिए कारण जीवन की आज़ादी और स्वतंत्रता का बताकर कलरबाजी की जाती है. लिव-इन रिलेशनशिप पद्धत्ति को लोग अपने वास्तविक जीवनमे चरितार्थ करे उसके लिए कुछ फिल्मस्टार्स और सेलिब्रिटीज को मीडिया के माध्यम से किसी के साथ लिव-इन रिलेशनशिप में होने की खबरे चलाई जाती है और सोशियल मीडिया पर भी इसे अधिक प्रचारित करवाया जाता है, जिसके कारण इन कलरबाजो को अपना आदर्श माननेवाले मासूम, मुर्ख और नादान लोगो को षड़यंत्र का शिकार बनाकर बर्बाद किया जा सके. मजबूरी, आज़ादी या अय्याशी के नाम पर या सफलता पाने के लिए शरीर का सौदा करना और वैश्यावृति को भी बढ़ावा देकर दूषित विचारो को फिल्मो के माध्यम से प्रचारित करने का काम भी किया जाता है.

फिल्मस्टार के जरिये **जाहेरात (Advertising)** के माध्यम से बेशुमार पैसा कमाना भी इलुमिनाटी संगठन का व्यापारी मकसद माना जाता है. ठंडे पेय, कपडे, जूतों से लेकर स्त्रियों के लिए सौंदर्य प्रसाधनों जैसी चीजों का प्रचार फिल्मस्टार द्वारा करवाकर उनके जरिये चीजवस्तुओं की बिक्री विश्व में बढ़ाई जाती है और चीजों को एक खास स्टेटस सिंबल (Status Symbol) बनाकर उसकी मार्केटिंग की जाती है ताकी मुनाफा अनेक गुना बड़ा हो. इस तरह फिल्मस्टार से जुड़े उनके चाहको से ब्रांड स्थापित कर मोटा पैसा कमाने का व्यापारी उदेश्य शैतान के पूजको का माना जाता है. **राजनेताओ की तरह फिल्म स्टारों में भी भावनात्मक कलरबाजी को ही सबसे बड़ा**

ख़िताब माना जाता है और किसी भी ईश्वरवादी धर्म में उन्होंने जन्म लिया हो, लेकिन फिल्मो मे जरिये बुराई के किरदार को जी जान से निभाकर धन अर्जित करना इनके जीवन का ध्येय माना जाता है.

ऐसे कोई फिल्मस्टार या सेलिब्रिटी की ठग प्रवृतियो से अनजान समाज के सामान्य लोगो द्वारा इन्हे बड़ी इज्जत और सन्मान दिया जाता है, लेकिन अपने ही संगठन मे इनकी औकाद सबसे निचे की पायदान पर केवल मनोरंजन करानेवाले दो कोड़ी के नच-नचनियो से ज्यादा नहीं मानी जाती. जब भी यह सामान्य जनता के बिच थोड़े प्रचलित होते है तब मान्यता के अनुसार अपनी आत्मा शैतान को बेचकर जीवनभर शैतान की गुलामी करने के बदलेमे उन्हे बेशुमार दौलत-शौहरत मिलती है जिसे भोगविलास के लिए हासिल करना ही उनके जीवन का उदेश्य माना जाता है. **इनके संगठन में पैसा और सत्ता पर अधिपत्य धारण करनेवाले आंतराष्ट्रीय व्यापारियों का ही सर्वोच्च अधिपत्य माना जाता है.** फिल्मो में हीरो या विलन के रूप मे शैतान का किरदार निभाने के लिए इनमे आतंरिक स्पर्धा होती है और फिल्म में जिसे भी यह किरदार मिलता है उसे बहुत बड़ा सन्मान मानकर यह शैतानो के श्रेष्ठ चाटुकार के रूप मे अपने आप को स्थापित करने का प्रयत्न करते है. **जब भी किसी देश में कोई बड़ी शैतानी योजना को अंजाम देना होता है तो लोगो का ध्यान भटकाने के लिए फिल्मस्टारो तथा उनके बच्चो का बड़े पायमाने पर उपयोग किया जाता है. वर्तमान मे फिल्मस्टारो का उपयोग वाइरस, बीमारी और उसकी फर्जी दवाई को प्रचारित करने के लिए भी बड़े पायमाने पर होने के दावे है जहाँ इनके वाइरस-बीमारी से ग्रसित होने की फर्जी खबर छपवाना तथा उनके द्वारा सुरक्षा के लिए फर्जी दवाई का सेवन करनेका अभिनय करवाना भी प्रचार के लिए सिद्ध प्रयोग माना जाता है.**

वर्तमान में विश्व का सबसे खतरनाक कार्य इल्लुमिनाटी संगठन के साथ जुड़े डॉक्टर, वैज्ञानिक और पत्रकारों का माना जाता है, जहाँ जलवायुपरिवर्तन के नाम पर

प्रकृति को कृत्रिम केमिकल द्वारा दूषित करने तथा वाइरस-बीमारीयो के काल्पनिक भय का वातावरण निर्मित करने में यह अहम् भूमिका निभाते है. वाइरस टेस्टिंग की मूल वैज्ञानिक पद्धतियों के मापदंडो से छेड़छाड़ कर वैज्ञानिक तरीके से वाइरस के संक्रमण को व्यक्ति मे मौजूद दिखाकर उन्हे वाइरस-बीमारी की दवाइयों तक पहोचाने तथा फर्जी डाटा के जरिये दवाई को वाइरस से लड़ने मे विश्वस्तर पर असरदार साबित करने मे इनकी अग्रेसर भूमिका मानी जाती है. इसतरह फर्जी बीमारी से सुरक्षा के नाम पर दवाइयाँ खिलाकर लोगो की जनसंख्या को कम करने के मुलभुत कार्यक्रम में यह लिस्ट माने जाते है. **इनकी नजदीकी योजनाओ मे सेक्स करने से किसी भूत वाइरस के संक्रमण का खतरा बताकर जनसँख्या को खुद उनके ही घरो मे कैद कर निगरानी के लिए कैमरा स्थापित करने की भी योजना कार्यरत मानी जाती है.** इसके साथ विश्व के ईमानदार डॉक्टर, वैज्ञानिक या पत्रकार जो सच दिखाकर झूठ का मायाजाल तोड़ सकते है उनके प्रचार के सभी माध्यमों को प्रतिबंधित करवाना और उनके वैज्ञानिक दावों को पहले से ही अफवा बताकर निर्दोष लोगो को सत्य से वंचित रखने के कार्य शैतान के पुजको द्वारा आयोजित माने जाते है. विश्व के भ्रष्ट डॉक्टर, वैज्ञानिक और पत्रकारो को पैसो के लालच और सत्ता से नियंत्रित कर उनसे गुनाहीत कृत्य करवाना शैतान के पुजको का वैश्विक खेल माना जाता है.

विश्वमे एक तरफ बहार से आतंकवाद को प्रोत्साहित करना और देशो के बिच युद्ध की स्थिति निर्मित कर उनकी अर्थव्यवस्था को नष्ट करना शैतान के पुजको की कूटनीति का हिस्सा माना जाता है. देशो के समूहों को आपस में लड़ाकर जनसँख्या कम करने के साथ उन्हें आर्थिक रूपसे कमजोर बनाना, खाने पिने की सप्लाई अवरोधित कर भुखमरे की स्थिति निर्मित करवाना तथा देशो को विदेशी कर्ज में डुबाकर गुलाम बनाने की योजना इनके पीछे मानी जाती है. साथ ही एक विश्वीय सरकार लाने के लिए सभी देशो मे लागु की गयी योजनाओ से त्रस्त गरीब, अशिक्षित

और बेरोजगार लोगो का आक्रोश भड़के नहीं और आंतरिक आंदोलनों से उनकी योजनाए विफल ना बने उसके लिए कुछ पाखंडी धर्मगुरुओ को मैदान मे उतारे जाने के दावे है. आरोपो के अनुसार पाखंडी धर्मगुरु चोला बदलकर अपने धर्म की आड़ में अहिंसा के सिद्धांत को गलत तरीके से प्रचारित कर लोगो को बिना किसी आंदोलन सहनशक्ति बढ़ाने का मार्ग सिखाते है. संगठन के गुप्त सदस्य एवं धर्मगुरुओ के आडंबर के पीछे मूल उदेश यही माना जाता है की लोग परेशानियों से त्रस्त होकर क्रोध या आक्रोश में आकर योजनाओको लागू करनेवालो की पिटाई ना करे और गुप्त योजनाओ का कार्य लम्बे समय तक देशो मे बिना किसी अवरोध के चलता रहे ऐसा माना जाता है. .

अपनी योजनाओ को पूरा करने की लिए जिन चीजों को राजकीय तरीके से नहीं सुलझाया जा सकता उसे धार्मिक तरीके से सुलझाने में शैतान के पुजको द्वारा उनके संगठन के सदस्य बने ऐसे आडंबरी धर्मगुरुओ की मदद ली जाती है जिसमे किसी विशेष धर्म पर कोई टिपण्णी करवाकर धार्मिक उत्पाद मचा कर उन्हें विश्व स्तर पर लड़वाना भी उदेशो में शामिल माना जाता है. इस तरह हर देश में बहार से आतंकवाद-युद्ध और दूसरी तरफ आंतरिक रूप से धर्मो, पंथो तथा सम्प्रदायो के बिच कलेश पैदा करवाकर नयी वैश्विक व्यवस्था लाने के लिए शैतान के पुजक कार्यरत होने के दावे विश्व मे किये गए है.

नयी वैश्विक सरकार लाने के लिए विश्व के देशो के जिन अति संवेदनशील मुद्दों को सरकार या धर्मगुरुओ के द्वारा नहीं सुलझाया जा सकता उसे देशो के न्यायलय के माधयम से पूरा करवाने का कार्य शैतान के पुजको द्वारा आयोजित माना जाता है. वर्तमान में शैतानी षडयंत्रो से जुड़े व्यक्तियो मे न्यायाधीशों की गिनती भी की जाती है जो संगठन की परम सिद्धि मानी जाती है. जहाँ संगठन द्वारा नियंत्रित न्यायाधीश

की पहोंच ना हो वहाँ पर पैसे-पद की लालच देकर या डर दिखाकर न्यायलय के माध्यम से कार्य पूरा करवाने में यह सक्षम माने जाते है. संगठन के हाथो बिकाऊ न्यायाधीश का पहला कार्य सरकार के परम विरोधी होने का समाज मे दिखावा करना बताया जाता है, जिससे न्यायाधीश द्वारा किया गया कार्य लोगो को पूर्वयोजित ना लगे. देश को धोखा देने के लिए कुछ बिकाऊ न्यायाधीश सरकारी नीतियों की कड़ी आलोचना करने का स्वांग रचकर परदे के पीछे से कार्य को पूर्ण करवाकर संगठन की मूल योजनाओ को अंजाम देते होने के दावे किये गए है. **वर्तमान मे न्यायाधीशो को पैसो का लालच या डर दिखाकर उनसे कार्य करवाने का उदेश्य "विश्व सरकार" बनाने से पहले देशो के संविधान को ख़त्म करते वक्त कोई कानूनी अड़चन खड़ी ना हो उसके लिए माना जाता है.** दूसरा कार्य न्यायालयो को वाइरस, बीमारी के नाम से प्रतिबंधित कर सभी वकील और न्यायाधीशों को दूर कर केवल इंटरनेट के माध्यम से आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस द्वारा संचालित रोबोट के जरिये ऑनलाइन सुनवाई करवाने का माना जाता है. क्योकि इन योजनाओ की पूर्ति के बाद ही विदेशो में बैठकर संगठन द्वारा देशो की आंतरिक व्यवस्था पर इंटरनेट के जरिये निगरानी रख देशो की आंतरिक न्याय व्यवस्था पर पूर्ण कब्ज़ा किया जा सकता है. लेकिन दावों के अनुसार, आज भी बहोत से नीतिवान न्यायाधीश अपने देशो मे इन अदृश्य ताकतों के सामने सत्यवादी आलोचना, हिम्मत और ईमानदारी से लड़कर अपना दायित्व निभाने तथा अपने देश के संविधान की रक्षा करने मे कार्यरत माने जाते है. लेकिन ईमानदार न्यायाधीशों को भी अपने नियंत्रित मीडिया के माध्यमों से एक या दूसरी तरह बदनाम करने के प्रयास वर्तमान में जारी होने के दावे विश्वभर मे किये जाते है.

जूलियन असांजे (Julian Assange)

एड्वर्ड स्नोडेन (Edward Snowden)

जूलियन असांजे (Julian Assange) और एड्वर्ड स्नोडेन (Edward Snowden) इंटरनेट की दुनिया में दो बड़े महानायक और सन्माननीय नाम माने

जाते है, जिन्होंने अपनी जान जोखिम में डालकर दुनिया के बड़े देशो द्वारा टेक्नोलॉजी से संचालित जासूसीतंत्र और इंटरनेट के माध्यम से लोगो की जानकारियां कैसे हैकिंग या प्रोग्राम के माध्यम से चुराकर निजता का हनन किया जाता है उससे पर्दा उठाया था. साथ ही इनके पास युद्ध के समय के कुछ गुप्त दस्तावेज और विश्व में काले धन को लेकर अहम जानकारियां शामिल थी जो विश्व के लोगो के होश उड़ने के लिए काफी थी. लेकिन दुर्भाग्यवश किसी राष्ट्रीय या आंतराष्ट्रीय मीडिया द्वारा दोनों को अधिक प्रचलित नहीं किया गया.

मूल ऑस्ट्रेलिया देश के नागरिक "जूलियन असांजे" विकीलीक्स (Wikileaks) वेबसाइट के 'संस्थापक' हैं, जिन्होंने 2006 मे कई ऐसे खुफिया दस्तावेजों को प्रकाशित किया था जिसने पूरे दुनियाभर में तहलका मचाकर रख दिया था. विकिलीक्स पर काम करने से पहले जूलियन असांजे न केवल एक बेहतरीन कंप्यूटर प्रोग्रामर थे बल्कि एक मशहूर हैकर भी थे. जूलियन असांजे द्वारा प्रकाशित वह कुछ ऐसे दस्तावेज थे जो अमेरिकी सेना की ओर से की गई बगदाद एयर स्ट्राइक से संबंधित अत्यंत गोपनीय थे. जूलियन असांजे के इस काम को लेकर काफी सारे देश उनसे नाराज थे, क्योंकि वह जितने भी दस्तावेजों को अपनी वेबसाइट पर प्रकाशित करते थे, उनका उनके पास साक्ष्य प्रमाण मौजूद था.

जूलियन असांजे के बड़े अहम् खुलासो में विश्व के बैंको मे विविध देशो में छुपाये गए काले धन को लेकर अत्यत गुप्त जानकारियां भी थी जिसको लेकर बहोत बड़े नाम लोगो के सामने आने की संभावना थी. उनके इस काम को बंद करने के लिए कई बार कोशिशें भी की गईं जिसमे उनकी 95% फंडिंग रुक भी गई थी और साथ में उनके इंटरनेट कनेक्शन को भी बाधित करने की कोशिश की गई थी ताकि खुफिया जानकारी को प्रकाशित करना बंद किया जा सके. परंतु उन्होंने हार नहीं मानी और अपना काम जारी रखा. बाद मे जूलियन असांजे को उनकी निडरता व काम के लिए कई पुरस्कारों से सन्मानित भी किया गया था. जूलियन असांजे पर आंतराष्ट्रीय सिकंजा कसने के लिए उनपर दुष्कर्म का आरोप लगाया गया जो दावों के अनुसार उनकी धरपकड़ करने की एक कूटनैतिक चाल बताई गई थी. दस्तावेजों के प्रकाशन के आरोप में अमेरिकी अभियोजकों (US Prosecutors) ने 'जूलियन असांजे' पर जासूसी से संबंधित 17 आरोप लगाएं हैं, जबकि उसमें से एक आरोप कंप्यूटर के दुरुपयोग से संबंधित है. जूलियन असांजे को ब्रिटेन से अमेरिका सोपने की मांग याचिका में की गयी है, जिसके खिलाफ वह कानूनी लड़ाई आज भी नीडरता से लड़ रहे है.

एड्वर्ड स्नोडेन मूल अमेरिका के नागरिक है जो हैकिंग के मामले में बहुत ही ज्यादा निपूर्ण माने जाते है. कहते हैं कि बड़े-बड़े कंप्यूटर उन्होंने बिना किसी परेशानी के हैक किये थे जिन सूचियो मे अमेरिका के सबसे सुरक्षित कंप्यूटर की भी गिनती की जाती है. यूनीवर्सिटी के आईटी सेक्शन में किसी तरह एडवर्ड को जॉब मिल गयी जो आईटी सेक्शन वास्तव मे अमेरिकी सुरक्षा एजेंसी के साथ काम करता था. अपनी कुशलता के आधार पर एड्वर्ड को सीआईए में जॉब तो मिल गई थी, लेकिन वहां काम करने पर उन्हें पता चला कि अमेरिका और ब्रिटेन चोरी छिपे लोगों पर नज़र रख रहे हैं. **एडवर्ड का काम था अमेरिका को ये बताना कि चीनी एजेंसियों के द्वारा अपने सिस्टम को हैक करने से कैसे बचाया जाए.** उस दौरान एडवर्ड ने चीन के द्वारा किए जा रहे मास सर्विलेंस को भी पकड़ने का काम किया था. माना जाता हैं कि अमेरिका की ख़ुफ़िया एजेंसी ने एक ऐसा सॉफ्टवेयर बनाया था, जिससे वह किसी भी एप्पल और एंड्राइड फोन को हैक कर सकते थे. इतना ही नहीं सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट पर भी वह नज़र रखते थे. एडवर्ड को ये बात गलत और अनैतिक लगी. उनके पास एक ही हथियार था, उनकी कंप्यूटर की जानकारी. उसके सहारे ही एड्वर्ड ने खुफिया एजेंसियों की जानकारी निकालना शुरू किया. एडवर्ड स्नोडेन ने नेशनल सिक्योरिटी एजेंसी के दफ्तर से वो पूरा डेटा प्राप्त किया और मीडिया को दे दिया था. ख़ुफ़िया एजेंसियों द्वारा लोगों पर जबरन निगरानी रखने की बात जैसे ही सामने आई पूरी दुनिया में हडकंप मच गया था.

एड्वर्ड स्नोडेन के कुछ अहम् खुलासो मे सरकारी एजन्सिया कैसे लोगो की डिजिटल निगरानी करके निजता का हनन करती है और कैसे सोशल मीडिया या इंटरनेट पर लोगो द्वारा सर्च की गयी इनफर्मेशन को निजी कंपनियों के द्वारा प्राप्त कर सकते है. एन्क्रिप्टेड और सुरक्षित मानी जानेवाली एप्लीकेशन, ऑपरेटिंग सिस्टम या सॉफ्टवेयर के डाटा को कैसे एन्क्रिप्ट होने से पहले हैक किया जाता है. सालो तक

"क्लोज सोर्स एप्लीकेशन" (Closed Source Application) में बग ढूंढ़के उसे हैक करने के तरीके खोजे जाते है जिसके माध्यम से सालो तक बिना एप्लीकेशन बनानेवाली कंपनी की मध्यस्थी उसे हैक कर लोगो के कम्प्यूटर या फ़ोन का डाटा प्राप्त किया जा सकता है. मीडिया में अमेरिकी खुफिया एजेंसियों की पोल खुलने के बाद पूरे देश में भूचाल आ गया था. बादमे एड्वर्ड स्नोडेन पर जासूसी और चोरी करने जैसे संगीन अपराध के मामले दर्ज किये गये. वहीं अमेरिकी खुफिया एजेंसी ने स्नोडेन के खिलाफ अन्य देशों में भी गिरफ्तारी वारंट जारी कर दिया. चूंकि एड्वर्ड की खोज तेज हो चुकी थी, इसलिए एड्वर्ड ने वहां से जाना मुनासिब समझा और होंगकोंग देश चले गए. होंगकोंग में रहने के दौरान स्नोडेन को इस बात का एहसास हो गया था कि वापिस अमेरिका जाने पर उनकी जान को खतरा हो सकता है, इसलिये उन्होंने रुस की सरकार से पनाह देने की गुहार लगाई जिसे रुस ने स्वीकार किया. तबसे लेकर आजतक एड्वर्ड स्नोडेन वहीं पर अपना जीवन गुजार रहे है. डिजिटल निगरानी से बचने के लिए कौनसी ऍप्लिकेशन्स, ब्राउज़र या ऑपरेटिंग सिस्टम उपयोगमे लेनी चाहिए उसकी माहिती **वेबसाइट** पर जाकर प्राप्त कर सकते है.

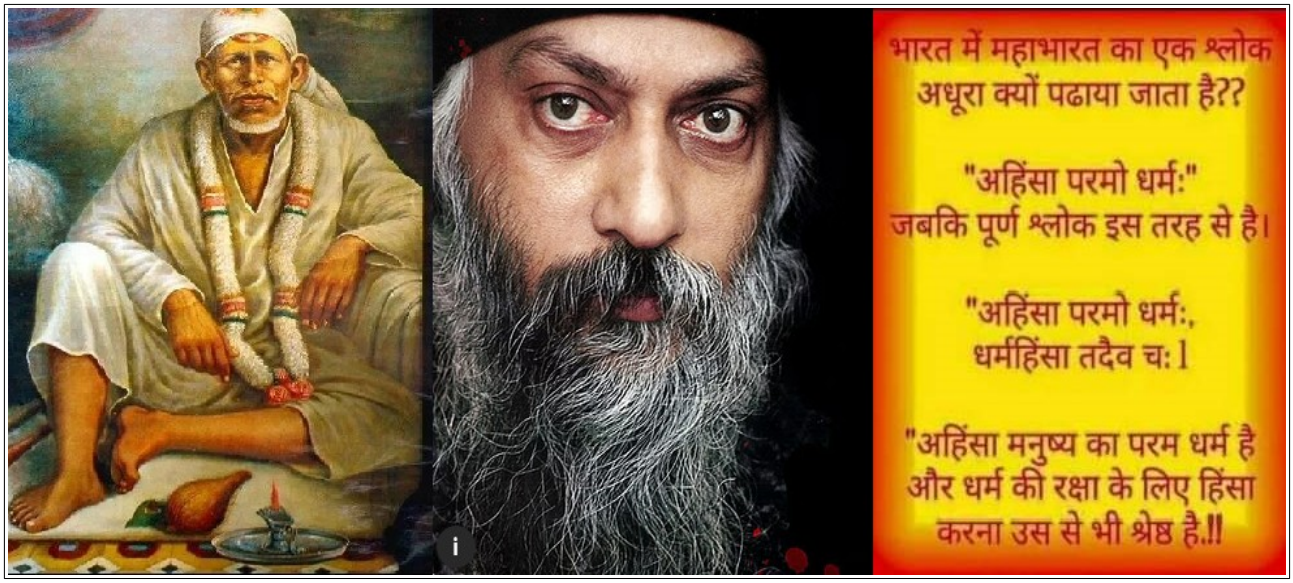

जो भी व्यक्ति विश्व मे ईश्वरी धर्मो को एक करने की कोशिश करता है या उनकी चेतना धर्म से ऊपर आध्यात्म में लगाने की चेष्टा करता है, वह शैतान के पुजको का सीधा दुश्मन बन जाता है. क्योकि धार्मिक व्यक्ति को धर्म के नष्ट होने का डर दिखाकर, विपरीत ढंग से धार्मिक कथनो को प्रचारित कर या धर्म की रक्षा के नाम पर उसे ज़नूनी एवं आक्रामक बनाया जा सकता है, लेकिन आध्यात्मिक व्यक्ति जो धर्मो को केवल शब्द से नहीं, बल्कि वास्तविक आचरण से मनुष्यता को अपने जीवन में अमली बनाता है उसे टुकड़ो में बाँट कर अलग करना नामुमकिन बन जाता है. यही कारण है की शिरडी के साईं बाबा का संदेश था जिसमे उन्होंने जीवनभर

केवल एकही सूत्र का प्रचार किया था की **"सबका मालिक एक है"** जो उनकी मृत्यु के बाद अधिक प्रचलित हुआ जिसे रोकने की बड़ी कोशिष की गयी थी.

साईं बाबा के जन्म और उनके धर्म को लेकर कई विरोधाभास प्रचलित हैं, कोई उन्हें हिन्दू मानता है, तो कोई मुस्लिम. वे सभी धर्मों के लोगों से हमेशा प्रेमपूर्वक मिलजुल कर रहने का आह्वान करते रहे. अपनी जिंदगी के ज्यादातर समय महाराष्ट्र में स्थित शिरडी की एक निर्जन मस्जिद में ही रहते थे, लेकिन उस मस्जिद का नाम उन्होंने **"द्वारकामाई"** रख दिया था. हमेशा नीम के पेड़ के निचे ध्यान लगाकर बैठे रहते या आसन में बैठकर भगवान की भक्ति में लीन हो जाते थे. उनके पास ईश्वर की कुछ दिव्य अलौकिक शक्तियां प्राप्त मानी जाती थी जिससे वह बिना किसी दवा के बीमारियों का इलाज एवं लोगो के दुःख दूर किया करते थे. क्योकि ध्यान करते समय ठंडी और गर्मी का उनके शरीर पर कोई प्रभाव दिखाई नही दिखता था. साईबाबा के चमत्कारों और उपदेशों के लोग मुरीद होते चले गए और फिर धीरे-धीरे उनकी ख्याति आस-पास के क्षेत्र में भी फैलने लगी और देश दुनिया मे उनके अनुयायियों की संख्या क्रमशः बढ़ती चली गई.

धर्म की एकता के स्वरुप मानेजानेवाले साई बाबा के धर्म को लेकर पिछले कुछ वर्षो से विवाद छेड़ा गया है जिसे अनेको धर्मो मे उनकी बढ़ती लोकप्रियता से जोड़कर देखा जाता है. साईबाबा को बदनाम करने के पीछे भी धर्मो को एक ना होने देने की मनशा कारणभूत मानी जाती है, जिसके कारण योजनवश उनका झूठा इतिहास किसी विशेष धर्म के साथ जोड़कर उनके प्रति नफरत के बीज बोये गए माने जाते है. ओशो ने अपने प्रवचनों मे शिरडी के साईं बाबा की आध्यात्मिक कहानी बताई है जो **यहाँ क्लिक कर सुन सकते है.** शिरडी के साई बाबा की तरह ओशो ने भी अलग अलग

धर्म को अपने आध्यात्मिक अनुभव से व्याख्यायित किया था जो अंत में मनुष्यधर्म की और ही ले जाते थे. ओशो ने सभी धर्मो को भाषा से नहीं, बल्कि वास्तविक रूप से जीने का ढंग प्रस्तुत किया था. योजनावश ओशो को भी समय समय पे बदनाम करने के लिए कार्य शैतान के पुजको द्वारा ही करवाए माने जाते है, ताकी सभी धर्मो की एकता के प्रतीको को नष्ट कर विश्वस्तर पर उन्हें एक होने से रोका जा सके.

अमेरिका मे ओशो द्वारा क्रिस्चियन धर्म पर दिया गया प्रवचन बड़े विवाद का कारण बना था जिस प्रवचन को बाद मे इंटरनेट पर हर जगह से हटा दिया गया था, परंतु जानकारी अनुसार आज भी यह प्रवचन एक जगह पर उपलब्ध है. ओशो ने निर्भीकता से सभी धर्मग्रंथो पर अपने विचार और अनुभव प्रगट किये थे. **ओशो ने काफी धर्म के धमर्गुरुओ को अपने साथ धर्म की चर्चा के लिए निमंत्रित भी किया था, लेकिन विश्व रिकॉर्ड है की उनकी चुनौती को स्वीकार कर कोई भी धर्मगुरु उनके अपने धर्म या आध्यात्म पर चर्चा करने के लिए ओशो के सामने नही आए.**

अहिंसा को लेकर भी विश्वभर मे अनेको मान्यताएं प्रचलित मानी जाती है जिसे अपने उदेश्यो की पूर्ति के लिए धर्मो से ज्यादा शैतान के पुजको द्वारा ही अधिक प्रचलित करवाया हुआ माना जाता है. विश्व के सभी धर्मो के ऊपर अदृश्य हिंसात्मक आक्रमण निर्मित करवाकर दूसरी तरफ उनके बिच अहिंसा के सिद्धांत को प्रचलित करवाने के पीछे उन्हें कायर बनाना ही एकमात्र उदेश्य माना जाता है, ताकि हिंसा द्वारा उनका दमन कार्य गुप्त रूपसे दुनियाभर मे चालू रहे और इससे सत्य के आंदोलनो को आसानी से कुचला जा सके. अहिंसा को लेकर वैदिक सनातन धर्म में वर्णित महाभारत के श्लोक को भी सालो से आधा अधूरा पढ़ाया जा रहा है, ताकी भारत मे शिवाजी, महाराणा प्रताप, भगतसिंह, अशफाक उल्ला खां, शिवराम राजगुरु,

सुभाषचंद्र बोस जैसे शूरवीर क्रांतिकारी कभी पैदा ना हो सके तथा केवल अहिंसा के समर्थक कुछ गिने-चुने व्यक्तियों के विचारो का प्रचलन अधिक बढाकर देश शैतानी दमन एवं अत्याचारों से कभी मुक्त ना हो यही मनशा कारणभूत मानी जाती है.

“अहिंसा परमो धर्म: धर्म हिंसा तथैव च" यह महाभारत का पूरा श्लोक है, जिसका पूरा मतलब है **"अहिंसा मनुष्य का परम धर्म है और धर्म की रक्षा के लिए हिंसा करना भी उसी प्रकार श्रेष्ठ है". यहाँ धर्म का अर्थ "सत्य" से है, क्योकि जब श्री कृष्ण द्वारा जब यह बताया गया था तब धर्म का अर्थ "सत्य की रक्षा" से ही था. उस वक्त किसी भी धर्म को कोई नाम नहीं दिया गया था जो आज के समय में विद्यमान है.** यही कारण है की ना सिर्फ महाभारत में श्री कृष्ण ने बल्कि रामायण में भी भगवान राम ने राजपाट सब छोड़ा, पर धनुष्य बाण कभी नहीं छोड़े. श्री कृष्ण और राम भगवान दोनों ने पहले अहिंसा से ही युद्ध टालने का प्रयास किया, लेकिन अंत में जब युद्ध की भूमिका तैयार हो गयी तब युद्ध में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हिस्सा लेकर असुरो का सर्वनाश भी किया. तो सनातन धर्म के इतिहास की साक्षी से यह संदेश स्पष्ट है की सत्य की रक्षा करने के लिए और पाप को मिटाने के लिए असुर या शैतान से युद्ध या हिंसा कर उन्हे नष्ट भी करना पड़े तो वह धर्म का एक पवित्र कार्य ही कहलायेगा. **निर्दोष लोगो को हिंसापूर्वक प्रताड़ित करने तथा उनके परिवारो को ठग प्रवृति से छलपूर्वक नष्ट करने की मनशा रखनेवाले राक्षसों के प्रति किसी भी प्रकार का दयाभाव या रहेम रखना सनातन धर्म की साक्षी से स्वीकार्य नहीं माना जा सकता.** अगर सारे युद्ध अहिंसा से ही जीते जाते और मनुष्य के रूप में अवतरित साक्षात ईश्वर को भी आसुरी शक्तियों से हिंसा कर उनका सर्वनाश करना पड़ा तो हिंसा-अहिंसा का भेद समझने के लिए महाभारत के समय श्री कृष्ण द्वारा भीष्म पितामह को दिया गया उत्तर पूर्णतः सार्थक है **Link**.

शैतान के पुजको का मूल ठिकाना इजराइल देश माना जाता है, लेकिन दुनिया को दिखाने के लिए खेल अमेरिका से संचालित होने का दावा है. इनका धर्म यहूदी बताया जाता है, परंतु इनकी वास्तविक पहचान 13 शैतान के पुजको के नाम से आरोपित है. अमेरिका सहित अनेक यूरोप के देशो पर इनका गुप्त अधिपत्य माना जाता है. विश्व के देशो की सरकार और फिल्म उधोग से लेकर सारे आंतराष्ट्रीय कार्यक्रमों के ऊपर इजराइल की मुहर लगने के बाद ही योजनाए अमल में आती है ऐसे दावे किये जाते है. चीन और रशिया को छोड़कर विश्व के लगभग सभी देशो पर इनका अप्रत्यक्ष रूपसे नियंत्रण माना जाता है. शैतान के पुजको की वास्तविक स्पर्धा अमेरिका को आगे रखकर चाइना और रशिया से ही मानी जाती है जो उनके आंशिक नियंत्रण मे बताये जाते है, जिनपर पूर्ण नियंत्रण पाने की भावी योजना शैतान के पुजको द्वारा वर्तमान मे कार्यरत मानी जाती है. चाइना और रशिया ने भी वास्तव में वाइरस-बीमारी और दवाई के खेल मे समर्थन इसीलिए दिया हुआ माना जाता है, ताकी विश्व की जनसँख्या कम होने के बाद उनकी भी अपनी गुप्त मनशा विश्व पे खुद का साम्राज्य स्थापित करने की बताई जाती है. परंतु वर्तमान परिस्थिति मे शैतान के पुजको का पलड़ा सबसे भारी देखा जाता है.

इसतरह, इल्लुमिनाटी संगठन विश्व की बेशुमार संपत्ति के असली मालिक एवं आंतराष्ट्रीय सफ़ेद ठगो का एक समूह माना जाता है जो दुनिया से सभी ईश्वरी धर्मो को मिटाकर एक विश्वीय व्यवस्था के माध्यम से शैतानी धर्म को पृथ्वी पर स्थापित करना चाहते है. साथ ही एक वैश्विक बैंक-मुद्रा के जरिये सभी देशो के नागरिको को हमेशा के लिए अपना गलाम बनाकर रखना चाहते है. **वर्तमान मे वाइरस-बीमारी और दवाई शैतान के पुजको के लिए नयी वैश्विक व्यवस्था (New World Order) लाने का मुख्य प्रवेशद्वार बताया जाता है.** विज्ञान इनके लिए कुतर्को का एक माध्यम और

गुप्त हथियार माना जाता है जिसका उपयोग मानवजात के खिलाफ अपने शैतानी मनसूबो को साधने के लिए ही किये जाने के दावे है. इनके पास देशो की सरकारो को भी बड़े स्तर पर नियंत्रित करने का सामर्थ्य होने के कारण बड़े स्तर पर जनजागृति ही बचाव के लिए असली हथियार माना जाता है. इनके काम करने के तौर तरीके जनमानस पर आधारित और मौसम अनुसार लगातार बदलते रहते है जिसे समझपाना बुद्धिमान व्यक्तियों के लिए भी अत्यंत कठिन माना जाता है. **जहाँ विश्व के कुछ लोगो को षड़यंत्र का पूरा सिद्धांत पता ना होने से आंतराष्टीय खेल केवल पैसा और सत्ता का दीखता है जो वास्तविकता ना होकर इसके पीछे शैतानियत को स्थापित करने का गुप्त मकसद ही सर्वोपरी माना जाता है.**

Sr. Nazi Gov. officials Sentenced to Death at Nuremberg, Germany German Soldiers Sentenced to Death at Mykolaev, Ukraine

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान नाजियों ने लाखो यहूदियों पर अमानवीय अत्याचार, नरसंहार और कई बर्बर अपराध किए जिसमे बच्चो, वयस्क सहित निर्दोष वृद्ध लोगो की बड़ी संख्या में हत्याएँ भी शामिल थी. युद्ध के बाद शीर्ष जीवित जर्मन नेताओं पर नाजी जर्मनी के अपराधों को लेकर मुकदमा चलाया गया. ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, सोवियत संघ और संयुक्त राज्य के न्यायाधीशों ने नाजी अपराधियों की सुनवाई की अध्यक्षता की. द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद 1945 में हुए न्यूरमबर्ग ट्रायल मे 999 अपराधियों का परिक्षण किया गया. इनमें से 161 को दोषी ठहराया गया और 37 को मौत की सजा दी गई थी. इनमें से 12 का परिक्षण आंतरराष्ट्रीय सैन्य न्यायाधिकरण (International Military Tribunal) द्वारा किया गया था. **आरोपी और गुनाहगारो मे नाजी पार्टी के बड़े नेता, उच्च अधिकारी, मीडिया सहित मेडिकल के व्यक्ति भी शामिल थे जिन्हे सबूतो के आधार पर मृत्यु दंड यानी फांसी की सजा सुनाई गयी थी. शैतान के पुजको का प्यादा**, नरसंहार का मुख्य सूत्रधार और नाज़ी पार्टी का सर्वोच्च नेता "हिटलर" जिसने बंकर मे आत्महत्या कर लेने के दावे है, वहीँ उसके

सफलतापूर्वक बचकर भाग निकलने तथा काफी सालो तक जिन्दा होने के दावे भी है, क्योकि हिटलर के शब के साथ चेहरे की पहचान किसीने नहीं की थी **Link**.

वाइरस-बीमारी और दवाई का नया खेल शैतान के पुजको के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है जिसे लागू करवाने के रास्ते मे लोकशाही देशो का संविधान इनके लिए सबसे बड़ी चुनौती माना जाता है. लोकशाही का एक मजबूत स्तंभ माना जानेवाला **मीडिया (Press)** पहले से ही इनके नियंत्रण मे माना जाता है. राष्ट्रपति प्रणाली वाले देशो मे सीधे ही कानूनी आदेश निर्मित करवाकर शैतान के पुजको द्वारा दमन कार्य किये जाने के दावे है, वहीँ लोकशाही प्रणाली वाले देशो में इसके लिए **कार्यपालिका (Executitve)** और **न्यायपालिका (Judiciary)** को नाबूद करना "विश्व सरकार" बनाने के लिए प्राथमिक ध्येय माना जाता है. इस कार्य को पूरा करवाने के लिए लोकतांत्रिक देशो मे शेतानो द्वारा प्रायोजित वाइरस-बीमारी और दवाई को लेकर गैर संवैधानिक आदेश उच्च अधिकारियो द्वारा पारित करवाना तथा न्यायपालिका की प्रक्रिया को धीमा कर योजनाओ को सिद्ध करने का मनसुबा विश्व के बहुत से देशो में कार्यरत माना जाता है.

पहले सरकारी अधिकारियों सहित न्यायाधीशो को पैसे-पद का लालच या डर दिखाकर उनसे असवैधानिक आदेश पारित करवाकर अपनी योजनाए जारी रखवाना और योजना के अंतिम पड़ाव मे विश्व सरकार बनाने हेतु अपने नियंत्रित मीडिया के माध्यम से इन्हे ही देश में भ्रष्टाचार और विकास के विरोधी सिद्ध कर देश के मुख्य आरोपी बनाने का इरादा इसके पीछे कार्यरत माना जाता है. **झूठी सुरक्षा के नाम पर भ्रष्ट अधिकारियो द्वारा असंवैधानिक आदेश पारित करवाकर मासूम लोगो को जबरन दवाई खिलाकर मृत्यु के हवाले करना और कुछ सालो मे सरकारी उच्च अधिकारियो के साथ पुलिस-न्यायतंत्र को इसका सीधा आरोपी बनाकर अपने परिजन को खो चुके**

लोगो के रोष का शिकार बनाकर नष्ट करने की कूटनैतिक योजना इसके पीछे अमली बताई जाती है. खुद जनता के हाथो ही कार्यपालिका और न्यायपालिका को नष्ट करवाकर मृत जनता तथा अधिकारियो की संपत्ति कानूनी तरीके से जप्त कर अराजकता के समय मे मिलिट्री शाशन लागू करने के बाद शैतानी संगठन से जुड़े व्यक्तियों को उच्च पदों पर नियुक्त करवाना विश्व सरकार बनाने के लिए भावी योजना मानी जाती है. इस तरह पहले क्रम मे लोकशाही देशो मे जनता का पुलिस के साथ और दूसरे क्रम मे जनता का मिलिट्री के साथ संघर्ष करवाकर जनसँख्या को बड़े पायमाने पर नष्ट करने की योजना भी इसके पीछे कार्यरत मानी जाती है. इसतरह चौथी औधोगिक क्रांति के रूप में देशो की आंतरिक व्यवस्था संभालने के लिए पुलिस की जगह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कैमरा से संचालित निगरानीतंत्र तथा मिलिट्री की जगह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से संचालित रोबोट-ड्रोन द्वारा सरहदी इलाको की निगरानी करने की व्यवस्था अमली बनाना भावी कार्यक्रमो में शामिल कार्य माने जाते है.

इतिहास नया नहीं बनता, परंतु नए रूप मे परिवर्तित होकर आता है. ठीक ऐसे ही शैतानी योजनाए नयी ना होकर सदियो पुरानी मानी जाती है और टेक्नोलॉजी के साथ नए रुप मे परिवर्तित होकर आई है. वास्तविक दुनिया को इन्होने आज **"सर्कस"** का खेल बनाया है जिसमे इनके द्वारा स्थापित किये गए डॉक्टर और वैज्ञानिक के हाथो विज्ञान आज एक **"काले जादूगर"** का किरदार निभाता दिख रहा है. दुनिया को वास्तविक खेल से अनजान रखने के लिए मीडिया, राजनेता, फिल्म स्टार जैसे अनेको लोग केवल रंगमंच के कलाकार के रूप मे अपनी भूमिका अदा करते होने के दावे है. विश्व के जनमानस का टेक्नोलॉजी के माध्यम से गुप्त अध्यहन कर हरएक की व्यक्तिगत पसंद अनुसार साहित्य उनके मोबाइल-कंप्यूटर तक पहुंचाकर उन्हें मूल शैतानी योजनाओ से वंचित रखने का कार्य शैतानो द्वारा पूर्वायोजित माना जाता है.

शैतानियत की निर्मित प्रथा और रिवाज़ के अनुसार मालिक और गुलाम यह दो धारणा ही शैतानी व्यवस्था का केंद्रबिंदु है. यहाँ मालिकों का मुख्य कार्य आदेश देना है और गुलामो का कार्य आदेशो का पालन करना है. मालिक की आज्ञा का गुलामो द्वारा ठीक से पालन हो रहा है की नहीं तथा योजना अनुसार दुनिया मे कार्य हो रहा है की नहीं यह सुनिश्चित करने के लिए अपने खानदान या शैतानी संगठन से जुड़े कुछ खास करीबी व्यक्तियों को आंतराष्ट्रीय स्तर पर सेनापति या कमांडर के रूप मे नियुक्त किया जाता है जिन्हे भौगोलिक आबोहवा अनुसार देशो में शैतानी योजनाए निर्मित करने तथा राजनेता का किरदार निभा रहे व्यक्तियों को दिशानिर्देश देना होता है. सेनापति या कमांडर के रूप मे नियंत्रित व्यक्ति की आज्ञा को बड़े मालिको का हुक्म मानकर ही संगठन के राजनेताओ द्वारा शैतानी योजनाए देशो मे अमली बनाने के दावे है. **बड़े या छोटे मालिकों की नजर मे शैतानी संगठन से जुड़े राजनेताओ की असली औकाद मात्र "कठपुतली" जितनी तथा संगठन से जुड़े उच्च सरकारी अधिकारी**

या देशो मे खास पदों पर नियुक्त अधिकारीयो की औकाद "पालतू कुत्तो" से ज्यादा नहीं मानी जाती. धन, सत्ता या पद का लालच देकर जिन ईश्वरवादी व्यक्तियो का उपयोग कर शैतानी कार्यो को सफल बनाया जाता है, वहीं कार्य समाप्त होने के बाद उनकी ही "बलि" देकर शैतान को प्रसन्न करना इनकी प्रथाओ मे शामिल विधि मानी जाती है. दुनिया के सामान्य लोग या आम जनता शैतान के पुजको की मान्यता अनुसार केवल भेड़-बकरियाँ अथवा कीड़े-मकोड़ो के समान मानी जाती है. **शैतान के पुजको का वास्तविक युद्ध केवल दुनिया के उन बुद्धिमान तथा आध्यात्मिक लोगो के समूह से है जो उनके मायाजाल में ना फसकर अपनी आध्यात्मिक ऊर्जा को विकसित कर उनके षडयंत्रो को विफल बनाने के लिए सामर्थ्यवान माने जाते है.**

दावों के अनुसार, शैतानी संगठन के सेनापति या कमांडर के रूप मे स्थापित व्यक्तियों का कार्य स्वनिर्मित नकली आफतो का नकली समाधान प्रस्तुत कर शैतानी योजनाओ की आंतराष्ट्रीय स्क्रिप्ट तैयार करना तथा अपने नियंत्रित मीडिया के माध्यम से उन्हें विश्व के देशो मे लागू करने का पूरा प्रोग्राम तैयार करवाना होता है जिसे **"प्रिडिक्टिव प्रोग्राम" (Predictive Programme)** भी कहा जाता है. प्रिडिक्टिव प्रोग्राम को सुपर या कोंटम कम्प्यूटर के द्वारा मनुष्यो, सरकारों, उद्योग तथा अन्य वस्तुओ का वास्तविक डाटा ग्रहण कर किया हुआ अध्यहन बताया जाता है जिसमे हेरफेर कर उसके भावी परिणाम का अंदाजा लगाया जा सकता है जिसका अध्यहन शैतानी योजनाओ की सफलता के लिए महत्वपूर्ण कदम माना जाता है.

सन 1981 में बनी एक फिल्म "अर्ली वॉर्निंग" (Early Warning) जिसके शुरआत के 3.00 मिनट से लेकर 7.00 मिनट तक जो भी षड़यंत्र की रुपरेखा फिल्म में दिखाई गयी है लगभग उसी प्रकार की योजना आज की तारीख में अमली होने के दावे किये गये है. "ग्रे स्टेट" (Gray State) भी वह फिल्म है जो एक पूर्व अमेरिकन सैनिक डेविड क्राउली द्वारा 2010 से बनाने की शुरुआत की गयी थी और उसे 2017 को रिलीज़ होना था, लेकिन फिल्म रिलीज़ होने के पहले ही January 2015 में उनके अपने घर में वह बीवी और बच्ची सहित मृत अवस्था में पाए गए. फिल्म तो रिलीज़ नहीं हो पायी, लेकिन उसका ट्रेलर आज भी इंटरनेट पर मौजूद है जो आज सबसे बड़ी चर्चा का विषय बना है. दावों के अनुसार, इस फिल्म के माध्यम से डेविड क्राउली जो सच्चाई सामने लाना चाहते थे वह वैश्विक षडयंत्रो की पोल खोलने के

लिए काफी थी जिस कारण उनके साथ पुरे परिवार की गोली मारकर हत्या कर दी गयी थी और उसे आत्महत्या दिखाने का प्रयास भी किये जाने के दावे किये जाते है.

"अर्ली वॉर्निंग" (Early Warning) और **"ग्रे स्टेट" (Gray State)** दोनों फिल्म की कहानी में पूरी साम्यताएं है, जहाँ विश्व को षडयंत्रो से गुलाम बनाने की योजना के आखरी खेल मे डिजिटल आईडी और पेपर मुद्रा को ख़तम कर इंसानो के हाथो मे इंटरनेट से संचालित माइक्रोचिप लगाने की योजना दिखाई गयी है. दूसरा महत्वपूर्ण बिंदु यह है की डेविड क्राउली ने फिल्म की शूटिंग के दौरान दो फोटो रिलीज की थी, जिसमे उनके हाथ पर **"वाइरस" और "कोड"** यह दो शब्द क्रमशः फोटो के जरिये प्रदर्शित किये थे. दो शब्दों की स्पेलिंग में हेरफेर करके उन्होंने यही दो शब्दों की तरफ इशारा दिया था जो वर्तमान समय में भी षडयंत्रो की योजना का केन्द्रबिंदु माना जाता है. डेविड क्राउली मुखबिर (Whistleblower) माने जाते है जिन्हे शायद किसी गुप्त शैतानी योजना की ठोस जानकारी प्राप्त हुयी थी जिसे वह फिल्म के माध्यम से विश्व के लोगो तक पहोचाना चाहते थे **Link**.

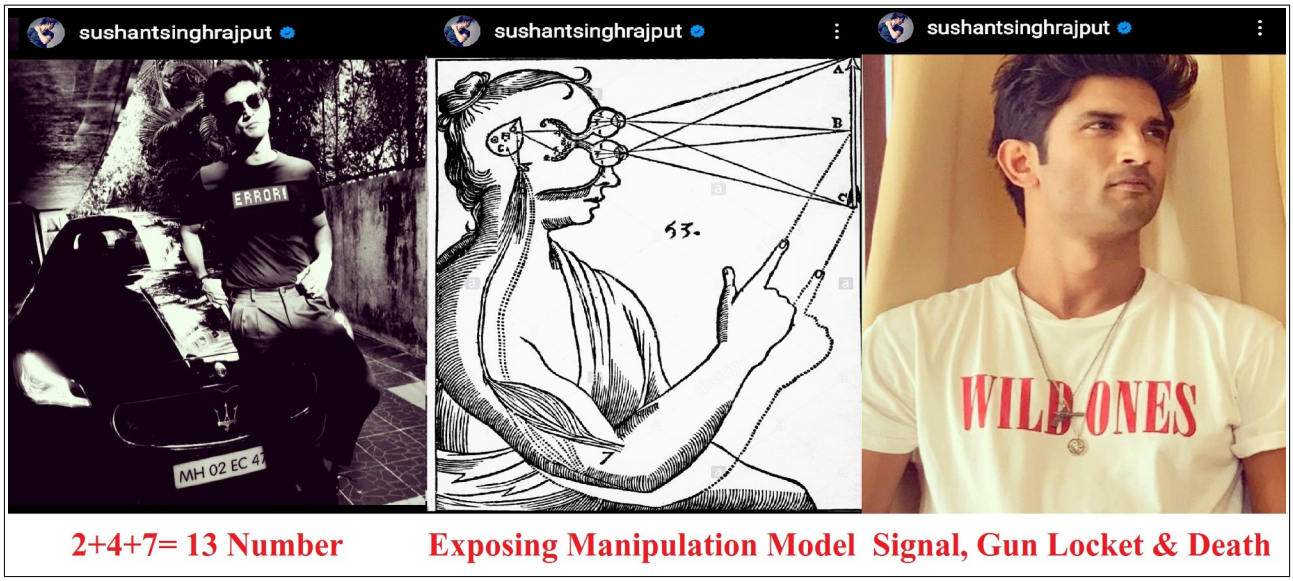

जहाँ दुनिया में कुछ दुराचारी लोग पैसे, पद, प्रतिष्ठा के लिए शैतान के पुजको की चाटुकारिता मे लिप्त देखे जा सकते है, वहीँ उनके षडयंत्रो के मायाजाल से लोगो को बचाने के लिए कई ईमानदार व्यक्ति कारकिर्दी के साथ अपनी जान जोखिम में डालकर गुप्त संदेश भी देते रहते है. बहोत से देशो की सरकार, मीडिया, व्यापारी एवं उधोग जगत पर शैतान के पुजको का अप्रत्यक्ष प्रभुत्व माना जाता है, इसलिए विशाल जनजागृति और ईश्वर मे माननेवालो एकता ही शैतानी शक्तियो से प्रतिकार करने का एक मात्र बड़ा हथियार माना जाता है. आरोपित विदेशी शैतानी संस्थानों के अधिक संपर्क या प्रभाव मे रहनेवाले नेता, मीडिया, पत्रकार, वैज्ञानिक और डॉक्टर तथा विदेशी योजनाओं को देश मे स्वदेशी बनाकर अमली बनानेवाले नेताओ पर नजर रखना सुरक्षा के लिए अनिवार्य कदम माना जाता है. साथ ही सरकारों द्वारा संसद मे पारित करने के लिए रखे जानेवाले कानूनों का पूर्व अध्यहन कर मानवता तथा स्वतंत्रता के विरोधी कानूनो को समय से पहले पारित होने से रोकना भी जीवनरक्षा के लिए अति महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है.

कलयुग का अंत और कल्की भगवान का अवतरण

श्री कृष्ण भगवान के परम भक्त **संत सूरदासजी**, जो जन्म से अंध थे और उनके द्वारा लगभग 800 वर्ष पूर्व की गयी भविष्वाणियों को एक यूट्यूबर ने बहोत अच्छे से वर्णित किया है, जिसमे आनेवाले समय में दुनिया में नैसर्गिक आपदा, चक्रवात, जलप्रलय, सूखा और तीसरे विश्वयुद्ध में आसमान से विष गिराने की बाद की गयी है. अकाल मृत्यु और विश्व के शत्रुओ का आपस में लड़कर ख़तम हो जाना उनकी भविष्यवाणियों में शामिल है. साथ ही विश्व की जनसँख्या बड़े पायमाने पर कम होने की भविष्यवाणी सूरदासजी द्वारा की गयी है. यूट्बर द्वारा कथित ओडिसा के

संत श्री अच्युत्यानन्द स्वामी जी ने भी 600 वर्ष पुरानी अपनी पुस्तक "भविष्यमलिका" में की गयी भविष्यवाणीयो में इसी प्रकार की विनाशी घटनाओ का उल्लेख किया है, **जिसमे आनेवाले समय में पुरे विश्व की जनसँख्या घटकर केवल 64 करोड़ शेष रहने का वर्णन प्राप्त होता है. इसमे से भारत की जनसँख्या केवल 33 करोड़ और विश्व के बाकी देशो की जनसख्याँ मिलकर 31 करोड़ शेष रहने की भविष्यवाणी की गयी है.**

राजस्थान के **संत श्री मावजी महाराज** द्वारा की गयी लगभग 200 साल पुरानी भविष्यवाणी भी अन्य संतो की भविष्यवणी की तरह आधुनिक टेक्नोलॉजी के विकास के साथ मानव के विनाश को भी दिखाती है जो कलयुग के वर्तमान समय को लेकर की गयी है. इन तीनो संतो के अलावा भारत के अन्य संतो तथा पुराणो मे भी कलयुग के अंत को लेकर भविष्यवाणीयां की गयी है. **इसके संदर्भ मे वीडियो प्राप्त करने के लिए मुज़से संपर्क कर सकते है.** कलयुग के प्रलय और अंत के बारे मे महाभारत ग्रंथ मे मार्कण्डे ऋषि तथा कल्किपुराण के अलावा विष्णुपुराण, भविष्यपुराण, पोतुलूरी वीरब्रह्मेंद्र स्वामी द्वारा लिखित "कालज्ञानम" जैसे अनेको ग्रंथो मे एक या दूसरे प्रकार से कलयुग का प्रलयकारी वर्णन प्राप्त होता है. कलयुग से लेकर अन्य युगो के समय को लेकर भी कई तरह की धारणाये है, जिसको लेकर एक यूट्यूबर ने कलियुग के उदय, अंत, संधिकाल और सतयुग की तारीख के ऊपर खूब अच्छा ज्ञान प्रस्तुत किया है जिसे **वीडियो** के माध्यम से जान सकते है. वीडियो अनुसार 26-December-1924 से कलयुग की 400 साल की संध्याकाल का समय शुरू हो चूका है जो आगे विनाशक घटनाओ के साथ दुनिया को युगपरिवर्तन की तरफ ले जाएगा.

संत सूरदासजी, अच्युत्यानन्द स्वामी जी और मावजी महाराज यह **तीनो संतो की मुख्य भविष्यवाणी पर गौर करे तो यहाँ शेतानो द्वारा मानव जनसंख्या कम करने का जो षड़यंत्र बताया गया है, वह तीनो की भविष्यवाणियों में भी एक या दूसरी तरह से प्रदर्शित होता दीखता है.** केवल नीति और धर्म से चलनेवाला व्यक्ति ही कलयुग के अंत के बाद जीवित बचेगा ऐसी भविष्यवाणी सालो पहले ही सनातन धर्म के संतो ने कर दी है. दूसरे अन्य धर्मो में भी कोई ना कोई धार्मिक मसीहा आने का वर्णन शायद मिलता ही होगा, जिसपर मेरी जानकारी पूर्ण नहीं है. परंतु सनातन हिंदू धर्मग्रंथो के कथन अनुसार मे सज्जनो को बचाने, सुख प्रदान करने तथा पृथ्वी के सर से पाप का भार उतारने के लिए **"कल्कि भगवान"** का अवतरण होना निश्चित है, जो पाप का नाश कर, कलयुग की समाप्ति तथा नए सतयुग की शुरुआत करेंगे. कलयुग में ईश्वरी अवतरण का वास्तविक स्वरुप कैसा होगा यह केवल परमात्मा ही जानता है. परंतु, वर्तमान में कल्कि भगवान का अवतरण हो चूका है और वह अभी अज्ञातवास मे है जो सत्पुरुषों के कथनो, कलयुग की समयस्थिति का वर्णन और समयगणना को आधार मानकर बताया गया है. उपलब्ध भविष्यवाणियों मे कल्कि भगवान के जन्मस्थान और समय को लेकर कुछ असमंजस पैदा होना भी ईश्वरीशक्ति की कोई माया कही जा सकती है और आसुरी शक्ति के साथ होनेवाले युद्ध की रणनीति का एक हिस्सा भी माना जा सकता है. ईश्वर की लीला मनुष्य बुद्धि से परे होती है. जैसे विनाश के लिए शैतानी शक्तियों का मायाजाल होता है वैसे उनके सर्वनाश के लिए ईश्वरी शक्तियों की भी अपनी माया होती है जिसे कोई सिद्धपुरुष ही समज सकता है.

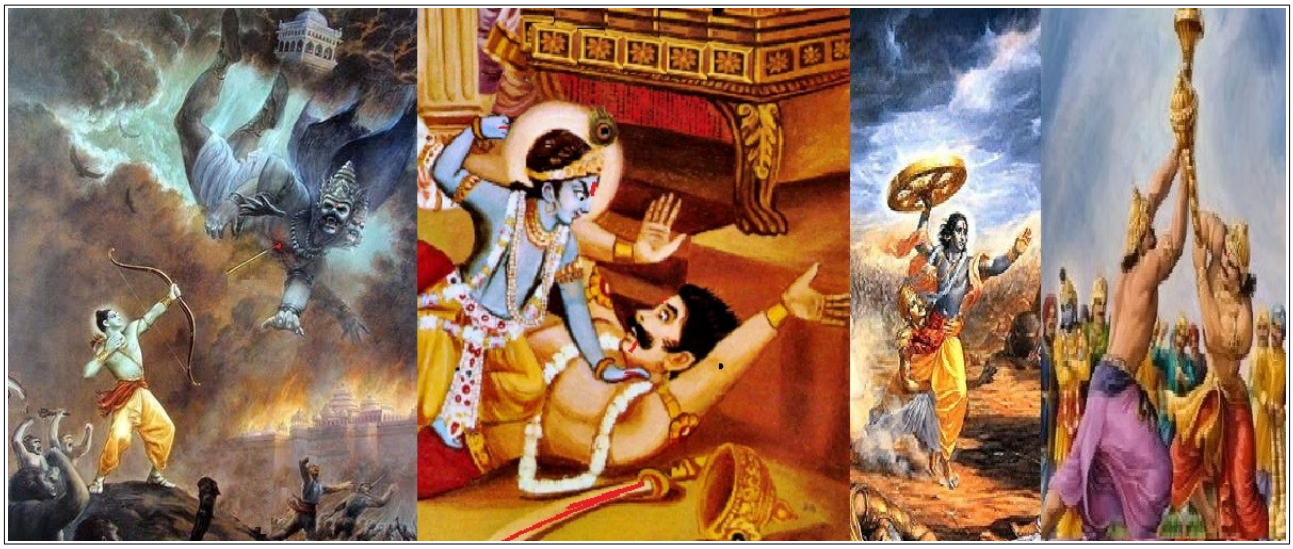

त्रेता युग में रावण सबसे बड़ा अधर्मी था, जिसका अंत करने के लिए भगवान राम मनुष्य रूप मे अवतरित हुए थे. द्वापर युग में कंस अधर्मी था, जिसका वध

भगवान श्री कृष्ण ने मनुष्य अवतार लेकर किया था. महाभारत युद्ध समाप्त होने के बाद और भगवान श्री कृष्ण के पृथ्वी छोड़कर चले जाने के साथ ही कलयुग की शुरुआत मानी गयी है. लेकिन उसवक्त महाभारत के युद्ध मे बहोत से योद्धाओ की युद्ध करने की इच्छा अधूरी रह गयी थी जो कलयुग मे भगवान कल्कि की सेना मे शामिल होकर "कलिपुरुष" (दैत्य कली) से युद्ध लड़ेंगे ऐसा वर्णन धर्मग्रंथो मे प्राप्त होता है. कलियुग मे रावण का पुत्र मेघनाथ और दुर्योधन इन दोनों के पुनःजन्म कलिपुरष (दैत्य कली) के मानवरूप मे होने की भविष्यवाणियाँ बताई गई है. तो रावण, कंस, दुर्योधन की तरह वर्तमान मे जो सबसे बड़े अधर्मी, षड्यंत्रकारी या पापकर्म करने मे अत्यंत शक्तिशाली होंगे उनके साथ कल्कि भगवान का धर्मयुद्ध होना निश्चित बताया गया है. कलयुग में पाप या आसुरीशक्ति का प्रकोप अपनी चरमसीमा पर होने से "कलि पुरुष" का स्वरुप अत्यंत शक्तिशाली बताया गया है की उसकी सेना के साथ होनेवाले युद्ध मे भगवान कल्कि के साथ स्वयं पवनपुत्र हनुमान जी और परशुराम जैसे अनेको महान योद्धा भी युद्ध में हिस्सा लेंगे. इसतरह "कलिपुरुष" के वध के साथ कलयुग का अंत भी भगवान कल्कि के हाथो निश्चित बताया गया है.

स्व. राजीवभाई दीक्षित जी को मेरी भावपूर्ण श्रद्धांजलि

स्व. राजीवभाई दीक्षित जी भारतीय समाजिक कार्यकर्त्ता, एक प्रखर वक्ता और "आजादी बचाओ आंदोलन" के संस्थापक थे. भारत में आंतराष्ट्रीय षडयंत्रो के खिलाफ सबसे बड़ी जागृति लानेवाले वह पहले विद्वान और स्वदेशी के महान समर्थक थे, जिनके ज्ञान की बदौलत ही लाखों- करोड़ो लोगो को भारत में गुप्त रूप से चलाये जा रहे विदेशी षडयंत्रो के बारे में अति महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुयी. राजीव दीक्षित जी का जन्म भारत के उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के नाह गाँव में 30 नवम्बर 1967 को हुआ था. वह एक भारतीय वैज्ञानिक थे, जिन्होंने एपीजे अब्दुल कलाम के साथ

भी काम किया था और फ्रांस के दूर संचार क्षेत्र में भी वैज्ञानिक के तौर पर काम कर चुके थे. उन्होंने भारतीय इतिहास के बारे में, भारतीय संविधान के मुद्दों और भारतीय आर्थिक नीति के बारे में भी जागरूकता फ़ैलाने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया था.

राजीव दीक्षित जी का मानना था कि भारत का पूरा मौजूदा सिस्टम पश्चिमी देशों का पिछलग्गू है, जिसे बदलने की जरूरत है. भारत के एजुकेशन सिस्टम को मैकाले की देन बताने वाले राजीव दीक्षित के मुताबिक एजुकेशन के लिए वैदिक संस्कृति का गुरुकुल सिस्टम ही सबसे अच्छा है जो सही में ज्ञान के साथ संस्कार भी प्रदान करता है. यहां की न्यायव्यवस्था अंग्रेजों के बनाए हुए कानून की फोटोकॉपी जैसा है, जिसके कई कानून भारतीयों का अपमान करने वाले हैं और इसे बदला जाना चाहिए. इकॉनमिक सिस्टम के बारे में राजीव दीक्षित जी का मानना था कि देश का टैक्सेशन सिस्टम डिसेंट्रलाइज्ड कर दिया जाना चाहिए, क्योंकि यही देश में भ्रष्टाचार की जड़ है. राजीव दीक्षित जी का सपना भ्रष्टाचार मुक्त और स्वदेशी भारत बनाना था. विदेशो मे जमा काला धन, वापिस लाना, गौ हत्या पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगाना, और एक वाक्य मे कहा जाए ये आंदोलन सम्पूर्ण आजादी लाने के लिए व्यवस्था परिवर्तन हेतु उन्होंने शुरू किया था.

राजीव जी भारत के मेडिकल सिस्टम को आयुर्वेद आधारित करने के हिमायती थे क्योंकि वे स्पष्ट रूपसे सबूतों के आधार पर मानते थे की एलोपैथी ना केवल शरीर को नुकसान पहुंचाती है, परंतु इससे पैसा विदेश चला जाता है. भारतीय ऋषि मुनियो द्वारा आयुर्वेद चिकित्सा का ज्ञान अपने अलग अंदाज से देकर लोगो का दिल जित लिया था जिससे भारत के लोगो को एकदम सस्ता और असरकारक इलाज मिला जो वह अंग्रेजो की लंबी गुलामी के बाद भूल चुके थे. राजीव दीक्षित जी के अनुसार विदेशी कंपनियों के भारत में व्यापार करने का अधिकार बाधित होना चाहिए, क्योंकि

इससे अर्थव्यवस्था कमजोर होती है और साथ ही देश का पैसा भी बाहर जाता है. ऊपर से विदेशी कंपनियां घटिया माल बनाकर भारतीयों को बेचती हैं और अरबो रुपए का मुनाफा उनके देशो में ले जाकर उन्हें समृद्ध बनाती है.

अपने नामो मे भारतीय संस्कृति के कुछ शब्दो का उपयोग कर कुछ विदेशी कंपनिया भारत के लोगो को स्वदेशी होने का आभास करवाकर व्यापार ना करे उसके लिए उन्होंने भारतीय कंपनियों की लिस्ट बनाकर लोगो में पर्चे भी बंटवाए, ताकि लोगों को पता चल सके कि कौनसी कंपनियां भारतीय हैं और कौनसी विदेशी. वर्ष 1991 में, जब स्विस बिजनेसमैन, अर्थुर डंकल "विदेशी प्रत्यक्ष निवेश" पर भारत सरकार के साथ बातचीत करने के लिए भारत आए, तब राजीव दीक्षित ने सहयोगियों के साथ आक्रोश में आकर उन पर हमला किया था. तब उन्हें पुलिस द्वारा गिरफ़्तार कर तिहाड़ जेल भेज दिया गया था. उस समय तिहाड़ जेल की प्रमुख किरण बेदी थी. उस दौरान अंग्रेजो द्वारा पूर्वनिर्मित क़ानून जिसमे केदियो के कपडे उतार कर शरीर के निशानो को चेक करने का प्रसंग यादगार है **Link**.

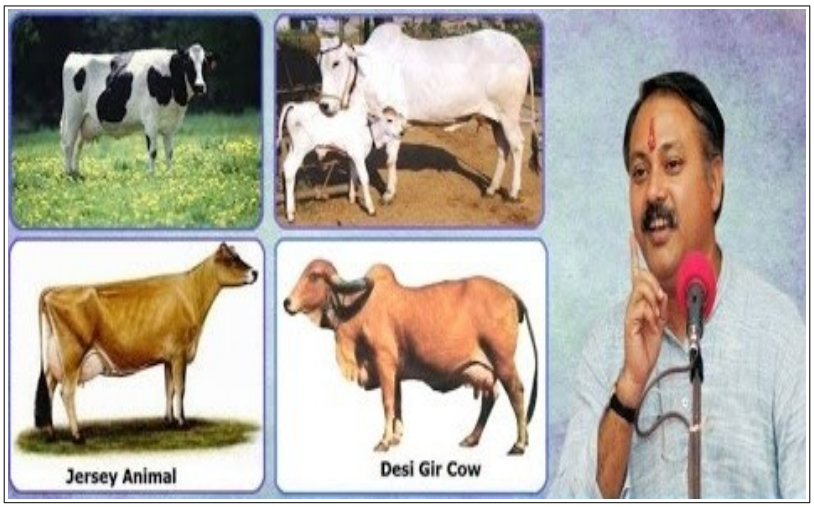

आयुर्वेद के साथ राजीव दीक्षित जी ने गौमाता के पंचगव्यो का महत्त्व समाज को समझाया था. स्वदेशी चिकित्सा, गौ गौवंश पर आधारित स्वदेशी कृषि, गौ माता, पंचगव्य चिकित्सा उनके द्वारा रचित प्रमुख पुस्तके है जो ज्ञान का भंडार मानी जाती है. **भारत जब सोने की चिड़िया था उस वक्त अंग्रेजो ने कैसे खेती को नष्ट करने के लिए और धर्मो के बिच कलह पैदा करवाने के लिए गौमाता का बड़े पैमाने पर कतल करवाया और धार्मिक लड़ाई का वातावरण पैदा करवाया जिससे देश कभी एक ना हो सके और उनकी सत्ता हमेशा कायम रहे ऐसे षडयंत्रो का उन्होंने खुलासा किया था.** पशुपालन, जैविक खेती और ईंधन के रूप में गोबर गैस किस तरह देश की काया पलट सकता है उसका वैज्ञानिक तर्क उन्होंने देश को दिया था. उन्होंने जैविक

विधियों का उपयोग करके खेती के महत्व को बताया जिससे बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा की बचत हो सके, उत्पादकता में वृद्धि आ सके, फसलों में उत्परिवर्तन को कम किया जा सके, फसलों के व्यय को कम किया जा सके तथा फसले कीटों की चपेट में कम आए.

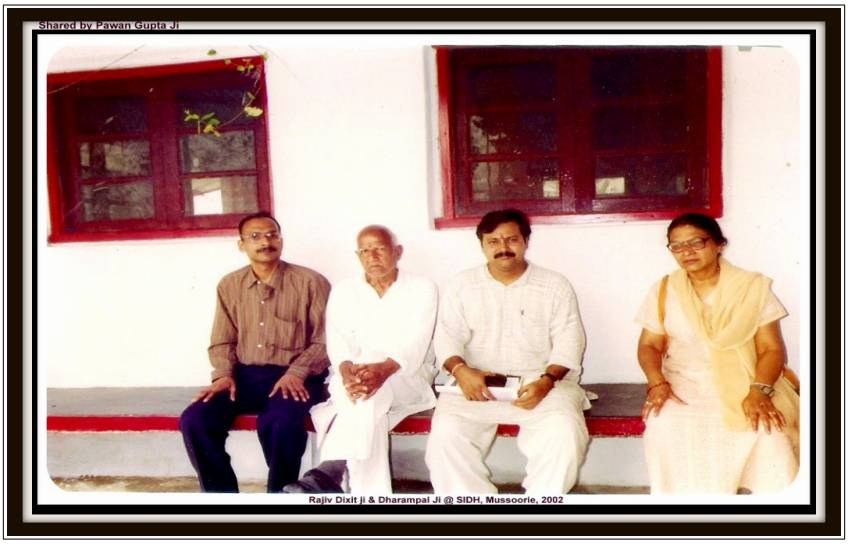

जब वह स्नातक की पढ़ाई कर रहे थे, तब वह अपने शोध के लिए नीदरलैंड गए और वहां जाकर अपने शोध पत्रों को पढ़ना शुरू किया, तभी उन्हें एक डच वैज्ञानिक ने रोका और कहा, “आप अपनी मूल भाषा में अपने कागजात क्यों नहीं पढ़ते हैं.” इस पर राजीव दीक्षित ने जवाब दिया, “अगर मैं अपनी मूल भाषा में कागजात को पढ़ूंगा, तो आपको समझ नहीं आएगी. तब उस डच वैज्ञानिक ने जवाब दिया,” इसके बारे में चिंता न करें, यहां भाषा अनुवाद की सुविधा है.” उस समय, राजीव दीक्षित पहली बार मूल भाषा के महत्व को समझे और इसे बढ़ावा देने के लिए कार्य करने लगे. जब वह नीदरलैंड से भारत लौटे, तब उन्होंने मन बना लिया था की विदेशी कंपनियों से भारत को छुटकारा दिलाएंगे.

वर्ष 1997 में, राजीव दीक्षित जी मुलाकात इतिहासकार और प्रोफेसर धर्मपाल से हुई, जो यूरोप में प्रोफेसर थे. वह धर्मपाल ही थे, जिन्होंने भारतीय पुस्तकालयों से भारतीय स्वतंत्रता से संबंधित सभी दस्तावेज दिए थे. उन्होंने भारतीय शिक्षा प्रणाली, भारतीय चिकित्सा, भारतीय प्रौद्योगिकी, धातु विज्ञान, सीमेंट बनाने की तकनीक और कई अन्य चीजों सहित भारत के वास्तविक इतिहास पर डॉ. धर्मपाल के शोध कार्य को प्रचारित किया, जो औपनिवेशिक काल के दौरान जानबूझकर नष्ट कर दिए गए थे. उन्होंने सरकार के मौजूदा बजट प्रणाली की तुलना भारत के पहले ब्रिटिश बजट प्रणाली से करते हुए यह दर्शाया था कि जो भी आंकड़े बजट में पेश किये जाते है वो उस वक्त की बजट प्रणाली के समान ही थे. राजीव दीक्षित ने ये कहा था कि वर्तमन

में हमारे पास तीन बुराइयां आ रही है. उन्होंने वैश्वीकरण, निजीकरण और उदारीकरण को एक आत्मघाती राज्य की ओर धकेलने वाली बुराई के रूप में बताया था. 1998 में उपनिवेशवाद के हिंसक इतिहास पर एक प्रदर्शनी पेश करते हुए कहा था कि आधुनिक विचारकों ने कृषि क्षेत्र की उपेक्षा की है, जिस वजह से किसान स्वयं मानसिक दबाव में आकर आत्महत्या के लिए मजबूर हो रहे है.

राजीव दीक्षित जी के दावो के अनुसार रेडियों सक्रिय तत्वों का एक बड़ा भंडार भारतीय समुन्द्र के सेतु पुल के नीचे मौजूद है, जिसकी इतनी विशाल मात्रा है कि 150 वर्षों तक इन रेडियों सक्रिय तत्वों का इस्तेमाल बिजली और परमाणु हथियार बनाने के लिए किया जा सकता है. और उन्होंने यह भी कहा की भारत सरकार उस पुल को तोड़ने की कोशिश कर रही है जो हजारो साल पुराना है. राजीव दीक्षित जी ने हर भारतीय से आग्रह किया था की वह केवल स्वदेशी उत्पादो को अपनाकर देश को आत्मनिर्भर बनाये. राजीव जी ने शीतल पेय पदार्थों में स्वास्थ्य के लिए अति हानिकारक तत्वों के होने की बात कही थी और ये साबित भी किया था की इन पेय में पाए जानेवाले केमिकल स्वास्थ्य को दूषित करनेवाले है. भ्रष्टाचार मिटाने के लिए राजीव दीक्षित जी ने सुझाव दिया था की भारतीय सर्वोच्च न्यायालय को स्विस बैकों में जमा भारतीय काली संपत्ति को राष्ट्रीय संपत्ति घोषित कर देनी चाहिए. भारत में स्विस बैंक में जमा पूंजी को लाने के लिए अपनी मुहीम में उन्होंने 495 लाख लोगों के हस्ताक्षर को भी इकठ्ठा करने का दावा किया था. 9/11/2001 को अमेरिकी वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हुए हमले को लेकर सवाल भी उठाया था और आतंकी हमले पर संदेह किया था. उन्होंने दावा किया था कि यह खुद अमेरिका के सरकार द्वारा ही कराया गया था. कहा जाता है की राजीव भाई के व्याख्यान सुन कर मात्र ढाई महीने मे 6 लाख कार्यकर्ता पूरे देश मे प्रत्यक्ष रूप मे इस अंदोलन से जुड गए थे.

वर्ष 1999 में, उन्होंने बाबा रामदेव से मुलाकात की और 10 वर्षों के बाद वर्ष 2009 में, उन्होंने भ्रष्टाचार और विदेशी कंपनियों को खत्म करने के लिए **"भारत स्वाभिमान आंदोलन"** की स्थापना की जिसमें राजीव दीक्षित राष्ट्रीय सचिव थे. नवंबर 2010 के आखिरी सप्ताह में राजीव छत्तीसगढ़ दौरे पर थे, जहां उन्होंने अलग-अलग जगहों पर व्याख्यान देने थे. 26 से 29 नवंबर तक अलग-अलग जगह व्याख्यानों के बाद जब वो भिलाई, छत्तीसगढ़ पहुंचे. राजीव दीक्षित का व्याख्यान 29 नवंबर 2010 को अविभाजित दुर्ग जिले के बेमेतरा तससील प्रांगण में सुबह 10 से दोपहर 1 बजे तक था. मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक व्याख्यान खत्म करने के बाद व भारत स्वाभिमान आंदोलन के दुर्ग निवासी पदाधिकारी दया सागर के साथ भिलाई के लिए कार से रवाना हुए. कार कन्हैया नाम का ड्राइवर चला रहा था. रास्ते में राजीव दीक्षित को पसीने के साथ बेचैनी महसूस हुई और अचानक उनकी हालत बहुत खराब हो गई. दिल का दौरा पड़ने की वजह से उन्हें भिलाई के सरकारी हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया और फिर वहां से अपोलो BSR हॉस्पिटल शिफ्ट किया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया. ऐसे राजीव दीक्षित का निधन 30 नवम्बर 2010 को छत्तीसगढ़ के भिलाई में हो गया था. उनकी याद में हरिद्वार में भारत स्वाभिमान बिल्डिंग का निर्माण हुआ है, जिसका नाम "राजीव भवन" रखा गया है.

राजीव दीक्षित की मृत्यु के कई वर्ष बीत चुके है, लेकिन उनकी मृत्यु का कारण आज भी अज्ञात है. उनकी रहस्यमयी और विवादास्पद मृत्यु के बारे मे स्त्रोतों का मानना है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा राजीव दीक्षित जी की हत्या कर दी गई थी, जहाँ कुछ समर्थकों का मानना है कि उनकी हत्या के पीछे अप्रत्यक्ष रूप से बाबा रामदेव का हाथ है. राजीव के समर्थकों का दावा है कि मौत के बाद राजीव की बॉडी काली या नीली पड़ गई थी जैसे उन्हें कोई घातक धीमा जहर दिया गया हो. उनके समर्थकों ने पोस्टमॉर्टम कराए जाने की भी जिद की, लेकिन उनकी एक नहीं सुनी

गई. साथ ही, राजीव जी की बॉडी को वर्धा लाने के बजाय हरिद्वार में रामदेव के पतंजलि आश्रम ले जाया गया और वहीं उनकी अंत्येष्टि कर दी गई.

राजीव भाई के चाहने वालों का कहना है कि अंतिम समय मे राजीव जी का चेहरा पूरा हल्का नीला, काला पड गया था. उनके मुंह और नाक से कुछ टपक रहा था और उनके सिर को माथे से लेकर पीछे तक काले रंग के पालिथीन से ढका गया था जो अपने आप मे अनेको बड़े सवाल खड़े करता है. इसके अलावा राजीव भाई के पास हमेशा एक थैला रहता था, जिसमे वह आपत्तिकाल के लिए कुछ आयुर्वेदिक, होमियोपैथी दवाएं रखते थे जो थैला उस समय खाली पाया गया था. साथ मे राजीव भाई की अंतिम विडियो जो आस्था चैनल पर दिखाया गया था उसे कैमरे से अधिक प्रकाश डालकर या एडिट कर चेहरे के मूल नीले या काले रंग को प्रकाश डालकर सफेद कर दिखाया गया था ऐसे दावे राजीव जी की मृत्यु के बाद किये गए थे.

राजीव भाई की पढाई-लिखाई और डिग्री को लेकर भी विवाद खड़ा किया गया है जो षडयंत्रो के शिकार अनेको व्यक्तियो के साथ होता आया है. सच्चा व्यक्ति और उसके कार्यो को बदनाम करने के लिए एक या दूसरी तरीके से तथ्यों को तोड़ मरोड़कर पेश करना बड़ी ताकतों के लिए कोई मुश्किल काम नहीं माना जाता. अपने मोहल्ले के लिए या गांव-शहर में कोई छोटा धर्म या परोपकार का कार्य करने की हैसियत ना धारण करनेवाले कुछ डिजिटल कलाकार कमरे मे आराम से बैठकर आये दिन उनके कार्यो और विचारो की आलोचना करते देखे जा सकते है, जो एक प्रकार से केवल षडयंत्रो का एक हिस्सा माना जाता है. राजीव दीक्षित जी विदेशियों से नफरत करते थे ऐसे भी दावे लोगो ने किये है, लेकिन यह सरासर झूठ है, क्योकि

राजीव दीक्षित विदेशी होमियोपैथी का भी प्रचार करते थे. क्योकि वह होमियोपैथी को आयुर्वेद के बाद दूसरी उपयोगी नैसर्गिक चिकित्सा मानते थे. यह अवश्य है की षडयंत्रो का अभ्यास करते करते विदेशियों द्वारा भारत देश को लूटने तथा कर्ज के जाल में फ़साने के कार्यो को लेकर अपने मन मे छिपे आक्रोश को कभी प्रगट किया करते थे, जो विदेशीयो के विरोधी ना होकर उनकी कूटनीति के विरोधी थे. इन सबके मूल मे केवल देशभक्ति के अलावा दूसरा कुछ नहीं देखा जा सकता था. उन्होंने मुस्लिमो के बारे मे भी गुलामी के समय का सच्चा इतिहास बताया था की कैसे षडयंत्रो के तहत धर्मो के बिच दरार डालकर अंग्रेजो ने देश को अपनी गिरफ्त में लिया था. रात दिन देश के गाँवों मे भ्रमण कर लोगो को षडयंत्रो के जाल से बचाने के लिए उन्होंने अपनी कारकिर्दी और जीवन दोनो को दांव पर लगाया था तथा उसी लक्ष्य को हासिल करने के रास्ते पर वह शहीद भी हुए. 2019 में राजिव दीक्षित जी की रहस्यमयी मृत्यु से संबंधित कड़ी जांच करने के आदेश इतने साल बाद दिए गए है **Link**. इतने सालो बाद जांच की घटना भी अपने आप मे एक सवाल खड़ा करती है की इसके माध्यम से घटना में शामिल किसी व्यक्ति को गुनेहगार साबित किया जा सकता है या बिना पोस्ट मॉर्टम के जांच को कैसे पूर्ण मदद मिल सकती है?

जो लोग भी आंतराष्ट्रीय षडयंत्रो को सूक्ष्मता से समझते है, उनके अनुसार राजीव दीक्षित जी के मृत्यु के पीछे प्रमुख दावेदारी इलुमिनाटी संगठन की मानी जाती है. क्योकि **राजीव दीक्षित उनके लिए रास्ते का सबसे बड़ा काँटा माने जाते थे जिन्होंने ना सिर्फ आयुर्वेद तथा विदेशी षडयंत्रो का प्रचार कर इलुमिनाटी संगठन द्वारा नियंत्रित मानीजानेवाली विदेशी कंपनियों का मुनाफा कम किया था, बल्कि उन्होंने वैदिक संस्कृति, नैतिक मूल्यो से लेकर सनातन संस्कृति के मूल को जगाया था जो चिंगारी आगे जाकर इलुमिनाटी संगठन की विश्व को गुलाम बनाने की मूल**

योजनाओ से लेकर उनकी आंतराष्ट्रीय गुप्त सत्ताओ का पर्दाफाश कर सकती थी. राजीव दीक्षित जी ने एक साथ कुछ ही सालो मे इतने गंभीर विषयो पर काम किया था और वह अपनी बुद्धि एवं कुशलता से आंतराष्ट्रीय षडयंत्रो को लेकर जिस रफ़्तार से आगे बढ़ रहे थे वह इलुमिनाटी संगठन के लिए बड़े खतरे की घंटी थी. तो उनके लिए राजीव दीक्षित जी को पैसे, पद या सत्ता का लालच देकर रोकना संभव नहीं था, क्योकि वह सच्चे, ईमानदार और देश के लिए मर मिटनेवाले क्रांतिकारी थे. इसलिए राजीव दीक्षित जी को रास्ते से हटाने के अलावा उनके पास दूसरा कोई रास्ता नहीं बचा था ऐसे दावे किये जाते है. इस कार्य को पूरा करने के लिए उनके किसी करीबी व्यक्ति या गुप्त दुश्मन का सहारा लिया गया होगा वह इस कहानी का दूसरा छोर माना जाता है.

जिस तरह अपने व्याख्यानों में राजीव दीक्षित जी ने भारत के लाल बहादुर शास्त्री जी की मौत दिल के दौरे से ना होकर उन्हें दूध में ज़हर देकर उनकी हत्या होने के दावे किये थे, उसी प्रकार राजीव दीक्षित जी की मृत्यु को भी नैसर्गिक दिखाने के लिए उन्हें धीमा किन्तु तीव्र ज़हर दिया गया था, जिससे विश्व को मृत्यु हत्या ना दिखकर हार्ट अटेक के कारण प्राकृतिक दिखे ऐसे दावे किये गए है. इसलिए उनकी शुगर, ब्लड प्रेशर, हार्ट की जन्मजात समस्या को हार्ट अटेक आने का कारण बताकर प्रचलित करवाने के पीछे आयुर्वेद एवं नैसर्गिक इलाज को निचा दिखाना तथा राजीव दीक्षित जी द्वारा प्रचारित प्राचीन ऋषिमुनियों की चिकित्सा पर भरोसा करनेवाले व्यक्तियों के मन को कमजोर करने की छल से भरी योजना मानी जाती है.

राजीव दीक्षित जी द्वारा उनके व्याख्यान में इस बात को स्वीकार किया था की उन्होंने पीछे 18 सालो से कोई शारीरिक समस्या नहीं है और बिच के किसी समय के

दौरान उनका एलोपैथी डॉक्टर के पास नहीं जाना हुआ, ना ही उन्होंने एलोपैथी की कोई दवाई खायी या कभी इंजेक्शन लगाया Link. उन्होंने नैसर्गिक चिकित्सा से चिकनगुनिया जब फैला था उस दरमियान हज़ारो लोगो का बिना किसी एलोपैथी दवाई के केवल नैसर्गिक रूपसे इलाज करके ठीक करने का दावा किया था. उन्होंने सालो से आयुर्वेद के नियमो का कट्टरता से पालन करने तथा सालो से स्वस्थ होने का दावा किया था जो उनके ईमानदार एवं निस्वार्थ व्यक्तित्व के अनुसार झूठा हो यह उनके समर्थको या लोगो ने कभी स्वीकार नहीं किया.

यह बात बिलकुल सत्य है की राजीव दीक्षित जी की मृत्यु के बाद भी क्रांति का एक प्रवाह निरंतर जारी है जो अधिक वेग से प्रवाहित हो रहा है. उनके व्याख्यान आज भी लोग इंटरनेट पर ढूंढते हुए आते है जब भी सत्य की प्यास किसी को लगती है. राजीव दीक्षित जी के मृत्यु के सालो बाद भी वह आज क्रांतिकारी के रूप में लोगो के दिल मे सजीवन है. आजीवन ब्रह्मचारी रहकर जो भी राजीव दीक्षित जी ने भारत के लिए किया है उसके लिए देश हमेशा उनका ऋणी रहेगा. भविष्यमें किसी के साथ राजीव दीक्षित जी जैसी कोई दुर्घटना घटे तो उसे षड़यंत्र समझकर मूल कार्य से विचलित ना होने का संदेश राजीव दीक्षित जी के जीवनकार्य से मिलता है. **राजीव दीक्षित जी से मेरा जुड़ाव उनके अहिंसा के मार्ग को लेकर नहीं, बल्कि उनकी शुद्ध देशभक्ति, जनकल्याण की भावना, उदेश्यो, नैतिक मूल्यो तथा कार्यो को लेकर रहा है. इस पुस्तक के माध्यम से मै स्व. राजीव दीक्षित जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ जिनको भौतिक जीवन में मैंने अपना पहला गुरु माना था. साथ उन हज़ारो ईमानदार व्यक्तियो को भी मै श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ, जिन्होंने दुनिया मे राजीवभाई की तरह नीडरता से षडयंत्रो को उजागर करने तथा सत्य की रक्षा के लिए अपनी जान की क़ुरबानी दी है ताकी मानवजात और जीवसृष्टि को बचाया जा सके.**

मेरा संदेश

इस पुस्तक को लिखने का मेरा उदेश्य यही है की आप सर्वप्रथम प्राचीन आयुर्वेद चिकित्सा के माध्यम से अच्छा शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त कर सके. बिना अच्छे स्वास्थ्य कितना भी धन कमा लिया जाए वह आगे चलकर आपके या आपके परिवार के लिए किसी काम का नहीं रहेगा. **वर्तमान समय मे जो षडयंत्रो का आभास हो रहा है उसमे दुष्प्रचार से बचना और सही ज्ञान को ग्रहण करना सबसे बड़ी चुनौती है.** आयुर्वेद हमारे सनातन भारत के ऋषिमुनियों का वचन है जो कभी खाली नहीं जाएगा यह मेरा विश्वास भी है और अनुभव भी. मै नहीं कहता की आयुर्वेद, आध्यात्म और षडयंत्रो के बारे में जो भी इस पुस्तक मे बताया गया है उस पर आप आँख बंद कर विश्वास करे, बल्कि उसे खुद अध्यहन कर निष्पक्ष मूल्यांकन करे. आध्यात्म अनुभव का विषय है जो तर्क से नहीं समझा जा सकता और उसपर लोको के मत भिन्न हो सकते है, लेकिन आयुर्वेद के बारे में जो भी बताया है वह मेरा स्व अध्यहन और निजी अनुभव भी रहा है. अपनी दैनिक क्रिया से थोड़ा समय निकालके निष्पक्षता से इसका पूर्ण अध्याहन करे और विज्ञान के नाम पे चल रहे कुर्तको को समयसे पहचान कर अपने परिवार का रक्षण करे. आलोचना से ज्यादा अनुभव श्रेष्ठ होता है, इसीलिए आप मेरे या अन्य किसी व्यक्ति के विचार का सीधा अनुसरण ना कर खुद के अनुभव से ही इसे स्वीकारे यही मेरी शुद्ध इच्छा है.

जीवनमे एक समय ऐसा भी आता है जब हमे पता चलता है की किसी चीज को हम उच्च मूल्य चुकाकर श्रेष्ठ समझते थे उससे ज्यादा मूल्यवान वह चीज थी जो आपको

ईश्वरने ऐसे ही मुफ्त मे दे दी थी. मूल्य चुकाकर मिलनेवाली चीज श्रेष्ठ अवश्य हो सकती है, लेकिन कभी मुफ्त मे मिलनेवाली चीज उससे भी बड़ी और अमूल्य होती है जिसका ज्ञान हमे समय के साथ खुद के अनुभव से होता है.

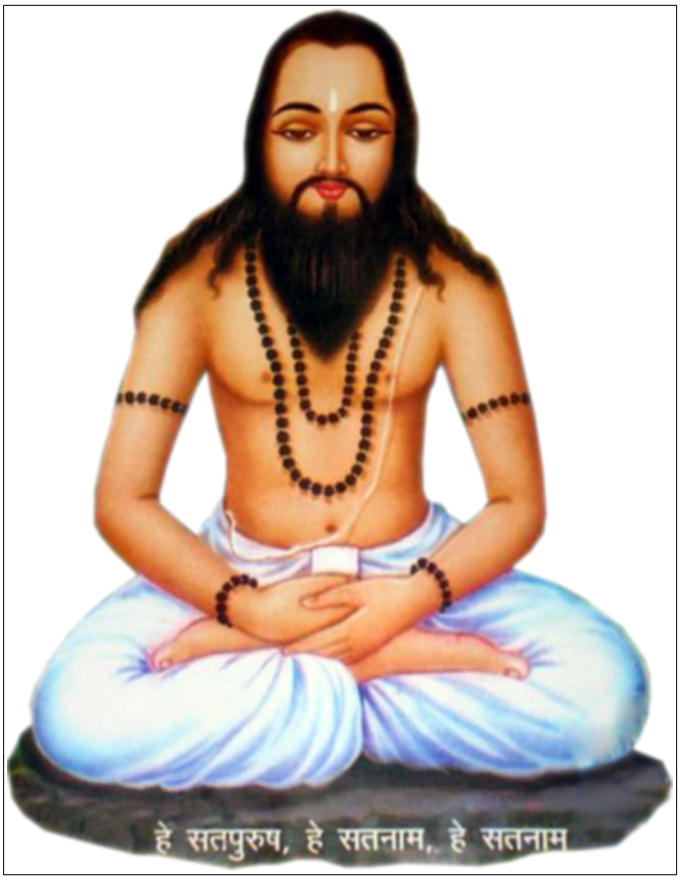

शिक्षक सिखाता है और गुरु जीवन मे परिवर्तन लाता है जो अंधकार से प्रकाश की लंबी यात्रा है. गुरुतत्व के ऋण से मुक्त होने का एकमात्र रास्ता है की जो भी आपको अपने गुरुओ से मिला है वह दुसरो में बिना किसी भेदभाव के बांट देना. इसी आधार पर यह पुस्तक निर्मित हुआ है जिसकी यात्रा कुछ दिन या महीनो की ना होकर सालो की है. मुझे जो भी ज्ञान अपने गुरुओ से प्राप्त हुआ उसमे से अंश मात्र भी किसी मनुष्य के काम में आया तो मै उसे ईश्वर की कृपा एवं अपना अहोभाग्य समझूंगा. इस पुस्तक को पूर्ण करने में बहोत से पैथियो के चिकित्सक, वैज्ञानिक, विशेषज्ञों द्वारा लिखे गए आर्टिकल तथा इंटरव्यू से रोग तथा उसकी उत्पत्ति के कारणो के बारे मे अहम जानकारिया मिली है जिसके लिए मै उनका धन्यवाद प्रगट करता हूँ और उसे प्रस्तुत करने मे अगर कोई कमी रह गयी हो तो उसके लिए क्षमाप्रार्थी रहूँगा. जीवन की प्रगति के लिए आध्यात्म और जीवनरक्षा के लिए संभवित षडयंत्रो का ज्ञान अनेको व्यक्तियो द्वारा प्राप्त हुआ है जिन्हे मै ईश्वर द्वारा भेजे गए किसी दूत या पवित्र माध्यम के रूप मे देखता हूँ तथा उनके प्रति अहोभाव प्रगट करने के लिए शब्द भी कम पड़ेंगे.

सबसे महत्वपूर्ण बात है की अगर षड्यंत्र सच साबित होता है तो यकीन मानके चलिए की आपके बच्चो के साथ पुरे परिवार की जान, संपत्ति और आज़ादी यह तीनो खतरे मे है. षडयंत्रो को केवल जानकार मनोरंजन करना, स्वार्थी बनकर केवल खुद के बचाव का मार्ग खोजना या उसके खिलाफ केवल कानूनी लड़ाई लडना इनसे पूर्ण बचाव नहीं है, क्योकि भ्रमित लोगो के समर्थन से मूल संविधान मे हेरफेर कर और न्यायप्रक्रिया को धीमा कर मूल शैतानी योजनाओ को विश्व मे अमली बनाया जा सकता है. क़ानून और न्यायप्रक्रिया से लड़ना भी आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है, परंतु मानवशरीर प्रकृति या जीवसृष्टि के नुक्सान की भरपाई कानूनी जित के बाद भी पैसे या अन्य किसी माध्यम के द्वारा नहीं की जा सकती. बदलाव और बचाव तभी संभव है जब बड़े स्तर पर षडयंत्रो के खिलाफ जनजागृति आए. ऐसा ना होने की स्थिति मे सबकुछ जानकार भी षडयंत्रो के शिकार होने से किसी का बच पाना असंभव माना जाता है. **इतिहास गवाह है की मुर्ख और कायर किसी भी युद्ध मे जिन्दा नहीं बच पाए.** तो अगर आपकी विचार शक्ति सिमित है या भावना के वश में आकर आप किसी व्यक्ति की गलत नीतियों का जाने अनजाने में अंध समर्थन करते है तो अपना

पतन भी निश्चित समझे. किसी राजकीय नेता, पक्ष या सरकार की वाणी से ज्यादा उनके कर्मो से कार्यो का निष्पक्ष मूल्यांकन जरुरी है. आँखों के सामने दिखनेवाली हर चीज सत्य नहीं होती, इसीलिए अपने और अपने परिवार की सुरक्षा हेतु कल्पना से परे वास्तविकता को समझने तथा स्वीकारने का निष्पक्ष प्रयास करे. दूसरी तरफ सबकुछ जानने के बाद भी अगर आप सत्य का साथ देने से डरते है या अत्याचार सहन करते जाते है तो यह पक्का समझे की कायरता का अंतिम फल गुलामी या विनाश से अलग कुछ और नहीं होगा.

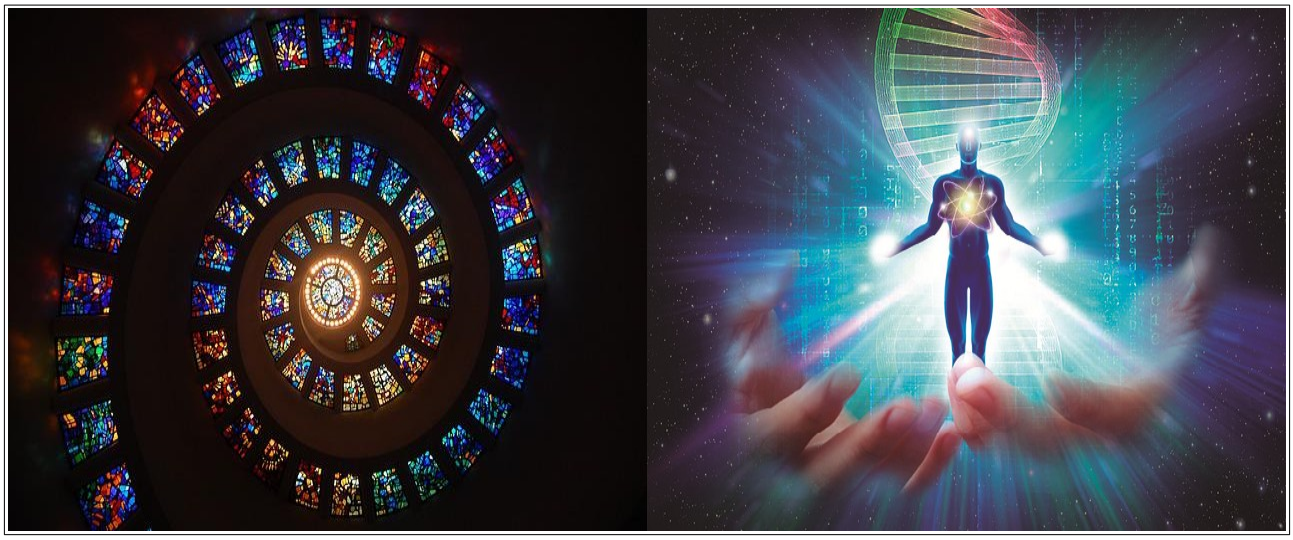

मेरे आंकलन अनुसार यह खुली आँखों से ना दिखनेवाला और अदृश्य रूपसे खेला जा रहा धर्मयुद्ध है जो आस्तिक-नास्तिक के बिच का ना होकर सत्य और असत्य के बिच का है. इसीलिए जितने लोगो को आप जगाने मे सफल रहे उतना आप खुद का एवं परिवार का रक्षण करने मे सफल होंगे. इस पुस्तक को आप अधिक से अधिक लोगो तक इंटरनेट के माध्यम से पहोचाकर उन्हें जागृत करने के ईश्वरी कार्य मे अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकते है. अपनी शक्ति को छोटा ना माने क्योकि एक चिंगारी भी पुरे जंगल मे आग लगाने के लिए काफी होती है. यह भी मत सोचियेगा की आपकी लड़ाई कोई दूसरा लड़के आपको बचा सकता है, क्योकि ईश्वर भी केवल उसीकी मदद करते है जो सत्य की रक्षा के लिए कर्म कर अपना यथाशक्ति योगदान देता है. इसीलिए केवल पढ़े लिखे व्यक्ति तक इनकी जानकारी का दायरा सिमित ना रखकर जो लोग पढ़ना लिखना नहीं जानते उन्हें भी सरल भाषा मे इसकी मौखिक जानकारी देकर आप बड़ी जाग्रति ला सकते है. इस पुस्तक को हिंदी भाषा मे लिखने का उदेश्य यही है की भारत में रहनेवाले अधिकतर लोग सरल भाषा मे इसे समज पाए, लेकिन अगर किसी अन्य भाषाओ में इसे भाषांतरित करने की जरुरत पड़े तो आपके द्वारा की जानेवाली सहायता सत्य की लड़ाई मे मूलयवान योगदान के रूप मे अंकित की जायेगी.

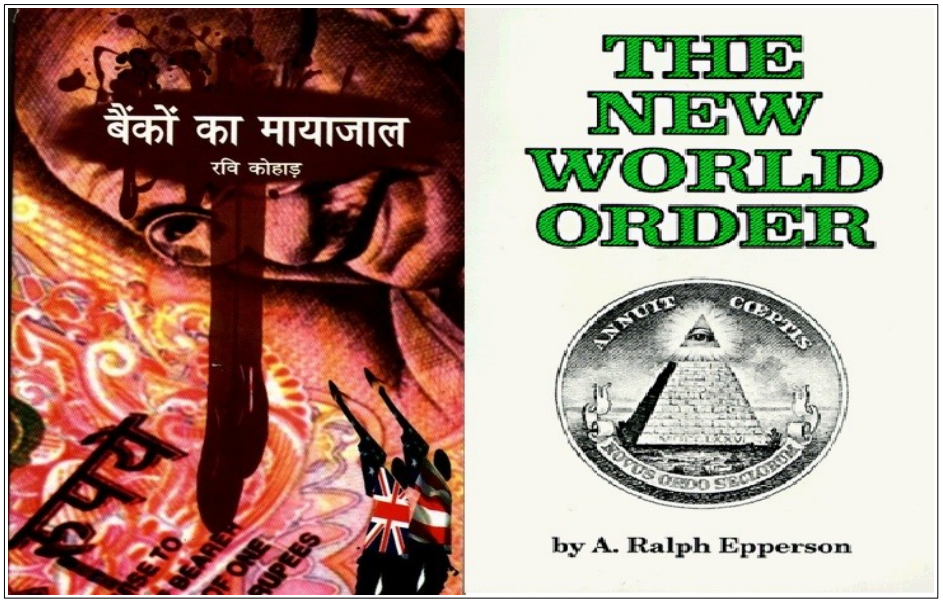

रवि कोहाड़ द्वारा लिखी अद्भुत पुस्तक **"बैंको का मायाजाल"** विस्तृत रूपसे कुछ गिने चुने लोगो द्वारा पैसो के माध्यम से विश्व को नियंत्रित करने के गहरे मायाजाल को प्रस्तुत करती है. **राल्फ इपरसन** द्वारा लिखी गयी पुस्तक **"ध न्यू वर्ल्ड ऑर्डर"** वैश्विक षड़यंत्र को उजागर करती है. जो पहले ही षड़यंत्र के संभवित शिकार हो चुके है वह आयुर्वेद को अपनाकर अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को ठीक करते जाए और साथ ज्ञान अर्जन करते जाए ताकी देर ना हो जाए. इन किताबो को पढ़ने के बाद निष्पक्ष मूल्यांकन करेंगे तो सालो पहले केवल षड्यंत्र का दावा बताई जा रही पुस्तकों की बाते सच साबित हो चुकी है. बुद्धिमान व्यक्ति को केवल इशारा ही काफी होता है. जिसदिन आपने ठीक से समज लिया की कौन मालिक है और कौन गुलाम उसदिन सारा खेल नंगी आँखों से साफ़ दिखने लगेगा. सत्य के लिए लड़ाई लड़नेवाले व्यक्ति, संस्था और आंदोलन को दागदार बनाने के लिए शैतान के पूजक माहिर खिलाडी माने जाते है. इनका हर वार तुरंत ना होकर समय के साथ मौका पाकर किया जाता है. शांत आंदोलनों को उत्पात मचाकर उपद्रवी साबित करने, सत्य की लड़ाई लड़नेवाले व्यक्तियो में आंतरिक विवाद पैदा करवाने तथा तथ्यों को नियंत्रित मीडिया के माध्यम से सच्चा या झूठा साबित कर लोगो को भ्रमित करने के लिए यह निपूर्ण ठग माने जाते है. नयी वैश्विक व्यवस्था बनाने हेतु नजदीकी समय मे इलुमिनाती संगठन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े राजनेता, फिल्मस्टार, पोपसिंगर जैसे अनेको ठग अपनी श्रेष्ठ नाट्यकला और भावनात्मक कलरबाजी से इलुमिनाती संगठन को दुनिया, देश या समाज के लिए अच्छा बनाने का प्रयास कर सकते है जिनसे सावधान रहकर शैतानी करतूतो को समय से बेनकाब करना जीवनरक्षा के लिए अनिवार्य है. सनातन धर्म के सत्पुरुषों की भविष्यवाणी से भी यह स्पष्ट होता है की कलयुग के अंत से पहले दुनिया के अधिकतर लोग किट-पतंगों की तरह मरेंगे और केवल उन्ही का अस्तित्व रहेगा जो सत्य के साथ खड़े होंगे.

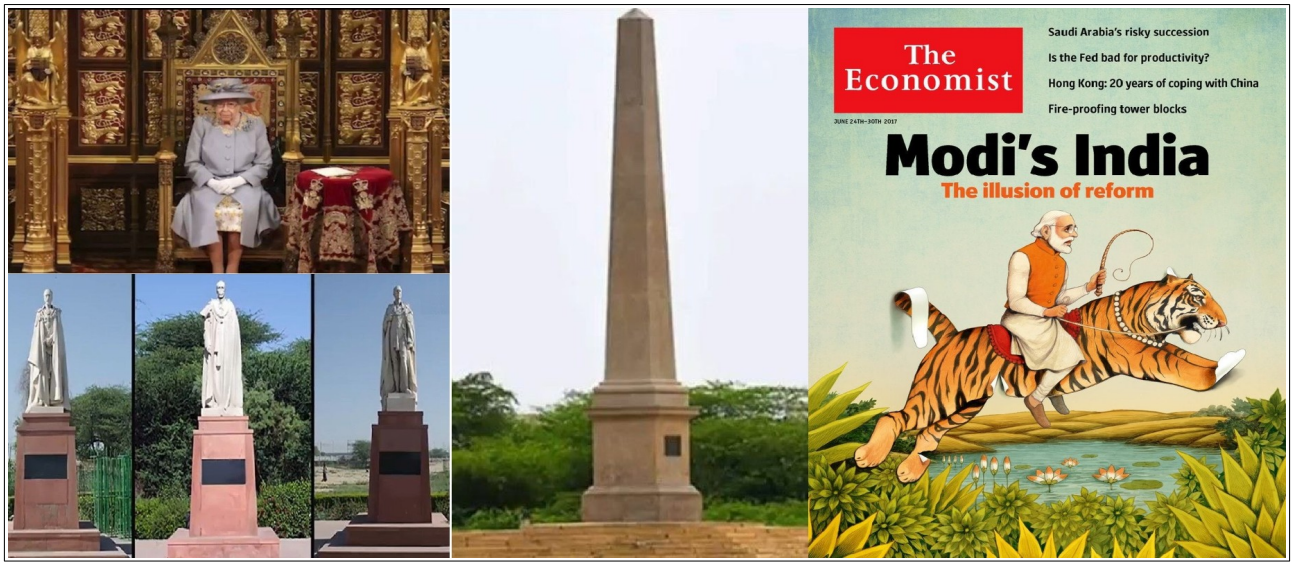

जहाँ सालो तक अंग्रेजो के गुलाम रहे भारत को आज़ादी दिलाने के लिए भगतसिंह और सुभाषचंद्र बोस सहित देश के लाखो कांतिकारियों ने अपना खून बहाया था उस भारत के ऊपर ब्रिटेन के शाही परिवार का आज भी अधिपत्य होने का प्रबल दावा है. राजीव दीक्षित जी ने भी इन बातो को अपने व्याख्यानों मे प्रस्तुत किया था तथा उनके अनुयायी शिवांग यादव जी ने भी कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण तथ्यों के साथ इसे प्रस्तुत किया है. भारत के संविधान से भी ऊपर अगर भारतीयों के लिए कुछ है तो इतनी महत्वपूर्ण बात के बारे में मुख्य धारा के मीडिया या सर्वोच्च नेताओ द्वारा इसकी कोई बड़ी चर्चा ना होने पर यह जटिल प्रश्न तो खड़ा करता ही है, लेकिन 8-सितम्बर-2022 को ब्रिटेन की महारानी का देहांत होने के बाद भारत सरकार द्वारा 11-सितम्बर-2022 को राष्ट्रीय शोक मनाने की घोषणा की गयी थी जो सामान्य व्यक्ति के संदेह को अधिक गहरा बनाती है.

यह बात नेताओ द्वारा किये जानेवाले चुनावी वादे या केवल फेकने-लपेटने की क्रिया तक सिमित ना होकर एक बड़ा सवाल खड़ा करती है की जिस शाही खानदान का अधिपत्य भारत सहित दुनिया के अन्य देशो पर भी था और गुलाम देशो पर अंग्रेजो द्वारा जान-माल की लूंट और अत्याचार के भी अनेको किस्से है उन्हे नजर मे लेते हुए भारत देश मे राष्ट्रीय शोक मनाकर तिरंगे को आधा झुकाने का औचित्य क्या है? जिस अंग्रेज शासन ने भारत को सालो तक गुलाम बनाया था उस देश की रानी की मृत्यु होने पर शोक रखना देश की आज़ादी के लिए खून बहानेवाले शहीदों का अपमान है या नहीं? अंग्रेजो की गुलामी के चिह्न या इतिहास के रूपमें मौजूद चीजों, पत्रों तथा अन्य तथ्यों के साथ शिवांग यादव जी का यह वीडियो हर भारतीय तक पहोचाना जरुरी है **Link**. इसके अलावा करीबी द्वारा ब्रिटेन की महारानी एलिज़ाबेथ के फ्रीमेसन, एलियन तथा शैतानी रस्म के साथ जुड़े होने के भी दावे किये गए है **Link**.

थोड़ी दूरदृष्टि से देखने पर मनुष्य को **ट्रांसह्यूमन (Transhuman)** जिसमे इंसानी दिमाग को कम्प्यूटर का "सॉफ्टवेयर" और शरीर को "हार्डवेर" बनाकर चलता फिरता रोबोट बनाने की चेष्टा स्पष्ट दिखती है. मानवशरीर को टेक्नोलॉजी के साथ जोड़कर सुविधा या वाइरस-बीमारी से झूठी सुरक्षा के नाम पर इंटरनेट के जरिये आनेवाली संभवित गुलामी मूर्खो का इंतजार करती दिखती है. शतरंज के अदृश्य शैतानी खेल को केवल वही खिलाडी पूर्णतः समझने मे सफल हो सकता है जो सत्य, धर्म, टेक्नोलॉजी और विज्ञान के वास्तविक भेद को समज सकता हो. जैसे षड्यंत्र से भ्रमित लोगो का समूह आपके परिवार की जान जोखिम मे डाल सकता है वैसे जागृत लोगो का समूह ही आगे चलकर आपके परिवार की ढाल बनकर रक्षा करेगा. जागृति की शुरुआत अपने मित्र, पडोसी, और रिश्तेदारो से करे तथा आसपास के नकारात्मक वातावरण से निराश ना होकर सत्कर्म की यात्रा जारी रखे तो एक दिन सबेरा अवश्य आ सकता है. सत्य के पक्ष मे रहकर ना केवल आप अपनी रक्षा करने मे सक्षम होंगे, परंतु आप भावी पीढ़ी, पशु-पक्षी सहित समग्र जीवसृष्टि को बचाने के लिए भी अपना मूलयवान योगदान देंगे जो आपके पूर्वज सदियों से बिन बताये देते आये है.

इस पुस्तक को निःशुल्क रखने का उदेश्य यही है की सत्य बिना किसी भेदभाव एकसमान रूप से लोगो तक पहुंच पाए तथा गरीब-धनवान को एकसमान रूपसे जीवनरक्षा का मौका मिले. **यह पुस्तक चाहे किसी भी माध्यम से आपतक पहुंचा हो, लेकिन कर्म और आध्यात्म में आपकी आस्था है तो यह मान के चले की ईश्वरीशक्ति नज़दीकी भविष्य मे आनेवाली आफतो से आपके परिवार की रक्षा करना चाहती है फिर चाहे जिस किसी नाम से आप ईश्वर को पुकारते हो.** इस पुस्तक को लिखने का अनुभव भी अलौकिक रहा जिसमे कुछ मुद्दों को मै समाहित नहीं करना चाहता था जिन्हे स्वीकारने के लिए कुछ भ्रमित लोग मुझे लायक या मानसिक रूप से तैयार नहीं दीखते थे, लेकिन उनके निर्दोष बच्चो के भविष्य के बारे में जब विचार आया तो उन्हें पूर्ण रूपसे प्रस्तुत करने से मै अपने आप को रोक नहीं पाया.

आयुर्वेद को छोड़कर आध्यात्म और षड़यंत्र का ज्ञान प्रस्तुत करने में राजीव दीक्षित से शुरू कर आज दिन तक अनेको व्यक्तियों द्वारा ज्ञान प्राप्त हुआ है जिसमे मेरा कार्य केवल बिंदुओं को जोड़कर उनका संकलन करने तक ही सिमित है. जब इसे लिखना प्रारंभ किया था तो विश्वास नहीं था की कभी इसे यथार्थ स्वरुप में लोगो के समक्ष प्रस्तुत कर पाऊंगा, परंतु ईश्वर एवं गुरुशक्ति की कृपा से यह कार्य पूर्ण हो पाया जिसका असली श्रेय उन सभी लोगो को जाता है जिनका नाम इस पुस्तक मे शामिल किया गया है. असल मे नामो की सूचि बहोत लम्बी है जिन्हे समाहित करने मे मुज़से अवश्य कोई चूक रही होगी और वह सभी असली श्रेय के लिए बरोबर के हिस्सेदार रहेंगे.

लोगो को धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक या पारिवारिक समस्याओ में उलझाकर या फिर अपने सुख-सुविधा के लिए पैसा कमाने के पीछे पागल बनाकर शैतान के पूजको द्वारा अपनी असली योजनाओ को दुनिया मे अंजाम दिया जा रहा है. हर खेल

में केवल इनके मोहरे बदलते है जो खेल खेलनेवाले दोनों पक्ष मे मौजूद होते है. खुद ही आफतो का निर्माण कर समाधान के रूप मे किसी जोकर या मदारी को देश-दुनिया का मसीहा बनाकर लोगो के सामने प्रस्तुत करना तथा उन्हें शैतानी योजनाओ के शिकार बनाकर नष्ट करना ही उनकी प्रचलित कार्यशैली है. इसीलिए जब षडयंत्रो को योग्य ढंग से मूल्यांकन करने की दृष्टि प्राप्त हो तभी बिना किसी भ्रमणा के असली लक्ष्य तक पहोचना संभव हो सकता है. **इस पुस्तक के माध्यम से आप अपने जीवन में आयुर्वेद या होमियोपैथी जैसी अन्य नैसर्गिक चिकित्साएँ शामिल कर अच्छा शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त करे तथा संभवित षडयंत्रो के तहत किये जा रहे दुष्प्रचार से अपने परिवार को बचाने मे सक्षम बने ऐसी मेरी शुभकामना है.**

मेरे गुरु के एक अनमोल वचन के साथ इसे विराम देना चाहूंगा की आप केवल उसी व्यक्ति को जगाने मे सफल हो सकते है जो सही मे सोया हुआ है, लेकिन सोने का नाटक करनेवाले को आप अथाग प्रयासो के बाद भी जगा नहीं सकते. **कल्पना को वास्तविकता और वास्तविकता को कल्पना साबित करने का मायाजाल शैतानो द्वारा इसीलिए रचित है ताकी हकीकत सामने दिखने पर भी लोग उसे कोरी कल्पना समजे.** शैतानो द्वारा बिछाये मकड़ीजाल मे बुरी तरह फस चुके कुछ भ्रमित लोगो के बचने की संभावना ना के बराबर है जिसे उनके कर्मो का फल समझकर स्वीकार करे. वैचारिक युद्ध मे आप केवल माध्यम बनकर उन लोगो को जगाने का प्रयास करे जो सही मे निर्दोष या मासूम है पर सत्य के अभाव मे जिनका जागरण अधूरा रहा है.

अगर आपको यह पुस्तक लिखने का मेरा उदेश्य ठीक से समज मे आया है और जनजागृति लाने के इस कार्य मे यथाशक्ति आर्थिक सहयोग देना चाहे तो दे सकते है. सिर्फ मुझे आर्थिक सहयोग देने से ज्यादा अच्छा है की आपके आसपास या दूर जितने व्यक्ति जनजागृति लाने के दायित्व को निश्वार्थ रूपसे निभाते दिख रहे है उन सभी व्यक्तियों के बिच अपने यथाशक्ति योगदान को छोटे हिस्सो मे बाँट दे ताकि वैचारिक क्रांति लाने के लिए कार्य कर रहे उन तमाम व्यक्तियों का जो समय, शक्ति, संसाधन और पैसे खर्च होते है उनकी पूर्ति यथार्थ रूप से की जा सके. सत्य की लड़ाई लड़ रहे तमाम व्यक्तियो के विचार, भाषा, मार्ग या व्यवहार एकदूसरे अलग हो सकते है, लेकिन इन सब के बिच सत्य के लिए उनकी लड़ाई और जनकल्याण के लिए उनका निर्दोष भाव ही सबसे जयादा महत्वपूर्ण है. समयांतर से उन्हे यथाशक्ति आर्थिक सहयोग करने के साथ उनके साहित्य को अनुकूल माध्यमों से विशाल जनसमूह तक पहोचाना भी अपने परिवार, मानवजात तथा जीवसृष्टि की रक्षा के लिए आपका नैतिक कर्तव्य बनता है. ∞ **सत्यमेव जयते** ∞

APP Name	Via Phone Number	Via UPI ID
Paytm	+91 9725930800	9725930800@paytm
PhonePe	+91 9725930800	nishantguru007@ybl
GPay	----------	nishantguru007@axl
PayPal	paypal.me/nishantguru007	

🙏 **पुस्तक को पूरा पढ़ने हेतु अपना कीमती समय देने के लिए आपका धन्यवाद** 🙏